माध्यमिक कक्षा पाठ्यक्रम

संस्कृत व्याकरण (246)

पुस्तक-2

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा-संस्थान

ए-24-25, संस्थागत क्षेत्र, सेक्टर- 62

नोएडा-201 309 (उत्तर प्रदेश)

वेबसाइट : www.nios.ac.in निर्मूल्य दूरभाष- 18001809393

National Institute of Open Schooling

A 24-25, Institutional Area, Sector-62

Noida-201309 (U.P.)

© राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान National Institute of Open Schooling

प्रथम संस्करण 2017 First Edition 2017 (Copies)

ISBN (Book 1)

ISBN (Book 2)

ISBN (Book 3)

सचिव, राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, ए-24-25, संस्थागत क्षेत्र, सेक्टर- 62 नोएडा - 201 309
(उत्तर प्रदेश) द्वारा प्रकाशित। ..... द्वारा मुद्रित।

माध्यमिक कक्षा संस्कृत व्याकरण (246)

सलाहकार समिति

प्रो. सरोज शर्मा
अध्यक्ष
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा-संस्थान
नोएडा, (उत्तर प्रदेश)-201309

डॉ. राजीव कुमार सिंह
निदेशक (शैक्षिक)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा-संस्थान
नोएडा, (उत्तर प्रदेश)-201309

पाठ्यक्रम निर्माण समिति

प्रो. डॉ. अर्कनाथ चौधरी (समिति अध्यक्ष)
उप-कुलपति
श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय
वेरावल -362266 (गुजरात)

डॉ. नीरज कुमार भार्गव (समिति के उपाध्यक्ष)
सहायक प्राध्यापक (संस्कृताध्ययन विभाग)
रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द विश्वविद्यालय
बेलुड-मठ, हावड़ा-711 202 (प. बंगाल)

डॉ. हरि-राम-मिश्र
सहायक प्राध्यापक (संस्कृत विभाग)
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

स्वामी वेदतत्त्वानन्द
प्राचार्य
रामकृष्ण मठ विवेकानन्द वेद विद्यालय
बेलुड मठ, मण्डल हावड़ा- 711 202 (प. बंगाल)

डॉ. विजेन्द्र-सिंह
सहायक प्राध्यापक (संस्कृत विभाग)
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

श्रीमान् मलय-पोडे
सहायक प्राध्यापक (W.B.E.S.) (संस्कृत विभाग)
राणीबाँध सर्वकारीय महाविद्यालय
स्थानम्-राणीबाँध, मण्डलम्-बाँकुडा-722135 (प. बंगाल)

श्री सुमन्त-चौधुरी
सहायक प्राध्यापक (संस्कृत विभाग)
सबं सजनीकान्त महाविद्यालय
पत्राचार-लुटुनिया, रक्षालय- सब
मण्डल-पश्चिम मेदिनीपुर- 721 166 (प. बंगाल)

डॉ. राम-नारायण-मीणा
सहायक निदेशक (शैक्षिक विभाग)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
नोएडा, उत्तर प्रदेश-201 309

पाठ्यक्रम-समन्वयक

डॉ. राम नारायण मीणा
सहायक निदेशक (शैक्षिक विभाग)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
नोएडा, उत्तर प्रदेश-201 309

पाठ्य विषय सामग्री निर्मित समिति

संपादक मण्डल

डॉ. नीरज कुमार भार्गव (समिति के उपाध्यक्ष)
सहायक प्राध्यापक (संस्कृत अध्ययन विभाग)
रामकृष्ण मिशन विवेकानंद विश्वविद्यालय
बेलुर मठ, हावड़ा-711202 (प. बंगाल)

स्वामी वेदतत्त्वानन्द
प्राचार्य
रामकृष्ण मठ विवेकानंद वेद विद्यालय
बेलुर मठ, मण्डल-हावड़ा 711202 (प. बंगाल)

पाठ लेखक

(पाठः 1-9)
स्वामी वेदतत्त्वानन्द
प्राचार्य
रामकृष्ण मठ विवेकानन्द वेद विद्यालय
बेलुड-मठ, हावड़ा-711 202 (प. बंगाल)

(पाठः 10-14)
श्रीमान् जयदेवदिण्डा
अनुसन्धाता (संस्कृताध्ययन विभाग)
रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द विश्वविद्यालय
मण्डल-हावड़ा-711 202 (प.वङ्गम्)

(पाठः 15-18)
श्रीमान् सुमन्त चौधरी
सहायक प्राध्यापक (संस्कृत विभाग)
सबं सजनीकान्त महाविद्यालय
पत्रालय- लुटुनिया, रक्षालय- सबं
मण्डल- पश्चिम मेदिनीपुर-721 166 (प. बंगाल)

(पाठः 19-25)
डॉ. नीरज कुमार भार्गव
सहायक प्राध्यापक (संस्कृताध्ययन विभाग)
रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द विश्वविद्यालय
बेलुड-मठ, हावड़ा-711 202 (प. बंगाल)

(पाठः 26-29)
श्रीमान् राहुलगाजि
अनुसन्धाता (संस्कृत विभाग)
यादवपुर विश्वविद्यालय
कलिकाता-700 032 (प. बंगाल)

अनुवादक मण्डल

डॉ. राम नारायण मीणा
सहायक निदेशक (शैक्षिक विभाग)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
नोएडा, उत्तर प्रदेश-201 309

डॉ. विजेन्द्र सिंह
सहायक प्रो.
संस्कृत एवं उच्च शिक्षा संस्थान,
जे.एन.यू. नई दिल्ली

श्री आशुतोष मिश्रा
प्र. प्रधानाचार्य, रा.उ.मा. विद्यालय
मूसाखाड़, चन्दौली, उ.प्र.

श्री पुनीत त्रिपाठी
वरिष्ठ कार्यकारी अधिकारी
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
नोएडा, उत्तर प्रदेश-201 309

श्री सुभाष बिश्नोई
अनुसंधाता,
संस्कृत एवं उच्च शिक्षा संस्थान,
जे.एन.यू. नई दिल्ली

रेखा चित्राङ्कन व मुख पृष्ठ चित्रण

स्वामी हररूपानन्द
रामकृष्ण मिशन, बेलुड मठ, मण्डल-हावड़ा-711 202 (प. बंगाल)

आप से दो बातें

अध्यक्षीय सन्देश

प्रिय विद्यार्थी,

'भारतीय ज्ञान परम्परा' इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के लिए आपका हार्दिक स्वागत है।

भारत अति प्राचीन और अति विशाल है। भारत का वैदिक वाङ्मय भी उतना ही प्राचीन, प्रशंसनीय और महान है। सृष्टिकर्ता भगवान् ही भारतीयों के सम्पूर्ण विद्याओं के प्रेरक है, ऐसा सिद्धांत शास्त्रों में प्राप्त होता है। भारत के अच्छे विद्वान, सामान्य जनमानस तथा अन्य ज्ञानी लोगों का प्राचीन काल में आदान-प्रदान का माध्यम संस्कृत भाषा ही थी ऐसा सभी को ज्ञात है। इतने लम्बे काल में भारत के इतिहास में जो शास्त्र लिखे गए, जो चिंतन उत्पन्न हुए, जो भाव प्रकट हुए वे सभी संस्कृत भाषा के भण्डार में निबद्ध हैं। इस भण्डार का आकार कितना, भाव कितने गंभीर, मूल्य कितना अधिक इसका निर्धारण करने में कोई भी समर्थ नहीं है। प्राचीन काल में भारतीय क्या-क्या पढ़ते थे, वो एक श्लोक के माध्यम से प्रकट होता है-

अङ्गानि वेदाश्चत्वारो मीमांसा न्यायविस्तरः।
पुराणं धर्मशास्त्रं च विद्या ह्येताश्चतुर्दश॥ (वायुपुराणम् 61.78)

इस श्लोक में चौदह प्रकार की विद्याएँ बताई गई हैं। चार वेद (और चार उपवेद, छः वेदाङ्, मीमांसा (पूर्वोत्तरमीमांस), न्याय (आन्वीक्षिकी) पुराण (अठारह मुख्य पुराण व उपपुराण) धर्मशास्त्र (स्मृति) ये चौदह विद्या कहलाते हैं। अनेक काव्य और बहुत शास्त्र हैं इन सभी विद्याओं का प्रवाह जल के समान ज्ञान प्रदान करने वाला प्रगति करने वाला और वृद्धि करने वाला लम्बे समय से चल रहा है। समाज के कल्याण के लिए भारत के विद्या दान परम्परा में गुरुकुलों में आध्यात्मिक, मनोवैज्ञानिक, आयुर्वेद, राजनीति, दण्डनीति, काव्य, काव्यशास्त्र और अन्य बहुत से शास्त्र पढ़ते-पढ़ाते थे।

विद्या के शिक्षण के लिए ब्रह्मचारी परिवार को छोड़कर गुरुकुल में ब्रह्मचर्याश्रम को धारण कर जीवन बिताते थे और इन विद्याओं में परंपरागत होते थे। इन विद्याओं में आज भी कुछ पारंगत लोग हैं। प्राकृतिक परिवर्तन के कारण, विदेशी आक्रमण के कारण, स्वदेश में हो रही उठा-पटक इत्यादि अनेक कारणों से पहले जैसा अध्ययन-अध्यापन की परम्परा अब छूटती जा रही है। इन पाठ्यक्रमों की परीक्षा प्रमाणपत्र इत्यादि आधुनिक शिक्षण पद्धति के द्वारा कुछ राज्यों में होता है, परंतु बहुत से राज्यों में नहीं होता है। अतः इन प्राचीन शास्त्रों के अध्ययन, परीक्षण और प्रमाणीकरण का होना आवश्यक है। इसे ध्यान में रखकर यह पाठ्यक्रम राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के द्वारा प्रारम्भ किया गया है। लोगों के कल्याण के लिए जितना ज्ञान आवश्यक है वैसा ज्ञान इन शास्त्रों कल्याण दृष्टि से कल्याणकारी हों। किसी को कोई दुख प्राप्त नहीं हो, कोई किसी को दुःख नहीं दे, इस प्रकार अत्यंत उदार उद्देश्य को ध्यान में रखकर 'भारतीय ज्ञान परम्परा' इस नाम से इस पाठ्यक्रम की रचना की गई है। विज्ञान शरीरारोग्य का चिंतन करता है, कला विषय मनोविज्ञान को तथा मनोविज्ञान आध्यात्मिक विज्ञान का पोषण करता है। विज्ञान साधना स्वरूप और सुखोपभोग साध्य है। अतः निःसंदेह रूप से कहा जा सकता है कि कला विषय शाखा विज्ञान से भी श्रेष्ठ है। लोग कला को छोड़कर विज्ञान से सुख नहीं प्राप्त कर सकते हैं परंतु विज्ञान को छोड़कर कला से सुख को अवश्य प्राप्त कर सकते हैं।

यह संस्कृत व्याकरण का पाठ्यक्रम छात्रानुकूल, ज्ञानवर्धक, लक्ष्यसाधक और पुरुषार्थ साधक है ऐसा मेरा मानना है।

इस पाठ्यक्रम के निर्माण में जिन हिताभिलाषी, विद्वान, उपदेष्टा, पाठलेखक, त्रुटिसंशोधक और मुद्रणकर्ता ने साक्षात् या परोक्षरूप से सहायता की, उनको संस्थान पक्ष से हार्दिक कृतज्ञता ज्ञपित करते हैं, रामकृष्ण मिशन-विवेकानंद विश्वविद्यालय के कुलपति श्रीमान् स्वामी आत्मप्रियानन्द जी का विशेष रूप से धन्यवाद जिनकी अनुकूलता और प्रेरणा के बिना इस कार्य की परिसमाप्ति दुष्कर थी।

इस पाठ्यक्रम के अध्येताओं का विद्या से कल्याण हो, सफल हो, विद्वान हो, सज्जन हो, देशभक्त हो, समाज सेवक हो ऐसी हमारी हार्दिक इच्छा है।

अध्यक्ष
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

आप से दो बातें

निदेशकीय वाक्

प्रिय पाठक,

'भारतीय ज्ञान परम्परा' पाठ्यक्रम को पढ़ने की इच्छा से उत्साहित भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुरागी और उपासकों का हार्दिक स्वागत करते हैं। अत्यधिक हर्ष का विषय है, की गुरुकुलों में पढ़ाये जाने वाला पाठ्यक्रम हमारे राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के पाठ्यक्रम में भी सम्मिलित किया गया है। आशा है कि लम्बे समय से हमारी संस्कृति से जो दूरी थी वह अब समाप्त हो जाएगी। हिन्दू, जैन, बौद्धों के धार्मिक, आध्यात्मिक और काव्यादि वाङ्मय प्रायः संस्कृत में लिखा हुआ है। इस 24 करोड़ मनुष्यों के प्रिय विषयों की भूमिका के माध्यम से प्रस्तुत प्रवेश योग्यता के द्वारा और मन को प्रसन्न करने के लिए माध्यमिक स्तर और उच्चतर माध्यमिक स्तर में कुछ विषय पाठ के माध्यम से सम्मिलित किए गए हैं। जैसे आंग्ल, हिन्दी आदि भाषा ज्ञान के बिना उस भाषा के लिखे गए माध्यमिक स्तरीय ग्रंथ पढ़ने में और समझने में सक्षम नहीं हो सकते हैं, वैसे ही यहाँ पर प्रारम्भिक संस्कृत को नहीं जानते तो इस पाठ्यक्रम को जानने में समर्थ नहीं हो सकते हैं। अतः प्रारम्भिक संस्कृत तथा हिन्दी भाषा के जानकार छात्र यहाँ इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के अधिकारी हैं ऐसा जानना चाहिए।

गुरुकुलों में अध्ययन करने वाले छात्र आठवीं कक्षा तक जितना अपनी परंपरा से अध्ययन करें। नौंवीं, दसवीं, कक्षा और ग्यारहवीं तथा बारहवीं कक्षा तक भारतीय ज्ञान परम्परा के इस पाठ्यक्रम का निष्ठा से नियमित अध्ययन करें। इस पाठ्यक्रम से विद्यार्थी उच्च शिक्षा के लिए योग्य होंगे।

संस्कृत के विभिन्न शास्त्रों में किया गया कठिन परिश्रम विद्वान्, प्राध्यापक, शिक्षक और शिक्षाविद् इस पाठ्यक्रम का प्रारूप रचना में, विषय निर्धारण के लिए विषय परिमाण निर्धारण में विषय प्रकट करने का भाषा स्तर निर्णय में और विषय पाठ लिखने में संलग्न हैं। अतः इस पाठ्यक्रम का सस्तर उन्नत होना है।

संस्कृत व्याकरण की यह स्वाध्याय सामग्री आपके लिए पर्याप्त सुबोध रुचिकर आनन्दरस को देने वाली, सौभाग्य देने वाली धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, उपयोगी रहेगी ऐसी हम आशा करते हैं। इस पाठ्यक्रम का प्रधान लक्ष्य है कि भारतीय ज्ञान परम्परा का शैक्षणिक क्षेत्रों में विशिष्ट और योग्य स्थान स्वीकृत होना चाहिए। वह लक्ष्य इस पाठ्यक्रम का प्रधान लक्ष्य है की भारतीय ज्ञान परम्परा का शैक्षणिक क्षेत्रों में विशिष्ट और योग्य स्थान स्वीकृत होना चाहिए। वह लक्ष्य इस पाठ्यक्रम के माध्यम से पूर्ण होगा, ऐसा हमारा दृढ़ विश्वास है। पाठक अध्ययनकाल में यदि मानते हैं कि इस अध्ययन सामग्री में पाठ के सार में जहाँ संशोधन, परिवर्तन और परिवर्धन संस्कार चाहते हैं, उन सभी के प्रस्तावों का हम स्वागत करते हैं। इस पाठ्यक्रम को फिर भी और अधिक प्रभावी, उपयोगी और सरल बनाने में आपके साथ हम हमेशा तत्पर हैं। सभी अध्येताओं के अध्ययन में सफलता और जीवन में सफलता के लिए और कृतकृत्य के लिए हमारे आशीर्वचन-

किं बाहुना विस्तरेण। अस्माकं गौरववाणीं जगति विरलाम् सर्वविद्याया लक्ष्यभूताम् एव उद्धरामि॥

सर्वेऽत्र सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्।
दुर्जनः सज्जनो भूयात् सज्जनः शान्तिमाप्नुयात्।
शान्तो मुच्येत बन्धेभ्यो मुक्तश्चान्यान् विमोचयेत्॥
स्वस्त्यस्तु विश्वस्य खलः प्रसीदतां ध्यायन्तु भूतानि शिवं मिथो धिया।
मनश्च भद्रं भजतादधोक्षजे आवेश्यतां नो मतिरप्य हैतुकी॥

निदेशक

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

आप से दो बातें

समन्वयक वचन

प्रिय जिज्ञासुओं,

ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु सह वीर्य करवावहै। तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

परम्परा को आधार मानकर यह प्रार्थना कि हमारा अध्ययन विघ्नों से रहित हो। अज्ञान का नाश करने वाला तेजस्वि हो। द्वेष भावना का नाश हो। विद्या लाभ के द्वारा सभी कष्टों की शान्ति हो।

भारतीय ज्ञान परम्परा इस पाठ्यक्रम के अङ्गभूत यह पाठ्यक्रम उच्चतर माध्यमिक कक्षा के लिए निर्धारित किया गया है। इस पाठ्यक्रम की अध्ययन सामग्री आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मैं परम हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ। जो सरल संस्कृत तथा हिन्दी भाषा को जानता है, वह इस अध्ययन में समर्थ है।

संस्कृत व्याकरण का अध्ययन स्तर के अनुसार होता है। इसलिए स्तरों के प्रत्येक पर्व का आरोहण क्रम के अनुसार ही होना चाहिए। अतः पाणिनीय अष्टाध्यायी का विद्वानों ने भिन्न क्रमानुसार व्याख्या किया है। यहाँ भी उसी प्रक्रिया का क्रम है। उसी क्रम को स्वीकार कर यह अध्ययन सामग्री सोपान, पर्व आदि के क्रम में निर्मित है। एक भाग माध्यमिक और अन्य भाग उच्चतर माध्यमिक कक्षा में है। इससे पाणिनीय तंत्र में प्रवेश के लिए छात्र की योग्यता बढ़ती है।

माध्यमिक कक्षा में दिया हुआ पाणिनीय व्याकरण विषय भी अत्यंत उपकारक है। यह सामग्री पाणिनीय व्याकरण के श्रद्धा सहित अध्ययन में प्रवेश के लिए और मन को शांति देने वाली है। इस ग्रंथ के आकार पर नहीं जाना चाहिए और न इससे भय होना चाहिए अपितु गम्भीर रूप से अध्ययन करना चाहिए।

सम्पूर्ण पाठ्य पुस्तक तीन भागों में विभक्त है। इसके अध्ययन से छात्र पाणिनीय व्याकरण के मूलभूत ज्ञान को प्राप्त करेंगे।

पाठक पाठों को अच्छी तरह से पढ़कर पाठ में आए प्रश्नों के उत्तरों पर स्वयं विचार कर अंत में दिए हुए प्रश्नों के उत्तरों को देखें, और उन उत्तरों को अपने उत्तरों से मिलाएं। प्रत्येक पत्र में दिए हुए रिक्त स्थान पर टिप्पणी करना चाहिए। पाठ के अंत में दिए प्रश्नों के उत्तरों का निर्माण करके परीक्षा के लिए तैयार हो जाएँ। अध्ययन काल में किसी भी कठिनता का अनुभव करते हैं, तो अध्ययन केन्द्र में किसी भी समय जाकर के समस्या के समाधान के लिए आचार्य के समीप जाएँ। या राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के साथ ई-पत्र द्वारा सम्पर्क करें। वेबसाइट: www.nios.ac.in इस प्रकार से है।

ये पाठ्य विषय आपके ज्ञान को बढ़ाए, परीक्षा में सफलता को प्राप्त करवाए, रुचि बढ़ाए, मनोरथ पूर्ण करे, ऐसी कामना करते हैं।

अज्ञानान्धकारस्य नाशाय ज्ञानज्योतिषः दर्शनाय च इयं में हार्दिकी प्रार्थना

ॐ असतो मा सद् गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मामृतं गमय॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

भवत्कल्याणकामी

पाठ्यक्रम समन्वयक

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

अपने पाठ कैसे पढ़ें!

संस्कृत व्याकरण माध्यमिक स्तर की इस पाठ्य सामग्री को विशेष रूप से आपकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए निर्मित किया गया है। आप स्वतंत्र रूप से स्वयं पढ़ सकें इसलिए इसे एक प्रारूप में ढाला गया है। निम्नलिखित संकेत आपको सामग्री का सर्वोत्तम उपयोग करने का तरीका बताएंगे। दिए गए पाठों को कैसे पढ़ना है आइए, जानें

पाठ का शीर्षक : इसे पढ़ते ही आप अनुमान लगा सकते हैं कि पाठ में क्या दिया जा रहा है। इसे पढ़िए।

भूमिका : यह भाग आपको पूर्व जानकारी से जोड़ेगा और दिए गए पाठ की सामग्री से परिचित कराएगा। इसे ध्यानपूर्वक पढ़िए।

उद्देश्य : प्रस्तुत पाठ को पढ़ने के बाद आप इस पाठ के उद्देश्यों को प्राप्त करने में समर्थ हो जाएंगे। इन्हें याद कर लीजिए।

पाठगत प्रश्न : इसमें एक शब्द अथवा एक वाक्य में पूछे गए प्रश्न हैं तथा वस्तुनिष्ठ प्रश्न हैं। ये प्रश्न पढ़ी हुई इकाई पर आधारित है इनका उत्तर आपको देते रहना है। इसी से आपकी प्रगति की जाँच होगी। ये सवाल हल करते समय आप हाथ में पेंसिल रखिए और जल्दी-जल्दी सवालों के समाधान ढूँढ़ते रहिए और अपने उत्तरों की जाँच पाठ के अंत में दी गई उत्तरमाला से मिलाइए। उत्तर ठीक न होने पर इकाई को पुनः पढ़िए।

आपने क्या सीखा : यह पूरे पाठ का संक्षिप्त रूप है- कहीं यह बिंदुओं के रूप में है, कहीं आरेख के रूप में तो कहीं प्रवाह चार्ट के रूप में। इन मुख्य बिंदुओं का स्मरण कीजिए। यदि आप कुछ अपने मतलब की मिलती-जुलती नई बातें जोड़ना चाहते हैं तो उन्हें भी वहीं बढ़ा सकते हैं।

पाठांत प्रश्न : पाठ के अंत में दिए गए लघु उत्तरीय तथा दीर्घ उत्तरीय प्रश्न हैं। इन्हें आप अलग पृष्ठों पर लिखकर अभ्यास कीजिए। यदि चाहें तो अध्ययन केन्द्र पर अपने शिक्षक या किसी उचित व्यक्ति को दिखा भी सकते हैं और उन पर नए विचार ले सकते हैं।

उत्तरमाला : आपको पहले ही बताया जा चुका है इसमें पाठगत प्रश्नों और क्रियाकलापों के उत्तर दिए जाते हैं। अपने उत्तरों की जाँच इस सूची से कीजिए।

पुस्तक-1

संज्ञा परिभाषा

1. व्याकरण परिचय
2. संज्ञा प्रकरण-१
3. संज्ञा प्रकरण-२
4. संज्ञा प्रकरण-३
5. परिभाषा प्रकरण

सन्धि प्रकरण

6. अच् सन्धि में यण्-अयवायावादि सन्धि
7. अच् सन्धि में एकादेश व प्रकृतिभाव
8. हल् सन्धि में रुत्व व श्चुत्वादि सन्धि
9. हल् सन्धि में अनुस्वार सन्धि व विसर्ग सन्धि

पुस्तक-2

सुबन्त प्रकरण

10. अजन्त पुंलिङ्ग में अदन्त शब्द रूप
11. अजन्त पुंलिङ्ग में अदन्तशब्द व सर्वनाम के रूप
12. अजन्त पुंलिङ्ग में इकारादि शब्दों के रूप
13. अजन्त स्त्रीलिङ्ग में रमा व नदी के शब्द रूप
14. अजन्त नपुंसकलिङ्ग
15. हलन्त प्रकरण में लिह्-दुह् इत्यादि शब्दों के रूप
16. हलन्त प्रकरण में इदम् राजन् इत्यादि शब्दों के रूप
17. हलन्त प्रकरण में तत् इत्यादि शब्दों के रूप
18. हलन्त प्रकरण में महत् इत्यादि शब्दों के रूप

पुस्तक-3

कारक विभक्त्यर्थ प्रकरण

19. कारक सामान्य परिचय, प्रथमा कारक विभक्ति
20. द्वितीया कारक विभक्ति-1
21. द्वितीया कारक विभक्ति-2
22. कारक विभक्ति में तृतीया व चतुर्थी
23. कारक विभक्ति में पञ्चमी, षष्ठी व सप्तमी
24. उपपद विभक्ति में द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी
25. उपपद विभक्ति षष्ठी और सप्तमी

कृदन्त प्रकरण

26. कृदन्त प्रकरण
27. पूर्वकृदन्त प्रकरण-1
28. पूर्वकृदन्त प्रकरण-2
29. उत्तरकृदन्त प्रकरण

उपपद विभक्त्यर्थ प्रकरण

उपपद विभक्ति में द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी व पञ्चमी विभक्ति।

संस्कृत व्याकरण

माध्यमिक कक्षा

प्रथम स्वाध्याय सोपान

क्रम. सं.	विषय सूची	पृष्ठ संख्या
	सुबन्त प्रकरण	
10.	अजन्त पुल्लिङ्ग में अदन्त शब्द रूप	1-14
11.	अजन्त पुल्लिंग में अदन्त शब्दों तथा सर्वनामों के रूप	15-30
12.	अजन्त पुल्लिंग में इकारादि शब्दों के रूप	31-46
13.	अजन्त स्त्रीलिंग में रमा और नदी शब्द के रूप	47-62
14.	अजन्त नपुंसकलिंग	63-76
15.	हलन्त प्रकरण में लिह् दुह् इत्यादि शब्द रूप	77-96
16.	हलन्त प्रकरण में इदम् राजन् इत्यादि शब्दों के रूप	97-124
17.	हलन्त प्रकरण में तत् इत्यादि शब्दों के रूप	125-146
18.	हलन्त प्रकरण में महत् इत्यादि शब्दों के रूप	147-168

10

अजन्त पुल्लिङ्ग में अदन्त शब्द रूप

ध्यान दें:

हम मन के भावों को प्रकट करने के लिए वाक्यों का प्रयोग करते हैं। वाक्य का मतलब होता है पदों का समूह। संस्कृत भाषा में पद के दो भेद होते हैं। 1 - सुबन्त पद 2- तिङन्त पद । जिन शब्दों के अन्त में सुप् प्रत्यय जुड़े होते हैं वे शब्द सुबन्त कहे जाते हैं तथा जिनके अन्त में तिङ् प्रत्यय होते हैं वे तिङन्त कहलाते हैं इसकी चर्चा हमने सुप्तिङन्त पदम् की है। उनमें भी सुप् प्रत्यय प्रातिपदिक से होते हैं। प्रातिपदिक शब्द दो प्रकार के होते हैं - 1. अजन्त शब्द, 2. हलन्त शब्द के भेद से। जिन शब्दों के अन्त में अच् प्रत्याहार होते हैं वे अजन्त शब्द कहलाते हैं तथा जिन शब्दों के अन्त में हल् प्रत्याहार होता है। वह हलन्त शब्द कहलाता है। उनमें भी लिंग के भेद से अजन्त शब्द और हलन्त शब्द तीन-तीन प्रकार के होते हैं। जैसे की अजन्त पुल्लिङ्ग, अजन्त स्त्रीलिंग, अजन्त नपुंसकलिंग शब्द, हलन्त पुल्लिङ्ग शब्द, हलन्त स्त्रीलिंग शब्द, हलन्त नपुंसकलिंग शब्द। इस पाठ में अजन्त पुल्लिङ्ग शब्दों का रूप साधन प्रक्रिया का विवेचन करते हैं। सुप् प्रत्यय प्रातिपदिक से होते हैं। अतः प्रातिपदिक क्या होता है इसकी जिज्ञासा होगी। अतः भगवान् पाणिनि ने प्रातिपदिक संज्ञा करने वाले दो सूत्र बनाए। प्रातिदिक व्युत्पन्न और अव्युत्पन्न के भेद से दो प्रकार का होता है। उनमें व्युत्पन्न शब्द वे होते हैं, जिनके व्याकरण प्रक्रिया के द्वारा प्रकृति प्रत्यय आदि का विभाजन किया जा सकता है। जैसे - पाचकः इत्यादि शब्द जिन शब्दों का व्याकरण प्रक्रिया के द्वारा प्रकृति प्रत्यय आदि का विभाजन नहीं किया जा सकता है वे अव्युत्पन्न शब्द कहलाते हैं। जैसे - चैत्र, मैत्र इत्यादि शब्द। कुछ शब्द ऐसे भी होते हैं जो व्युत्पन्न और अव्युत्पन्न दोनों होते हैं। जैसे - राम इत्यादि।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे-

- प्रातिपदिक का अच्छे से परिचय प्राप्त कर पाने में;
- सुबन्त शब्दों का रूप जान पाने में;
- विभक्ति का परिचय जानकर पाणिनि व्याकरण में प्रवेश प्राप्त कर पाने में;
- अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों का रूप जान पाने में;

पाठ-10

अजन्त पुल्लिङ्ग में अदन्त शब्द रूप

ध्यान दें:

- राम शब्द की रूप सिद्धि कर पाने में;
- सूत्र की व्याख्या कैसे की जाती है, यह जान पाने में;
- स्वयं से सूत्रों की व्याख्या कर पाने में;
- छोटे से सूत्र का अर्थ कैसे बड़ा हो जाता है जान पाने में सक्षम होंगे।

10.1 अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्॥ (1.2.45)

सूत्रार्थ - धातु प्रत्यय और प्रत्ययान्त को छोड़कर अर्थ वाले शब्द स्वरूप की प्रातिपदिक संज्ञा होती है।

सूत्र व्याख्या - यह संज्ञा सूत्र है। इस सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा की जाती है। इस सूत्र में चार पद हैं। अर्थवत्, अधातुः, अप्रत्ययः, प्रातिपदिकम् यह इसका पदच्छेद होगा। अर्थवत् प्रथमा विभक्ति का एकवचनान्त पद है, अधातुः भी प्रथमा विभक्ति का एकवचनान्त पद है, अप्रत्ययः भी प्रथमा का कवचनान्त पद है, प्रातिपदिकम् प्रथमैकवचनान्त पद है। अर्थ को पूर्ण करने के लिए शब्द स्वरूप इस विशेष्य पद का अध्याहार कर लिया जाता है। अर्थः अस्यास्तीति अर्थवत्। न धातुः अधातुः नं तत्पुरुष समास, इस का धातु से भिन्न ऐसा अर्थ होता है। न प्रत्ययः इति अप्रत्ययः नंतत्पुरुषसमासः। इस पद की दो बार आवृत्ति कर ली जाएगी। उनमें से पहले अप्रत्यय का अर्थ होगा प्रत्यय से भिन्न। द्वितीय अप्रत्ययः का अर्थ होगा प्रत्ययान्त से भिन्न।

इस प्रकार से सूत्रार्थ सम्पन्न होगा -

धातु भिन्न प्रत्यय और प्रत्ययान्त से भिन्न जो अर्थ वाला शब्द स्वरूप है वह प्रातिपदिक संज्ञक होता है। अव्युत्पन्न शब्दों की प्रातिपदिक संज्ञा इस सूत्र से होगी।

उदाहरण - इस सूत्र से अव्युत्पन्न शब्द के पक्ष में दशरथ पुत्र वाचक राम शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा होती है। राम शब्द न धातु है न ही प्रत्यय है ना कि प्रत्ययान्त। परन्तु राम शब्द का अर्थ है। इसलिए प्रत्यय भिन्न प्रंत्ययान्त भिन्न धातु भिन्न अर्थवान होने के कारण राम शब्द की इस सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा होती है। तब प्रातिपदिक संज्ञक राम से प्रथमा आदि की विवक्षा में स्वादि प्रत्यय होंगे।

परन्तु जब राम शब्द में रमु क्रीडायां धातु से घञ् प्रत्यय करने के उपरान्त राम शब्द सिद्ध होगा। इस पक्ष में राम शब्द के घञ् प्रत्ययान्त होने के कारण पूर्व सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा नहीं हो सकती है। तब महर्षि पाणिनि ने द्वितीय सूत्र बनाया।

10.2 - कृत्तद्धितसमासाश्च 1.2.46

सूत्रार्थ - कृत् प्रत्ययान्त तद्धितप्रत्ययान्त तथा समास की प्रातिपदिक संज्ञा होती है।

सूत्र व्याख्या - यह संज्ञा सूत्र है। इस सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा की जाती है। इस सूत्र में दो पद हैं। कृत्तद्धितसमासाः एक पद च दूसरा पद यह सूत्र का पदच्छेद है। च यह एक अव्यय पद है। अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् इस पूर्व सूत्र से प्रातिपदिकम् इस प्रथमान्त पद की अनुवृत्ति आती है जिसे की वचनविपरिणाम करके बहुवचन कर दिया जाता है। शब्दस्वरूपाणि इस बहुवचनान्त पद का अध्याहार किया जाता है। कृत्तद्धितसमासाः यह प्रथमाबहुवचनान्त समस्त पद है। कृत् च तद्धितश्च समासश्च इति कृत्तद्धितसमासाः इस पद में इतरेतर योग द्वन्द्व समास है। कृत्तद्धितसमास वाले शब्द स्वरूप प्रातिपदिक

ध्यान दें:

संज्ञक होते हैं। यह पदों की योजना की जाती है। सूत्र में कृत् और तद्धित दोनों प्रत्यय हैं, अत: प्रत्यय ग्रहण परिभाषा से तदन्तविधि हो जाएगी। जिससे कृदन्त और तद्धितान्त यह अर्थ प्राप्त हो जाता है।

अत: कृदन्त तद्धितान्त और समास जो शब्द स्वरूप वह प्रातिपदिक संज्ञक होता है इस अर्थ का लाभ होता है। अर्थात् कृदन्त तद्धितान्त और समास प्रातिपदिक संज्ञक होते हैं।

उदाहरण - व्युत्पन्न पक्ष में उदाहरण है - राम। रमु धातु से घञ् प्रत्यय करने पर राम शब्द बनता है। घञ् प्रत्यय तिड.प्रत्यय से भिन्न होने के कारण कृदतिङ् इस सूत्र से कृत् संज्ञक है। अत: कृदन्त होने के कारण राम शब्द की इस सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा होती है।

तद्धितान्त का उदाहरण है दाशरथि: दशरथ शब्द से इञ् प्रत्यय करने पर दाशरथि शब्द बनता है। इञ् प्रत्यय के तद्धितसंज्ञक होने के कारण दाशरथि शब्द तद्धितान्त है। अत: दाशरथि शब्द का इस सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा होती है।

समास का उदाहरण है राजपुरुष: । राज्ञ: पुरुष: इस विग्रह में समास करने पर राजपुरुष शब्द की निष्पत्ति होती है। राजपुरुष यह शब्द समस्त है। अत: राजपुरुष शब्द की इस सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा होती है।

10.3 - प्रत्यय: 3.1.1

सूत्रार्थ - पञ्चम अध्याय के समाप्ति तक यह अधिकार है।

सूत्र व्याख्या - यह अधिकार सूत्र है। इस सूत्र में एक पद है। प्रत्यय: यह प्रथमान्त पद है। तृतीय अध्याय का यह पहला सूत्र है। पञ्चम अध्याय के समाप्ति तक इस सूत्र का अधिकार रहेगा। अत: इस सूत्र से लेकर पञ्चम अध्याय के समाप्ति तक जो भी विधान किया जाता है वह प्रत्यय संज्ञक होता है। यह इस सूत्र का अधिकारलभ्य अर्थ है। अर्थात् इस सूत्र के अधिकार में पठित सूत्रों में प्रत्यय: इस पद का अधिकार रहेगा।

10.4 -परश्च 3.1.2

सूत्रार्थ - पञ्चम अध्याय के समाप्ति पर्यन्त यह अधिकार रहेगा।

सूत्र व्याख्या - यह अधिकार सूत्र। इस सूत्र में दो पद हैं। पर: च यह पदच्छेद है। पर: यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। च यह अव्यय पद है। तृतीय अध्याय का यह दूसरा सूत्र है। पञ्चम अध्याय के समाप्ति तक इस सूत्र का अधिकार है। जिससे इस सूत्र के अधिकार में पढ़े गये सूत्रों में पर: इस पद का अधि कार रहेगा। अत: इस अधिकार में पढ़े गये सूत्रों से जिससे प्रत्ययों का विधान किया होता है, उससे पर (बाद) में ही प्रत्यय होंगे यह सूत्र का तात्पर्य अर्थ है।

10.5 - ङ्याप्प्रातिपदिकात् ॥ 4.1.1

सूत्रार्थ - पञ्चम अध्याय की समाप्ति तक यह अधिकार है। पञ्चम अध्याय के समाप्ति तक जो प्रत्यय विधान किये जाते हैं। वे ङ्यन्त आबन्त और प्रातिपदिक से परे हो यह सारांश है।

सूत्र व्याख्या - यह अधिकार सूत्र है। इस सूत्र में एक पद हैं। ङ्याप्प्रातिपदिकात् यह पंचमी विभक्ति का एकवचनान्त पद है। ङी च आप् च प्रातिपदिकं च इति समाहार द्वन्द्व ङ्याप्प्रातिपदिकम् तस्मात् ङ्याप्प्रातिपदिकात् यह समास विग्रह है। अनुबन्धरहित ङी इस पद से ङीप् ङीष् ङीन् इन तीनों स्त्री प्रत्ययों

ध्यान दें:

का ग्रहण होता है। अनुबन्धरहित आप् इस पद से टाप् डाप् चाप् इन तीनों स्त्री प्रत्ययों का ग्रहण होता है। प्रत्यय ग्रहण परिभाषा की सहायता से तदन्त विधि होने के कारण ङी के द्वारा ङ्यन्त आप् के द्वारा आबन्त यह अर्थ प्राप्त हो जाता है। अतः पंचम अध्याय के समाप्ति पर्यन्त प्रत्येक सूत्रों में ङ्यन्तात् आबन्तात् प्रातिपदिकात् इन तीन पदों का अधिकार होता है।

पाठगत प्रश्न-1

1. प्रातिपदिक संज्ञा करने वाला सूत्र कौन-सा है?
2. कृतादि प्रत्ययान्तों की प्रातिपदिक संज्ञा करने वाला सूत्र कौन-सा है?
3. प्रत्ययः यह किस प्रकार का सूत्र है?
4. प्रत्ययः इस सूत्र का अधिकार कहां तक है?
5. ङ्याप्प्रातिपदिकात् यह किस प्रकार का सूत्र है?
6. राम शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा किस सूत्र से है?

10.6 - स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् 4.1.2

सूत्रार्थ - ङ्यन्त आबन्त और प्रातिपदिक से परे स्वादिप्रत्यय होते हैं।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। यह एक पदात्मक सूत्र है।

स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङ सिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् यह प्रथमा विभक्ति का एकवचनान्त पद है। ङ्याप्प्रातिपदिकात् प्रत्ययः परश्च इन तीनों सूत्रों का अधिकार है। अतः इस सूत्र की पद योजना इस प्रकार से होगी- ङ्याप्प्रातिपदिकात् प्रत्ययः परश्च स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप्। इस सूत्र का समास विग्रह है - सुश्च औश्च जश्च अम्च औट्च शश्च टाच भ्यांच भिश्च ङेश्च भ्यांच भ्यश्च ङसिश्च भ्यांच भ्यश्च ङश्च ओश्च आंच ङिश्च ओश्च सुप्च इति स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् यहां समाहारद्वन्द्व समास है। ङ्याप्प्रातिपदिकात् सूत्र में ङी और आप् प्रत्यय हैं। अतः प्रत्ययग्रहण परिभाषा से ङ्यन्त और आबन्त की प्राप्ति होती है।

इस प्रकार सूत्रार्थ सम्पन्न होगा - ङ्यन्त आबन्त और प्रातिपदिक से सु औ जस् अम् औट् शस् टा भ्याम् भिस् ङे भ्याम् भ्यस् ङसि भ्याम् भ्यस् ङस् ओस् आम् ङि ओस् सुप् ये प्रत्यय पर में होते हैं। अर्थात् जो शब्द स्वरूप ङीप्रत्ययान्त हो, आप् प्रत्ययान्त हो प्रातिपदिक हो उससे सु औ जस् अम् औट् शस् टा भ्याम् भिस् ङे भ्याम् भ्यस् ङसि भ्याम् भ्यस् ङस् ओस् आम् ङि ओस् सुप् ये प्रत्यय पर में होते हैं। उनकी प्रत्यय संज्ञा भी होती है। सु आदि में है जिसके वे स्वादि हैं।

ये इक्कीस प्रत्यय स्वादि कहलाते हैं।

सु औ जस् यह प्रथमा विभक्ति, अम् औट् शस् द्वितीया विभक्ति, टा भ्याम् भिस् तृतीया विभक्ति, ङे भ्याम् भ्यस् चतुर्थी, ङसि भ्याम् भ्यस् पञ्चमी, ङस् ओस् आम् षष्ठी, ङि ओस् सुप् सप्तमी । यह प्रथमा इत्यादि संज्ञाएं पाणिनि द्वारा नहीं रचित हैं। फिर भी पूर्वतन आचार्यो के व्यवहार से वैसे ही स्वीकार किये गये हैं।

ध्यान दें:

उदाहरण - अव्युत्पन्न पक्ष में राम शब्द अर्थवान् है। अतः अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् इस सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा होती है। व्युत्पन्नपक्ष में राम शब्द घञन्त है। अतः कृदन्त है। अतः कृत्तद्धितसमासाश्च इस सूत्र से प्रतिपदिक संज्ञा होती है। अतः प्रत्ययः परश्च ङ्याप्प्रातिपदिकात् इन तीनों सूत्रों के अधिकार करके सु औ जस् अम् औट् शस् टा भ्याम् भिस् ङे भ्याम् भ्यस् ङसि भ्याम् भ्यस् ङस् ओस् आम् ङि ओस् सुप् ये 21 प्रत्यय प्राप्त हुए।

यहां राम शब्द से प्रकृत सूत्र से 21 प्रत्यय विधान किये जाते हैं। वे प्रत्यय राम शब्द से तुरन्त बाद में ही रखे जाएंगे। राम शब्द से एक बार में एक ही प्रत्यय लगाया जा सकता है, एक साथ 21 प्रत्यय तत्काल बाद में प्राप्त होगे जो कि एक साथ रखना असम्भव है। अतः एक एक प्रत्यय पर्याय से प्रयोग किये जा सकते हैं। अतः कौन-सा प्रत्यय किस प्रयोजन के लिए प्रयोग करना चाहिए। इसके निर्णय के लिए अग्रिम तीन सूत्र आते हैं।

10.07 - सुपः ॥ 1.04.102

सूत्रार्थ - सुप् प्रत्ययों के तीन तीन त्रिक क्रमशः एकवचन द्विवचन बहुवचन संज्ञक होते हैं।

सूत्र व्याख्या - यह संज्ञा सूत्र है। इस सूत्र में सिर्फ एक पद है सुपः यह पद षष्ठी बहुवचनान्त है। इस सूत्र में तान्येकवचनद्विवचनबहुवचनान्येकशः इस पूर्व सूत्र से प्रथमा बहुवचनान्त एकवचन द्विवचन बहुवचनानि तथा अव्यय पद एकशः की अनुवृत्ति होती है। तिङस्त्रीणि त्रीणि प्रथममध्यमोत्तमाः इस सूत्र से प्रथमा बहुवचनान्त त्रीणि-त्रीणि इन दो पदों की अनुवृत्ति होती है। इस सूत्र का समास विग्रह इस प्रकार होगा - एकवचनंच द्विवचनंच बहुवचनंच इति इतरेतर योगद्वन्द्व समास, एकवचनद्विवचनबहुवचनानि।। कुल पदों को व्यवस्थित करके पद योजना इस प्रकार होगी सुपः त्रीणि-त्रीणि एकशः एकवचनद्विवचनबहुवचनसंज्ञकानि। एकशः पद का अर्थ है -व् प्रत्येक। सुप् का तात्पर्य है सुप् प्रत्याहार जो कि स्वजसमौट् इत्यादि सूत्र में सु से लेकर अन्तिम सुप् के पकार तक गिना जाता है। इस प्रकार सूत्र का अर्थ होगा- इक्कीस सुप् प्रत्ययों के जो प्रथमादि सप्तम्यन्त तक के तीन-तीन के समुदाय यानि त्रिक है उनकी क्रमशः एकवचन द्विवचन बहुवचन संज्ञा होती है अर्थात् - सु औ जस् ये तीन त्रिक हैं। उनमें से प्रथम सु की एकवचन संज्ञा दूसरे औ की द्विवचन संज्ञा तथा तीसरे जस् की बहुवचन संज्ञा होती है। इसी प्रकार आगे भी समझना चाहिए।

अब प्रातिपदिक राम शब्द से सु आदि त्रिक प्राप्त होने लगे-

10.8 - द्वयेकयोर्द्विवचनैकवचने ॥ 1.4.22

सूत्रार्थ - द्वित्व और एकत्व की विवक्षा में द्विवचन और एकवचन होते हैं।

सूत्र व्याख्या - यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से एकवचन और द्विवचन विधान किये जाते हैं।

द्विपदात्मक इस सूत्र में द्वयेकयोः द्विवचनैकवचने यह पदच्छेद है। द्वयेकयोः यह सप्तमीद्विवचनान्त पद है, द्विवचनैकवचने यह प्रथमा द्विवचनान्त पद है। समासविग्रह इस प्रकार होगा - द्वौ च एकश्च इति द्वयेकौ तयोः द्वयेकयोः इति इतरेतरयोगद्वन्द्वसमास। द्वित्व और एकत्व यह अर्थ होगा। द्विवचनैकवचने यह प्रथमाद्विवचनान्त पद है। द्विवचनंच एकवचनं च इति इतरेतर योग द्वन्द्व समास। अतः द्वित्व और एकत्व में द्विवचन और एकवचन होते हैं। इस प्रकार इस सूत्र का अर्थ सम्पन्न होगा - द्वित्व की विवक्षा में द्विवचन तथा एकत्व की विवक्षा में एकवचन होता है। अर्थात् जब द्वित्व संख्या की विवक्षा होगी तब द्विवचन होता है तथा जब एकत्व की विवक्षा होगी तब बहुवचन होगा।

ध्यान दें:

उदाहरण - एकत्व की विवक्षा में एकवचन का उदाहरण है राम। प्रातिपदिक संज्ञक राम से प्रथमा एकवचन की विवक्षा में प्रत्ययः परश्च ङ्याप्प्रातिपदिकात् इन तीन सूत्रों के अधिकार में पठित स्वौजसमौट् इस सूत्र से सु प्रत्यय, सु प्रत्यय के अवयव उकार की पाणिनीय प्रतिज्ञात उपदेश में विद्यमान होने के कारण उपदेशेऽजनुनासिक इत् इस सूत्र से इत् संज्ञा करने पर तस्य लोपः इस सूत्र से लोप करने के फलस्वरूप रामस् इस के सुबन्त होने के कारण सुप्तिङन्तं पदम् इस सूत्र से पदसंज्ञा करने के बाद ससजुषो रुः इस सूत्र से पदान्त सकार को रुत्व हो गया रु के उकार के पाणिनीय प्रतिज्ञात उपदेश में विद्यमान होने के कारण अनुनासिक की उपदेशेऽजनुनासिक इत् इस सूत्र से इत्संज्ञा हुई तस्य लोपः सूत्र से अदर्शन रूपी लोप करने पर राम बन गया, रेफ के उच्चारण के पश्चात् किसी अन्य वर्ण के न होने के कारण उस अभाव की विरामोऽवसानम् इस सूत्र से अवसान संज्ञा की जाती है, तब अवसान परे रहते खरवसानयोर्विसर्जनीयः इस सूत्र से रेफस्य विसर्ग करने पर रामः इस रूप की सिद्धि हो जाती है।

प्रातिपदिक संज्ञक राम शब्द से प्रथमा के द्विवचन की विवक्षा होती है। परन्तु एक बार उच्चारित शब्द केवल एक बार के ही अर्थ को बतलाता है। यह नियम है और प्रत्येकं शब्दाभिपिवेशः ऐसा महाभाष्य में भी कहा गया है। अर्थात् एक बार का उच्चारित शब्द एक ही अर्थ को बतलाता है। प्रत्येक अर्थ के लिए अलग-अलग शब्द देना चाहिए। अतः रामशब्द से प्रथमा द्विवचन की विवक्षा में राम शब्द का दो बार उच्चारण करना चाहिए। अतः द्वित्व विवक्षा में राम शब्द की दो बार आवृत्ति करने पर स्वौजसमौट् इस सूत्र से औ प्रत्यय करने पर राम राम औ इस स्थिति में-

10.9 - सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ। 1,2,64

सूत्रार्थ - एक विभक्ति के परे रहते जितने भी समान रूप में दिखाई दें। उनमें से सिर्फ एक ही अवशेष रहता है।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में तीन पद है। सूत्र का पदच्छेद होगा - सरूपाणाम्, एकशेषः, एकविभक्तौ। सरूपाणाम् यह षष्ठी बहुवचनान्त पद है। समास - समानं रूपं येषां ते स्वरूपाः तेषां सरूपाणाम् बहुव्रीहि समास। एकशेषः यह प्रथमा बहुवचनान्त पद है।

एकश्चासौ शेषः एकशेषः कर्मधारय समास।। एकविभक्तौ यह सप्तम्यन्त पद है जिसका समास होगा - एका चासौ विभक्तिश्च एकविभक्तिः तस्याम् एकविभक्तौ कर्मधारय समास। इसका अर्थ है समान विभक्ति में। वृद्धो यूना तल्लक्षणश्चेदेव विशेषः इस सूत्र से एव इस अव्यय पद की अनुवृत्ति होती है। पदों की योजना इस प्रकार होगी - एकविभक्तौ सरूपाणाम् एकः एव शिष्यते । इससे यह अर्थ प्राप्त होगा की - एक विभक्ति के परे रहते समान रूप वाले शब्दों में से सिर्फ एक ही अवशेष रहता है अन्य का लोप हो जाता है।

उदाहरण - रामौ।

सूत्रार्थ समन्वय - प्रातिपदिकसंज्ञक रामशब्द से प्रथमाद्विवचन की विवक्षा में प्रत्ययः परश्च ङ्याप्प्रातिपदिकात् इन तीन सूत्रों के अधिकार में पठित स्वौजसमौट् - इस सूत्र से इक्कीस प्रत्यय प्राप्त होते हैं।

तब सुपः इस सूत्र से सातों त्रिकों की क्रमशः एकवचन द्विवचन बहुवचन संज्ञाएं हुई। तत्पश्चात् प्रथमा के द्विवचन की विवक्षा में द्वयेकयोर्द्विवचनैकवचने सूत्र से द्विवचनसंज्ञक औ प्रत्यय करने पर राम राम औ हो गया। अब सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ इस सूत्र से समान विभक्ति के परे रहते समान रूप वालों के एक शेष करने पर राम औ यह स्थिति बन गयी। यहां पर अकार के बाद एच् प्रत्याहार के औकार के होने के कारण वृद्धिरेचि इस सूत्र से अकार और औकार के मध्य में वृद्धि प्राप्त हुई। उसे रोककर

ध्यान दें:

प्रथमयो: पूर्वसवर्ण: इस सूत्र से अक् प्रत्याहार से प्रथमा या द्वितीया से सम्बन्धित अच् प्रत्याहार के परे रहते पूर्व और पर के स्थान पर पूर्ववर्ण अकार का दीर्घ रूप आकार प्राप्त हुआ। उस सवर्ण दीर्घ का नादिचि इस सूत्र से अवर्ण से इच् प्रत्याहार के परे रहते पूर्ववर्ण के अकार का दीर्घ का निषेध हो जाता है। तत्पश्चात् पुन: वृद्धिरेचि सूत्र से पूर्व और पर के स्थान पर वृद्धि एकादेश औकार करने पर रामौ यह रूप सिद्ध होगा।

विशेष व्याख्या - समान विभक्ति के परे रहते यदि समान रूप होंगे तभी इस सूत्र की प्रवृत्ति होगी। अन्यथा नहीं होगी। जैसे मातृशब्द दो हैं। एक का अर्थ है माता जिसका रूप माता मातरौ मातर: इस प्रकार चलेगा। दूसरा मातृशब्द परिमाणवाचक है, जिसके रूप होंगे माता मातारौ मातार: इत्यादि। इन दोनों मातृशब्दों के मध्य में द्वन्द्व समास करने पर एकशेष नहीं होगा। क्योंकि जननी वाचक मातृशब्द का औ विभक्ति में मातरौ रूप होगा। लेकिन परिमाणवाचक मातृशब्द का औ विभक्ति में मातारौ यह रूप होगा। अत: इन दोनों शब्दों का औ इत्यादि समान विभक्तियों में समान रूप नहीं है, अत: इन दोनों में एक शेष नहीं होगा।

पाठगत प्रश्न-2

7. स्वौजस इस सूत्र की व्याख्या करें।
8. स्वादि प्रत्यय करने वाला सूत्र कौन-सा है?
9. विभक्ति संज्ञा करने वाला सूत्र कौन-सा है?
10. एकवचन संज्ञा विधायक सूत्र कौन है?
11. सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ इस सूत्र का अर्थ लिखें?
12. सुप: इस सूत्र का अर्थ लिखें।

10.10 - बहुषु बहुवचनम् 1.4.21

सूत्रार्थ - बहुत्व की विवक्षा में बहुवचन होता है।

सूत्र व्याख्या - यह संज्ञा सूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। बहुषु यह सप्तमी बहुवचनान्त पद है। इसका बहुत्व की विवक्षा में यह अर्थ है। बहुवचनम् यह यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। अत: सूत्रार्थ होगा। बहुत्व की विवक्षा में बहुवचन होता है। बहु का अर्थ है दो से अधिक।

उदाहरण - रामा:।

रामशब्द से प्रथमा बहुवचन की विवक्षा में बहुषु बहुवचनम् इस सूत्र की सहायता से स्वौजसमौट् इस सूत्र से जस् प्रत्यय करने पर राम राम राम जस् हुआ। इस स्थिति में अग्रिम सूत्र प्रवृत्त होगा।

10.11 - चुटू॥ 1.3.7॥

सूत्रार्थ - प्रत्यय के आदि में स्थित चु और टु की इत्संज्ञा होती है।

सूत्र व्याख्या - यह संज्ञा सूत्र है। इस सूत्र में एक पद है। चुटू यह प्रथमा द्विवचनान्त पद है।

ष: प्रत्ययस्य इस सूत्र से प्रत्ययस्य यह षष्ठ्यन्त पद अनुवर्तित होता है। आर्दिटुिडव: इस सूत्र से

ध्यान दें:

आदिः यह प्रथमान्त पद अनुवर्तित होता है। उपदेशेऽजनुनासिक इत् इस सूत्र से इत् इस प्रथमान्त पद की अनुवृत्ति होती है। पद योजना इस प्रकार होगी- प्रत्ययस्य आदिः चुटू इत्।

चुश्च टुश्च इतरेतरयोगद्वन्द्वः चुटू। चुः से चवर्ग टुः से टवर्गीय विवक्षित है। आदिः यह पद चुटू इस पद में द्विवचनान्त के रूप में अन्वित होता है। अतः सूत्रार्थ होगा प्रत्ययस्य आदि चुटू इतौ स्तः। अर्थात् प्रत्यय के आदि में स्थित चवर्ग और टवर्ग की इत् संज्ञा होती है।

उदाहरण - राम शब्द से प्रथमा बहुवचन की विवक्षा में जस् प्रत्यय करने पर राम जस् यह स्थिति हो जाती है। जस् यह एक प्रत्यय है तथा जकार उसके आदि में है। जो कि चवर्गीय वर्ण है। अतः इस सूत्र से इत्संज्ञा और तस्य लोपः इस सूत्र से लोप करने पर राम अस् यह बनेगा। तब अगला सूत्र लगेगा।

10.12 विभक्तिश्च॥ 1.4.103॥

सूत्रार्थ - सुप् और तिङ् विभक्ति संज्ञक होते हैं।

सूत्र व्याख्या - यह संज्ञा सूत्र है। द्विपदात्मक यह सूत्र है। विभक्तिः च यह सूत्र का पदच्छेद है। विभक्तिः यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। च यह अव्यय पद है। सुपः यह सम्पूर्ण षष्ठ्यन्त सूत्र अनुवर्तित होता है। तिङस्त्रीणि त्रीणि प्रथममध्यमोत्तमाः इस सूत्र से तिङ्ः इस षष्ठ्यन्त पद की अनुवृत्ति होती है। सुप् और तिङ् विभक्ति संज्ञक होते हैं। यह सूत्रार्थ सम्पन्न होता है। इस प्रकार इस सूत्र से इक्कीस सुप् प्रत्ययों का तथा अट्ठारह तिङ् प्रत्ययों की विभक्ति संज्ञा होती है। यह सूत्रार्थ फलित होगा।

विशेष विचार - उनमें सु औ जस् इत्यादि त्रिकों की प्रथमादि संज्ञाएं प्राचीनों द्वारा की गयी हैं।

पाणिनि से पूर्ववर्ती आचार्य व्याकरण में व्यवहार के लिए प्रथमा आदि संज्ञाएं दी थी। वे ही नाम यहां भी व्यवहार में लिए जाते हैं। अर्थात् सु औ जस् यह प्रथमा विभक्ति, अम् औट् शस् यह द्वितीया विभक्ति, टा भ्याम् भिस् यह तृतीया विभक्ति, ङे भ्याम् भ्यस् चतुर्थी विभक्ति, ङसि भ्याम् भ्यस् पंचमी विभक्ति, ङस् ओस् आम् षष्ठी विभक्ति, ङि ओस् सुप् सप्तमी विभक्ति। इत्यादि नाम हैं।

उदाहरण - राम शब्द से प्रथमा बहुवचन की विवक्षा में जस् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, राम अस् यह स्थिति हुई। राम अस् में जस् ये सुप् प्रत्यय है। अतः प्रस्तुत सूत्र से उसकी विभक्ति संज्ञा हो जाएगी। अब जस् प्रत्यय के अन्तिम सकार की हलन्त्यम् सूत्र से इत्संज्ञा प्राप्त हुई तब अगला सूत्र प्रवृत्त होता है।

10.12 - न विभक्तौ तुस्माः॥ 1.3.4

सूत्रार्थ - विभक्ति में स्थित तवर्ग सकार और मकार इत्संज्ञक नहीं होते हैं।

सूत्र व्याख्या - यह निषेध करने वाला सूत्र है। इस सूत्र में तीन पद हैं। न यह अव्यय पद है, विभक्तौ सप्तम्येकवचनान्त है। तुस्माः प्रथमाबहुवचनान्त है। उपदेशेऽजनुनासिक इत् इस सूत्र से इत् इस प्रथमान्त पद की अनुवृत्ति होती है। पद योजना होगी - विभक्तौ तुस्माः इत् न। समास विग्रह - तुश्च स् च मश्च इतरेतर योग द्वन्द्व समास तुस्माः, तु इस पद के द्वारा तवर्गीय वर्ण विवक्षित है। इत् इस पद का प्रथमा बहुवचन में विभक्ति विपरिणाम करने पर इतः यह पद का लाभ हो जाता है, जिसे तुस्माः पद के साथ अन्वित कर दिया जाता है। विभक्तौ इस पद का अर्थ है विभक्ति में स्थित। इस प्रकार इस सूत्र का अर्थ होगा विभक्तियों में विद्यमान तवर्गस्थवर्ण, सकार मकार इत् संज्ञक नहीं होते हैं। इस सूत्र से विभक्ति संज्ञक जस्, अम्, शस्, भ्याम्, भिस्, भ्यस्, ङस् ओस् आम् प्रत्ययों के सकार और मकार की जो इत्संज्ञा हलन्त्यम् सूत्र से प्राप्त थी। उसका इस सूत्र से निषेध हो जाता है।

ध्यान दें:

उदाहरण – रामाः

सूत्रार्थ समन्वय – राम अस् इस परिस्थिति में हलन्त्यम् सूत्र से मकार की इत् संज्ञा प्राप्त होती है। उसका इस सूत्र से निषेध करने के कारण राम अस् रह जाता है। तत्पश्चात् अगला सूत्र लगता है।

10.14 अतो गुणे॥ 6.1.97

सूत्रार्थ – अपदान्त अकार से गुण संज्ञक वर्ण परे रहते पर रूप एकादेश होता है।

सूत्र व्याख्या – यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। अतः गुणे यह सूत्र का पदच्छेद है। अतः यह पंचम्येकवचनान्त पद है। गुणे यह सप्तम्येकवचनान्त पद है। एङ पररूपम् सूत्र से पररूपम् इस प्रथमान्त पद की अनुवृत्ति होती है। उस्यपदान्तात् सूत्र से अपदान्तात् यह पंचम्येकवचनान्त पद अनुवृत्ति होती है। एकः पूर्वपरयोः इस सूत्र का अधिकार है। पद योजना इस प्रकार होगी- अपदान्तात्, अतः गुणे पूर्वपरयोः पररूपमेकादेशः। यहां पर गुण शब्द पारिभाषिक लिया जाएगा। अतः अदेङ गुणः इस सूत्र में अकार एकार और ओकार की गुण संज्ञा होती है। अतः इस सूत्र का अर्थ हुआ- पदान्तभिन्न अकार से पर में यदि गुणसंज्ञक वर्ण हो तो पूर्व और पर के स्थान पर पर रूप एकादेश होता है।

उदाहरण – रामाः।

सूत्रार्थ समन्वय – राम शब्द से प्रथमा बहुवचन की विवक्षा में जस् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, राम अस् इस स्थिति में राम शब्द के अन्त में अकार है। अतः राम शब्द अदन्त है। उसके पर में गुणसंज्ञक अकार है। अतः अदन्त राम शब्द से गुण परे रहते अतो गुणे इस सूत्र से पूर्व और पर के स्थान पर रूप एकादेश प्राप्त हुआ। परन्तु इसके अपवाद सूत्र प्रथमयोः पूर्वसवर्णः इस सूत्र से एकादेश प्राप्त पररूप को बाध कर पूर्व सवर्ण दीर्घ करने पर रामास् यह स्थिति बन गयी। तत्पश्चात् समुदाय के सुबन्त होने के कारण पद संज्ञा होती है। तत्पश्चात् ससजुषो रुः इस सूत्र से सकार के स्थान पर रुत्व करने पर तथा रु के उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इत् इस सूत्र से इत्संज्ञा हो जाती है तथा तस्य लोपः सूत्र से उसका लोप हो जाता है जिससे रामार यह स्थिति हो गयी। अन्तिम रेफ के बाद किसी अन्य वर्ण के न होने के कारण उस अभाव की विरामोऽवसानम् सूत्र से अवसान संज्ञा हो गयी, अवसान के परे रहते खरवसानयोर्विसर्जनीयः सूत्र से रेफ के स्थान पर विसर्ग करने पर रामाः यह रूप सिद्ध हुआ।

10.15 – एकवचनं सम्बुद्धिः॥ 2.3.49॥

सूत्रार्थ – सम्बोधन में प्रथमा का एकवचन सम्बुद्धि संज्ञक होता है।

सूत्र व्याख्या – यह संज्ञा सूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। एकवचनम् और सम्बुद्धिः दोनों पद प्रथमा एकवचनान्त हैं। सम्बोधने च इस सूत्र से सम्बोधने यह सप्तम्यन्त पद अनुवर्तित होता है।

प्रातिपदिकार्थलिंगपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा सूत्र से प्रथमा इस प्रथमान्त पद की अनुवृत्ति है। तथा उसे षष्ठी एकवचन के रूप में विभक्ति विपरिणाम कर दिया जाता है। अतः पदयोजना होगी- सम्बोधने प्रथमायाः एकवचनं सम्बुद्धिः। इस प्रकार अर्थ हो जाएगा सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति का एकवचन सम्बुद्धिसंज्ञक होता है।

उदाहरण – राम शब्द के सम्बोधन में प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सु विभक्ति, अनुबन्ध लोप, हे राम स् बन गया। यहां सुप्रत्यय राम शब्द से विहित है अतः उस सुप्रत्यय के परे रहते तदादिशब्दस्वरूप राम की यस्मात् प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम् इस सूत्र से अंग संज्ञा होती है। अङ्ग संज्ञा की उपयोगिता अगले सूत्र में दिखाई देगी।

ध्यान दें:

पाठगत प्रश्न-3

13. बहुवचन संज्ञा करने वाला सूत्र कौन-सा है?

14. चुटू सूत्र का अर्थ लिखें?

15. न विभक्तौ तुस्मा: सूत्र का अर्थ लिखें?

16. अतो गुणे सूत्र का अर्थ लिखें?

17. सम्बुद्धि संज्ञा करने वाला सूत्र लिखें?

18. अङ्ग संज्ञा करने वाला सूत्र कौन-सा है?

10.16 - एङ्ह्रस्वात्सम्बुद्धेः॥ 6.1.67

सूत्रार्थ - एङन्त ह्रस्वान्त अङ्ग से पर में विद्यमान हल् वर्ण का लोप होता है यदि वह सम्बुद्धि का हो तो।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। एङ्ह्रस्वात्,सम्बुद्धेः यह सूत्र गत पदच्छेद है। एङ्ह्रस्वात् यह पंचम्येकवचनान्त पद है। सम्बुद्धेः यह षष्ठ्येकवचनान्त पद है। हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् इस सूत्र से हल् यह प्रथमैकवचनान्त पद अनुवृत्त होता है। लोपो व्योर्वलि सूत्र से लोप यह प्रथमान्त पद अनुवृत्त होगा। अङ्गस्य का अधिकार है। अब पद योजना होगी - एङ्ह्रस्वात् अङ्गस्य सम्बुद्धेः हल् लुप्यते। एङ्च ह्रस्वं च इति एङ्ह्रस्वम् समाहार द्वन्द्व एङ्ह्रस्वम् तस्मात् एङ्ह्रस्वात् यह समास प्रकार होगा। अङ्गस्य इस अधिकार का पंचमी विभक्ति में विपरिणाम कर दिया जाता है। एङ्ह्रस्वात् यह पद अङ्गस्य का विशेषण है। अतः येन विधिस्तदन्तस्य इस सूत्र से तदन्तविधि करने के फलस्वरूप एङन्त ह्रस्वान्त यह अर्थ प्राप्त होगा। इस प्रकार इस सूत्र का अर्थ होगा - एङन्तात् ह्रस्वान्ताच्च अङ्गाद् हल् लप्यते सम्बुद्धेश्चेत् इति। अर्थात् एङन्त प्रातिपदिक और ह्रस्वान्तप्रातिपदिक अङ्ग से पर में विद्यमान सम्बुद्धि के हल् का लोप इस सूत्र से होगा।

उदाहरण- हे राम!

सूत्रार्थ समन्वय - राम शब्द से सम्बोधन के एकवचन की विवक्षा में सु प्रत्यय अनुबन्धलोप, राम स् यह स्थिति हुई। यहां सुप् का सकार सम्बुद्धिसंज्ञक हल् है तथा ह्रस्वान्त अङ्ग से पर में भी है। अतः इस सूत्र से सकार का लोप करने पर हे राम यह रूप सिद्ध होगा। सम्बोधन के द्विवचन और बहुवचन सम्बुद्धिसंज्ञक नहीं है। अतः इन दोनों सुप् प्रत्ययों में यह सूत्र नहीं प्रवृत्त होगा।

10.17। अमि पूर्वः॥ 6.1.103॥

सूत्रार्थ - अक् से अम् का अच् परे रहते पूर्व और पर के स्थान पर पूर्वरूप एकादेश होता है।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में दो पद है, अमि यह सप्तमी का एकवचन है। पूर्वः यह प्रथमैकवचनान्त पद है। अकः सवर्णे दीर्घः इस सूत्र से अकः यह पंचम्यन्त पद अनुवर्तित होता है। इको यणचि सूत्र से अचि पद की अनुवृत्ति आती है। एकः पूर्वपरयोः सूत्र का अधिकार है। अकः अमि अचि पूर्वपरयोः पूर्वः इस प्रकार से अन्वय होगा। यहां सूत्र में अक् और अच् दो प्रत्याहार हैं। अम् विभक्ति है। अतः इस सूत्र का अर्थ है- अक् प्रत्याहार से परे यदि अम् प्रत्यय का अच् स्थित हो तो पूर्व और

ध्यान दें:

पर के स्थान पर पूर्वरूप एकादेश होता है।

उदाहरण - रामम्।

सूत्रार्थ समन्वय - राम शब्द से द्वितीया के एकवचन की विवक्षा में अम् प्रत्यय, अनुबन्धलोप, राम अम् बन गया। यहां पर अम् प्रत्यय का विभक्तिश्च इस सूत्र से विभक्ति संज्ञा होती है। मकार का हलन्त्यम् इस सूत्र से इत् संज्ञा प्राप्त होती है। प्राप्त इत् संज्ञा का न विभक्तौ तुस्माः इस सूत्र से निषेध हो गया। अकार से परे अम् का अकार अच् है, अतः इस सूत्र से पूर्व और पर के स्थान पर पररूप एकादेश अकार करने पर रामम् यह रूप सिद्ध हुआ।

राम शब्द से द्वितीया के द्विवचन की विवक्षा में औट् प्रत्यय, टकार की हलन्त्यम् सूत्र से इत् संज्ञा तस्य लोपः सूत्र से लोप करने पर, अकार से एच् प्रत्याहार के परे रहने के कारण वृद्धिरेचि सूत्र से अकार और औकार के मध्य में वृद्धि प्राप्त हुई। उसे बाधकर प्रथमयोः पूर्वसवर्णः सूत्र से पूर्वसवर्णदीर्घ आकार प्राप्त होने लगा नादिचि सूत्र ने उस दीर्घ का निषेध कर दिया। पुनः वृद्धिरेचि सूत्र से पूर्व पर के स्थान पर वृद्धि एकादेश औ करने पर रामौ सिद्ध हुआ।

10.18 - लशक्वतद्धिते 1.3.8॥

सूत्रार्थ - तद्धित को छोड़कर प्रत्यय के आदि में स्थित लकार शकार और कवर्ग इत् संज्ञक होते हैं।

सूत्र व्याख्या - यह संज्ञा सूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। लशकु अतद्धिते यह पदच्छेद है। लशकु प्रथमा का एकवचनान्त पद है। अतद्धिते यह सप्तम्येकवचनान्त पद है। आर्दिटुिडवः सूत्र से आदिः प्रथमान्त पद का अनुवर्तन होता है। षः प्रत्ययस्य सूत्र से प्रत्ययस्य यह षष्ठ्यन्त पद का अनुवर्तन होता है, उपदेशेऽजनुनासिक इत् सूत्र से इत् पद की अनुवृत्ति होती है। इस प्रकार पद योजना हुई - प्रत्ययस्य आदिः लशकु इत्। लश्च शश्च कुश्च समाहार द्वन्द्व लशकु। अतद्धिते सप्तम्येकवचनान्त पद है। न तद्धितः अतद्धितः तस्मिन् अतद्धिते नञ्तत्पुरुष। अतद्धिते का अर्थ है तद्धितभिन्नप्रत्ययस्थ। इत् इस पद का बहुवचन में विपरिणाम कर दिया जाता है। इस प्रकार सूत्र का अर्थ सम्पन्न होगा - तद्धित प्रत्ययों के अतिरिक्त प्रत्यय के आदि में स्थित लकार शकार और कवर्ग की इत् संज्ञा होती है।

उदाहरण - राम शस् इस स्थिति में शस् प्रत्यय तद्धित संज्ञक नहीं है। लेकिन प्रत्यय का आदि शकार है। अतः लशक्वतद्धिते इस सूत्र से प्रत्ययादि शकार की इत्संज्ञा, तस्य लोपः इस सूत्र से लोप, राम अस् बन गया। प्रथमयोः पूर्वसवर्णः इस सूत्र से पूर्वसवर्णदीर्घ आकार करने पर रामास् यह रूप हो गया। तब अगला सूत्र लगता है-

10.19 - तस्माच्छसो नः पुंसि॥ 6.1.99॥

सूत्रार्थ - कृतपूर्व सवर्ण दीर्घ से परे जो शस् का सकार उसको नकार होता है। पुल्लिंग में।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में चार पद हैं। तस्मात् शसः नः पुंसि यह सूत्र का पदच्छेद है। तस्मात् पंचमी का एकवचनान्त पद है। शसः यह षष्ठी का एकवचन है। नः प्रथमा का एकवचन है। पुंसि सप्तमी का एकवचन है। इसका अर्थ है। पुल्लिंग के विषय में। तस्मात् पद में तत् शब्द पूर्वकार्य का बोधक होता है। इस सूत्र से पूर्व का सूत्र है प्रथमयोः पूर्वसवणः उस सूत्र से पूर्वसवर्ण दीर्घ रूप कार्य होता है। अतः प्रकृतसूत्र में तत् शब्द से पूर्वसवर्णदीर्घ रूप कार्य ही विवक्षित है। शसः यह पद स्थान षष्ठ्यन्त है तथा शस् इस सम्पूर्ण वर्णसमुदाय का बोधक है।

ध्यान दें:

अर्थात् शसः इस पद का अर्थ केवल एक ही वर्ण नहीं है। अपि तु वर्ण समुदाय। किसी अनुयोगी के न रहने के कारण जो षष्ठी है वह स्थान षष्ठी है। और जो आदेश है वह नकार है।

अतः अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा के संचार के कारण सूत्र का अर्थ हुआ - पूर्वसवर्ण दीर्घ से परे जो शस् का अन्तिम अल् सकार है उसको नकार होता है। पुल्लिंग के विषय में।

उदाहरण - राम शब्द पुल्लिंग में है। राम शब्द के द्वितीया बहुवचन में राम अस् इस स्थिति में अकार का पूर्वसवर्ण दीर्घ आकार हुआ, फिर इस सूत्र से सकार के स्थान पर नकार आदेश होकर रामान् यह रूप सिद्ध हुआ। अब अगला सूत्र प्राप्त हुआ।

10.20 अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि ॥ 8.4.2॥

सूत्रार्थ - अट् कवर्ग पवर्ग आम् नुम् इनके पृथक् पृथक् या यथा सम्भव समुह रूप में व्यवधान होने पर भी रेफ और षकार के परे में विद्यमान नकार को णकार होता है, समानपद में।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। अट् कुप्वाङ्नुम्व्यवाये अपि यह सूत्र का पदच्छेद है। रषाभ्यां नो णः समानपदे यह सम्पूर्ण सूत्र अनुवर्तित होता है। अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवाये यह सप्तमी का एकवचन है। इसका समास विग्रह है - अट्च कुश्च पुश्च आङ्च नुम् च इतरेतरयोगद्वन्द्व अट्कुप्वाङ्नुमः तैः व्यवायः व्यवधानम्, अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायः तस्मिन् अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवाये तृतीया तत्पुरुष समास। यहां सति सप्तमी है। अपि यह अव्यय पद है। रषाभ्यां पंचमी द्विवचनान्त पद है। नः षष्ठी एकवचनान्त पद है। समानपदे सप्तमी एकवचनान्त पद है। जिसका एकपद में यह अर्थ है। पद योजना है - रषाभ्यां नो णः समानपदे अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवाये अपि। अट् के द्वारा अट् प्रत्याहार का ग्रहण होगा, कु से कवर्ग का, पु से पवर्ग का, आङ् के द्वारा आङ् उपसर्ग का, नुम् से अनुस्वार का ग्रहण होगा। इस प्रकार सूत्रार्थ होगा - अट्, कवर्ग, पवर्ग, आङ् नुम् इनके एक-एक का व्यवधान रहते अथवा इनके सामूहिक रूप से व्यवधान होने पर भी रेफ और षकार से पर में विद्यमान न को णत्व होता है। समान पद में हो तो।

उदाहरण - रामान् में रेफ और नकार के मध्य में आ अट् प्रत्याहार म- पवर्ग, आ- अट् प्रत्याहार का व्यवधान होने के कारण इस सूत्र से णकार का आदेश प्राप्त हुआ। तब-

10.21 - पदान्तस्य॥ 8.4.36॥

सूत्रार्थ - रेफ और षकार से परे पदान्त नकार को णकार नहीं होता है।

सूत्र व्याख्या - यह एक विधि सूत्र है। इस सूत्र में एक पद है। रषाभ्यां नो णः समानपदे सूत्र से नः णः इन दो पदों की अनुवृत्ति होती है। न भाभूपूकमिगमिप्यायिवेपाम् इस सूत्र से न इस अव्यय पद की अनुवृत्ति होती है। रषाभ्यां पंचमी द्विवचनान्त पद है। रषाभ्यां में पंचमी निर्देश होने के कारण तस्मादित्युत्तरस्य इस परिभाषा सूत्र से उत्तरस्य इस पद का लाभ होता है। उसको यानि पर को यह अर्थ है। नः यह षष्ठ्यन्त पद है। णः प्रथमा का एकवचन है। समानपदे यह सप्तम्येकवचनान्त पद है। उसका एक पद में यह अर्थ है। पद योजना इस प्रकार की जाती है - रषाभ्यां परस्य पदान्तस्य नः णः न। पदान्तस्य और नः ये दो पद षष्ठ्येकवचनान्त हैं।

अतः सूत्रार्थ होगा - पदान्त नकार को णकार नहीं होता है।

उदाहरण - रामान्।।

ध्यान दें:

सूत्रार्थ समन्वय - रामान् इसके अन्त में सुप् प्रत्यय है अतः सुप्तिङन्तं पदम् इस सूत्र से उसकी पद संज्ञा होती है। इस पद का अन्तिम वर्ण नकार है। अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि सूत्र से नकार को प्राप्त णकार नकार के पदान्त में स्थित होने के कारण प्रस्तुत सूत्र से णकार आदेश का निषेध हो गया। अतः रामान् यह रूप सिद्ध हो गया।

पाठगत प्रश्न-4

19. सम्बुद्धिसंज्ञक अपृक्त सकार का लोप किस सूत्र से होता है?
20. एङ्ह्रस्वात्सम्बुद्धेः इस सूत्र का अर्थ लिखें?
21. राम + अम् में किस सूत्र से पूर्व रूप किया जाता है?
22. शस् प्रत्यय के शकार की इत्संज्ञा किस सूत्र से की जाती है?
23. शस् प्रत्यय के सकार को नकार आदेश किस सूत्र से किया जाता है?
24. णत्व करने वाला सूत्र कौन-सा है?

पाठ सार

इस पाठ में शुरु में प्रातिपदिक संज्ञा किसकी होगी इसका विचार किया गया। प्रातिपदिकसंज्ञा करने वाले दो सूत्र बताये गये। पहले सूत्र से धातु भिन्न प्रत्यय भिन्न और प्रत्ययान्त से भिन्न अर्थवान् शब्द स्वरूप की प्रातिपदिक संज्ञा होती है। दूसरे सूत्र से कृदन्त, तद्धितान्त और समासों की प्रातिपदिक संज्ञा होती है। इक्कीस सुप् विभक्तियों का भी वर्णन विस्तार पूर्वक किया गया है। तत्पश्चात् प्रातिपदिक से कैसे सुप् उत्पत्ति होती है? इसका भी इस पाठ में विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है। रामशब्द से प्रथमा और द्वितीया विभक्ति के रूप कैसे बनेंगे इसका विस्तार से इस पाठ में वर्णन किया गया है। रामशब्द का प्रातिपदिक संज्ञा, सुबुत्पत्ति, प्रथमैकवचन में सु प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, राम + स् इस स्थिति में सकार को रुत्व, विसर्ग रामः यह रूप सिद्ध होता है। इसी तरह आगे भी इसी प्रकार अन्य भी रूप कैसे बनते हैं यह भी इस पाठ में विस्तार से बतलाया गया है।

पाठान्त प्रश्न

1. अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
2. कृत्तद्धितसमासाश्च इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
3. ङ्याप्प्रातिपदिकात् सूत्र की व्याख्या कीजिए।
4. स्वौजसमौट्- इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
5. द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
6. सरूपाणामेकशेष एक विभक्तौ इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
7. एङ्ह्रस्वात्सम्बुद्धेः इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
8. अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।

ध्यान दें:

9. अमि पूर्वः इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।

10. अधोलिखित रूपों का सूत्रोल्लेखन पूर्वक साधन कीजिए।

पाठगत प्रश्नोत्तर

उत्तर-1

1. अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्।
2. कृत्तद्धितसमासाश्च।
3. अधिकार सूत्र
4. पंचम अध्याय के समाप्ति तक अधिकार है।
6. अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्

उत्तर-2

7. स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप्
8. विभक्तिश्च
9. द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने
10. एकविभक्ति के परे रहते जितने भी समान रूप वाले दिखाई दें उनमें से एक ही शेष रहता है।
11. सुप् के तीन तीन त्रिक क्रमशः एकवचन द्विवचन बहुवचनसंज्ञक होते हैं।

उत्तर-3

12. बहुषु बहुवचनम्।
13. प्रत्यय के आदि में स्थित चवर्ग टवर्ग इत् संज्ञक होते हैं।
14. विभक्तिस्थ तवर्ग सकार मकार इत्संज्ञक नहीं होते हैं।
15. अपदान्त अकार से गुण परे रहते पूर्व और पर के स्थान पर पर रूप एकादेश होता है।
16. एकवचनं सम्बुद्धिः।
17. यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम्।

उत्तर-4

18. एङ्ह्रस्वात्सम्बुद्धेः।
19. एङन्त ह्रस्वान्त अङ्ग से परे सम्बुद्धि के हल् का लोप होता है।
20. अमि पूर्वः।
21. लशक्वतद्धिते।
22. तस्माच्छसो नः पुंसि।
23. अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि

ध्यान दें:

11

अजन्त पुल्लिंग में अदन्त शब्दों तथा सर्वनामों के रूप

पूर्वपाठ में आप प्रातिपदिक संज्ञा किसकी होगी यह जान चुके। इक्कीस विभक्तियों का भी परिचय प्राप्त किये। प्रातिपदिक से सुप् प्रत्ययों की उत्पत्ति कैसे होगी ये भी जान चुके हैं। नकार के स्थान पर णकार कब होगा कब नहीं इस विषय को भी भलीभांति जान चुके हैं। उसके बाद राम शब्द के द्वितीया विभक्ति के रूप सिद्ध करने की प्रक्रिया को भी समझ चुके हैं। अब इस अध्याय में राम शब्द के तृतीया आदि विभक्तियों में रूप कैसे बनेंगे। इस विषय का विचार करेंगे और सर्वादि गण में सर्वनामसंज्ञक सर्वादि शब्द पढ़े गये हैं। सभी भाषाओं में सर्वनाम शब्दों का व्यवहार होता है। इससे भाषा का भी महत्व बढ़ता है। संस्कृतवाङ्मय में भी अनेक से सर्वनाम शब्द हैं। ये शब्द अजन्त और हलन्त के भेद से दो प्रकार का होता है। अजन्त और हलन्त शब्द भी पुल्लिङ्ग स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग के भेद से तीन-तीन प्रकार के होते हैं। इस पाठ में अजन्त पुल्लिंग सर्वनाम शब्दों के विषय में चर्चा की गयी है साथ ही साथ उनके रूप सिद्धि की प्रक्रिया भी बतलायी गयी है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे-

- रामशब्द के तृतीया आदि विभक्तियों में रूप सिद्धि कैसे होती है यह जान पाने में;
- स्थानिद्भाव कहां होता है, यह जान पाने में;
- स्थानिवद्भाव का कहां निषेध होगा जान पाने में;
- सकार को षकार कहां होता है जान पाने में;
- सर्वनाम संज्ञा किन शब्दों की होती है यह जानने में;
- सर्वादि गण में कौन से शब्द पढ़े गये हैं यह जानने में;
- सर्वनाम शब्दों की रूपसिद्धि की प्रक्रिया को सही ढंग से जान पाने में सक्षम होंगे;

पाठ-11

अजन्त पुल्लिंग में अदन्त शब्दों तथा सर्वनामों के रूप

ध्यान दें:

11.1- टाङसिङसामिनात्स्याः॥ 7.1.12॥

सूत्रार्थ - अकारान्त अङ्ग से परे टा आदियों के स्थान पर इन आदि आदेश होते हैं।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। टाङसिङसाम् इनात्स्याः यह सूत्र का पदच्छेद है। टाङसिङसाम् षष्ठी बहुवचनान्त। इनात्स्याः प्रथमा बहुवचनान्त पद है। अतो भिस ऐस् इस सूत्र से अतः यह पंचम्यन्त पद अनुवर्तित होता है। अङ्गस्य सूत्र का अधिकार है जिसे की पंचम्यन्त के रूप में विपरिणाम कर दिया जाता है। समास विग्रह है - टाश्च ङसिश्च ङश्च टाङसिङसः तेषां टाङसिङसाम् इनश्च आच्च स्यश्च इतरेतर योग द्वन्द्वः इनात्स्याः। अन्वय होगा - अतः अङ्गात् टाङसिङसाम् इनात्स्याः। अतः यह पद अङ्गात् का विशेषण है। अतः तदन्तविधि के कारण अदन्त अङ्ग यह अर्थ प्राप्त हो जाता है। यहां पर तीन स्थानी है और तीन आदेश अतः यथासंख्य विधि प्रवृत्त हो जाएगी। इस प्रकार सूत्रार्थ हो जाएगा- अदन्त अङ्ग से परे टा ङसि और ङस् के स्थान पर इन आत् स्य आदेश होते हैं।

अर्थात् अकारान्त अङ्ग से पर में विद्यमान टा प्रत्यय के स्थान पर इन आदेश। ङसि के स्थान पर आत् आदेश, ङस् के स्थान पर स्य आदेश होते हैं।

उदाहरण - रामेण।

सूत्रार्थ समन्वय - राम शब्द से तृतीया के एकवचन की विवक्षा में टा प्रत्यय चुटू सूत्र से प्रत्यय के आदि में स्थित टकार की इत्संज्ञा तस्य लोपः से टकार का लोप राम+आ यह स्थिति हुई। राम शब्द अदन्त है और टा प्रत्यय पर में है, अतः यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम् इस सूत्र से राम शब्द की अङ्ग संज्ञा होती है। अतः अदन्त अङ्ग से पर में विद्यमान टा प्रत्यय का टाङसिङसामिनात्स्याः इस सूत्र से अनेकाल् होने के कारण इन यह सर्वादेश करने पर राम+इन यह स्थिति बन गयी। तत्पश्चात् आद्गुणः इस सूत्र से गुण एकादेश करने पर रामेन यह बन गया। तत्पश्चात् अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि इस सूत्र से नकार को णत्व करने पर रामेण यह रूप सिद्ध हुआ।

11.2 - सुपि च॥ 7.3.102

सूत्रार्थ - यञादि सुप् परे रहते अदन्त अङ्ग को दीर्घ होता है।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। सुपि सप्तम्येकवचनान्त पद है, च अव्यय पद है। अतो दीर्घो यदि यह सम्पूर्ण सूत्र अनुवृत्त होता है। अङ्गस्य का अधिकार है। जिसे की पंचम्यन्त के रूप में विपरिणाम किया जाता है। अतः यह षष्ठ्यन्त पद है, दीर्घः यह प्रथमान्त पद है, यञि सप्तम्यन्त पद है। पद योजना इस प्रकार की जाएगी - अतः अङ्गस्य दीर्घ यञि सुपि। यञि यह पद सुपि पद का विशेषण है। यञ् प्रत्याहार है, तदादिविधि के द्वारा यञादि सुप् परे रहते यह अर्थ लाभ हो जाता है।

अतः यह पद अङ्गस्य का विशेषण है। अतः तदन्तविधि करने पर अदन्त अङ्ग को यह अर्थ सिद्ध हो जाता है। अदन्ताङ्गस्य इस पद में विद्यमान षष्ठी स्थान षष्ठी है अतः अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा सूत्र से अदन्त अङ्ग के अन्तिम अल् के स्थान पर आदेश होता है। इससे यह सूत्रार्थ होगा -

यञादि सुप् परे रहते अदन्त अङ्ग के अन्तिम अल् के स्थान पर दीर्घ आदेश होता है। अर्थात् यञादिसुप् प्रत्यय यदि पर में हो तो अदन्त अङ्ग के अन्तिम अकार का दीर्घ होता है।

उदाहरण - रामाभ्याम्।

ध्यान दें:

सूत्रार्थ समन्वय - प्रातिपदिक संज्ञक राम शब्द से तृतीया द्विवचन की विवक्षा में भ्याम् प्रत्यय करने पर राम+भ्याम् यह स्थिति बन गयी। भ्याम् के मकार की हलन्त्यम् सूत्र से इत्संज्ञा प्राप्त होती है। जिसका न विभक्तौ तुस्मा: इस सूत्र से निषेध हो जाएगा। रामशब्द अदन्त है। उसका भ्याम् प्रत्यय के परे रहते यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादिप्रत्ययेऽङ्गम् सूत्र से अङ्ग संज्ञा होती है। भ्याम् यांदि सुप् है। अत: यञादि सुप् भ्याम् के परे रहते सुपि च इस सूत्र से अदन्त अङ्ग राम के अन्तिम अकार को दीर्घ हो जाएगा इसके फलस्वरूप रामाभ्याम् यह रूप सिद्ध हो जाता है।

11.3- अतो भिस ऐस्॥ 7.1.9॥

सूत्रार्थ - अकारान्त अङ्ग से परे भिस् के स्थान पर ऐस् आदेश होता है।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में तीन पद हैं। अत: भिस: ऐस् यह सूत्र का पदच्छेद है।

अत: पंचम्येकवचनान्त पद है। भिस: षष्ठ्येकवचनान्त पद है। ऐस् प्रथमैकवचनान्त पद है। अङ्गस्य सूत्र का अधिकार है। अङ्गस्य के अधिकार का पंचमी विभक्ति में विपरिणाम किया जाता है। अत: पद योजना होगी - अत: अङ्गात् भिस् ऐस्। अत: यह पद अङ्ग का विशेषण है अत: तदन्त विधि के द्वारा अदन्त अङ्ग यह अर्थ लाभ होगा। भिस् यह अल्समुदाय बोधक पद है। अर्थात् भिस् यह पद केवल एक वर्ण नहीं है अपि तु वर्ण समुदाय है। भिस् यह पद षष्ठी विभक्ति से निर्दिष्ट है, ऐसादेश तो अनेकाल् है, अत: अनेकाल्शित्सर्वस्य इस परिभाषा के द्वारा भिस् सम्पूर्ण के स्थान पर होगा। इसके परिणाम स्वरूप इस सूत्र का अर्थ बनेगा - अकारान्त अङ्ग से पर में विद्यमान सम्पूर्ण भिस् के स्थान पर ऐस् यह आदेश होगा।

उदाहरण- रामै:।

सूत्रार्थ समन्वय - राम शब्द से तृतीया बहुवचन की विवक्षा में भिस् प्रत्यय, राम+भिस् यह स्थिति बन गयी। भिस् सुप् प्रत्यय है, अत: विभक्ति संज्ञक है। भिस् के सकार की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा प्राप्त हुई, जिसका न विभक्तौ तुस्मा: सूत्र से निषेध हो गया। राम शब्द अदन्त है तथा अङ्गसंज्ञक भी है। उससे पर में विद्यमान सम्पूर्ण भिस् प्रत्यय के स्थान पर ऐस् आदेश हुआ। राम+ऐस् यह स्थिति बन गयी। अब राम शब्द के अकार से पर में ऐस् का ऐकार एच् प्रत्याहारीय वर्ण है। अत: वृद्धिरेचि इस सूत्र से अकार और ऐकार के मध्य में ऐकार रूप वृद्धि एकादेश कर देने से रामैस् यह रूप बना। तब सुबन्त रामैस् की पद संज्ञा, स को रुत्व विसर्ग करने पर रामै: यह रूप सिद्ध होता है।

11.4 - ङेर्य: ॥ 7.1.19॥

सूत्रार्थ - अदन्त अङ्ग से परे ङे के स्थान पर आदेश होता है।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। ङे: य: यह पदच्छेद है। ङे: यह षष्ठ्येकवचनान्त पद है। य: प्रथमैकवचनान्त पद है। अतो भिस ऐस् इस सूत्र से अत: यह पंचम्यन्त पद अनुवर्तित होता है। अङ्गस्य सूत्र का अधिकार है जो कि पंचम्यन्त के रूप में विभक्ति विपरिणमित हो जाता है। अत: अङ्गात् ङे: य: यह पद योजना होगी। अत: यह पद अङ्गविशेषण है। जिसके कारण तदन्तविधि होने से अदन्तात् अङ्गात् यह अर्थ लाभ होता है। इस प्रकार इस सूत्र का अर्थ हो जाएगा - अदन्त अङ्ग से परे ङे के स्थान पर यादेश होता है। अर्थात् अकारान्त जो अङ्ग उससे पर में विद्यमान

ध्यान दें:

ङे के स्थान पर यादेश होता है। यादेश अनेकाल् है, अत: सम्पूर्ण ङे के स्थान पर यादेश होता है।

उदाहरण - राम शब्द से चतुर्थी के एकवचन की विवक्षा में ङे प्रत्यय करने पर, राम+ङे यह स्थिति बन गयी। रामशब्द अदन्त है। अत: इस सूत्र से अदन्त अङ्ग से परे ङे प्रत्यय के स्थान पर यादेश करने पर राम +य बन गया। यद्यपि यहां यादेश यञादि है, फिर भी सुपि च इस सूत्र से अङ्गसंज्ञक राम शब्द के अकार को दीर्घ नही होता है। क्योकि यादेश सुप् नहीं है। तब अगला सूत्र प्रवृत्त होता है।-

पाठगत प्रश्न-1

1. रामेण में टा के स्थान पर इनादेश किस सूत्र से होता है?
2. रामेण में नकार को णकार किस सूत्र से होता है?
3. टाङसिङसामिनात्स्या: इस सूत्र का अर्थ लिखें?
4. रामाभ्याम् में दीर्घ किस सूत्र से होता है?
5. सुपि च सूत्र का अर्थ लिखें?
6. भिस् के स्थान पर ऐसादेश किस सूत्र से होता है?
7. ङे के स्थान पर कौन सा आदेश होता है?

11.5- स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ ॥ 1.1.55॥

सूत्रार्थ - आदेश स्थानिवत् होता है। अलाश्रयविधि की कर्तव्यता में तो नहीं होता है।

सूत्र व्याख्या - यह अतिदेश सूत्र है। स्थानिवत् आदेश: अनल्विधौ यह सूत्र पदच्छेद है। तीन पद वाले इस सूत्र में स्थानिवत् यह अव्यय पद है, स्थान का अर्थ है प्रसङ्ग, जिसके स्थान पर किसी अन्य का विधान किया जाता है, वह स्थानी है। स्थानिना तुल्यम् स्थानिवत् ,अर्थात् स्थानि के समान स्थानिवत्। आदेश: प्रथमैकवचनान्त पद है। जिसके विधान से अन्य की निवृत्ति होती है, वह आदेश है। आदेश स्थानिवत् होता है इसका अर्थ है आदेश स्थानी के तुल्य होता है। अनल्विधौ यह सप्तम्येकवचनान्त पद है। विधि का अर्थ होता है कार्य, अला विधि इस पद में चार प्रकार से समास विग्रह किया जाता है - पहला अला विधि:, दूसरा अल: परस्य विधि:, तीसरा अल: विधि:, चौथा अलि विधि: इन चारो में क्रमश: तृतीया पंचमी षष्ठी सप्तमी तत्पुरुष समास है। न अल्विधि: अनल्विधि: तस्मिन् अनल्विधौ। जिसका अर्थ होगा अलाश्रय से भिन्न कार्य के करने में। अर्थात् अल् को आश्रय मानकर विधि करने पर स्थानिवद् भाव नहीं होता है यह अर्थ फलित हो जाता है। अल् यह वर्णों का पर्याय है। यहां अल् के द्वारा स्थानी या स्थानि का अवयव लिया जाता है। तब इस सूत्र का अर्थ है - स्थानी भूत जो अल् अथवा स्थानी का अवयव जो अल् उसे मानकर कार्य करने की स्थिति में स्थानिवद् भाव नहीं होता है। अत: आदेश स्थानिवत् भाव होता है स्थानी के अलाश्रयविधि में तो नहीं ऐसा कहा गया है।

उदाहरण - रामाय।

सूत्रार्थ समन्वय - रामशब्द से चतुर्थी के एकवचन में ङे प्रत्यय, ङेर्य: इस सूत्र से ङे प्रत्यय के स्थान पर यादेश करने पर, राम+य बन गया। यहां ङे स्थानी। उसे मानकर कोई कार्य नहीं होता है।

ध्यान दें:

अतः यहां स्थान्यलाश्रयविधि है। यहां पर स्थानी का धर्म सुप्त्व है, अतः इस प्रकृतसूत्र से आदेशभूत यकार में सुप्त्व धर्म का अतिदेश कर दिया जाता है। यकार में अपना यांदिधर्म है, अतिदिश्यमान धर्म सुप्त्व है। अतः सुपि च सूत्र से दीर्घ सिद्ध हो जाता है। तदुपरान्त रामा य यह बन गया वर्ण सम्मेलन करने पर रामाय यह रूप सिद्ध हो जाता है।

राम शब्द से चतुर्थी द्विवचन में भ्याम् प्रत्यय राम+भ्याम् यह स्थिति हो गयी। यहां भी पूर्व की तरह मकार का न विभक्तौ तुस्माः इस सूत्र से इत्संज्ञा का निषेध हो जाता है। तब सुपि च इस सूत्र से यञादि सुप् परे रहते अदन्त अङ्ग को दीर्घ आकार, वर्णसम्मेलन, रामाभ्याम् यह रूप सिद्ध हो गया।

11.6 - बहुवचने झल्येत्॥ 7.3.103॥

सूत्रार्थ - झलादि बहुवचन सुप् प्रत्यय के परे रहते अदन्त अङ्ग को एकार होता है।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। बहुवचने झलि एत् यह सूत्र का पदच्छेद है। बहुवचने सप्तम्यन्त पद है। झलि भी सप्तम्यन्त पद हैं। एत् यह प्रथमान्त पद है। एत् इस पद के द्वारा ह्रस्व एकार का ग्रहण होता है। अतो दीर्घो यञि इस सूत्र से अतः यह षष्ठ्यन्त पद अनुवर्तित होता है। सुपि च इस सूत्र से सुपि इस सप्तम्यन्त पद की अनुवृत्ति होती है। अङ्गस्य सूत्र का अधिकार है। पद योजना इस प्रकार होगी- अतः यञि सुपि अङ्गस्य बहुवचने झलि एत्। अतः यह अङ्ग का विशेषण है। अतः तदन्तविधि होने के कारण अदन्तस्य अङ्गस्य यह अर्थ प्राप्त हो जाता है। अङ्गस्य की षष्ठी स्थान षष्ठी है। अतः अलोऽन्त्यस्य परिभाषा के द्वारा अलः इस अर्थ का लाभ हो जाता है। झलि यह पद सुपि का विशेषण है, अतः झलादि सुप् परे रहते यह अर्थ प्राप्त होता है। अतः इस सूत्र का अर्थ सम्पन्न होगा झलादि बहुवचन सुप् के परे रहते अदन्त अङ्ग के अन्तिम अल् के स्थान पर एकार होता है यह अर्थ प्राप्त होता है। अर्थात् बहुवचन में विद्यमान जो सुप् प्रत्यय यदि झलादि हो तो अदन्त अङ्ग के अन्तिम अल् अकार के स्थान पर एकार आदेश होता है।

उदाहरण - रामेभ्यः।

सूत्रार्थ समन्वय - राम शब्द से चतुर्थी बहुवचन में भ्यस् प्रत्यय राम+भ्यस् हो गया। सकार की हलन्त्यम् इस सूत्र से इत्संज्ञा प्राप्त हुई। प्राप्त इत्संज्ञा का न विभक्तौ तुस्माः इस सूत्र से निषेध हो गया।

तब बहुवचने झल्येत् इस सूत्र से झलादि बहुवचन सुप् परे रहते अदन्त अङ्ग के अन्तिम अल् अकार के स्थान पर एकार आदेश करने पर रामेभ्यस् बन गया। सकार को रुत्व विसर्ग करने पर रामेभ्यः यह रूप सिद्ध होता है।

प्रातिपदिक संज्ञक राम शब्द से पंचमी के एकवचन के विवक्षा में ङसि प्रत्यय राम+ङसि इस स्थिति में टाङसिङसामिनात्स्याः इस सूत्र से ङसि के स्थान पर आत् आदेश करने पर राम+आत् यह स्थिति हो गयी। यहां अकः सवर्णे दीर्घः इस सूत्र से पूर्व और पर के स्थान पर आकार रूप सवर्णदीर्घ करने पर रामात् यह रूप सिद्ध हुआ। इसकी सुबन्त होने के कारण सुप्तिङन्तं पदम् इस सूत्र से पद संज्ञा होती है। यहां पदान्त में विद्यमान झल् तकार के स्थानपर झलां जशोऽन्ते इस सूत्र से दकार करने पर रामाद् बन गया।

परन्तु हमारा रामात् यह अभीष्ट रूप है। अतः नया सूत्र आरम्भ किया जाता है।-

ध्यान दें:

11.7 - वाऽवसाने॥ 8.4.56॥

सूत्रार्थ - अवसान परे रहते झल् के स्थान पर चर होता है।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। वा अवसाने यह सूत्र का पदच्छेद है। अवसाने यह सप्तम्येकवचनान्त पद है। वा यह अव्यय पद है। झलां जश् झषि इस सूत्र से झलां यह षष्ठ्यन्त पद अनुवर्तित होता है। अभ्यासे चर्च इस सूत्र से चर् इस प्रथमान्त पद की अनुवृत्ति होती है। अवसाने झलां चर् वार् यह पद योजना है। चर् इस पद का बहुवचनान्त में विपरिणाम करने से चरः यह बन जाता है। यहां झल् और चर् यहां दोनों प्रत्याहार है। अतः इस सूत्र का अर्थ हुआ - अवसान परे रहते झल् के प्रत्याहार में स्थित वर्णों के स्थान पर चर् प्रत्याहार के वर्ण विकल्प से होते हैं।

उदाहरण - रामात्।

सूत्रार्थ समन्वय - राम शब्द से पंचमी के एकवचन में ङसिप्रत्यय में प्रक्रिया गत कार्य करने पर रामाद् बन गया। दकार के बाद किसी अन्य वर्ण की सत्ता न होने के कारण उस अभाव की विरामोऽवसानम् सूत्र से अवसान संज्ञा होती है। दकार झल् प्रत्याहार में आता है। अतः वाऽवसाने इस सूत्र से झल् दकार को वैकल्पिक चर्त्व करने पर तकार होने से रामात् यह रूप सिद्ध होता है। वाऽवसाने सूत्र के वैकल्पिक चर्त्व होने के कारण जिस पक्ष में चर्त्व आदेश की प्रवृत्ति नहीं होती है उस पक्ष में रामाद् यह भी रूप सिद्ध होता है।

राम शब्द से षष्ठ्येकवचन की विवक्षा में ङस्प्रत्यय करने पर राम+ङस् यह स्थिति बन गयी। यहां यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम् इस सूत्र से प्रकृति राम की अङ्ग संज्ञा होती है। यथा संख्यमनुदेशः समानाम्, अनेकाल्शित्सर्वस्य इन दो परिभाषाओं से परिष्कृत टाङसिङसामिनात्स्याः इस सूत्र से अदन्त अङ्ग से पर में विद्यमान ङस् के स्थान पर स्य इस सर्वादेश करने पर रामस्य यह रूप सिद्ध होता है।

राम शब्द से षष्ठी द्विवचन की विवक्षा में ओस् प्रत्यय करने पर राम ओस् यह स्थिति बन गयी।

11.8- ओसि च॥ 7.3.104।

सूत्रार्थ - ओस् परे रहते अदन्त अङ्ग को एकार होता है।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। ओसि यह सप्तम्येकवचनान्त पद है। च यह अव्यय पद है। अतो दीर्घो यञि इस सूत्र से अतः यह षष्ठ्यन्त पद अनुवृत्त है। बहुवचने झल्येत् इस सूत्र से एत् यह प्रथमान्त पद अनुवर्तित होता है। अङ्गस्य सूत्र का अधिकार है। अतः अङ्गस्य एत् ओसि यह पद योजना है। अङ्गस्य यह षष्ठ्यन्त पद है। अतः यह अङ्गस्य का विशेषण है। अतः तदन्तविधि से अदन्तस्य अङ्गस्य यह अर्थ प्राप्त होता है। इस प्रकार इस सूत्र का अर्थ होता है - ओस् के परे रहते अदन्त अङ्ग को एकार होता है। अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा से अन्तिम अल् के स्थान पर होता है, यह स्फुटित अर्थ होता है।

उदाहरण - रामयोः।

सूत्रार्थ समन्वय - राम शब्द से षष्ठी द्विवचन की विवक्षा में ओस् प्रत्यय, राम + ओस् यह स्थिति हो गयी। सकार का हलन्त्यम् इस सूत्र से इत्संज्ञा प्राप्त होती है। इत्संज्ञा का न विभक्तौ तुस्माः इस सूत्र से निषेध करने पर राम ओस् रह गया। यहां पर अकार से ओकार परे रहते वृद्धिरेचि इस सूत्र से वृद्धि

ध्यान दें:

एकादेश प्राप्त हुआ। वृद्धि को बांधकर अतो गुणे इस सूत्र से अपदान्त अकार से गुण के परे रहते पररूप एकादेश प्राप्त होता है। एकादेश को बांधकर ओसि च इस सूत्र से अदन्त अङ्ग के अन्तिम अल् के स्थान पर एकार आदेश करने पर रामे+ओस् यह बन गया। तत्पश्चात् एच् के एकार के स्थान पर ओकार अच् के पर रहते एचोऽयवायावः इस सूत्र से अयादेश करने पर रामयोस् यह स्थिति बन गयी। तत्पश्चात् पद संज्ञा, सकार को रुत्व विसर्ग करने पर रामयोः यह रूप सिद्ध होता है।

पाठगत प्रश्न-2

8. स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ यह किस प्रकार का सूत्र है?
9. स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ इस सूत्र में अनल्विधौ इस पद का क्या अर्थ है?
10. रामाय इस स्थान पर सुप्त्व का अतिदेश कैसे होता है?
11. रामेभ्यः में एत्व कैसे होता है?
12. बहुवचने झल्येत् इस सूत्र का अर्थ लिखें?
13. वाऽवसाने सूत्र का अर्थ लिखें?
14. ओसि च इस सूत्र का अर्थ लिखें?

11.9 - ह्रस्वनद्यापो नुट्॥ 7.1.54॥

सूत्रार्थ - ह्रस्वान्त नद्यन्त और आबन्त अङ्ग से परे आम् को नुट् आगम होता है।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। ह्रस्वनद्यापः नुट् यह पदच्छेद है।

ह्रस्वनद्याप् यह पंचम्येकवचनान्त समस्त पद है, ह्रस्वश्च नदी च आप्च इति ह्रस्वनद्याप् समाहार द्वन्द्व, तस्मात् ह्रस्वनद्यापः। नुट् यह प्रथमैकवचनान्त पद है। आमि सर्वनाम्नः सुट् इस सूत्र से आमि यह सप्तम्यन्त पद अनुवर्तित होता है। अङ्गस्य का अधिकार है जिसे पंचम्यन्त के रूप में विभक्ति विपरिणाम कर दिया जात है। परस्य इस पद का अध्याहार करते हैं। पद योजना इस प्रकार होगी- ह्रस्वनद्यापः अङ्गात् परस्य आमि नुट्। ह्रस्वनद्यापः इस सूत्र में नदी पद के द्वारा यू स्त्र्याख्यौ नदी इस सूत्र से विहित नदी संज्ञकों का ग्रहण होता है। आप् इस पद के द्वारा टाप्, चाप्, डाप् इन स्त्री प्रत्ययों का ग्रहण होता है।

ह्रस्वनद्यापः यह पद अङ्गात् इस पद का विशेषण है। अतः तदन्त विधि के द्वारा ह्रस्वान्त नद्यन्त आबन्त अङ्ग से परे यह अर्थ प्राप्त होता है। आमि इस पद में सप्तमी निर्देश है, ह्रस्वनद्यापः यहां पर पंचमी विभक्ति का निर्देश है। अतः उभय निर्देशे पंचमी निर्देशों बलीयान् इस न्याय के द्वारा तस्मादित्युत्तरस्य इस परिभाषा के द्वारा आमि इस सप्तम्यन्त पद का षष्ठ्यन्त पद में विपरिणाम कर दिया जाता है। नुट् के टकार का हलन्त्यम् सूत्र से इत्संज्ञा होती है। इस कारण से यह टित् है यह समझना चाहिये। अतः आद्यन्तौ टकितौ इस परिभाषा के द्वारा यह आद्यावयव होता है। इस प्रकार से इस सूत्र का अर्थ होता है। ह्रस्वान्त नद्यन्त और आबन्त अङ्ग से पर के आम् को नुट् का आगम होता है, वह आद्यावयव होता है।

अर्थात् ह्रस्वान्त शब्दों से नदी संज्ञक शब्दों से आबन्त शब्दों से पर में विद्यमाचन आम् को नुट् का आगम होता है।

ध्यान दें:

उदाहरण - राम शब्द से षष्ठी बहुचन की विवक्षा में आम् प्रत्यय करने पर राम+आम् हो गया। मकारान्त की हलन्त्यम् इस सूत्र से इत् संज्ञा प्राप्त होती है। जिसकी न विभक्तौ तुस्माः इस सूत्र से निषेध हो गया। रामशब्द ह्रस्वान्त है, प्रत्यय पर में है, अतः अङ्ग संज्ञक भी है। तत्पश्चात् आम् है। अतः आद्यन्तौ टकितौ इस परिभाषा के द्वारा परिष्कृत ह्रस्वनद्यापो नुट् इस सूत्र से ह्रस्वान्त अदन्त अङ्ग से पर में विद्यमान आम् को नुट् आगम आद्यावयव हुआ, अनुबन्धलोप करने पर राम + नाम् इस स्थिति में अग्रिम सूत्र प्रवृत्त होगा-

11.10 - नामि॥ 6.4.3।

सूत्रार्थ - नाम् परे रहते अजन्त अङ्ग को दीर्घ होता है।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र मे नामि यह एकमात्र सप्तम्यन्त पद है। ढऊलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः इस सूत्र से दीर्घः इस प्रथमान्त पद का अनुवर्तन होता है। दीर्घ पद की श्रुति होने के कारण अचश्च इस परिभाषा के द्वारा अचः यह षष्ठ्यन्त पद उपस्थित हो जाता है। अङ्गस्य सूत्र का अधिकार है। नामि अचः अङ्गस्य दीर्घः यह पदयोजना होगी। नामि इस पद में परसप्तमी है। अतः तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य इस परिभाषा से नामि के निर्दिष्ट होने के कारण परस्य इस पद का लाभ हो जाता है। कुल व्यवस्थित कर के सूत्रार्थ सम्पन्न होता है।

नाम् के परे रहते अजन्त अङ्ग को दीर्घ होता है। अर्थात् नकार सहित आम् प्रत्यय के परे रहते अजन्त अङ्ग को दीर्घ होता है।

उदाहरण - रामाणाम्।

सूत्रार्थ समन्वय - रामशब्द से षष्ठी बहुवचन की विवक्षा में आम् प्रत्यय, नुट् आगम, राम नाम् हुआ, तत्पश्चात् अचश्च अलोऽन्त्यस्य इन दोनों परिभाषाओं से परिष्कृत नामि इस सूत्र से अजन्त अङ्ग राम शब्द के अन्त्य अल् अकार को दीर्घ करने पर रामानाम् बन गया। इसके सुबन्त होने के कारण समानपद है अतः रेफरूप निमित्त से अट् और पवर्गीय के व्यवधान होने के कारण नकार को अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि सूत्र से णत्व करने पर रामाणाम् यह रूप सिद्ध हो जाता है।

सप्तमी के एकवचन की विवक्षा में ङिप्रत्यय राम+ङि हो गया, ङकार का लशक्वतद्धिते इस सूत्र से इत्संज्ञा, तस्य लोपः सूत्र से लोप, करने पर राम+इ बन गया। आद् गुणः इस सूत्र से गुण एकादेश करने पर वर्णसम्मेलन से रामे यह रूप सिद्ध हो जाता है।

राम शब्द से सप्तमी द्विवचन की विवक्षा में ओस् प्रत्यय, राम+ओस् हो गया। ओसि च इस सूत्र से ओस् परे रहते अदन्त अङ्ग के स्थान पर एकारादेश करने पर रामे ओस् बन गया। यहां एच् के एकार से अच् परे रहते एचोऽयवायावः सूत्र से अयादेश करने पर रामयोस् इस स्थिति में रुत्व विसर्ग करने पर रामयोः यह रूप सिद्ध हो जाता है।

राम शब्द से सप्तमी बहुवचन की विवक्षा में सुप् प्रत्यय, पकार का हलन्त्यम् सूत्र से इत्संज्ञा तस्य लोपः से लोप, राम+सु बन गया। राम शब्द अदन्त है। सुप्प्रत्यय झलादि बहुवचन संज्ञक है। अतः अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा के द्वारा परिष्कृत बहुवचने झल्येत् इस सूत्र से राम शब्द के अवयव अन्तिम अकार के स्थान पर एकार करने पर रामेसु बन गया।

ध्यान दें:

11.11 - आदेशप्रत्यययोः॥ 8,3,59

सूत्रार्थ - इण् कवर्ग से पर में विद्यमान अपदान्त आदेश और प्रत्यय का अवयव जो सकार उसके स्थान पर मूर्धन्य आदेश होता है।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। एकपदात्मक यह सूत्र है। आदेशप्रत्यययोः यह षष्ठीद्विवचनान्त एक पद है। आदेशश्च प्रत्ययश्च इतरेतर योग द्वन्द्वः आदेशप्रत्ययौ तयोः आदेशप्रत्यययोः सहैः साडः सः इस सूत्र से सः यह षष्ठ्यन्त पद अनुवर्तित होता है। अपदान्तस्य मूर्धन्यः इस सूत्र के अधिकार में पठित है यह सूत्र। अपदान्तस्य यह षष्यन्त पद पद है। मूर्धन्यः यह प्रथमैकवचनान्त पद है। इसका अर्थ व विग्रह होगा मूर्ध्नि भवः मूर्धन्यः अर्थात् मूर्धा स्थान में उत्पन्न होने वाला वर्ण मूर्धन्य हैं। इण्कोः इस पंचम्यन्त सूत्र का अधिकार है। इण् कुश्च इति इण्कु समाहार द्वन्द्व तस्मात् इण्कोः। पद योजना - इण्कोः अपदान्तस्य आदेशप्रत्यययोः सः मूर्धन्यः। इण् प्रत्याहार है जो कि अइउण् सूत्र के इकार से लेकर लण् सूत्र के णकार तक लिया जाता है। कु के द्वारा कवर्ग लिया जाता है। इस सूत्र में आदेश के विषय में अभेद अर्थ वाली अभेदात्मिका षष्ठी स्वीकार की जाती है, तथा प्रत्यय के विषय में अवयवार्थक षष्ठी मानी जाती है। अतः इस सूत्र का अर्थ सम्पन्न होगा। - इण् प्रत्याहार तथा कवर्ग के वर्णों से पर में विद्यमान अपदान्त जो आदेश तथा प्रत्यय का अवयव जो सकार उसको मूर्धन्य आदेश होता है। सकार के विवृत अघोष प्रयत्न होने के कारण उसके स्थान पर मूर्धन्य सकार ही आदेश के रूप में होता है।

उदाहरण - रामेषु।

सूत्रार्थ समन्वय - राम शब्द से सप्तमी बहुवचन की विवक्षा में सुप् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, अन्य प्रक्रिया कार्य करने पर रामे + सु बन गया। यहां सुप्रत्यय का सकार प्रत्यय का अवयव है। तथा यह सकार एकार से पर में है। एकार इण् प्रत्याहार में आता है। अतः आदेशप्रत्यययोः इस सूत्र से प्रत्ययावयव सकार के स्थान पर षकार मूर्धन्य आदेश करने पर रामेषु यह रूप सिद्ध हो जाता है।

राम शब्द के ही तरह कृष्णमुकुन्द आदि अकारान्त पुल्लिंग शब्दों को भी जानना चाहिए।

अब जो शब्द सर्वादि गण में पढ़े गये हैं, उनमें से सर्व शब्द के रूपसिद्धि की प्रक्रिया कैसे होगी इस विषय में विचार करते हैं। यद्यपि राम शब्द के तरह सर्व शब्द भी अकारान्त है। फिर भी बहुत से स्थानों में सर्व शब्द राम शब्द से अलग है। अतः सर्व शब्द के रूपों की सिद्धि के लिए जिन विशेष सूत्रों की आवश्यकता होगी उनका विस्तार से विवेचन यहां किया जाएगा। पहले सर्वनाम संज्ञा करने वाला सूत्र उपस्थित है -

11.12 - सर्वादीनि सर्वनामानि। 1,1,26

सूत्रार्थ - सर्वादि शब्द स्वरूप सर्वनामसंज्ञक होते हैं।

सूत्र व्याख्या - यह संज्ञा सूत्र है। इस सूत्र में दो पद है। सर्वादीनि यह प्रथमा बहुवचनान्त पद है, सर्वनामानि यह प्रथमा बहुवचनान्त पद है। सर्वादीनि यह पद नपुंसक लिंग होने के कारण शब्दस्वरूपाणि यह प्रथमा बहुवचनान्त विशेष्य पद अध्याहार करना चाहिए । अतः सर्वादीनि शब्दस्वरूपाणि सर्वनामानि यह पद योजना होगा। सर्वः (सर्वशब्द) आदिर्येषां तानि सर्वादीनि यहां तद्गुणसंविज्ञान बहुव्रीहि है। सर्व शब्द अर्थपर न होकर स्वरूपपर है अतः सूत्रार्थ बना - सर्व आदि शब्द स्वरूप सर्वनाम संज्ञक होते हैं।

पाठ-11

अजन्त पुल्लिंग में अदन्त शब्दों तथा सर्वनामों के रूप

ध्यान दें:

विशेष व्याख्या - सर्व, विश्व, उभ, उभय, डतर, डतम, अन्य, अन्यतर, इतर, त्वत्, त्व, नेम, सम, सिम, पूर्व, पर, अवर, दक्षिण, उत्तर, अपर अधर, स्व, अन्तर,त्यद्, तद्,यद्, एतद्, इदम्, अदस्, एक, द्वि, युष्मद् अस्मद्, भवतु, किम् ये पैंतीस शब्द सर्वादि गण में पढ़े गये हैं। इन्हीं की ही सर्वनाम संज्ञा होती है।

विश्व, सर्व, सम शब्द सर्व के पर्याय हैं। सम शब्द तुल्यार्थक भी हैं, लेकिन उस सम शब्द का यहां ग्रहण नहीं होता है। उभ शब्द द्वित्व अर्थ का वाचक है। अतः वह हमेशा द्विवचनान्त रहता है। उभय शब्द नित्य बहुवचनान्त पद है। डतर और डतम प्रत्यय है। प्रत्ययग्रहणे तदन्ता ग्राह्याः इस परिभाषा के द्वारा तदन्तविधि करने से डतरप्रत्ययान्त और डतम प्रत्ययान्त का ग्रहण होता है। अतः डतर डतम प्रत्ययान्त कतर कतम आदि शब्दों का भी ग्रहण होता है। त्व और त्वद् दोनों अन्य के पर्यायवाची है। नेम शब्द अर्धवाची है। एकशब्द संख्या में नित्य से एकवचनान्त है।

सर्वनाम यह अन्वर्थक संज्ञा है। अन्वर्थ संज्ञा का महासंज्ञा यह अर्थ है। अतः सर्व शब्द जब सर्वार्थ का वाचक हो तभी सर्वनामसंज्ञा होती है, परन्तु जब किसी व्यक्ति का नाम सर्व हो तब तो सर्वशब्द की सर्वनामसंज्ञा नहीं होती है।

उदाहरण - सर्वादिगण में पठित सर्वार्थ का वाचक सर्वशब्द का सर्वादीनि सर्वनामानि इस सूत्र से सर्वनामसंज्ञा होती है। तथा अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा होती है। प्रातिपदिक संज्ञक इस सर्व शब्द के प्रथमा के एकवचन तथा द्विवचन में राम शब्द की तरह सर्वः सर्वौ यह रूप होगा।

पाठगत प्रश्न-3

15. रामाणाम् में नुट् का आगम कैसे हुआ?
16. ह्रस्वनद्यापो नुट् इस सूत्र का अर्थ लिखें?
17. रामाणाम् में दीर्घ कैसे होगा?
18. नामि सूत्र का अर्थ लिखें?
19. रामाणाम् मे णत्व किससे होता है?
20. सर्वादीनि सर्वनामानि इस सूत्र से कौन-सी संज्ञा होती है?
21. सर्वादिगण में कितने शब्द पढ़े गये हैं?
22. रामेषु इस स्थान पर सकार को षकार किससे होता है?
23. किससे पर में सकार को मूर्धन्य होता है?

सर्व शब्द से बहुत्व की विवक्षा में प्रथमा के बहुवचन में जस् प्रत्यय, अनुबन्धलोप करने पर सर्व + जस् बन गया-

ध्यान दें:

11,13- जसः शी॥ 7,1,17

सूत्रार्थ - अदन्त सर्वनाम से पर में विद्यमान जस् के स्थान पर शी होता है।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। जसः षष्ठ्येकवचनान्त पद है, शी प्रथमैकवचनान्त पद है। अतो भिस ऐस् इस सूत्र से अतः यह पंचम्यन्त पद अनुवर्तित होता है। अतः सर्वनाम्नः जशः शी यह पद योजना है। सर्वनाम्नः यह पद अतः पद का विशेषण है, अतः तदन्तविधि के कारण अदन्तात् सर्वनाम्नः यह अर्थ अर्थ सिद्ध होता है। जसः पद में षष्ठी निर्देश होने से षष्ठी स्थाने योगा परिभाषा के द्वारा जसः स्थाने यह अर्थ प्राप्त हो जाता है। जस् के स्थान पर होने वाला शी आदेश अनेकाल् होता है। अतः अनेकाल्शित्सर्वस्य इस परिभाषा के द्वारा जस के स्थान पर शी आदेश होता है यह अर्थ प्राप्त होता है। अतः सूत्र का अर्थ सम्पन्न होता है - अदन्त सर्वनाम से पर में विद्यमान जस् के स्थान पर शी आदेश होता है।

उदाहरण - सर्वे।

सूत्रार्थ समन्वय - सर्वशब्द से बहुत्व की विवक्षा में प्रथमा के बहुवचन में जस् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, सर्व + अस् हो गया। यहां सर्व शब्द अदन्त है, सर्वादि गण में पठित है। अतः सर्वनामसंज्ञक भी है। उसके बाद में जस् प्रत्यय है। अतः जसः शी इस सूत्र से जस् के स्थान पर शी आदेश करने पर सर्व + शी हो गया। यहां शकार की लशक्वतद्धिते इस सूत्र से इत्संज्ञा, तस्य लोपः इस सूत्र से लोप करने पर सर्व + ई बन गया । तत्पश्चात् स्थानेन्तरतमः इस परिभाषा सूत्र की सहायता से आद् गुणः इस सूत्र से अकार और इकार के स्थान पर स्थान से समानता होने के कारण एकार करने पर सर्वे यह रूप सिद्ध होता है।

विशेष व्याख्या - यहां यह प्रश्न उठता है कि शी आदेश में शकार की इत्संज्ञा होती है, अतः शित् होने के कारण अनेकाल्शित्सर्वस्य इस सूत्र से सर्वादेश सिद्ध ही है, तो फिर अनेकाल् होने के कारण इत्संज्ञा क्यों कही जाती है? इस प्रश्न का यह समाधान है कि आदेश के पहले शकार की इत्संज्ञा नहीं होती है। क्योंकि लशक्वतद्धिते यह सूत्र प्रत्यय के आदि में विद्यमान शकार की इत्संज्ञा करता है। जस् के स्थान पर शी आदेश करने के बाद में ही स्थानिवद्भाव से शी आदेश में प्रत्ययत्व आयेगा। उसके पहले तो प्रत्ययत्व ही नहीं है। अतः प्रत्ययत्व न होने के कारण इत्संज्ञा भी नहीं होगी। इसी कारण से यहां पर अनेकाल् होने के कारण सर्वादेश कहा गया है न कि शित् होने के कारण। आचार्य नागेश के मत में तो शित् होने के कारण ही सर्वादेश होता है क्योंकि आचार्य नागेश इत्संज्ञा का योग्य होना ही अनुबन्धत्व मानते हैं, नकि इत्संज्ञकत्व।

सर्वम् - प्रातिपदिकसंज्ञक सर्व शब्द से द्वितीया के एकवचन की विवक्षा में अम्प्रत्यय, सर्व+अम् बन गया। अमि पूर्वः इस सूत्र से पूर्वरूप एकादेश करने पर सर्वम् रूप सिद्ध हो गया।

सर्वौ - प्रातिपदिकसंज्ञक सर्वशब्द से प्रथमा द्विवचन की विवक्षा में औ प्रत्यय, सर्व + औ इस स्थिति में वृद्धिरेचि सूत्र से पूर्वपर के स्थान पर वृद्धि एकादेश करने पर सर्वौ यह रूप सिद्ध हो गया।

सर्वान् - प्रातिपदिक संज्ञक सर्व शब्द से द्वितीया बहुवचन की विवक्षा में शस् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, राम + अस् इस स्थिति में प्रथमयोः पूर्वसवर्णः इस सूत्र से पर्व और पर के स्थान पर पूर्वसवर्णदीर्घ एकादेश करने पर सर्वास् बन गया, तस्माच्छसो नः पुंसि इस सूत्र से सकार को नकार करने पर सर्वान् यह रूप सिद्ध होता है।

ध्यान दें:

सर्वेण - प्रातिपदिकसंज्ञक सर्वशब्द से तृतीया के एकवचन की विवक्षा में टाप्रत्यय, सर्व+टा इस स्थिति में टाङसिङसामिनात्स्याः इस सूत्र से इन आदेश, आद्गुणः से गुण एकार करने पर अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि इस सूत्र से णत्व करने पर सर्वेण यह रूप सिद्ध हुआ।

सर्वाभ्याम् - प्रातिपदिकसंज्ञक सर्वशब्द से तृतीया, चतुर्थी, पंचमी के द्विवचन की विवक्षा में भ्याम् प्रत्यय, सर्व + भ्याम् इस स्थिति में सुपि च इस सूत्र से अदन्त अङ्ग को दीर्घ करने पर सर्वाभ्याम् बन गया।

सर्वैः - प्रातिपदिक संज्ञक सर्व शब्द से तृतीया द्विवचन की विवक्षा में भिस् प्रत्यय, सर्व + भिस् इस स्थिति में अतो भिस ऐस् इस सूत्र से ऐस् आदेश, वृद्धिरेचि सूत्र से वृद्धि एकादेश करने पर सर्वैस् बन गया पदसंज्ञा, रुत्व, विसर्ग सर्वैः बन गया।

इसी प्रकार सर्व शब्द से चतुर्थी के एकवचन की विवक्षा में ङेप्रत्यय, सर्व+ङे इस स्थिति में ङेर्यः इस सूत्र से यादेश प्राप्त है।

11.14 सर्वनाम्नः स्मै ॥7.1.14॥

सूत्रार्थ - अकारान्त सर्वनाम से पर में ङे के स्थान पर स्मै आदेश होता है।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। सर्वनाम्नः यह पंचम्येकवचनान्त पद है। स्मै यह प्रथमैकवचनान्त पद है। यहां विभक्ति लोप आर्ष है। अतो भिस् ऐस् इस सूत्र से अतः यह पंचम्यन्त पद अनुवर्तित होता है। ङेर्यः सूत्र से ङेः यह षष्ठ्यन्त पद अनुवर्तित होता है। कुल पदों को व्यवस्थित करके पद योजना होगी - अतः सर्वनाम्नः ङेः स्मै। अतः यह पद सर्वनाम्नः का विशेषण है। जिसके कारण तदन्तविधि के द्वारा अदन्तात् सर्वनाम्नः यह अर्थ प्राप्त होता है। स्मै आदेश अनेकाल् है। अतः ङे इस सम्पूर्ण के स्थान पर स्मै आदेश होता है। सूत्रार्थ सम्पन्न हुआ - अदन्त सर्वनाम संज्ञक शब्द से पर में विद्यमान सम्पूर्ण ङेप्रत्यय के स्थान पर स्मै आदेश होता है।

उदाहरण - सर्वस्मै।

सूत्रार्थ समन्वय - सर्वार्थ वाचक प्रातिपदिक संज्ञक सर्वशब्द से चतुर्थी के एकवचन की विवक्षा में ङे प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, सर्व + ए यह स्थिति बन गयी। यहां सर्व शब्द अदन्त और सर्वनाम है। अतः अनेकाल्शित्सर्वस्य परिभाषा सूत्र से परिष्कृत सर्वनाम्नः स्मै इस सूत्र से ङे के स्थान पर स्मै आदेश करने पर सर्वस्मै यह रूप सिद्ध होगा।

11.15- ङसिङ्योः स्मात्स्मिनौ॥ 7.1.15।

सूत्रार्थ - अदन्त सर्वनाम से पर में विद्यमान ङसि और ङि के स्थान पर स्मात् और स्मिन् आदेश होते हैं।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। ङसिङ्योः यह षष्ठी द्विवचनान्त पद है। स्मात्स्मिनौ प्रथमा द्विवचनान्त पद है। ङसिश्च ङिश्च तयोः इतरेतर योग द्वन्द्वः ङसिङी तयोः ङसिङ्योः स्माच्च स्मिन्च तयोः इतरेतर योग द्वन्द्वः स्मात्स्मिनौ। अतो भिस् ऐस् इस सूत्र से अतः पंचम्यन्त पद अनुवर्तित होता है असर्वनाम्नः स्मै इस सूत्र से सर्वनाम्नः यह पंचम्यन्त पद अनुवर्तित होता है। अतः यह पद सर्वनाम्नः का विशेषण है। अतः अदन्तात् सर्वनाम्नः यह अर्थ मिल जाता है। यहां पर दो स्थानी है तथा दो आदेश हैं। अतः यथा संख्यमनुदेशः समानाम् से ङसि के स्थान पर स्मात् और ङि के स्थान पर

ध्यान दें:

स्मिन् आदेश होता है। सूत्रार्थ हुआ- अदन्त सर्वनाम से पर में विद्यमान ङसि के स्थान पर स्मात् और ङि के स्थान पर स्मिन् आदेश होता है। इन दोनों आदेशों के अनेकाल् होने के कारण सर्वादेशत्व सिद्ध होता है।

उदाहरण - सर्वस्मात्।

सूत्रार्थ समन्वय - सर्वादि गण में पठित सर्वार्थ वाचक सर्व शब्द की सर्वादीनि सर्वनामान सूत्र से सर्वनाम संज्ञा होती है। उससे पंचमी एकवचन की विवक्षा में ङसि प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, सर्व + अस् इस स्थिति में यथा संख्यमनुदेशः समानाम् इस सूत्र से परिष्कृत ङसिङ्योः स्मात्स्मिनौ इस सूत्र से ङसि के स्थान पर स्मात् आदेश करने पर सर्वस्मात् यह रूप बन गया। स्मात् आदेश के स्थानिवद्भाव के कारण विभक्तिश्च सूत्र से विभक्ति संज्ञा होती है। तत्पश्चात् तकार की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा प्राप्त हुई जिसका न विभक्तौ तुस्माः से निषेध हो जाने के कारण सर्वस्मात् यह रूप सिद्ध हो जाता है।

11.16- आमि सर्वनाम्नः सुट्॥ 7,1,52

सूत्रार्थ - अवर्णान्त से परे सर्वनाम से विहित आम् को सुट् का आगम होता है।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में तीन पद विराजमान हैं। आमि सप्तम्येकवचनान्त पद है। सर्वनाम्नः यह पंचम्येकवचनान्त पद है। सुट् प्रथमैकवचनान्त पद है। आज्जसेरसुक् इस सूत्र से आत् यह पंचम्यन्त पद अनुवर्तित होता है। अङ्गस्य सूत्र का अधिकार है, जिसे कि पंचमी विभक्ति में विपरिणाम किया जाता है। परस्य इस षष्ठ्यन्त पद का अध्याहार किया जाता है। पद योजना इस प्रकार बनेगी - आमि सर्वनाम्नः आत् अङ्गात् परस्य सुट्। आत् यह पद अङ्ग का विशेषण है, येन विधि स्तदन्तस्य इस सूत्र के प्रामाण्य के कारण तदन्तविधि के कारण अवर्णान्तात् अङ्गात् यह अर्थ प्राप्त होता है। सुट् का टकार हलन्त्यम् से इत्संज्ञक है। अतः यह आगम यह प्रतीत होता है। आद्यन्तौ टकितौ इस परिभाषा के द्वारा आद्यावयव होता है यह भी स्पष्ट है। आमि यह सप्तमी विभक्ति के द्वारा निर्दिष्ट है। सर्वनाम्नः यह पंचमी के द्वारा निर्दिष्ट है। अतः उभय निर्देशे पंचमी निर्देशों बलीयान् इस न्याय से तथा तस्मादित्युत्तरस्य परिभाषा सूत्र से आमि की सप्तमी आमः यह षष्ठ्यन्त पद के रूप में विपरिणमित कर दिया जाता है। अतः सूत्रार्थ सम्पन्न हुआ- अवर्णान्त अङ्ग से पर में विद्यमान तथा सर्वनाम से विहित आम् को सुट् का आगम होता है।

उदाहरण - सर्वेषाम्।

सूत्रार्थ समन्वय - सर्वनाम संज्ञक तथा प्रातिपदिक संज्ञक सर्व शब्द से षष्ठी बहुवचन की विवक्षा में आम् प्रत्यय, सर्व + आम् बन गया, आम् के मकार की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा प्राप्त हुई । उस इत्संज्ञा का न विभक्तौ तुस्माः सूत्र से निषेध होता है। तब प्रस्तुत सूत्र से आम् को सुडागम, आद्यावयव सुट् में अनुबन्धलोप के कारण सर्व + साम् बन गया। बहुवचने झल्येत् सूत्र से एत्व, आदेशप्रत्यययोः सूत्र से इण् से पर में विद्यमान सकार को षकार हो गया सर्वेषाम् यह रूप सिद्ध हुआ।

सर्वस्मिन् - सर्व शब्द से सप्तम्येकवचन में ङिप्रत्यय करने पर सर्व + ङि इस स्थिति में, ङि प्रत्यय के स्थान पर ङसिङ्योः स्मात्स्मिनौ इस सूत्र से स्मिन् आदेश, सर्वस्मिन् यह स्थिति बन गयी। स्मिन् का स्थानिवद्भाव के कारण विभक्ति संज्ञा, तत्पश्चात् नकार की हलन्त्यम् सूत्र से प्राप्त इत्संज्ञा का न विभक्तौ तुस्माः से निषेध होता है। इस कारण सर्वस्मिन् यह रूप सिद्ध होता है।

सर्वयोः - प्रातिपदिकसंज्ञक सर्व शब्द से षष्ठी द्विवचन की विवक्षा में ओस् प्रत्यय सर्व + ओस्

ध्यान दें:

इस स्थिति में ओसि च इस सूत्र से सर्व शब्द के अवयव अन्त्य अकार को एकार करने पर, एचोऽयवायावः इस सूत्र से अयादेश, सर्वयोस् बन गया। इसकी पद संज्ञा, सकार को रुत्व विसर्ग सर्वयोः यह रूप सिद्ध होता है।

सर्वेषु - सर्व शब्द से सप्तमी बहुवचन की विवक्षा में सुप् प्रत्यय, सुप् के प्रकार की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा, तस्य लोपः से लोप, सर्व + सु बन गया। सर्व शब्द अदन्त है, सुप्प्रत्यय झलादि और बहुवचन है अतः अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा से परिष्कृत बहुवचने झल्येत् से सर्व शब्द के अवयव अन्तिम अकार के स्थान पर एकार करने से सर्वेसु बन गया। आदेश प्रत्यययोंः इस सूत्र से सकार को षकार करने पर सर्वेषु यह रूप सिद्ध होता है।

पाठगत प्रश्न-4

24. जस् के स्थान पर कौन-सा आदेश होता है?

25. जसः शी का अर्थ लिखें?

26. अदन्त सर्वनाम से परे ङे के स्थान पर क्या आदेश होता है?

27. अदन्त सर्वनाम से परे ङसि और ङि के स्थान पर क्या आदेश होता है?

28- सर्वेषाम् में सुट् का आगम कैसे होता है?

29- आमि सर्वनाम्नः सुट् इस सूत्र का क्या अर्थ है?

पाठ सार

इस पाठ में राम शब्द से तृतीया से सप्तमी तक रूप सिद्धि की प्रक्रिया विस्तार से बतलायी गयी। उसके बाद जिन शब्दों की सर्वनाम संज्ञा होती है उनका वर्णन किया गया है। सर्वनामसंज्ञक शब्द पैंतीस हैं।

जसः शी इत्यादि विशेष कार्यों के लिए सर्वादिगण में पठित शब्दों की सर्वनाम संज्ञा की गयी है। इस पाठ में सर्व शब्द में जितने विशेष कार्य होते हैं। उन्हें सूत्र सहित वर्णन किये गये हैं।

पाठान्त प्रश्न

1. टाङसिङसामिनात्स्याः इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।

2. स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ सूत्र की व्याख्या कीजिए।

3. आदेशप्रत्यययोः सूत्र की व्याख्या कीजिए।

4. सर्वादीनि सर्वनामानि सूत्र की व्याख्या कीजिए।

5. आमि सर्वनाम्नः सुट् सूत्र की व्याख्या कीजिए।

6. सूत्रोल्लेख पूर्वक रूप सिद्ध कीजिए - रामेण, रामाय, रामाभ्याम् रामेभ्यः, रामात्, रामस्य, रामयोः, रामाणाम्, रामे रामेषु, सर्वे, सर्वस्मात्, सर्वेषाम्, सर्वस्मिन्।

ध्यान दें:

पाठगत प्रश्नोत्तर

उत्तर-1

1. टाङसिङसामिनात्स्याः।
2. अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि इस से
3. अकारान्त अंग से परे टादियों के स्थान पर इन आदि क्रम से होते हैं।
4. सुपि च
5. यञादि सुप् परे रहते अदन्त अंग को दीर्घ होता है।
6. अतो भिस ऐस्
7. यादेश

उत्तर-2

8. अतिदेश सूत्र
9. स्थानी अलाश्रयविधि में नहीं
10. स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ
11. बहुवचने झल्येत्
12. झलादि बहुवचन सुप परे रहते, अदन्त अंग को एकार होता है।
13. अवसान परे रहते झल् को विकल्प से च हो।
14. ओस् परे रहते अदन्त अंग को एकार होता है।

उत्तर-3

15. ह्रस्वनद्यापो नुट्
16. ह्रस्वान्त आबन्त और नद्यन्त अंग से परे आम् को नुट् आगम होता है।
17. नामि
18. नाम परे रहते अजन्त अंग को दीर्घ होता है।
19. आदेशप्रत्यययोः
20. सर्वनामसंज्ञा
21. आदेशप्रत्यययोः
22. इण्कोः

ध्यान दें:

उत्तर-4

23. शी आदेश होता है

24. अदन्त सर्वनाम से परे जस् को शी आदेश होता है।

25. स्मै आदेश होता है।

26. स्मात् और स्मिन् आदेश होते हैं।

27. आमि सर्वनाम्नः सुट्।

28. अवर्णान्त से परे सर्वनाम से विहित आम् को सुट् का आगम होता है।

ध्यान दें:

12

अजन्त पुल्लिंग में इकारादि शब्दों के रूप

पूर्वतन पाठ में आप राम शब्द के रूप सिद्ध करना जान गये। पैंतीस सर्वनाम शब्दों को भी जान चुके। पहले अजन्तों में अकारान्त शब्दों के रूप सिद्धि की प्रक्रिया जान चुके। और अकारान्त सर्वनामसंज्ञक सर्व शब्द की रूपसिद्धि भी समाप्त हुई। अब आकारान्तपुल्लिङ्ग शब्दों के रूपसिद्धि की प्रक्रिया को जानेंगे। तत्पश्चात् वर्णानुक्रम के अनुसार इकारान्तपुल्लिङ्ग शब्दों के रूपसिद्धि की प्रक्रिया को जानेंगे और जहां जहां रूपसिद्धि में कुछ विशेष कार्य हैं, उन विशेष कार्यों के सिद्धि के लिए कुछ विशेष सूत्र भी लगेंगे। रूप सिद्धि हेतु वे ही विशेष सूत्र तथा विशेष कार्य इस प्रकरण में विस्तार पूर्वक बताये जाएंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे-

- आकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द का परिचय जान पाने में;
- पद संज्ञा जान पाने में;
- सर्वनाम स्थान संज्ञा कहां होती है यह जान पाने में;
- भसंज्ञा किसकी होती है यह जान पाने में;
- एक संज्ञा के अधिकार में कौन-सी संज्ञा होती है यह जान पाने में;
- हरि शब्द का परिचय प्राप्त कर पाने में;
- गोशब्द की रूपसिद्धि जानने में;
- उपधा संज्ञा किसकी होती है यह जानने में सक्षम होंगे।

विश्वं पाति इति विश्वपाः यानि विश्व की रक्षा करने वाले श्री हरि। विश्व कर्म उपपद वाली पा रक्षणे धातु से अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते इस सूत्र से विच् प्रत्यय, सर्वापहारी लोप करने पर विश्वपा शब्द निष्पन्न होता है। आकारान्त पुल्लिङ्ग विश्वपा शब्द से प्रथमा के एकवचन की विवक्षा में सु प्रत्यय विश्वपा + सु हुआ, अनुबन्धलोप, रुत्व, विसर्ग विश्वपाः रूप बन गया। विश्वपा शब्द से प्रथमा द्विवचन की विवक्षा

ध्यान दें:

में औ प्रत्यय, वृद्धिरेचि सूत्र से वृद्धि प्राप्त होती है, उसे बांधकर प्रथमयो: पूर्वसवर्ण: इस सूत्र से पूर्वसवर्ण दीर्घ प्राप्त रहता है तब यह सूत्र आरम्भ होता है।

12.1 - दीर्घाज्जसि च॥ 6.1.105।

सूत्रार्थ - दीर्घ से जस् और इच् परे रहते पूर्व सवर्ण दीर्घ नहीं होता है।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। पूर्व सवर्ण दीर्घ का निषेध विधान इस सूत्र से किया जाता है। इस सूत्र में तीन पद हैं। दीर्घात् पंचम्येकवचनान्त पद है, जसि सप्तम्येकवचनान्त पद है, च अव्यय पद है। नादिचि सूत्र से इचि यह सप्तम्यन्त पद तथा न इस अव्यय पद की अनुवृत्ति होती है। प्रथमयो: पूर्वसवर्ण: सूत्र से पूर्वसवर्ण: इस सूत्र से पूर्वसवर्ण: यह प्रथमान्तपद, अक: सवर्णे दीर्घ: सूत्र से दीर्घ: पदों की अनुवृत्ति होती है। एक: पूर्वपरयो: का अधिकार है। सूत्र का अन्वय होगा- दीर्घात् जसि इचि च परे पूर्वपरयो: एक: पूर्वसवर्ण दीर्घो न। सूत्रार्थ सम्पन्न हुआ- दीर्घ से प्रथमा बहुवचन संज्ञक जस् और इच् प्रत्याहार के परे रहते पूर्व और पर के स्थान पर होने वाला पूर्व सवर्ण दीर्घ एकादेश नहीं होता है।

उदाहरण - विश्वपौ।

सूत्रार्थ समन्वय - विश्वपा शब्द से प्रथमा द्विवचन की विवक्षा में औ प्रत्यय, वृद्धिरेचि इस सूत्र से प्राप्त वृद्धि को बाधकर प्रथमयो: पूर्वसवर्ण: से पूर्व सवर्ण दीर्घ प्राप्त हुआ। किन्तु विश्वपा शब्द दीर्घान्त है। उससे पर में इच् प्रत्याहार का औ प्रत्यय है। अत: इस सूत्र से पूर्व सवर्ण दीर्घ का निषेध किया जाता है। पुन: वृद्धि करने पर विश्वपौ यह रूप सिद्ध हो जाता है।

विश्वपा शब्द से प्रथमा बहुवचन की विवक्षा में जस् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, विश्वपा + अस् बन गया। पूर्व सवर्ण दीर्घ प्राप्त रहता है दीर्घाज्जसि च से निषेध, अक: सवर्णे दीर्घ: से दीर्घ एकादेश आकार करने पर तथा रुत्व विसर्ग करने पर विश्वपा: यह रूप सिद्ध हो जाता है।

विश्वपा शब्द से द्वितीया के एकवचन की विवक्षा में विश्वपा + अम् बन गया। पूर्व सवर्ण दीर्घ प्राप्त हुआ उसको बांधकर अमि पूर्व: से पूर्व रूप करने पर विश्वपाम् यह रूप सिद्ध हो जाता है। द्वितीया द्विवचन की विवक्षा में औट् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप पूर्व की तरह विश्वपौ यह रूप सिद्ध होता है।

विश्वपा शब्द से द्वितीया बहुवचन की विवक्षा में शस् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, विश्वपा + अस् इस स्थिति में प्रथमयो: पूर्वसवर्ण: से पूर्वसवर्ण दीर्घ प्राप्त हुआ। उसे बांधकर अगला सूत्र प्रवृत्त होता है।

12.2 - सुडनपुंसकस्य॥ 1.1.42॥

सूत्रार्थ - स्वादि पंचवचन सर्वनामस्थान संज्ञक होते हैं। नपुंसकलिंग में नहीं।

सूत्र व्याख्या - यह संज्ञा सूत्र है। सर्वनाम स्थान संज्ञा इस सूत्र से किया जाता है। द्विपदात्मक इस सूत्र में सुट् यह प्रथमैकवचनान्त पद है। अनपुंसकस्य यह षष्ठी एकवचनान्त समस्त पद है। न नपुंसकम् अनपुंसकम् तस्य अनपुंसकस्य नञ् तत्पुरुष समास। इसका अर्थ होगा नपुंसकलिंग भिन्न का। शि सर्वनामस्थानम् सूत्र से सर्वनामस्थानम् इस पद की अनुवृत्ति होती है। अनपुंसकस्य सुट् सर्वनामस्थानम् यह पद योजना है। यहां सुट् प्रत्याहार है जो कि सु से लेकर औट् के टकार तक है। अत: यह सुट् प्रत्याहार स्वादि पंचवचनो यानि सु, औ, जस्, अम्, औट् का बोधक है। अनपुसकस्य सुट् सर्वनामस्थानं भवति यह इस सूत्र का अन्वय है। अत: अर्थ सम्पन्न होगा नपुंसक भिन्न प्रातिपदिक से विहित सुट् की सर्वनाम स्थान संज्ञा होती है।

ध्यान दें:

उदाहरण - सखा इसका उदाहरण है। वहां पर प्रथमा के एकवचन की विवक्षा में सुप्रत्यय सखि + सु हो गया। यहां सखि शब्द पुल्लिंग में है। और सु प्रत्यय सुट् प्रत्याहार के अन्तर्गत है अतः इस सूत्र से सु की सर्वनाम स्थान संज्ञा होती है। अतः इसके फलस्वरूप सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ इस सूत्र से उपध वृद्धि हो जाती है।

12.3 - स्वादिष्वसर्वनामस्थाने॥ 1,4,17॥

सूत्रार्थ - कप् प्रत्यय की अवधि तक के असर्वनामस्थान संज्ञक स्वादि के परे रहते पूर्व की पद संज्ञा होती है।

सूत्र व्याख्या - यह संज्ञा सूत्र है। इस सूत्र से पद संज्ञा होती है। स्वादिषु असर्वनामस्थाने यह पदच्छेद है। स्वादिषु सप्तमी बहुवचनान्त पद है, असर्वनामस्थाने सप्तम्येकवचनान्त पद है। सुः आदिर्येषां ते स्वादयः तेषु स्वादिषु, बहुव्रीहि समास। न सर्वनामस्थानम् असर्वनामस्थानम् तस्मिन् असर्वनामस्थाने नञ् तत्पुरुष समास। सुप्तिङन्तं पदम् इस सूत्र से पदम् इस प्रथमान्त पद की अनुवृत्ति होती है। कप्प्रत्यय की अवधि तक यह अर्थ व्याख्यान से प्राप्त होता है। अष्टाध्यायी के स्वौजसमौट् इस सूत्र से उरः प्रभृतिभ्यः कप् इस सूत्र में कप् प्रत्यय के अवधि यह अर्थ है। स्वादिषु और असर्वनामस्थाने इन दोनों जगहों पर सप्तमी का श्रवण होता है। अतः तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य इस परिभाषा से निर्दिष्टे पूर्वस्य ये दो पद प्राप्त होते हैं। पद योजना इस प्रकार की होगी - स्वादिषु असर्वनामस्थाने कप्प्रत्ययावधिषु निर्दिष्टेषु पूर्वस्य पदम्। असर्वनामस्थाने यह पद स्वादिषु का विशेषण है। असर्वनामस्थाने में बहुत्व होने पर भी एकवचन आर्ष है। इस प्रकार इस सूत्र का अर्थ होगा - कप्प्रत्ययावधिक असर्वनामस्थान संज्ञक स्वादि प्रत्यय के परे रहते पूर्व की पद संज्ञा होती है।

12.4 - यचि भम्॥ 1.4.18॥

सूत्रार्थ - यकारादि अजादि कप्प्रत्ययावधिक असर्वनामस्थान संज्ञक स्वादि प्रत्यय परे रहते पूर्व की भसंज्ञा होती है।

सूत्र व्याख्या - यह संज्ञा सूत्र है। इस सूत्र से भसंज्ञा की जाती है। द्विपदात्मक इस सूत्र में यचि सप्तम्येकवचनान्त पद है। भम् प्रथमैकवचनान्त पद है। य् च अच् च इति यच् तस्मिन् यचि समाहार योग द्वन्द्व समास। स्वादिष्वसर्वनामस्थाने यह सम्पूर्ण पद अनुवर्तित होता है। कप्प्रत्ययावधि यह व्याख्यान से प्राप्त होता है। अष्टाध्यायी के स्वौजसमौट् इस सूत्र से उरः प्रभृतिभ्यः कप् इस सूत्र में कप् प्रत्यय के अवधि तक यह अर्थ होता है। यचि कप्प्रत्ययावधिषु स्वादिष्वसर्वनामस्थानेषु यह पद योजना है। यचि इस पद में पर सप्तमी है अतः तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य इस परिभाषा से निर्दिष्टे पूर्वस्य ये दो पद प्राप्त होते हैं। यचि में अल् ग्रहण करने के कारण तथा सप्तमी निर्देश होने के कारण तदादि विधि के द्वारा यादि अजादि यह अर्थ प्राप्त होता है। इस प्रकार अर्थ सम्पन्न होगा- असर्वनाम स्थान संज्ञक यकारादि अजादि कप्प्रत्ययावधिक स्वादि प्रत्यय के परे रहते पूर्व की भसंज्ञा होती है। स्वादिष्वसर्वनामस्थाने का अपवाद यह सूत्र है।

उदाहरण - विश्वपा शब्द से द्वितीया बहुवचन की विवक्षा में शस् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, विश्वपा + अस् बन गया। यहां पर अस् सर्वनामस्थान से भिन्न अजादि स्वादि प्रत्यय है, अतः इस सूत्र से पूर्व की भसंज्ञा होती है।

ध्यान दें:

12.5 - आकडारादेका संज्ञा।। 1.4.1।

सूत्रार्थ - यहां से लेकर कडारा: कर्मधारये इस सूत्र से पहले तक एक की एक ही संज्ञा होती है।

सूत्र व्याख्या - यह अधिकार सूत्र है। कडारा: कर्मधारये सूत्र से पहले तक यह सूत्र अधिकृत है।आ कडारात् एका संज्ञा यह सूत्र गत पदच्छेद है। चार पदों वाले इस सूत्र में आ अव्यय पद है। आ के द्वारा आङ् इस उपसर्ग का ग्रहण होता है। यहां पर आङ् यह उपसर्ग मर्यादार्थक है। अत: कडारा: से पूर्व यह अर्थ होता है। कडारात् यह पंचम्येकवचनान्त पद है। यहां आङ् इस उपसर्ग के योग में। पंचमी है। एक, संज्ञा यह दो प्रथमैकवचनान्त पद है। आकडारात् एक संज्ञा यह पद योजना है। इस प्रकार यह अर्थ होगा- यहां से लेकर कडारा: कर्मधारये इस सूत्र से पूर्व तक एक की एक ही संज्ञा होती है।

विशेष व्याख्या - इस अधिकार में एक की एक ही संज्ञा होती है यह बताया गया है। तब फिर कौन-सी संज्ञा होती है। इस विषय में यह नियम बताया जाता है। जो संज्ञा पर में हो, तथा अनवकाश हो वही संज्ञा होती है। अर्थात् अष्टाध्यायी में जो संज्ञा पर में हो तथा जिस संज्ञा का कहीं और अवकाश न हो, वही संज्ञा होगी। सुबादि असर्वनाम स्थान विभक्ति के परे रहते भसंज्ञा और पद संज्ञा दोनों एक साथ प्राप्त हुई। अष्टाध्यायी में पर है भसंज्ञा, तथा अनवकाश भी है। क्योंकि सर्वनाम स्थान भिन्न अकारादि यकारादि सुबादिप्रत्यय के परे रहते भी पद संज्ञा होती है। तब भसंज्ञा अनवकाश हुई। अत: कप्प्रत्ययावधिक अजादि यकारादि स्वादि प्रत्यय के परे रहते भसंज्ञा होती है और स्थानों पर पद संज्ञा होती है।

उदाहरण - आकारान्त प्रातिपदिक विश्वपा शब्द से द्वितीया बहुवचन की विवक्षा में शस् प्रत्यय, अनुबन्धलोप, विश्वपा + अस् बन गया। यहां विश्वपा शब्द पुल्लिंग में है। उसके बाद अजादि प्रत्यय है, शस् प्रत्यय की सर्वनामस्थान संज्ञा नहीं होती है क्योंकि शस् प्रत्यय सुट् प्रत्याहार में नहीं आता है। अत: विश्वपा शब्द से असर्वनामस्थान संज्ञक अजादि प्रत्यय शस् के परे रहते पद संज्ञा और भसंज्ञा दोनों एक साथ प्राप्त होती है। किन्तु भसंज्ञा विधायक सूत्र अष्टाध्यायी में पद संज्ञा विधायक सूत्र से पर में है। अत: यहां भसंज्ञा विधायक सूत्र अवकाश रहित है। अत: प्रस्तुत सूत्र से विश्वपा शब्द की भसंज्ञा होती है। विश्वपा + अस् बन जाने पर यह अगला सूत्र प्रवृत्त होता है।

पाठगत प्रश्न-1

1. दीर्घाज्जसि च इस सूत्र से क्या विधान किया जाता है?
2. दीर्घाज्जसि च सूत्र का अर्थ लिखें?
3. सर्वनाम स्थान संज्ञा विधान करने वाला सूत्र लिखें?
4. पद संज्ञा करने वाला सूत्र लिखें?
5. आकडारादेका संज्ञा यह किस प्रकार का सूत्र है?
6. भसंज्ञा करने वाला सूत्र लिखें?

12.6 - आतो धातो:।। 6.4.140

सूत्रार्थ - आकारान्त जो धातु तदन्त भसंज्ञक अंग का लोप होता है।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। आत: यह षष्ठ्येकवचनान्त पद है। धातो: भी षष्ठ्येकवचनान्त

ध्यान दें:

पद है। अल्लोपोऽनः इस सूत्र से लोपः यह प्रथमान्त पद अनुवर्तित होता है। अङ्गस्य भस्य इन दो षष्ठ्यन्त पदों का अधिकार है। आतः धातोः अङ्गस्य भस्य लोपः यह पद योजना है। आतः यह पद धातोः का विशेषण है। धातोः यह पद भस्य का विशेषण है। अतः येन विधिस्तदन्तस्य इस सूत्र से तदन्तविधि होती है। आतः यह षष्ठी निर्देश के कारण अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा के द्वारा अन्तिम अल् यह अर्थ प्राप्त होता है। इस प्रकार सूत्र का अर्थ बनता है- आकारान्त जो धातु तदन्त भसंज्ञक अङ्ग का लोप होता है।

उदाहरण - विश्वपः।

सूत्रार्थ समन्वय - विश्वपा शब्द से द्वितीया बहुवचन की विवक्षा में शस् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, विश्वपा + अस् बन गया। तत्पश्चात् विश्वपा शब्द की यचि भम् इस सूत्र से भसंज्ञा होती है और विश्वपा शब्द आकारान्त है, पा धातु है। अतः आतो लोपः इस सूत्र से पाधातु के भसंज्ञक आकार का लोप करने पर विश्वपस् हो गया। सकार को रुत्व विसर्ग करने पर विश्वपः यह रूप बन गया।

तृतीया के एकवचन की विवक्षा में टाप्रत्यय, अनुबन्ध लोप, आतो धातोः सूत्र से पाधातु के भसंज्ञक अङ्ग के आकार का लोप, वर्ण सम्मेलन करने पर विश्वपा यह रूप बन गया।

तृतीया द्विवचन की विवक्षा में भ्याम् प्रत्यय, भसंज्ञा न होने के कारण आतो धातोः सूत्र से लोप नहीं हुआ फलस्वरूप विश्वपाभ्याम् रूप सिद्ध हुआ। इसी प्रकार से तृतीया आदि अजादि विभक्तियों में सभी जगह भसंज्ञा होने के कारण आकार का लोप होगा तथा तृतीया आदि हलादि विभक्तियों में पद संज्ञा होने के कारण भसंज्ञा नहीं होगी अतः आकार का लोप नहीं होगा। अतः तृतीया बहुवचन भिस् प्रत्यय विश्वपाभिः बन गया। चतुर्थी के एकवचन में ङे प्रत्यय विश्वपे, द्विवचन में विश्वपाभ्याम्, बहुवचन में विश्वपाभ्यः। पंचमी के एकवचन में विश्वपः द्विवचन में विश्वपाभ्याम्, बहुवचन में विश्वपाभ्यः। षष्ठी के एकवचन में विश्वपः, द्विवचन में विश्वपोः, बहुवचन में विश्वपाम्। सप्तमी के एकवचन में विश्वपि द्विवचन में विश्वपोः बहुवचन में विश्वपासु। सम्बोधन में हे विश्वपाः ! द्विवचन में हे विश्वपौ! बहुवचन में हे विश्वपाः !

इस प्रकार आकारान्त पुल्लिंग प्रकरण समाप्त हुआ।

अथ इकारान्त पुल्लिंग प्रकरण-

हरति पापानि इति हरिः। शाकटायन के मत में व्युत्पन्न होते हुए भी, पाणिनि के मत में अव्युत्पन्न होने के कारण विष्णु आदि नानार्थक इकारान्त नित्य पुल्लिङ्ग हरि शब्द की अर्थवदधातुर प्रत्ययः प्रातिपदिकम् इस सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा होती है। तत्पश्चात् ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः, परश्च इन सूत्रों के अधिकार में स्थित स्वौजसमौट्- इस सूत्र से स्वादि इक्कीस प्रत्यय एक साथ प्राप्त हुए। अन्य प्रक्रियागत कार्य करने पर प्रथमा के एकवचन की विवक्षा में। सु प्रत्यय हरिष् + सु बन गया उकार का उपदेशेऽजनुनासिक इत् इस सूत्र से इत्संज्ञा, तस्य लोपः से लोप। हरिस् बन गया। इस समुदाय की सुप्तिङन्तं पदम् से पद संज्ञा, ससजुषो रुः से रुत्व, अनुबन्धलोप, हरिर् बन गया। यहां पर रेफ के बाद किसी अन्य वर्ण के उच्चारण न होने के कारण अभाव कि अवसान संज्ञा होती है। तत्पश्चात् खरवसानयोर्विसर्जनीयः सूत्र से विसर्ग करने पर हरिः यह रूप सिद्ध हो जाता है।

हरि शब्द से प्रथमा के द्विवचन में औ प्रत्यय, हरि + औ बन गया। पूर्वसवर्णदीर्घ करने पर हरी यह रूप सिद्ध हो जाता है। अब हरि शब्द से प्रथमा बहुवचन की विवक्षा में जस् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप करने पर हरि + अस् बन गया। तब-

ध्यान दें:

12.7- जसि च॥ 7.3.109

सूत्रार्थ - ह्रस्वान्त अङ्ग को गुण होता है, जस् परे रहते।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। दो पद वाले इस सूत्र में जसि सप्तमी का एकवचन तथा च अव्यय पद है। ह्रस्वस्य गुणः यह सूत्र अनुवृत्त होता है। ह्रस्वस्य यह षष्ठ्यन्त पद है, गुणः प्रथमान्त पद है। अङ्गस्य इस षष्ठ्यन्त का अधिकार है। ह्रस्वस्य यह पद अङ्गस्य का विशेषण है। अतः येन विधि स्तदन्तस्य इस परिभाषा से तदन्तविधि के कारण ह्रस्वान्तस्य यह पद प्राप्त होता है। यहां पर गुण शब्द का उच्चारण करके गुण का विधान किये जाने के कारण इको गुणवृद्धी इस परिभाषा से इकः यह षष्ठ्यन्त पद उपस्थित हो जाता है। इकः यह पद ह्रस्वस्य का विशेषण है अतः येनविधिस्तदन्तस्य इस परिभाषा से तदन्तविधि के कारण इगन्त ह्रस्वान्त अर्थ प्राप्त हो जाता है। ह्रस्वस्य में षष्ठी निर्देश होने के कारण अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा से अन्त्यस्य और अलः इन दो पदों का लाभ होता है। इस कारण से सूत्रार्थ बना - जस् के परे रहन पर इगन्त ह्रस्वान्त अङ्ग के अन्तिम अल् को गुण होता है।

उदाहरण - हरयः।

सूत्रार्थ समन्वय - हरि शब्द से प्रथमा बहुवचन की विवक्षा में जस् प्रत्यय अनुबन्ध लोप, हरि + अस् इस स्थिति में पूर्वसवर्ण दीर्घ प्राप्त है उसे बांधकर अलोऽन्त्यस्य इस सूत्र से परिष्कृत जसि च से अंगसंज्ञक हरिशब्द के अन्तिम इकार को स्थान से समानता होने के कारण एकार करने पर हरे + अस् हो गया। तत्पश्चात् अकार रूप अच् पर में होने के कारण एचोऽयवायावः सूत्र से एकार के स्थान पर अय् आदेश, वर्ण सम्मेलन करने पर हरयस् बन गया सकार को रुत्व विसर्ग करने पर हरयः यह रूप बन गया।

12.8 - ह्रस्वस्य गुणः 7.3.108।

सूत्रार्थ - ह्रस्व को गुण होता है सम्बुद्धि में।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। ह्रस्वस्य षष्ठी का एकवचन है। गुणः प्रथमैकवचनान्त पद है। सम्बुद्धौ च से सम्बुद्धौ यह सप्तम्यन्त पद अनुवर्तित होता है। अङ्गस्य के अधिकार में यह सूत्र पढ़ा गया है। यहां गुण शब्द के द्वारा गुण का विधान किये जाने के कारण इको गुणवृद्धी इस परिभाषा से इकः यह षष्ठ्यन्त पद उपस्थित होता है। ह्रस्वस्य इकः अङ्गस्य गुणः यह पद योजना है। ह्रस्वस्य यह पद अंगस्य का विशेषण है तथा इकः पद ह्रस्वस्य का विशेषण है। अतः येन विधिस्तदन्तस्य से तदन्त विधि होने के कारण इगन्त ह्रस्वान्त अंग यह अर्थ मिल जाता है। ह्रस्वस्य यहां षष्ठी निर्देश होने के कारण अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा से अलः और अन्त्यस्य ये दो पद उपस्थित हो जाते हैं। अतः सूत्रार्थ सम्पन्न हुआ- इगन्त ह्रस्वान्त जो अङ्ग उसके अन्तिम अल् के स्थान पर गुण आदेश होता है। सम्बुद्धि पर में हो तो।

उदाहरण - हे हरे।

सूत्रार्थ समन्वय - हरि शब्द से सम्बोधन के एकवचन में सुप्रत्यय अनुबन्ध लोप, हरि + स् बन गया। सु प्रत्यय की एकवचनं सम्बुद्धिः से सम्बुद्धि संज्ञा होती है। अलोऽन्त्यस्य सूत्र से परिष्कृत ह्रस्वस्य गुणः इस सूत्र से ह्रस्वान्त इगन्त अङ्गसंज्ञक हरि शब्द के अन्तिम इकार के स्थान पर स्थान से साम्य होने के कारण इकार को गुण एकार करने पर हरे + स् बन गया। तत्पश्चात् एङ्ह्रस्वात्सम्बुद्धेः सूत्र से एङ् से पर में विद्यमान सम्बुद्धि का लोप करने पर हे हरे। यह रूप सिद्ध हो जाता है।

ध्यान दें:

हरि शब्द से द्वितीया के एकवचन में अम् प्रत्यय, अमि पूर्वः से पूर्वरूप, हरिम् बन गया।

द्वितीया के द्विवचन में औट् प्रत्यय हरि+औ इस स्थिति में वृद्धिरेचि से वृद्धि प्राप्त हुई जिसको बांधकर प्रथमयोः पूर्वसवर्णः से पूर्वसवर्ण दीर्घ करने पर हरी यह रूप सिद्ध हो जाता है।

द्वितीया के बहुवचन की विवक्षा में शस् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, हरि + अस् बन गया। पूर्वसवर्णदीर्घ करने पर तस्माच्छसो नः पुंसि सूत्र से कृत पूर्व सवर्ण दीर्घ से पर में विद्यमान शस् के सकार को नकार करने पर हरीन् यह रूप सिद्ध हुआ। पदान्तस्य सूत्र से निषेध होने के कारण अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि से णत्व नहीं होता है।

हरि शब्द नदी संज्ञक नहीं है ह्रस्व इवर्णान्त है अतः शेषो घ्यसखि सूत्र से घिसंज्ञा होती है। घिसंज्ञा का फल अग्रिम सूत्र में बतलाया जाता है।

12.09 आङो नाऽस्त्रियाम्॥ 7,3,119

सूत्रार्थ - घि संज्ञक से पर मे विद्यमान आङ् को ना आदेश होता है। स्त्रीलिंग में नहीं।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। आङः ना अस्त्रियाम् यह सूत्र का पदच्छेद है। आङः यह षष्ठ्येकवचनान्त पद है। ना प्रथमान्त पद है, यहां विभक्ति लोप आर्ष है। अस्त्रियाम् सप्तम्येकवचनान्त पद है। न स्त्रियाम् अस्त्रियाम् नञ् तत्पुरुषसमास। अच्च घेः सूत्र से घेः यह पंचम्यन्त पद अनुवर्तित होता है। घेः आङः ना अस्त्रियाम् यह पद योजना है। घेः में पंचमी विभक्ति के श्रवण होने के कारण तस्मादित्युत्तरस्य इस परिभाषा सूत्र से परस्य इस पद का लाभ हो जाता है। सूत्रार्थ सम्पन्न हुआ - स्त्रीलिंग से भिन्न घिसंज्ञक से पर में विद्यमान आङ को ना आदेश होता है यह अर्थ प्राप्त होता है।

उदाहरण - हरिणा।

सूत्रार्थ समन्वय - हरि शब्द से तृतीया के एकवचन की विवक्षा में टा प्रत्यय अनुबन्ध लोप, हरि + आ यह स्थिति हो गयी। तत्पश्चात् शेषो घ्यसखि से नदी संज्ञक से भिन्न इकारान्त हरि शब्द की घिसंज्ञा होती है। तत्पश्चात् आङो नाऽस्त्रियाम् से घि संज्ञक पर में विद्यमान टा के स्थान पर अनेकाल् होने के कारण ना यह सर्वादेश हो जाता है। तत्पश्चात् अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि सूत्र से रेफरूपी निमित्त से अट् प्रत्याहार के व्यवधान होने के कारण णत्व करने पर हरिणा यह रूप सिद्ध हो जाता है। हरि शब्द से तृतीया द्विवचन की विवक्षा में भ्याम् प्रत्यय हरिभ्याम् यह रूप बना। यहां अदन्त अंग के न होने के कारण सुपि च से दीर्घ नहीं हो पाता है। बहुवचने हरिभिः यह रूप सिद्ध होगा। यहां अदन्त अंग न होने के कारण अतो भिस ऐदा से ऐसादेश नहीं होता है।

पाठगत प्रश्न-2

7. आतो धातोः सूत्र का अर्थ लिखें?
8. हरि + जस् इस स्थिति में इकार को गुण कैसे होता है?
9. जसि च सूत्र का अर्थ लिखो?
10. हे हरे में गुण किससे होता है?
11. घि संज्ञा करने वाला सूत्र कौन-सा है?
12. घि से पर में विद्यमान टा को ना आदेश किस सूत्र से होता है?

ध्यान दें:

12.10 - होर्ङिति॥ 7.3.111

सूत्रार्थ - घिसंज्ञक को ङित् सुप परे रहने पर गुण होता है।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। घे: ङिति यह सूत्र पदच्छेद है। घे: यह षष्ठ्येकवचनान्त पद है। ङिति यह सप्तम्यन्त पद है। ह्रस्वस्य गुण: इस सूत्र से गुण: यह प्रथमान्त पद अनुवृत्त होता है। सुपि च से सुपि यह सप्तम्यन्त पद अनुवृत्त होता है। घे: ङिति सुपि गुण: यह पद योजना होगी। यहां गुण शब्द के श्रवण के कारण इको गुणवृद्धी इस सूत्र से इक: यह षष्ठ्यन्त पद उपस्थित होता है। इक: यह पद घे: का विशेषण है। अत: तदन्तविधि के द्वारा इगन्तस्य यह पद प्राप्त हो जाता है। ङिति इस पद में सप्तमी का निर्देश होने के कारण ङित् परे रहते यह अर्थ बनता है। घे: यह षष्ठी विभक्ति निर्देश होने के कारण अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा से अन्तिम अल् को यह अर्थ प्राप्त होता है। अत: सूत्रार्थ बनता है - इगन्त घिसंज्ञक को ङित् सुप् परे रहते अन्तिम अल् को गुण आदेश होता है।

उदाहरण - हरये।

सूत्रार्थ समन्वय - हरि शब्द से चतुर्थी एकवचन की विवक्षा में ङे प्रत्यय, अनुबन्धलोप, हरि +ए बन गया। ङे प्रत्यय ङित् है। अत: इस ङित् सुप् के परे रहते अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा के द्वारा परिष्कृत घेङिर्ति इस सूत्र से घिसंज्ञक हरि शब्द के अन्तिम इकार के स्थान पर स्थान से आन्तर्य होने के कारण गुण एकार करने पर हरे+ए बन गया। एकाररूप अच् के पर में होने के कारण एकार के स्थान पर एचोऽयवायाव: से अय् आदेश। वर्ण सम्मेलन हरये यह रूप बन गया।

चतुर्थी के द्विवचन में हरिभ्याम् और बहुवचन में हरिभ्य: ये रूप बनते हैं ।

12.11 - ङसिङसोश्च॥ 6.1.116॥

सूत्रार्थ - एङ् प्रत्याहार से ङसि और ङस् का अकार पर में हो तो पूर्व रूप एकादेश होता है।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। ङसिङसो: षष्ठीद्विवचनान्त पद है। च अव्यय पद है। ङसिश्च ङश्च तयो: इतरेतर योगद्वन्द्व: ङसिङसौ तयो: ङसिङसो: । एङ: पदान्तादति इस सूत्र से एङ: यह पंचम्यन्त तथा अति यह सप्तम्यन्त पद अनुवर्तित होता है। अमि पूर्व: से पूर्व: यह प्रथमान्त पद अनुवृत्त होता है। एक: पूर्वपरयो: सूत्र का अधिकार है। एङ: ङसिङसो: पूर्वपरयो: एक: पूर्व: च अति यह पद योजना है। एङ् यह पद एङ् प्रत्याहार का वाचक है। अति का अर्थ है ह्रस्व अकार परे रहते। इस प्रकार इस सूत्र का फलितार्थ हुआ - एङ् प्रत्याहार से ङसि और ङस् प्रत्यय के अकार परे रहते पूर्व और पर के स्थान पर पूर्वरूप एकादेश होता है।

उदाहरण - हरे:।

सूत्रार्थ समन्वय - हरि शब्द से पंचमी एकवचन की विवक्षा में ङसि प्रत्यय अनुबन्धलोप, जसि च से गुण, एकार करने पर हरे + अस् बन गया। अयादेश प्राप्त होता है उसे बांधकर ङसिङसोश्च से पूर्व रूप एकादेश करने पर हरेस् बन गया। सकार को रुत्व और विसर्ग करने पर हरे: यह रूप सिद्ध हो जाता है।

पंचमी द्विवचन में हरिभ्याम्, बहुवचन में हरिभ्य:। षष्ठी के एकवचन में ङस् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, गुण, हरे + अस् बन गया। ङसिङसोश्च से पूर्व रूप एकादेश करने पर हरेस् बन गया, सकार को रुत्व विसर्ग करने पर हरे: यह रूप सिद्ध हो जाता है।

ध्यान दें:

षष्ठी द्विवचन की विवक्षा में ओस् प्रत्यय हरि + ओस् इस स्थिति में इको यणचि से यणादेश यकार करने पर हर्य् ओस् बन गया। सकार को रुत्व विसर्ग करने पर हर्यो: यह रूप सिद्ध हो जाता है।

षष्ठी बहुवचन में आम् प्रत्यय हरि + आम् हो गया। ह्रस्वनद्यापो नुट् से नुट् का आगम अनुबन्ध लोप हरि + नाम् बन गया। तत्पश्चात् नामि सूत्र से नाम् परे रहते इकार को दीर्घ करने पर हरी + नाम् बन गया। नकार को णत्व करने पर हरीणाम् यह रूप सिद्ध हो गया।

12.12- अच्च घे:॥ 7.3.119।

सूत्रार्थ - इकार उकार से पर में विद्यमान ङि के स्थान पर औकार आदेश तथा घिसंज्ञक को अकारान्त आदेश होता है।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। अत् च घे: यह पदच्छेद है। अत् प्रथमैकवचनान्त पद है। च अव्यय पद है। घे: षष्ठी एकवचनान्त पद है। ङेराम्नद्याम्नीभ्य: सूत्र से ङे: यह षष्ठ्यन्त पद अनुवर्तित होता है। इदुद्भ्याम् यह पंचम्यन्त सूत्र तथा औत् यह प्रथमान्त सूत्र अनुवर्तित होता है। इदुद्भ्याम् में पंचमी निर्देश होने के कारण तस्मादित्युत्तरस्य परिभाषा से परस्य पद प्राप्त हो जाता है। घे: में षष्ठी विभक्ति निर्देश होने के कारण अलोऽन्त्यस्य परिभाषा के द्वारा अल: और अन्त्यस्य ये दो पद उपस्थित होते हैं। सूत्र का अन्वय होगा इदुद्भ्याम् उत्तरस्य ङे: औत् घे: अत् च। इस सूत्र से दो कार्य किये जाते हैं। पहला इकार और उकार से परे ङि के स्थान पर औकार आदेश, दूसरा कार्य घि के स्थान पर अकारादेश होता है।

इस सूत्र का फलितार्थ हुआ - इकारान्त और उकारान्त से परे ङि के स्थान पर औकार आदेश तथा घिसंज्ञक के अन्तिम वर्ण को अकार आदेश होता है।

उदाहरण - हरौ।

सूत्रार्थ समन्वय - हरि शब्द से सप्तमी एकवचन की विवक्षा में ङिप्रत्यय, अनुबन्ध लोप, हरि+इ बन गया। यहां घेर्ङिति से गुण प्राप्त है उसे बांधकर अच्च घे: सूत्र से ङि के इकार के स्थान पर औकार आदेश तथा अलोऽन्त्यस्य परिभाषा से परिष्कृत इस सूत्र से हरि शब्द के अन्तिम अल् इकार को अकार आदेश होता है। तब हर + औ बन गया। वृद्धिरेचि सूत्र से वृद्धि एकादेश करने पर हरौ यह रूप सिद्ध हो जाता है।

सप्तमी द्विवचन में ओस् प्रत्यय हर्यो: तथा बहुवचन में सुप् प्रत्यय करने पर हरिषु यह रूप सिद्ध हो जाता है।

पाठगत प्रश्न-3

13. हरि + ए में गुण कैसे होता है?
14. घेर्ङिति सूत्र का अर्थ लिखें?
15. घेर्ङिति किस प्रकार का सूत्र है?
16. ङसिङसोश्च इस सूत्र से क्या विधान किया जाता है?
17. ङसिङसोश्च इस सूत्र का अर्थ लिखें?
18. अच्च घे: किस प्रकार का सूत्र है?

ध्यान दें:

12.13 - गोतो णित्॥ 7.1.90

सूत्रार्थ - गोशब्द से परे सर्वनामस्थान को णित्वद् भाव होता है।

सूत्र व्याख्या - यह अतिदेश सूत्र है। इस सूत्र में दो पद है। गोतः यह पंचम्येकवचनान्त पद है। णित् यह प्रथमान्त पद है। इतोऽत्सर्वनामस्थाने इस सूत्र से प्रथमा विभक्ति में विपरिणाम करके सर्वनामस्थानम् यह पद अनुवृत्त होता है। गोतः में तपरकरण किया गया है। गोतः इस पद में पंचमी निर्देश होने के कारण तस्मादित्युत्तरस्य इस परिभाषा से गोशब्द से पर यह अर्थ प्राप्त होता है। अतः गो शब्द से पर में विद्यमान सर्वनास्थान णिद्वत् होता है, यह सूत्रार्थ होता है।

उदाहरण - गौः

गो शब्द से प्रथमा के एकवचन की विवक्षा में सुप्रत्यय गो + सु बन गया। उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इत् इस सूत्र से इत्संज्ञा तस्य लोपः से लोप। गो + स् बन गया। यहां सुप्रत्यय सुडनपुंसकस्य से सर्वनामस्थान संज्ञक है। अतः इस सूत्र से सु प्रत्यय का विद्वद् भाव होता है। तब यह सूत्र लगता है-

12.14 - अचो ञ्णिति॥ 7.1.90

सूत्रार्थ - ञित् और णित् परे रहते अजन्त अंग को वृद्धि होती है।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। अचः षष्ठ्येकवचनान्त पद है। ञ्णिति यह सप्तम्येकवचनान्त पद है।। ञ् च् ण् च् इति। ञ्णौ तौ इतौ यस्य तत् ञ्णित् तस्मिन् ञ्णिति, द्वन्द्वगर्भबहुव्रीहि समास। मृजेर्वृद्धिः से वृद्धिः यह विधेय पद अनुवर्तित होता है। अङ्गस्य सूत्र का अधिकार है। अचः यह पद अङ्गस्य का विशेषण है। अतः तदन्तविधि के द्वारा अजन्त अङ्ग को यह अर्थ प्राप्त होता है। सूत्रार्थ फलित होगा - ञिति और णिति के परे रहते अजन्त अङ्ग को वृद्धि होती है।

उदाहरण - गौः।

सूत्रार्थ समन्वय - गो शब्द से प्रथमैकवचन की विवक्षा में सुप्रत्यय, अनुबन्ध लोप, सुप्रत्यय की सुडनपुंसकस्य सूत्र से सर्वनामस्थान संज्ञा होती है। उस सु का गोतो णित् इस सूत्र से णिद्वत् भाव का अतिदेश किया जाता है। अतः णित् वत् भाव होने के कारण इस सूत्र से णित् के परे रहने पर अजन्त अङ्ग को वृद्धि औकार करने पर गौस् बन गया। सकार को रुत्व विसर्ग करने पर गौः यह रूप सिद्ध हो जाता है।

प्रथमा के द्विवचन में औ प्रत्यय गो + औ यहां पर औ को गोतो णित् से णित्वद् भाव, वृद्धि करने पर गौ + औ बन गया, एचोऽयवायावः सूत्र से औ के स्थान पर आव् आदेश करने पर गावौ यह रूप सिद्ध हो जाता है।

बहुवचन में जस् प्रत्यय अनुबन्ध लोप गो + अस् इस स्थिति में णिद्वद्भाव, वृद्धि, गौ + अस् बन गया। आवादेश, सकार को रुत्व विसर्ग करने पर गावः यह रूप सिद्ध हो जाता है।

गो शब्द के सम्बोधन एकवचन में सुप्रत्यय, अनुबन्धलोप, हे गो स् बन गया सुप्रत्यय के णिद्वद्भाव होने के कारण इस सूत्र से वृद्धि रुत्व विसर्ग करने पर गौः यह रूप सिद्ध होता है।

गोशब्द से प्रथमा द्विवचन की विवक्षा में। औ प्रत्यय, णिद्वद् भाव, वृद्धि, आवादेश हे गावौ यह

ध्यान दें:

रूप बन जाता है। बहुवचन में जस् प्रत्यय अनुबन्ध लोप हे गो अस् इस स्थिति में पूर्व की तरह णिद्वद्भाव, वृद्धि, रुत्व विसर्ग। हे गाव: यह रूप सिद्ध होता है।

12.15 - औतोऽम्शसो:॥ 6.1.91

सूत्रार्थ - ओकार से अम् और शस् का अच् परे रहते आकार एकादेश होता है।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में तीन पद हैं। आ ओत: अम्शसो: यह सूत्रगत पदच्छेद है।

यहां आ लुप्तप्रथमान्त विधेयबोधक पद है। ओत: यह पंचम्येकवचनान्त पद है। अम्शसो: षष्ठी द्विवचनान्त समस्त अम्च शश्च अम्शसौ तयो: अम्शसो: इतरेतर योग द्वन्द्व समास। यहां षष्ठी अवयवार्थक है। इको यणचि सूत्र से अचि यह सप्तम्यन्त पद अनुवृत्त है। एक: पूर्वपरयो: का अधिकार है। ओत: इस पद में तपर करण करने के कारण ओकार मात्र का ग्रहण होता है। सूत्र का अन्वय इस प्रकार से होगा- ओतो अम्शसो: अचि पूर्वपरयो: आ एक:।

इस सूत्र का फलितार्थ होगा - अम् और शस् का अवयव अच् पर में हो तो पूर्व और पर के स्थान पर आकार एकादेश होता है।

उदाहरण - गाम्।

सूत्रार्थ समन्वय - गो शब्द से द्वितीया के एकवचन की विवक्षा में अम् प्रत्यय, प्रस्तुत सूत्र से ओकार और अकार के स्थान पर आकार रूप एकादेश करने पर गाम् यह रूप सिद्ध हो जाता है।

द्वितीया द्विवचन की विवक्षा में औट् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, गो औ में पहले की तरह गावौ बन जाएगा।

बहुवचन में शस् प्रत्यय अनुबन्धलोप गो + अस् बन गया। यहां पर औतोऽम्शसो: से ओकार और अकार के स्थान पर आकार आदेश करने पर तथा रुत्व विसर्ग करके गा: यह रूप सिद्ध हो जाता है।

गोशब्द से तृतीया के एकवचन में टा प्रत्यय अनुबन्धलोप, गो + आ इस स्थिति में एचोऽयवायाव: से अवादेश करने पर गवा यह रूप सिद्ध हो गया।

तृतीया द्विवचन में भ्याम् प्रत्यय, गोभ्याम् बन जाएगा। बहुवचन में भिस् प्रत्यय, सकार को रुत्वविसर्ग गोभि: यह रूप सिद्ध हो जाएगा।

चतुर्थी के एकवचन में ङे प्रत्यय अनुबन्ध लोप गो ए बन गया। एचोऽयवायाव: से ओकार को अवादेश करने पर गवे यह रूप सिद्ध हो जाता है। द्विवचन में भ्याम् प्रत्यय गोभ्याम्, बहुवचन में भ्यस् प्रत्यय गोभ्य: ये रूप सिद्ध होंगे।

पंचमी के एकवचन में ङसि प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, गो + अस् इस स्थिति में ङसिङसोश्च से पूर्वरूप एकादेश करने पर गो: यह रूप सिद्ध होगा। द्विवचन में भ्याम् प्रत्यय गोभ्याम्, बहुवचन में भ्यस् प्रत्यय गोभ्य: रूप बन जाएगा।

षष्ठी के एकवचन में ङस् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, गो + अस् इस स्थिति में ङसिङसोश्च से पूर्वरूप एकादेश करने पर गो: यह रूप सिद्ध होगा। द्विवचन में ओस् प्रत्यय पूर्ववत् अवादेश, रुत्व विसर्ग गवो: रूप बन जाएगा बहुवचन में आम् प्रत्यय गो + आम् इस स्थिति में पूर्ववत् ओकार को अवादेश गवाम्

ध्यान दें:

यह रूप सिद्ध हुआ। सप्तमी बहुवचन में ङिप्रत्यय, अनुबन्ध लोप गो + इ इस अवस्था में पूर्ववत् अवादेश करने पर गवि यह रूप सिद्ध होता है। द्विवचन में ओस् प्रत्यय पूर्ववत् अवादेश वर्ण सम्मेलन रुत्व विसर्ग गवोः यह रूप बन जाता है। बहुवचन में सुप् प्रत्यय करने पर अनुबन्धलोप, गो + सु इस दशा में सकार को षत्व करने पर गोषु यह रूप सिद्ध होता है।

सिद्धान्त कौमुदी में इस प्रकरण में विद्यमान अन्य प्रकरणों में सदा आवश्यक कुछ सूत्र यहां विचार किये जाते हैं।

12.16 - अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा॥ 1.1.65

सूत्रार्थ - अन्तिम अल् से पूर्व वर्ण उपधा संज्ञक होता है। अलः अन्त्यात् पूर्वः उपधा यह सूत्र का पदच्छेद है। अलः पंचमी का एकवचन है। अन्त्यात् यह पंचम्येकवचनान्त पद है। अन्ते भवः अन्त्यः अर्थात् अन्त में विद्यमान अन्त्य। अन्त्यात् अलः पूर्व उपधा यह पद योजना है। अल् प्रत्याहार वर्ण पर्याय है। अलः इस पद का विशेषण है अन्त्यात्। पूर्वः यह प्रथमैकवचनान्त पद है उपधा भी प्रथमैकवचनान्त पद है। इस सूत्र का अर्थ है- अन्तिम जो वर्ण उससे पहले विद्यमान जो पूर्व वर्ण उपधा संज्ञक होता है।

उदाहरण- सखा।

सूत्रार्थ समन्वय - इस संज्ञा के पश्चात् सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ, अत उपधायाः इन सूत्रों से उपधा कार्य होता है। जैसे - सखि शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा उससे प्रथमैकवचन की विवक्षा में सु प्रत्यय अनुबन्ध लोप, सखि + स् बन गया तत्पश्चात् अनङ् सौ इस सूत्र से अनङ् आदेश, सखन् स् बन गया। सखन् शब्द के अन्तिम अल् से पूर्व वर्ण की उपधा संज्ञा हुई, तब सर्वनाम स्थाने चासम्बुद्धौ इस सूत्र से उपधा के अकार को दीर्घ आकार करने पर सखान् स् बन गया। नकारान्त से परे में विद्यमान सकार का हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् इस सूत्र से लोप सखान् बन गया। यहां प्रत्यय लोप के प्रत्यय लक्षण को मानकर सुप्तिङन्तं पदम् से पद संज्ञा, न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य से नकार का लोप करने पर सखा यह रूप बन गया।

12.17 - अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ॥ 6.4.77॥

सूत्रार्थ - श्नुप्रत्ययान्त इवर्णान्त और उवर्णान्त धातु के तथा भ्रू इस अङ्ग के स्थान पर इयङ् और उवङ् आदेश होते हैं, अजादि प्रत्यय परे रहते।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में चार पद है। अचि यह सप्तम्येकवचनान्त पद है। श्नुधातुभ्रूवाम् षष्ठी बहुवचनान्त पद है, श्नुश्च धातुश्च भ्रुश्च तेषामितरेतर योग द्वन्द्वः श्नुधातुभ्रूवः तेषां श्नुधातुभ्रूवाम् ।। य्वोः षष्ठी द्विवचनान्त पद है। यूच व् इश्च उश्च इति इतरेतर योग द्वन्द्व समास यू तयोः य्वोः। इवर्ण और उवर्ण को यह अर्थ है। इयङुवङौ यह प्रथमा द्विवचनान्त पद है। इयङ्च उवङ्च तयोः इतरेतरयोगद्वन्द्वः इयङुवङौ। अङ्गस्य यह षष्ठ्यन्त सूत्र अधिकृत होता है। श्नुधातुभ्रूवाम् में श्नुप्रत्यय है। अतः प्रत्यय ग्रहण परिभाषा के द्वारा श्नुप्रत्ययान्त यह अर्थ बन जाएगा। अङ्गस्य को वचनविपरिणाम करने पर अङ्गानाम् बन जाता है। प्रत्यय पर में होने पर पूर्व की अङ्ग संज्ञा होती है, जिसके कारण प्रत्यये पद का आक्षेप हो जाता है। वह प्रत्यये पद अचि का विशेष्य बन जाता है, तदादि विधि हो जाने से अजादि प्रत्यय के परे रहते यह अर्थ प्राप्त हो जाता है। य्वोः यह पद धातु मात्र का विशेषण है जिस कारण से तदन्त विधि से इवर्णान्त उवर्णान्त धातु से यह अर्थ प्राप्त हो जाता है। कुल मिलाकर सूत्रार्थ सम्पन्न होगा- श्नु प्रत्ययान्त तथा इवर्णान्त और उवर्णान्त धातु तथा भ्रू इस अङ्ग को इयङ् और उवङ् आदेश होता है। अजादि प्रत्यय परे रहते।

ध्यान दें:

उदाहरण - सुधियौ।

सूत्रार्थ समन्वय - सुधी शब्द से प्रथमा द्विवचन में औ प्रत्यय, सुधी + औ हो गया। यहां पर इको यणचि सूत्र से यणादेश प्राप्त होता है। सुधी में धी ईकारान्त धातु है। उसके बाद औ अजादि प्रत्यय है। अतः इको यणचि सूत्र को बांधकर ङिच्च इस परिभाषा द्वारा परिष्कृत इस सूत्र से सुधी शब्द के अवयव ईकार के स्थान पर इयङ् आदेश, अनुबन्धलोप, सुध् इय् औ बन गया। वर्ण सम्मेलन करने पर सुधियौ यह रूप सिद्ध हो गया।

12.18 एरनेकाचोऽसंयोगपूर्वस्य ॥ 6.4.82॥

सूत्रार्थ - धातु का अवयव संयोग पूर्व न हो, ऐसा जो इवर्ण तदन्त जो धातु उस तदन्त अनेकाच् अङ्ग के स्थान पर यण् आदेश होता है, प्रत्यय परे रहते।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। एः अनेकाचः असंयोगपूर्वस्य यह सूत्रगतपदच्छेद है। एः यह षष्ठ्येकवचनान्त पद है। जिसका अर्थ है इवर्ण को। अनेकाचः षष्ठ्येकवचनान्त पद है। न एकः अनेकः अनेकः अच् यस्य सः अनेकाच् तस्य अनेकाचः बहुव्रीहि समास। असंयोगपूर्वस्य यह षष्ठ्येकवचनान्त पद है। नास्ति संयोगः पूर्वो यस्य सः असयोगपूर्वः तस्य असंयोगपूर्वस्य, बहुव्रीहि समास। अचि श्नुधातुभ्रूवां य्वोरियङुवङौ से धातो इस एक हिस्से की अनुवृत्ति होती है। धातोः इस पद की द्विरावृत्ति कर दी जाती है। एक षष्ठ्यन्त पद धातोः में अवयव षष्ठी है। दूसरे धातोः पद में स्थान षष्ठी है। इको यणचि सूत्र से यण् इस प्रथमान्त की अनुवृत्ति होती है। इस सूत्र का अन्वय इस प्रकार किया जाएगा- अनेकाचः धात्ववयवस्य असंयोग पूर्वस्य इवर्णस्य धातोः अङ्गस्य यण् अचि। एः यह पद धातोः इस षष्ठ्यन्त का विशेषण है, जिस कारण से तदन्तविधि के द्वारा इकारान्त धातु यह अर्थ सिद्ध हो जाता है। अङ्गस्य यह षष्ठ्यन्त पद स्थान षष्ठी वाले धातोः का विशेष्य है। अतः तदन्तविधि के द्वारा धात्वन्त अङ्ग को यह अर्थ प्राप्त हो जाता है। अवयव षष्ठ्यन्त धातोः यह पद असंयोग पूर्वस्य इस पद के संयोगांश में जुड़ जाएगा। अनेकाचः यह पद अङ्गस्य के साथ जुड़ जाता है। अङ्गस्य इस पद के द्वारा प्रत्यय इस पद का आक्षेप कर लिया जाता है। अचि यह पद प्रत्यय का विशेषण है। अतः तदादिविधि के द्वारा अजादि प्रत्यय परे रहते यह अर्थ प्राप्त होता है। एः इस पद में षष्ठी विभक्ति से निर्देश होने के कारण अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा के द्वारा अन्तिम अल् को आदेश होता है यह अर्थ प्राप्त हो जाता है। इवर्ण के स्थान पर अच् प्रत्याहार को निमित्त मानकर यण् आदेश होता है। इस कारण से इस सूत्र का अर्थ सम्पन्न होगा संयोग से भिन्न जो धात्ववयव इवर्ण तदन्त जो धातु तदन्त जो अनेकाच् अङ्ग के स्थान पर यण् होता है अजादि प्रत्यय परे रहते।

उदाहरण - प्रध्यौ।

सूत्रार्थ समन्वय - प्रध्यौ यह इस सूत्र का उदाहरण है। प्रधी शब्द से प्रथमा द्विवचन की विवक्षा में औ प्रत्यय प्रधी + औ यह बन गया। प्रधी में धी यह धातु ईवर्णान्त है और ईवर्ण धात्ववयवसंयोगपूर्व न हो। इस प्रकार प्रधी शब्द में धी धात्वन्त है तथा अनेकाच् अङ्ग भी है। तत्पश्चात् अजादि प्रत्यय भी है। अतः प्रस्तुत सूत्र से ईकार को यणादेश करने पर प्रध्यौ यह रूप सिद्ध हो जाता है।

ध्यान दें:

पाठगत प्रश्न-4

19. गोतो णित् इस सूत्र का अर्थ लिखें?
20. अचो ञ्णिति सूत्र का अर्थ लिखें?
21. अचो ञ्णिति इस सूत्र से क्या होता है?
22. औतोऽम्शसोः इस से क्या किया जाता है?
23. उपधा संज्ञा करने वाला सूत्र कौन-सा है?
24. अचि श्नु सूत्र पूरा करें?
25. एरनेकाचोऽसंयोगपूर्वस्य इस सूत्र का अर्थ लिखें?
26. कुमार्यौ में यण् किस सूत्र से होता है?
27. सुधियौ में यण् किस सूत्र से किया जाता है?

पाठ सार

इस पाठ मे विश्वपा शब्द के रूप कैसे होंगे विस्तार से बताए गये है। सुडनपुंसकस्य से नपुंसक भिन्न शब्दों से पर में सुट् प्रत्ययों की सर्वनामस्थान संज्ञा होती है। सर्वनामस्थान भिन्न प्रत्यय परे रहते स्वादिष्वसर्वनामस्थाने सूत्र से पद संज्ञा होती है। सर्वनामस्थान भिन्न यकारादि अजादि प्रत्यय परे रहते यचि भम् सूत्र से भसंज्ञा होती है। हरि शब्द के रूपों को सिद्ध करने की प्रक्रिया विस्तार से बतलाई गयी है। ओकारान्त गो शब्द की भी रूपसिद्धि की प्रक्रिया इस पाठ में विचार की गयी है।

पाठान्त प्रश्न

1. दीर्घाज्जसि च इस सूत्र का अर्थ लिखिए।
2. यचि भम् सूत्र की व्याख्या कीजिए।
3. शेषो घ्यसखि सूत्र की व्याख्या कीजिए।
4. ङसिङसोश्च सूत्र की व्याख्या कीजिए।
5. औतोऽम्शसोः सूत्र की व्याख्या कीजिए।
6. अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा सूत्र की व्याख्या कीजिए।
7. अचि श्नुधातु भ्रुवां खोरियङुवङौ सूत्र की व्याख्या कीजिए।
8. एरनेकाचोऽसंयोगपूर्वस्य इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
9. दिये गये रूपों को सूत्र लेखन पूर्वक साधन कीजिए - विश्वपाः , विश्वपा, हरिः हरयः हरिणा, हरिषु हरेः, गौः गाम्।

ध्यान दें:

पाठगत प्रश्नोत्तर

उत्तर-1

1. पूर्वसवर्णदीर्घनिषेध
2. दीर्घ से जस् और इच् परे रहते पूर्वसवर्ण दीर्घ नहीं होता है।
3. सुडनपुंसकस्य।
4. स्वादिष्वसर्वनामस्थाने।
5. अधिकार सूत्र।
6. यचि भम्

उत्तर-2

7. आकारान्त जो धातु तदन्त भसंज्ञक अंग का लोप होता है।
8. जसि च।
9. ह्रस्वान्त अंग को गुण होता है। जस् परे रहते।
10. ह्रस्वस्य गुणः
11. शेषो घ्यसखि
12. आङो नाऽस्त्रियाम्

उत्तर-3

13. घेर्ङिति
14. घिसंज्ञक को ङित् सुप् परे रहते गुण होता है।
15. विधि सूत्र
16. पूर्वरूप एकादेश
17. एङ् प्रत्याहार से ङसि और ङस् के अकार परे रहते पूर्वरूप एकादेश होता है।
18. विधि सूत्र

उत्तर-4

19. गो शब्द से परे सर्वनाम स्थान को णिद्वद् भाव होता है।
20. ञ्नित् और णित् प्रत्यय परे रहते अजन्त अङ्ग को वृद्धि होती है।
21. वृद्धि
22. आकार एकादेश

ध्यान दें:

23. अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा

24. अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ

25. धातु का अवयव संयोग पूर्व न हो, ऐसा जो इवर्ण तदन्त जो धातु तदन्त अनेकाच् अङ्ग को यण् होता है। अजादि प्रत्यय के परे रहते।

26. एरनेकाचोऽसंयोगपूर्वस्य

27. अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ।

ध्यान दें:

13

अजन्त स्त्रीलिंग में रमा और नदी शब्द के रूप

पहले आपने अजन्त पुल्लिङ्ग प्रकरण पढ़ा। अब अजन्त स्त्रीलिंग प्रारम्भ होता है। प्रातिपदिक संज्ञा दो प्रकार की होती है, पहले ही बताया गया है। 1- अजन्त शब्द 2- हलन्त शब्द ये उसके दो भेद हैं। जिन शब्दों के अन्त में अच् है वे अजन्त हैं। तथा जिन शब्दों के अन्त में हल् वे हलन्त शब्द कहे जाते हैं। लिंग के भेद से अजन्त और हलन्त शब्द भी तीन-तीन प्रकार के होते हैं। जैसे - अजन्त पुल्लिंग, अजन्त स्त्रीलिंग, अजन्त नपुंसकलिंग, हलन्त पुल्लिंग शब्द, हलन्त स्त्रीलिंग, हलन्त नपुंसकलिंग शब्द। इस पाठ में अजन्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप सिद्धि प्रक्रिया के विषय में विचार करते हैं। वे स्त्रीलिंग वाचक शब्द भी दो भागों में विभक्त हैं। कुछ शब्द पुल्लिङ्ग में है। उन्हीं से स्त्रीत्व की विवक्षा में टाबादि प्रत्यय होते हैं। जैसे - रमा सर्वा इत्यादि। कुछ शब्द तो स्वतः ही स्त्रीत्व के वाचक हैं। उनमें कोई विशेष प्रत्यय प्रयुक्त नहीं होता है। जैसे - लक्ष्मीः, श्रीः, मतिः इत्यादि स्त्री प्रत्ययों का विचार तो स्त्री प्रत्यय प्रकरण में किया गया है। स्त्रीलिंग वाचक शब्दों के रूप कैसे होते हैं? इस का विचार करने हेतु यह प्रकरण प्रारम्भ किया जाता है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे-

- स्त्रीलिंग शब्दों के रूप कैसे होते हैं? जान पाने में;
- अपृक्त संज्ञा विस्तार पूर्वक जान पाने में;
- प्रत्यय लोप होने पर भी उसको मानकर कार्य कैसे होते हैं? यह समझ पाने में;
- रमा शब्द के रूप सिद्ध कर पाने में;
- नदी संज्ञा के विषय विस्तार से जानने में समर्थ बनेंगे।

॥ रमा॥

प्रारम्भ में रमा शब्द की रूप सिद्धि की प्रक्रिया को देखते हैं। रमा शब्द टाप् प्रत्ययान्त स्त्री वाचक शब्द है।

ध्यान दें:

रमते विष्णुना साकम् इस अर्थ में विद्यमान रमु क्रीडायां धातु से नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः इस सूत्र से पचादिगण में पठित होने के कारण अच् प्रत्यय प्रक्रिया कार्य करने पर रम शब्द निष्पन्न होता है। उससे स्त्रीत्व की विवक्षा में स्त्रियाम् के अधिकार में विद्यमान अजाद्यतष्टाप् से टाप् प्रत्यय अनुबन्ध लोप रमा शब्द बना। रमाशब्द टाप् प्रत्ययान्त है। प्रातिपदिक न होने पर भी उससे ङ्याप्प्रातिपदिकात् इस सूत्र में ङ्याप् के पृथक्तया ग्रहण करने के कारण प्रातिपदिकग्रहणे लिंगविशिष्टस्यापि ग्रहणम् इस परिभाषा से स्वादि प्रत्यय होते हैं। तत्पश्चात् प्रथमा के एकवचन की विवक्षा में सु प्रत्यय रमा + सु बन गया। उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इत् से इत्संज्ञा, तस्य लोपः से लोप, रमा + स् हो गया। यहां सुप्रत्यय अनुबन्ध रहित एकाल् है। अतः अपृक्त एकाल्प्रत्ययः से सुप्रत्यय के अवयव सकार की अपृक्त संज्ञा होती है। तब-

13.1 - हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्॥ 6.1.68।

सूत्रार्थ - हलन्त से पर में जो ङी और आप् तदन्त से पर में विद्यमान सु, ति, सि सम्बन्धित अपृक्त हल् लुप्त होता है।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। हल्ङ्याब्भ्यः सुतिसि अपृक्तं हल् यह सूत्र का पदच्छेद है। इस सूत्र में पांच पद हैं। हल्ङ्याब्भ्यः पंचमी बहुवचनान्त पद है। हल्च ङीच आप् च इति हल्ङ्यापः तेभ्सः हल्ङ्याब्भ्यः इतरेतर योग द्वन्द्व समास।। यहां पंचमी विभक्ति श्रवण होने के कारण तस्मादित्युत्तरस्य इस परिभाषा के द्वारा परस्य यह अर्थ प्राप्त हो जाता है। दीर्घात् यह पंचमी का एकवचन है। इस पद का द्विवचन में विपरिणाम कर दिया जाता है। सुतिसि प्रथमैकवचनान्त पद है। सुश्च तिश्च सिश्च समाहार द्वन्द्व सुतिसि। अपृक्तं प्रथमैकवचनान्त पद है। हल् प्रथमान्त पद है। लोपो व्योर्वलि से लोपः यह प्रथमान्त पद अनुवर्तित होता है। शब्दस्वरूपेभ्यः पद का अध्याहार किया जाता है। पद योजना - हल्ङ्याब्भ्यो शब्दस्वरूपेभ्यः दीर्घात् परस्य सुतिसि अपृक्तं हल् लोपः। शब्द स्वरूपेभ्यः यह पद हल्ङ्याब्भ्यो का विशेष्य बनकर अन्वित होता है। अतः तदन्त विधि के द्वारा हलन्त आबन्त ङ्यन्त शब्द स्वरूप से यह अर्थ प्राप्त होता है। ङी इस पद से ङीप् ङीष् ङीन् इन तीन प्रत्ययों का ग्रहण होता है। आप् से टाप् चाप् डाप् इन तीन प्रत्ययों का ग्रहण होता है। दीर्घात् में द्वित्व होने पर भी एकवचन आर्ष प्रयोग है। दीर्घात् यह पद ङी और आप् का ही विशेषण है न कि हल् का क्योंकि हल् दीर्घ नहीं होते हैं। दीर्घ सिर्फ अच्वर्णों के ही होते हैं। अपृक्तं हल् दोनों पद समानाधिकरण्य से अन्वित होता है। अतः सूत्रार्थ सम्पन्न होता है- हलन्त से परे जो दीर्घ ङ्यन्त और आबन्त उनसे पर में विद्यमान सु, ति, सि के अपृक्त हल् का लोप होता है।

उदाहरण - रमा।

सूत्रार्थ समन्वय - रमा शब्द से प्रथमा के एकवचन की विवक्षा में सुप्रत्यय अनुबन्धलोप, रमा + स् बन गया। यहां रमा शब्द आबन्त है। सुप्रत्यय अपृक्त एकाल्प्रत्ययः से अपृक्त संज्ञक है। अतः प्रस्तुत सूत्र से सुप्रत्यय के अवयव सकार का लोप करने पर रमा यह रूप सिद्ध हो जाता है। तब-

13.2 - प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम्॥ 1.1.62।

सूत्रार्थ - प्रत्यय के लुप्त होने पर भी उसको मानकर कार्य होते हैं।

सूत्र व्याख्या - यह परिभाषा सूत्र है। प्रत्ययलोपे सप्तम्येकवचनान्त पद है। प्रत्ययस्य लोपः प्रत्ययलोपः तस्मिन् प्रत्ययलोपे, षष्ठी तत्पुरुष समास। प्रत्ययो लक्षणं निमित्तं यस्य तत् प्रत्ययलक्षणम् बहुव्रीहि समास। प्रत्यय के लोप होने पर भी प्रत्यय को निमित्त मानकर कार्य होते हैं। यह सूत्रार्थ है।

ध्यान दें:

उदाहरण - जैसे - रमा में सुप्रत्यय के लोप होने पर भी उसको मानकर सुप्तिङन्तं पदम् से पद संज्ञा हो जाती है।

13.3 - औङ् आपः॥ 7.1.18।

सूत्रार्थ - आबन्त से पर में विद्यमान औ के स्थान पर शी आदेश होता है।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। औङः आपः यह पदच्छेद है। इस सूत्र में। दो पद हैं। आपः पंचम्येकवचनान्त पद है, आपः इस पद से टाप् चाप् डाप् इन तीनों प्रत्ययों का ग्रहण होता है। औङः यह षष्ठ्येकवचनान्त पद है। अङ्गस्य का अधिकार है, इसे पंचमी विभक्ति में विपरिणाम कर दिया जाता है।

आपः पद अङ्गात् का विशेषण है अतः तदन्तविधि हो जाने के कारण आबन्तात् अङ्गात् यह अर्थ प्राप्त हो जाता है। औङ् यह औ विभक्ति की प्राचीन आचार्यों द्वारा की गयी संज्ञा है। जशः शी इस सूत्र से शी यह प्रथमान्त पद अनुवर्तित होता है। सूत्रार्थ सम्पन्न होता है- आबन्त अङ्ग से पर में विद्यमान औ प्रत्यय के स्थान पर शी आदेश होता है।

उदाहरण - रमे।

सूत्रार्थ समन्वय - रमा शब्द से प्रथमा द्विवचन की विवक्षा में औ प्रत्यय, रमा + औ बन गया। तत्पश्चात् वृद्धिरेचि से वृद्धि प्राप्त होती है। उसे बांधकर अनेकाल्शित्सर्वस्य इस परिभाषा से परिष्कृत औङ आपः सूत्र से अंगसंज्ञक आबन्त रमा शब्द से पर में विद्यमान औ के स्थान अनेकाल्त्व होने के कारण सर्वादेश हाने पर रमा + शी बन गया। स्थानिवद्भाव होने के कारण प्रत्ययत्व आ जाने से लशक्वतद्धिते से शकार इत्सां लोप। रमा + ई बन गया। तत्पश्चात् आद्गुणः से पूर्व और पर का स्थान पर आकार और ईकार के स्थान पर स्थान से आन्तर्य होने के कारण एकाररूपगुण एकादेश करने पर रमे रूप सिद्ध हुआ।

प्रथमा बहुवचन में जस् प्रत्यय अनुबन्ध लोप, रमा + अस् बन गया। प्रथमयोः पूर्वसवर्णः सूत्र से पूर्वसवर्ण दीर्घ प्राप्त होने पर दीर्घाज्जसि से उसको बांधकर अकः सवर्णे दीर्घ से दीर्घ एकादेश करने पर रमास् बन गया सकार को रुत्व विसर्ग करने पर रमाः रूप सिद्ध हो गया।

पाठगत प्रश्न-1

1. हल्ङ्याब्भ्यः सूत्र को पूरा करें?
2. हल्ङ्याब्भ्यः सूत्र का अर्थ लिखें?
3. औङ आपः सूत्र का अर्थ लिखें?
4. प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम् किस प्रकार का सूत्र है?

13.4 - सम्बुद्धौ च॥ 7.3.106

सूत्रार्थ - आप के स्थान पर एकार होता है सम्बुद्धि पर में हो तो ।

सूत्र व्याख्या - यह आदेश विधायक सूत्र है। सम्बुद्धौ सप्तम्येकवचनान्त पद है। च अव्यय पद है। आङि चापः सूत्र से आपः यह षष्ठ्यन्त पद अनुवृत्त होता है। अङ्गस्य का अधिकार है, जो कि आपः

ध्यान दें:

पद का विशेषण है। अतः तदन्त विधि के द्वारा आबन्तस्य अङ्गस्य यह अर्थ सम्पन्न हो जाता है। बहुवचने झल्येत् सूत्र से एत् यह प्रथमान्त पद अनुवर्तित होता है। आपः में षष्ठी विभक्ति निर्देश होने के कारण अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा के द्वारा अन्तिम अल् को आदेश हो यह फलितार्थ प्राप्त हो जाता है। अतः सूत्रार्थ सम्पन्न हुआ - सम्बुद्धि परे रहते आबन्त के अन्तिम अल् के स्थान पर एकार आदेश होता है।

उदाहरण - हे रमे।

सूत्रार्थ समन्वय - रमा शब्द से सम्बोधन के एकवचन में सुप्रत्यय, अनुबन्ध लोप, हे रमा + सु बन गया।

सु प्रत्यय की सम्बुद्धि संज्ञा, अलोऽन्त्यस्य परिभाषा की सहायता से इस सूत्र के द्वारा आबन्त के अन्तिम अल् आकार के स्थान पर एकार आदेश करने पर हे रमे स् बन गया। तब एङ्हस्वात्सम्बुद्धेः इस सूत्र से एङ् से पर में विद्यमान सम्बुद्धि का लोप, करने पर हे रमे यह रूप सिद्ध हो जाता है।

सम्बोधन के द्विवचन में औप्रत्यय, हे रमा + औ बन गया। औङ् के स्थान पर शी आदेश और अनुबन्ध लोप करने पर रमा ई बन गया। इस स्थिति में आद् गुणः सूत्र से गुण करने पर रमे रूप सिद्ध हो जाता है।

बहुवचन में जस् प्रत्यय अनुबन्ध लोप रमा + अस् हो गया। सवर्ण दीर्घ, सकार को रुत्व विसर्ग करने पर हे रमाः यह रूप सिद्ध हो जाता है। रमा शब्द से द्वितीया के एकवचन में अम् प्रत्यय रमा + अम् बन गया मकार की प्राप्त इत्संज्ञा का न विभक्तौ तुस्माः सूत्र से निषेध हो जाता है। रमा + अम् में अकः सवर्णे दीर्घ से दीर्घ प्राप्त हुआ, उसे बांधकर प्रथमयोः पूर्व सवर्ण से पूर्व सवर्ण दीर्घ प्राप्त था उसे बांधकर अमि पूर्वः इस सूत्र से पूर्व रूप करने पर रमाम् रूप सिद्ध हो जाता है।

द्वितीया के द्विवचन में औट् प्रत्यय अनुबन्ध लोप, औ के स्थान पर शी आदेश, अनुबन्ध लोप, रमा + ई बन गया आद् गुणः सूत्र से गुण एकादेश करने पर रमे रूप सिद्ध हो जाता है।

द्वितीया के बहुवचन में शस् प्रत्यय अनुबन्ध लोप, रमा + अस् बन गया। प्रथमयोः पूर्व सवर्णः से पूर्व सवर्ण दीर्घ करने पर रुत्व विसर्ग रमाः रूप सिद्ध हुआ। यहां पर यह बात ध्यान देने की है कि रमा शब्द पुल्लिङ्ग में नहीं है। अतः तस्माच्छसो नः पुंसि से सकार को नकार नहीं होता है।

13.5 - आङि चापः॥ 7.3.105

सूत्रार्थ - आङ् और ओस् प्रत्यय पर में हो तो आबन्त अङ्ग को एकार आदेश होता है।

सूत्र व्याख्या - यह आदेश विधायक विधि सूत्र है॥ आङि च आपः यह सूत्रगत पदच्छेद है। आङि सप्तम्येकवचनान्त पद है। आङ् यह प्राचीन आचार्यों द्वारा की गयी टा प्रत्यय की संज्ञा है। ओसि च सूत्र से ओसि यह सप्तम्यन्त पद अनुवर्तित होता है। च अव्यय पद है। आपः षष्ठ्येकवचनान्त पद है, अङ्गस्य का अधिकार है। आपः यह पद अङ्गस्य का विशेषण है। अतः तदन्तविधि के द्वारा आबन्तस्य अङ्गस्य यह अर्थ प्राप्त हो जाता है। आपः इस पद में षष्ठी निर्देश होने के कारण अलोऽन्त्यस्य परिभाषा के द्वारा अन्तिम अल् के स्थान पर आदेश होता है। बहुवचने झल्येत् सूत्र से एत् इस प्रथमान्त पद की अनुवृत्ति होती है। अतः इस सूत्र का अर्थ सम्पन्न होगा। टा प्रत्यय और ओस् प्रत्यय पर में हो तो आबन्त अङ्ग के अन्तिम अल् के स्थान पर एकार आदेश होता है।

ध्यान दें:

उदाहरण - रमया।

सूत्रार्थ समन्वय - रमा शब्द से तृतीया के एकवचन की विवक्षा में टा प्रत्यय अनुबन्ध लोप से, रमा + आ बन गया। यहां रमा शब्द आबन्त है। उससे पर में आङ् है। अतः आङ् के परे रहते अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा के द्वारा परिष्कृत इस सूत्र से आबन्त अङ्ग के अन्तिम आकार के स्थान पर एकार आदेश करने पर रमे + आ बन गया। एचोऽयवायावः सूत्र से एकार के स्थान पर अय् आदेश करने पर रम् अय् आ बन गया। वर्ण सम्मेलन करने पर रमया रूप सिद्ध हो जाता है।

तृतीया के द्विवचन में भ्याम् प्रत्यय करने पर रमाभ्याम् रूप सिद्ध हो जाएगा। बहुवचन में भिस् प्रत्यय करने पर रमाभिस् बन गया सकार को रुत्व विसर्ग करने पर रमाभिः रूप सिद्ध हो जाता है।

13.6 - याडापः ॥ 7.3.113

सूत्रार्थ - आप् से पर में विद्यमान ङित् विभक्ति को याट् का आगम होता है।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। याट् आपः यह सूत्र पदच्छेद है। याट् प्रथमान्त पद है। याट् का टकार इत्संज्ञक है। अतः आद्यन्तौ टकितौ सूत्र से याट् आद्य अवयव होता है यह अर्थ प्राप्त हो जाता है। आपः पंचम्येकवचनान्त पद है। परस्य इस पद का अध्याहार कर लिया जाता है। अङ्गस्य का अधिकार है। जिसे कि पंचमी विभक्ति में विपरिणाम कर दिया जाता है। अङ्गात् पद आपः इस पंचम्यन्त का विशेष्य होता है अतः तदन्तविधि के द्वारा आबन्तस्य अङ्गस्य यह अर्थ प्राप्त हो जाता है। घेङिर्ति सूत्र से ङिति यह सप्तम्यन्त पद अनुवर्तित होता है। ङिति में पंचमी विभक्ति का तथा आपः में पंचमी विभक्ति का श्रवण है अतः उभयनिर्देशे पंचमी निर्देशों बलीयान् इस न्याय से तस्मादित्युत्तरस्य इस परिभाषा के द्वारा ङिति यह सप्तम्यन्त पद षष्ठ्यन्त के रूप में विपरिणमित हो जाता है। अतः ङितः यह षष्ठ्यन्त पद प्राप्त होता है। इस प्रकार इस सूत्र का अर्थ सम्पन्न होता है- आबन्त से पर में विद्यमान ङित् विभक्ति को याट् का आगम होता है।

उदाहरण - रमायै।

सूत्रार्थ समन्वय - रमा शब्द से चतुर्थी एकवचन की विवक्षा में ङे प्रत्यय अनुबन्ध लोप, रमा + ए बन गया। यहां वृद्धि प्राप्त रहती है उसको बांधकर ङेप्रत्यय के ङित् विभक्ति होने के कारण याडापः इस सूत्र से याट् आगम, अनुबन्धलोप, रमा + या + ए बन गया। वृद्धिरेचि इस सूत्र से वृद्धि ऐकार करने पर रमायै यह रूप सिद्ध हो जाता है।।

चतुर्थी के द्विवचन की विवक्षा में भ्याम् प्रत्यय रमाभ्याम्, बहुवचन मे रमाभ्यः रूप सिद्ध होते हैं।

पंचमी के एकवचन की विवक्षा में ङसि प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, रमा + अस् इस स्थिति में याडापः सूत्र से आबन्त को याट् का आगम करने पर अनुबन्ध लोप, रमा या अस् बन गया। सवर्ण दीर्घ करने पर रमायास् बन गया सकार को रुत्व विसर्ग करने पर रमायाः यह रूप सिद्ध होता है।

पंचमी द्विवचन में भ्याम् प्रत्यय रमाभ्याम्, बहुवचन में भ्यस् प्रत्यय रमाभ्यः रूप सिद्ध होते हैं।

षष्ठी के एकवचन में ङस् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, पंचमी एकवचन की तरह रमायाः रूप सिद्ध होता है।

षष्ठी द्विवचन की विवक्षा में। ओस् प्रत्यय, अङि चापः सूत्र से मकार उत्तरवर्ती आकार को एकार करने पर रमे + ओस् बन गया। यहां एचोऽयवायावः सूत्र से एकार के स्थान पर अयादेश करने पर रमयोस्

ध्यान दें:

बन गया। सकार को रुत्व विसर्ग करने पर रमया: रूप सिद्ध होता है।

षष्ठी के बहुवचन में आम् प्रत्यय, ह्रस्वनद्यापो नुट् नुट् का आगम, अनुबन्ध लोप, नामि इस सूत्र से नाम् के परे रहते दीर्घ करने पर तथा नकार को णत्व करने पर रमाणाम् यह रूप सिद्ध होता है।

13.7 – ङेराम्नद्याम्नीभ्य: ॥ 7.3.116

सूत्रार्थ – नद्यन्त, आबन्त और नी शब्द से पर में विद्यमान ङि के स्थान पर आम् आदेश होता है।

सूत्र व्याख्या – यह विधि सूत्र है। ङे आम् नद्याम्नीभ्य: यह पदच्छेद है। ङे: यह षष्ठ्येकवचनान्त पद है। ङे: इस पद में षष्ठी विभक्ति के श्रवण होने के कारण षष्ठी स्थाने योगा इस परिभाषा से स्थाने यह पद उपस्थित होता है। नद्याम्नीभ्य: यह पंचम्येकवचनान्त पद है। नद्याम्नीभ्य: पंचमी बहुवचनानृत पद है। नदीच आप्च नीश्च नद्याम्न्य: तेभ्य: नद्याम्नीभ्य: इतरेतर योग द्वन्द्व समास। नद्याम्नीभ्य: में पंचमी विभक्ति के श्रवण होने के कारण तस्मादित्युत्तरस्य इस परिभाषा के द्वारा परस्य यह पद प्राप्त होता है। अङ्गस्य का अधिकार है। उस अधिकृत पद का पंचमी बहुवचन में विपरिणाम कर दिया जाता है। अत: अङ्गेभ्य: यह अर्थ प्राप्त हो जाता है। अङ्गेभ्य: पद नद्याम्नीभ्य: का विशेष्य बनकर अन्वित हो जाता है। अत: तदन्तविधि के द्वारा नद्यन्त से आबन्त अङ्ग से यह अर्थ प्राप्त हो जाता है। आम् प्रथमैकवचनान्त पद है। आमादेश के स्थानिवद्भाव हो जाने से विभक्ति संज्ञा हो गयी उसके फलस्वरूप हलन्त्यम् से प्राप्त इत्संज्ञा का न विभक्तौ तुस्मा: से निषेध होता है। अत: इस सूत्र का अर्थ सम्पन्न होगा- नद्यन्त आबन्त और नी शब्द से पर में विद्यमान ङि प्रत्यय के स्थान पर आम् आदेश होता है।

उदाहरण – रमायाम्।

सूत्रार्थ समन्वय – रमा शब्द से सप्तमी के एकवचन में ङिप्रत्यय, अनुबन्ध लोप रमा + इ इस स्थिति में ङेराम्नद्याम्नीभ्य: से ङि के स्थान पर सर्वादेश आम् करने पर रमा + आम् बन गया। यहां स्थानिवद्भाव होने के कारण ङित् विभक्ति को मानकर याडाप: सूत्र से याट् आगम, अनुबन्ध लोप रमा या आम् इस स्थिति में सवर्णदीर्घ करने पर रमायाम् रूप सिद्ध हो गया।

सप्तमी के द्विवचन मे ओस् प्रत्यय करने पर रमयो: यह रूप सिद्ध होता है। बहुवचन में सुप् प्रत्यय करने पर रमासु रूप बनता है। यहां पर इण् और कवर्ग से पर में सकार नहीं है अत: आदेश प्रत्यययों: से षकार आदेश नहीं होता है। इसी प्रकार दुर्गा आदि शब्दों के भी रूप होते हैं।

अब स्त्रीलिंग वाचक सर्वा शब्द के रूपों के विषय में विचार किया जाता है। सर्वनामसंज्ञक अदन्त सर्व शब्द से स्त्रीत्व की विवक्षा में टाप् प्रत्यय, करने पर सर्वा शब्द निष्पन्न होता है। प्रातिपदिकग्रहणे लिंगविशिष्टस्यापि ग्रहणम् इस परिभाषा के सहायता से सर्वनामसंज्ञक सर्वार्थवाचक सर्वा शब्द की अर्थवदधातुरप्रत्यय: प्रातिपदिकम् से प्रातिपदिक संज्ञा होती है। रमाशब्द से सर्वा शब्द में सिर्फ ङित् विभक्तियों तथा आम् प्रत्यय में ही भेद दिखता है। अन्य सभी विभक्तियों में रमाशब्द के ही तरह रूप होते हैं। सर्वा शब्द से प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सुप्रत्यय, अनुबन्ध लोप, रमा + स् यह स्थिति होती है। तत्पश्चात् एकाल्प्रत्यय सकार की अपृक्त एकाल्प्रत्यय: से अपृक्त संज्ञा, पुन: आबन्त से पर मे विद्यमान अपृक्त प्रत्यय का हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् इस सूत्र से लोप करने पर सर्वा यह रूप सिद्ध होता है।

प्रथमा के द्विवचन में रमाशब्द के तरह सर्वे, बहुवचन में सर्वा:, द्वितीया के एकवचन में सर्वाम्,

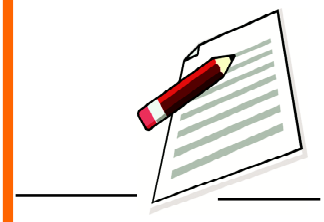

ध्यान दें:

द्विवचन मे सर्वे बहुवचन में सर्वाः, तृतीया के एकवचन में सर्वया, द्विवचन में सर्वाभ्याम् बहुवचन में सर्वाभिः ये रूप सिद्ध होते हैं। ङित् विभक्तियों में याडापः सूत्र से आबन्त से पर में विद्यमान ङित् विभक्तियों को याट् का आगम प्राप्त रहता है। तब अगला सूत्र प्रवृत्त होता है-

पाठगत प्रश्न-2

5. सम्बुद्धौ च सूत्र का अर्थ लिखें?
6. सम्बुद्धौ च सूत्र से क्या विधान किया जाता है?
7. आङि चापः सूत्र का अर्थ लिखें?
8. याडापः सूत्र का अर्थ लिखें?
9. रमायै में याट् का आगम किस सूत्र से होता है।
10. ङेराम्नद्याम्नीभ्यः किस प्रकार का सूत्र है?

13.8 - सर्वनाम्नः स्याड्ढ्रस्वश्च॥ 7.3.114।

सूत्रार्थ - आबन्त सर्वनाम से परे ङित् विभक्ति को स्याट् का आगम होता है। आबन्त को ह्रस्व भी होता है।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। सर्वनाम्नः स्याट् ह्रस्वः च सूत्र पदच्छेद है। इस सूत्र में तीन पद है। सर्वनाम्नः पंचम्येकवचनान्त पद है। स्याट् प्रथमान्त पद है। ह्रस्वः प्रथमान्त तथा च अव्यय पद है। स्याट् आगम में टित्करण के सामर्थ्य से इसका आगमत्व सिद्ध हो जाता है। अतः यह आगमविधि है। 'याडापः सूत्र से आप': यह पंचम्यन्त पद अनुवृत्त होता है। तथा वह पद सर्वनाम्नः का विशेषण बन जाता है। इस के कारण तदन्त विधि हो जाने से आबन्तात् सर्वनाम्नः यह अर्थ प्राप्त हो जाता है। घेङिर्ति से अनुवत्त ङिति पद षष्ठ्यन्त के रूप में विपरिणाम कर दिया जाता है। ङितः पद में षष्ठी विभक्ति के श्रवण के कारण इसी का यह आद्यावयव हो जाता है। ह्रस्वनद्यापो नुट् सूत्र से आया हुआ आपः यह षष्ठ्यन्त पद ह्रस्वः के साथ अन्वित होता है। आपः में षष्ठी विभक्ति के श्रवण के कारण अलोऽन्त्यस्य परिभाषा के द्वारा अन्त्य अल् यह अर्थ प्राप्त हो जाता है। कुल सम्मिलित करके सूत्रार्थ सम्पन्न होता है - आबन्त सर्वनाम से परे ङित् विभक्ति को स्याट् का आगम होता है तथा आप् को ह्रस्व होता है।

उदाहरण - सर्वस्यै।

सूत्रार्थ समन्वय - सर्वा शब्द से चतुर्थी के एकवचन की विवक्षा में ङे प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, सर्वा + ए बन गया। याडापः से ङित् विभक्ति को याट् का आगम प्राप्त हुआ। उसको बांधकर इस सूत्र से स्याट् आगम अनुबन्ध लोप, आप् को ह्रस्व सर्व स्या ए बन गया। वृद्धिरेच से वृद्धि एकादेश करने पर सर्वस्यै रूप सिद्ध हो गया।

सर्वा शब्द से चतुर्थी के द्विवचन में भ्याम् प्रत्यय, सर्वाभ्याम्, बहुवचन में भ्यस् प्रत्यय करने पर सर्वाभ्यः रूप सिद्ध हो जाता है।

पंचमी के एकवचन में ङसि प्रत्यय अनुबन्ध लोप सर्वा + अस् बन गया। तत्पश्चात् सर्वनाम्नः स्याड्ढ्रऊस्वश्च से स्याट् आगम तथा आप् को ह्रस्व करने पर सर्वस्यास् बन गया। सकार को रुत्व विसर्ग

ध्यान दें:

करने पर सर्वस्याः रूप सिद्ध होता है।

द्विवचन में भ्याम् प्रत्यय, सर्वाभ्याम्, बहुवचन में भ्यस् प्रत्यय सर्वाभ्यः रूप सिद्ध हो जाता है।

षष्ठी के एकवचन में ङस् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, सर्वा + अस् बन गया। तत्पश्चात् सर्वनाम्नः स्याड्ढ्रऊस्वश्च से स्याट् आगम तथा आप् को ह्रस्व करने पर सर्वस्यास् बन गया। सकार को रुत्व विसर्ग करने पर सर्वस्याः रूप सिद्ध होता है।

षष्ठी के द्विवचन में ओस् प्रत्यय, सर्वा + ओस् इस स्थिति में आङि चापः सूत्र से मकारोत्तरवर्ती आकार के स्थान पर एकार आदेश करने पर सर्वे + ओस् बन गया एचोऽयवायावः से अयादेश करने पर सर्वयोस् बन गया। सकार के स्थान पर रुत्व और विसर्ग करने पर सर्वयोः रूप सिद्ध हो जाता है।

षष्ठी के द्विवचन में आम् प्रत्यय सर्वा + आम् बन गया। आमि सर्वनाम्नः सुट् इस सूत्र से सुट् आगम अनुबन्ध लोप सर्वासाम् यह रूप सिद्ध हो जाता है।

सप्तमी के एकवचन में ङिप्रत्यय, ङेराम्नद्याम्नीभ्यः से ङि के स्थान पर आम् आदेश, सर्वनाम्नः स्याड्ढ्रऊस्वश्च से स्याट् आगम तथा आप् के स्थान पर ह्रस्व करने पर तथा सवर्ण दीर्घ करने के कारण सर्वस्याम् यह रूप सिद्ध हो जाता है।

इति आकारान्त स्त्रीलिंग प्रकरण समाप्त हुआ।।

अथ इकारान्त स्त्रीलिंग प्रकरण प्रारम्भः

मन्यते अनया इस विग्रह में मन् ज्ञाने इस धातु से क्तिन् प्रत्यय, मति शब्द निष्पन्न होता है। उसके बाद कृदन्त होने के कारण कृत्तद्धितसमासाश्च से प्रातिपदिक संज्ञा होती है। प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सुप्रत्यय, अनुबन्ध लोप, मति + स् हो गया। सकार को रुत्व विसर्ग करने पर मतिः रूप सिद्ध होता है।

मति शब्द से प्रथमा द्विवचन की विवक्षा में औ प्रत्यय, मति + औ यह स्थिति बन गयी। प्रथमयोः पूर्वसवर्णः इस सूत्र से पूर्व सवर्ण दीर्घ करने पर मती यह रूप सिद्ध होता है।

प्रथमा बहुवचन में जस् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, मति + अस् बन गया। जसि च सूत्र से गुण, एचोऽयवायावः से अयादेश करने पर मतयस् बन गया। सकार को रुत्व विसर्ग करने पर मतयः रूप सिद्ध हो जाता है।

द्वितीया के एकवचन में अम् प्रत्यय, इको यणचि सूत्र से यणादेश प्राप्त हुआ उसे बांधकर अमि पूर्वः से पूर्व रूप एकादेश करने पर मतिम् यह रूप सिद्ध हो जाता है।

द्वितीया के द्विवचन में औट् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप् पूर्ववत् मती यह रूप सिद्ध हो जाता है।

द्वितीया के बहुवचन में। शस् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, मति + अस् बन गया। प्रथमयोः पूर्व सवर्णः सूत्र से पूर्व सवर्ण दीर्घ करने पर मतीस् बन गया। सकार को रुत्व विसर्ग करने पर मतीः यह रूप सिद्ध होता है।

यहां यह ध्यातव्य है कि प्रस्तुत स्थल में तस्माच्छसो नः पुंसि सूत्र से सकार को नकार नहीं होगा क्योंकि मति शब्द स्त्रीलिंग में है।

तृतीया के एकवचन में टा प्रत्यय अनुबन्ध लोप मति आ इस स्थिति में इको यणचि सूत्र से यण्

ध्यान दें:

आदेश करने पर मत्या यह रूप सिद्ध हो जाता है। यहां यह ध्यातव्य है कि आङो नाऽस्त्रियाम् सूत्र से टा के स्थान पर ना आदेश नहीं होता है क्योंकि अस्त्रियाम् यह निषेध वाक्य प्रयुक्त हो जाता है।

तृतीया के द्विवचन में भ्याम् प्रत्यय करने पर मतिभ्याम् तथा मति शब्द से भिस् प्रत्यय करने पर मतिभि: रूप सिद्ध हो जाता है।

चतुर्थी के एकवचन में ङिप्रत्यय, अनुबन्ध लोप मति + ए इस स्थिति में मति शब्द की विकल्प से नदी संज्ञा करने वाला यह सूत्र उपस्थापित किया जाता है।

13.9 - ङिति ह्रस्वश्च ॥ 1.4.6 ।

सूत्रार्थ - इयङ् उवङ् स्थानी स्त्रीशब्द भिन्न नित्य स्त्रीलिंग ईवर्ण और ऊवर्ण तथा ह्रस्व जो इकार और उकार वे स्त्रीलिंग में विकल्प से नदी संज्ञक होते हैं। ङित् विभक्ति के परे रहते।

सूत्र व्याख्या - यह संज्ञा सूत्र है। इस सूत्र में तीन पद है। ङिति ह्रस्व: च सूत्रगतपदच्छेद है। ङिति यह सप्तम्येकवचनान्त पद है। ह्रस्व: प्रथमान्त पद है। च अव्यय पद है। इस सूत्र में च के द्वारा दो वाक्य प्राप्त होते हैं। पहला वाक्य है ङिति है। नेयङुवङ्स्थानावस्त्री इस सूत्र से इयङुवङस्थानौ यह प्रथमा द्विवचनान्त और अस्त्री प्रथमान्त पद अनुवर्तित होता है। यू स्त्याख्यो नदी यह सम्पूर्ण सूत्र अनुवर्तित होता है। वामि सूत्र से वा इस अव्यय पद अनुवर्तित होता है। स्त्रियाम् का अधिकार है। ङकार: इत् यस्य स: ङित् तस्मिन् ङिति यहां पर सप्तमी है। अत: ङित् परे रहते यह अर्थ प्राप्त हो जाता है। इयङ्च उवङ्च तयो: इतरेतरयोगद्वन्द्व: इयङुवङो: स्थिति: स्थानं ययो: तौ इयङुवङ्स्थानौ बहुव्रीहि समास। न स्त्री अस्त्री तस्याम् अस्त्रियाम्, स्त्याख्यो तत्पुरुष समास। अस्त्रियाम् का अर्थ है स्त्री शब्द से भिन्न। स्त्रीशब्द इयङुवङ्स्थानौ इस पद में द्विवचनान्त के रूप में अन्वित है। अत: स्त्रीशब्द भिन्न इयङुवङ्स्थान यह अर्थ प्राप्त होता है। यू यह प्रथमा द्विवचनान्त पद है। ईश्च ऊश्च इति यू। दीर्घ ईकारान्त और दीर्घ ऊकारान्त यह अर्थ हुआ। स्त्याख्यो प्रथमा द्विवचनान्त पवद है। स्त्रियमाचक्षाते इति स्त्याख्यो अर्थात् नित्य स्त्रीलिंग। नदी यह प्रथमान्त पद है। इस प्रकार से अनुवर्तित पदों। के अन्वय करने पर प्रथम वाक्य सिद्ध होता है। - इयङ् और उवङ् के स्थानी स्त्री शब्द से भिन्न नित्य स्त्रीलिंग ईकार और ऊकार शब्द स्त्रीलिंग में विकल्प से नदी संज्ञक होते हैं, ङित् परे रहते। ह्रस्व: यह दूसरा वाक्य है, यहां भी नेयङुवङ्स्थानावस्त्री इस सूत्र में न को छोड़कर सम्पूर्ण पद अनुवर्तित होते हैं। यू स्त्याख्यो नदी यह सम्पूर्ण सूत्र अनुवर्तित होता है। पूर्वतन वाक्य से ङिति यह सप्तम्यन्त पद अनुवर्तित होता है। स्त्रियाम् का अधिकार है। वामि सूत्र से वा इस अव्यय पद की अनुवृत्ति होता है। यहां सूत्रस्थ ह्रस्व यह पद अनुवर्तमान यू पद के साथ अन्वित होता है। अत: ह्रस्व इकारान्त और ह्रस्व उकारान्त यह अर्थ आ जाता है। इस प्रकार द्वितीय वाक्य का अर्थ सम्पन्न होगा- इयङ् और उवङ् के स्थानी स्त्री शब्द से भिन्न नित्य स्त्रीलिंग ह्रस्व इकारान्त और उकारान्त शब्द स्त्रीलिंग में विकल्प से नदी संज्ञक होते हैं।

इस प्रकार सूत्रार्थ सम्पन्न होगा- इयङ् और उवङ् के स्थानी स्त्री शब्द भिन्न नित्य स्त्रीलिंग जो ईकार और ऊकार तथा ह्रस्व इकार और उकार स्त्रीलिंग में विकल्प से नदी संज्ञक होते हैं ङित् परे रहते।

उदाहरण - मति शब्द से चतुर्थी के एकवचन में ङे प्रत्यय, अनुबन्ध लोप मति ए बन गया। मति शब्द ह्रस्वेकारान्त नित्य स्त्रीलिंग है। ङित् विभक्ति पर में भी है। अत: इस सूत्र से विकल्प से स्त्रीलिंग वाचक इकारान्त मति शब्द से ङित् प्रत्यय परे रहते नदी संज्ञा होती है। तब अगला सूत्र प्रवृत्त होता है।

ध्यान दें:

13.10 - आण्नद्याः ॥ 7.3.112

सूत्रार्थ - नद्यन्त से परे ङित् को आट् का आगम होता है।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से आट् का आगम होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। आट् नद्याःयह सूत्र पदच्छेद है। यहां सन्धि कार्य करने पर यरोऽनुनासिके वा इस सूत्र से पदान्त यर् टकार के स्थान पर अनुनासिक नकार के परे रहते णकार आदेश हुआ है। आट् प्रथमान्त पद है नद्याः पंचम्यन्त पद है। अङ्गस्य का अधिकार है। उसे यहां पंचम्यन्त में विपरिणाम किया जाता है जो कि नद्याः का विशेष्य बनकर अन्वित होता है। अतः विशेषण होने के कारण तदन्त विधि से नद्यन्त अङ्ग से यह अर्थ प्राप्त होता है। घेङिर्ति इस सूत्र से ङिति यह सप्तम्यन्त पद अनुवर्ति होता है। जिसका षष्ठी विभक्ति में विपरिणाम कर दिया जाता है। आट् आगम के टकार की इत्संज्ञा होती है। टित् होने के कारण यह आगम विधि है यह फलित होता है। अतः इस सूत्र से नद्यन्त से पर में विद्यमान ङित् विभक्तियों को आट् का आगम होता है। यह आट् का आगम टित् होने के कारण आद्यन्तौ टकितौ इस परिभाषा से ङित् विभक्ति का आद्यावयव होता है।

उदाहरण - मति ए इस अवस्था में ङे प्रत्यय ङित् है। मति शब्द की ङिति ह्रस्वश्च इस सूत्र से विकल्प से नदी संज्ञा के पक्ष में इस सूत्र से आट् का आगम, अनुबन्ध लोप, मति + आ + ए यह स्थिति बन गयी। तत्पश्चात् वृद्धि विधायक सूत्र प्रवृत्त होता है।

पाठगत प्रश्न-3

11. सर्वनाम्नः स्याड्ढ्रऊस्वश्च इस सूत्र का अर्थ लिखें?
12. सर्वस्यै में स्याट् का आगम किस सूत्र से होता है?
13. नदी संज्ञा करने वाला सूत्र कौन-सा है?
14. यू स्त्र्याख्यो नदी इस सूत्र का क्या अर्थ है?
15. ङितिह्रस्वश्च सूत्र का अर्थ लिखें?
16. नद्यन्त से परे ङित् करे याट् का आगम किस सूत्र से होता है?

13.11 आटश्च॥ 6.1.90

सूत्रार्थ - आट् से अच् परे रहते वृद्धि एकादेश होती है।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। नदी संज्ञक शब्दों से ङित्प्रत्यय पर में होने पर आटागम करने के बाद इस सूत्र से वृद्धि होती है। आटः पंचमी का एकवचन है। च अव्यय पद है। यहां सूत्र में टकारोत्तरवर्ती अकार से पर में विद्यमान विसर्ग को चकार परे रहते सन्धिकार्य शकार करने पर आटश्च बना है। आटः पद में। पंचमी विभक्ति के श्रवण के कारण तस्मादित्युत्तरस्य इस परिभाषा के द्वारा परस्य यह अर्थ प्राप्त होता है। इको यणचि से अचि यह पद अनुवर्तित होता है। अचि सप्तमी विभक्ति के निर्देश होने के कारण तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य इस परिभाषा के द्वारा अच् के परे रहते पूर्व को कार्य होता है यह अर्थ प्राप्त हो जाता है। वृद्धिरेचि सूत्र से वृद्धि यह पद अनुवर्तित होता है। एकः पूर्वपरयोः के

ध्यान दें:

अधिकार में यह सूत्र पठित है। अतः इस सूत्र का अर्थ सम्पन्न होता है - आट् से अच् प्रत्याहार परे रहते वृद्धि एकादेश होती है।

उदाहरण - मत्यै।

सूत्रार्थ समन्वय - मति आ ए इस स्थिति में आट् से अच् परे रहते वृद्धि एकादेश होती है। मति ऐ बन गया। इस स्थिति में इको यणचि से इकार के स्थान पर यकार आदेश करने पर मत्यै यह रूप सिद्ध हो जाता है।

नदी संज्ञा के अभाव पक्ष में घिसंज्ञा, मति ए इस स्थिति मे घेर्ङिति इस सूत्र से गुण करने पर मते + ए बन गया। एचोऽयवायावः सूत्र से अय् आदेश करने पर मतये यह रूप सिद्ध हो जाता है।

चतुर्थी के द्विवचन की विवक्षा मे भ्याम् प्रत्यय करने पर मतिभ्याम् रूप सिद्ध हो जाता है।

बहुवचन में भ्यस् प्रत्यय करने पर मतिभ्यः रूप सिद्ध हो जाता है। पंचमी के एकवचन में ङसि प्रत्यय अनुबन्ध लोप मति + अस् इस स्थिति में ङित् होने के कारण ङिति ह्रस्वश्च इस सूत्र से विकल्प से नदी संज्ञा हो जाती है। नदी संज्ञा करने पर आण्नद्याः इस सूत्र से आट् आगम, अनुबन्ध लोप, मति आ अस् इस स्थिति में आटश्च से वृद्धि करने पर मति ऐस् बन गया। इको यणचि इस सूत्र से यण् आदेश करने पर मत्याः यह रूप सिद्ध हो जाता है। नदी संज्ञा के अभाव पक्ष में मति अस् इस स्थिति में घेर्ङिति सूत्र से गुण करने पर मते + अस् बन गया। ङसिङसोश्च सूत्र से पूर्व रूप एकादेश करने पर मतेस् रूप बन गया। सकार को रुत्व विसर्ग करने पर मतेः यह रूप सिद्ध हो जाता है।

द्विवचन मे भ्याम् प्रत्यय मतिभ्याम्, बहुवचन में भ्यस् प्रत्यय मतिभ्यः रूप सिद्ध होता है।

नदी संज्ञा के पक्ष में षष्ठी के एकवचन में ङस् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, आट् का आगम, वृद्धि एकादेश करने पर पूर्ववत् मत्याः यह रूप सिद्ध हो जाता है। नदी संज्ञा के अभाव पक्ष में मतेः यह रूप सिद्ध हो जाता है। षष्ठी के द्विवचन में ओस् प्रत्यय मति + ओस् इस स्थिति में इको यणचि सूत्र से यणादेश करने पर मत्योस् बन गया सकार को रुत्व विसर्ग करने पर मत्योः यह रूप सिद्ध हो जाता है।

षष्ठी बहुवचन में आम् प्रत्यय, मति + आम् बन गया। ह्रस्वनद्यापो नुट् के द्वारा नुट् का आगम नामि से दीर्घ करने पर मतीनाम् यह रूप सिद्ध हो जाता है।

13.12 - इदुयाम्॥ 7.3.117।

सूत्रार्थ - नदी संज्ञक इकार और उकार से परे ङि के स्थान पर आम् होता है।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में इदुद्भ्याम् पंचमी द्विवचनान्त एक ही पद है। इच्च उच्च इदुतौ इतरेतर योग द्वन्द्व समास इदुतौ ताभ्याम् इदुद्भ्याम् ङेराम्नद्याम्नीभ्यः सूत्र से ङेः यह षष्ठ्यन्त पद तथा नदीभ्याम् यह पंचम्यन्त पद तथा आम् यह प्रथमान्त पद अनुवर्तित होते हैं। नदीभ्याम् यह पद विभक्ति विपरिणाम के द्वारा प्राप्त होता है। अतः सूत्रार्थ सम्पन्न होता है- नदी संज्ञक ह्रस्व इकार और उकार से पर में विद्यमान ङि के स्थान पर आम् आदेश होता है।

उदाहरण - मत्याम्।

सूत्रार्थ समन्वय - मति शब्द से सप्तमी के एकवचन में ङिप्रत्यय अनुबन्ध लोप, मति इस स्थिति में इस सूत्र से आम् आदेश करने पर मति आम् इस स्थिति में आण्नद्याः से आडागम अनुबन्ध लोप, मति

ध्यान दें:

+ आ + आम् बन गया। आटश्च सूत्र से वृद्धि एकादेश करने पर मत्याम् यह रूप सिद्ध हो जाता है।

नदी संज्ञा के अभाव पक्ष में शेषो घ्यसखि इस सूत्र से घिसंज्ञा, अच्च घेः इस सूत्र से ङि के स्थान पर औकारादेश करने पर तथा घिसंज्ञक के अन्तिम इकार के स्थान पर अकार आदेश करने पर मतौ यह रूप सिद्ध होता है।

सप्तमी के द्विवचन में ओस् प्रत्यय, पूर्ववत् मत्योः यह रूप सिद्ध होता है। बहुवचन में सुप् प्रत्यय, अनुबन्धलोप, सकार के स्थान पर आदेश प्रत्यययोंः सूत्र से षकार करने पर मतिषु यह रूप सिद्ध हो जाता है।

अब ईकारान्त शब्द प्रारम्भ होता है।

गौर शब्द से स्त्रीत्व की विवक्षा में षिद्गौरादिभ्यश्च इस सूत्र से ङीष् प्रत्यय अनुबन्ध लोप, गौर + ई बन गया। यचि भम् सूत्र से भसंज्ञा होती है। भसंज्ञक गौर शब्द के अकार का यस्येति च इस सूत्र से अकार का लोप गौरी शब्द निष्पन्न होता है। अव्युत्पन्न पार्वती वाचक गौरी शब्द की अर्थवदधातुर प्रत्ययः प्रातिपदिकम् सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा होती है। प्रथमा के एकवचन की विवक्षा में सुप्रत्यय अनुबन्ध लोप। सकार का हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से सकार का लोप करने पर गौरी यह रूप सिद्ध हो जाता है।

प्रथमा के द्विवचन में औ प्रत्यय गौरी + औ इस स्थिति में प्रथमयोः पूर्व सवर्णः इस सूत्र से पूर्वसवर्णदीर्घ प्राप्त होता है उसका दीर्घाज्जसि च से इस सूत्र से निषेध हो जाता है। तत्पश्चात् इको यणचि इस सूत्र से यणादेश करने पर गौर्यौ यह रूप सिद्ध हो जाता है।

बहुवचन में जस् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, गौरी + अस् यह स्थिति हो जाती है। उसके बाद पूर्ववत् सवर्ण दीर्घ का निषेध हो जाता है तथा इको यणचि सूत्र यणादेश करने पर सकार को रुत्व विसर्ग करने पर गौर्यः यह रूप सिद्ध हो जाता है।

गौरी शब्द से सम्बोधन के एकवचन में सुप्रत्यय, हे गौरी सु इस स्थिति में अगला सूत्र प्रवृत्त होता है।

13.13 - अम्बार्थनद्योर्ह्रस्वः ॥ 7.3.107 ।

सूत्रार्थ - अम्बार्थक तथा नद्यन्त के स्थान पर ह्रस्व होता है सम्बुद्धि परे रहते।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। अम्बार्थनद्योः ह्रस्वःयह सूत्र पदच्छेद है। अम्बार्थनद्योः षष्ठी द्विवचनान्त पद है। अम्बा अर्थ यस्य सः अम्बार्थः बहुव्रीहि समास। अम्बार्थ शब्द के द्वारा अम्बा शब्द के पर्यायवाची लिये जाते हैं। अम्बार्थश्च नदी च अम्बार्थनद्यौ तयोः अम्बार्थनद्योः इतरेतर योग द्वन्द्व समास। अङ्गस्य का अधिकार है। जो कि वचन विपरिणाम के द्वारा अम्बार्थनद्योः पद के साथ अन्वित होता है। अतः तदन्तविधि के द्वारा अम्बार्थ नद्यन्त अङ्ग के स्थान पर यह अर्थ होता है। ह्रस्वः प्रथमैकवचनान्त पद है, सम्बुद्धौ च सूत्र से सम्बुद्धौ यह सप्तम्यन्त पद अनुवर्तित होता है। सम्बुद्धौ इस पद में सप्तमी विभक्ति श्रवण होने के कारण तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य इस परिभाषा के द्वारा पर यह अर्थ प्राप्त हो जाता है। अतः इस सूत्र का फलितार्थ होता है- अम्बार्थकवाचक तथा नद्यन्त शब्दों के अन्तिम अच् को ह्रस्व होता है सम्बुद्धि परे रहते।

ध्यान दें:

उदाहरण - हे गौरि।

सूत्रार्थ समन्वय - गौरी शब्द से सम्बोधन में सुप्रत्यय, अनुबन्ध लोप, हे गौरी स् बन गया। ईकारान्त गौरी शब्द नित्य से स्त्रीलिंग है। अतः यू स्त्याख्यो नदी से नदी संज्ञा हो जाती है। तत्पश्चात् इस सूत्र से सम्बुद्धि पर में होने पर नद्यन्त गौरी शब्द के ईकार के स्थान पर ह्रस्व इकार करने पर हे गौरि स् बन गया। तत्पश्चात् एङ्ह्रस्वात्सम्बुद्धेः इस सूत्र से सकार का लोप करने से हे गौरि यह रूप सिद्ध हो जाता है।

सम्बोधन के द्विवचन की विवक्षा में औ प्रत्यय पूर्ववत् हे गौर्यौ यह रूप सिद्ध हो जाता है। बहुवचन में जस् प्रत्यय हे गौर्यः यह रूप सिद्ध हो जाता है।

गौरी शब्द से द्वितीया के एकवचन में अम् प्रत्यय, अमि पूर्वः से पूर्वरूप एकादेश करने पर गौरीम् यह रूप सिद्ध होता है। द्वितीया के द्विवचन में औट् प्रत्यय अनुबन्ध लोप पूर्ववत् गौर्यौ यह रूप सिद्ध होता है।

बहुवचन में शस् प्रत्यय अनुबन्ध लोप, प्रथमयोः पूर्वसवर्णः सूत्र से पूर्वसवर्ण दीर्घ करने पर गौरीस् बन गया सकार को रुत्व विसर्ग करने पर गौरीः यह रूप सिद्ध होता है।

तृतीया के एकवचन में टाप्रत्यय, अनुबन्ध लोप, गौरी + आ बन गया। इको यणचि से यणादेश करने पर गौर्या यह रूप सिद्ध होता है। द्विवचन में भ्याम् प्रत्यय गौरीभ्याम्, बहुवचन में भिस् प्रत्यय सकार को रुत्व विसर्ग करने पर गौरीभिः रूप सिद्ध होता है।

चतुर्थी के एकवचन में ङेप्रत्यय अनुबन्ध लोप गौरी + ए इस स्थिति में नदी संज्ञा के फलस्वरूप आण्नद्याः सूत्र से आट् आगम, आटश्च से वृद्धि करने पर गौरी ऐ यह स्थिति बन जाती है। ईकार को इको यणचि सूत्र से यणादेश करने पर गौर्यै यह रूप सिद्ध होता है। द्विवचन में भ्याम् प्रत्यय, गौरीभ्याम् बन गया। बहुवचन में भ्यस् प्रत्यय गौरीभ्यः रूप सिद्ध हो जाता है।

पंचमी के एकवचन में ङसि प्रत्यय अनुबन्ध लोप, गौरी + अस् इस स्थिति में नदी संज्ञा, फलस्वरूप आडागम, वृद्धि पूर्ववत् गौर्याः यह रूप सिद्ध हो जाता है। द्विवचन में भ्याम् प्रत्यय गौरीभ्याम् यह रूप सिद्ध हो जाता है। बहुवचन में भ्यस् प्रत्यय सकार को रुत्व विसर्ग करने पर गौरीभ्यः रूप सिद्ध हो जाता है।

षष्ठी के एकवचन में ङस् प्रत्यय गौरी शब्द की नदी संज्ञा, आडागम, वृद्धि, गौर्याः यह रूप सिद्ध हो जाता है। द्विवचन में ओस् प्रत्यय, इको यणचि से यण् आदेश, गौर्योः यह रूप सिद्ध हो जाता है।

बहुवचन में आम् प्रत्यय, गौरी + आम् इस स्थिति में नदी संज्ञा होने के कारण ह्रस्वनद्यापो नुट् इस सूत्र से नुट् का आगम, नामि सूत्र से दीर्घ करने तथा णत्व करने पर गौरीणाम् यह रूप सिद्ध हो जाता है।

सप्तमी के एकवचन में। ङिप्रत्यय, अनुबन्ध लोप, गौरी इस स्थिति में नदी संज्ञा, ङेराम्नद्याम्नीभ्यः इस सूत्र से ङि के स्थान पर आम् आदेश, तत्पश्चात् आट् आगम, वृद्धि करने पर गौरी + आम् बन गया।

इको यणचि सूत्र से यणादेश करने पर गौर्याम् यह रूप सिद्ध हो जाता है।

द्विवचन मे गौर्योः तथा बहुवचन में गौरीषु यह रूप सिद्ध हो जाता है।

पाठ-13

अजन्त स्त्रीलिंग में रमा और नदी शब्द के रूप

ध्यान दें:

पाठगत प्रश्न-4

17. आटश्च सूत्र का अर्थ लिखें?

18. आटश्च सूत्र से क्या विधान किया जाता है?

19. इदुद्भ्याम् सूत्र का अर्थ लिखें?

20. हे गौरि में ह्रस्व किससे होता है?

पाठ सार

अजन्तस्त्रीलिंग शब्दों के रूप कैसे बनते हैं, इस पाठ में बताया गया है। अकारान्त स्त्रीलिंग नहीं होता है। अतः वर्णानुक्रम के अनुसार आकारान्त रमा शब्द के रूप कैसे होते हैं इसका विचार किया गया। तत्पश्चात् नित्य स्त्रीलिंग वाचक ईकारान्त और ऊकारान शब्दों की नदी संज्ञा होती है यह विस्तार से बताया गया है। ङित्प्रत्ययों में इकारान्त और उकारान्त शब्दों में विकल्प से नदी संज्ञा होती है। अतः उन स्थलों में विकल्प से रूप होते हैं। इस पाठ में विस्तार से विचार किया गया है।

पाठान्त प्रश्न

1. हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।

2. प्रत्यय लोपे प्रत्यय लक्षणम् सूत्र की व्याख्या कीजिए।

3. सम्बुद्धौ च सूत्र की व्याख्या कीजिए।

4. आङि चापः सूत्र की व्याख्या कीजिए।

5. सर्वनाम्नः स्याड्ढ्रऊस्वश्च सूत्र की व्याख्या कीजिए।

6. यू स्त्र्याख्यो नदी की व्याख्या कीजिए।

7. ङिति ह्रस्वश्च की व्याख्या कीजिए।

8. इदुद्भ्याम् सूत्र का उदाहरण और व्याख्या कीजिए।

9. अम्बार्थनद्योर्ह्रस्वः की व्याख्या कीजिए।

10. प्रदत्त रूपों की सिद्धि कीजिए- रमा रमे, रमया, रमायै, मत्याम्, गौरि।

ध्यान दें:

पाठगत प्रश्नोत्तर

उत्तर-1

1. हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्।
2. हलन्त से पर में जो ङी और आप् तदन्त से पर सुतिसि से सम्बन्धित अपृक्त हल् का लोप होता है।
3. आबन्त अङ्ग से पर में विद्यमान औङ् के स्थान पर शी आदेश होता है।
4. परिभाषा सूत्र

उत्तर-2

5. आप् को एकार होता है सम्बुद्धि परे रहते।
6. सम्बुद्धि पर में होने पर आबन्त को एकार आदेश होता है।
7. आङ् और ओस् परे रहते आबन्त अङ्ग को एकार आदेश होता है।
8. आप् से पर में विद्यमान ङित् विभक्ति को याट् का आगम होता है।
9. याडापः इस सूत्र से।
10. विधि सूत्र।

उत्तर-3

11. आबन्त सर्वनाम से परे ङित् को स्याट् का आगम तथा आबन्त को ह्रस्व होता है।
12. सर्वनाम्नः स्याड्ढ्रऊस्वश्च इस सूत्र से।
13. यू स्त्र्याख्यो नदी।
14. ईकारान्त और ऊकारान्त नित्य स्त्रीलिंग नदी संज्ञक होते हैं।
15. इयङ् और उवङ् के स्थानी नित्य स्त्रीलिंग जो ईकार और ऊकार तथ ह्रस्व इवर्ण और उवर्ण स्त्रीलिंग में विकल्प से नदी संज्ञक होते हैं। ङित् प्रत्यय परे रहते।
16. आण्नद्याः इस सूत्र से

ध्यान दें:

उत्तर-4

17. आट् से आच् परे रहते वृद्धि एकादेश होती है।

18. वृद्धि एकादेश का विधान किया जाता है।

19. नदी संज्ञक इकार और उकार से परे ङि के स्थान पर आम् आदेश होता है।

20. अम्बार्थनद्योर्ह्रस्वः सूत्र से।

14

अजन्त नपुंसकलिंग

ध्यान दें:

पूर्वतन पाठ में हमने अजन्त स्त्रीलिंग प्रकरण को देखा। इस प्रकरण में भी प्रत्याहार क्रम से शब्दों का विचार प्रस्तुत करते हैं। नपुंसकलिंग शब्दों में अधिक भेद नहीं हैं। इन शब्दों में यह विशिष्टता है कि प्रथमा और द्वितीया विभक्ति में समान रूप होते हैं और तृतीया आदि विभक्तियों में प्राय: पुल्लिंग की तरह रूप होते हैं। नपुंसक लिंग में विद्यमान शब्दों से जिन स्थलों में विशेषता है वह सब यहां विचार किया जाता है। तभी इन शब्दों के रूप कैसे होते हैं? इस विषय का विचार करने के लिए यह प्रकरण आरम्भ किया जाता है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे

- अजन्त नपुंसकलिंग में शब्दों के रूप कैसे होते हैं यह जान पाने में;
- नपुंसकलिंग में कब ह्रस्व होता है यह जान पाने में;
- असमानपद में भी णत्व होता है यह जान पाने में;
- प्रत्यय का कब लुक् श्लु लुप् होता है यह समझ पाने में;
- नपुंसकलिंग में भी सर्वनामस्थान संज्ञा होती है यह जान पाने में।

14.1 - अतोऽम्॥ 7.1.24।

सूत्रार्थ - अदन्त नपुंसक अङ्ग से परे सु और अम् को अम् होता है।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। अत: अम् यह पदच्छेद है। इस सूत्र में दो पद है। अत: यह पंचम्येकवचनान्त पद है। अङ्गस्य सूत्र का अधिकार है। उस अङ्गाधिकार का पञ्चमी विभक्ति में विपरिणाम होता है। अत: तदन्त विधि के द्वारा अदन्त अङ्ग यह अर्थ प्राप्त होता है। अम् यह प्रथमान्त पद है। स्वमोर्नपुंसकात् यह सूत्र अनुवर्तित होता है। नपुंसकात् यह पञ्चमी का एकवचन है। स्वमो: षष्ठी द्विवचनान्त पद है। सुश्च अम् च इति स्वमौ, तयो: स्वमो: इतरेतरयोगद्वन्द्व समास। अत: सूत्रार्थ बनता है-

ध्यान दें:

अदन्त नपुंसक अङ्ग से पर में विद्यमान सु और अम् के स्थान पर अम् आदेश होता है। अमादेश अनेकाल् है। अत: अनेकाल्शित्सर्वस्य इस परिभाषा के द्वारा सर्वादेश यह पद प्राप्त होता है। स्वमोर्नपुंसकात् इस सूत्र से सु और अम् प्रत्यय का लुक् प्राप्त होता है। परन्तु इस सूत्र से अदन्त शब्द से पर में विद्यमान सु और अम् के स्थान पर अम् आदेश होता है। यह सूत्र स्वमोर्नपुंसकात् का बाधक है। अम् प्रत्यय को दुबारा अम् आदेश क्यों होता है? इस प्रश्न का उत्तर दिया जाता है कि- स्वमोर्नपुंसकात् से प्राप्त लुक् को बांधने के लिए अमादेश किया जाता है।

उदाहरण - ज्ञानम्।

सूत्रार्थ समन्वय - अवबोधनार्थक क्र्यादिगण में पठित ज्ञा अवबोधने इस धातु से भाव में ल्युट् प्रत्यय, अनुबन्धलोप, ज्ञा + यु बन गया। युवोरनाकौ इस सूत्र से यु के स्थान पर अन आदेश करने पर ज्ञान शब्द निष्पन्न होता है। ज्ञान शब्द भाव में ल्युट् प्रत्ययान्त है। अत: यह नित्य से नपुंसकलिंग है। ल्युट् प्रत्यय कृत्प्रत्यय है अत: ज्ञान शब्द कृदन्त है। ज्ञान शब्द की कृत्तद्धितसमासाश्च सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा होती है। उससे प्रथमा के एकवचन में सुप्रत्यय, अनुबन्ध लोप, ज्ञान स् इस स्थिति में स्वमोर्नपुंसकात् से प्राप्त लुक् को बांधकर इस सूत्र से सु को अमादेश करने पर ज्ञान अम् बन गया। अम् के मकार की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा प्राप्त हुई, न विभक्तौ तुस्मा: से निषेध हो जाता है। अमि पूर्व: से पूर्व रूप एकादेश होता है। तो ज्ञानम् यह रूप सिद्ध हो जाता है।

14.2 - नपुंसकाच्च ॥ 7.1.19 ।

सूत्रार्थ - नपुंसकलिंग से पर में औङ् को शी आदेश होता है।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। नपुंसकात् च पदच्छेद है। चकार पर में रहने पर तकार को स्तो: श्चुना श्चु: इस सूत्र से चकार हुआ है। नपुंसकात् यह पंचम्यन्त पद है। च अव्यय पद है। अङ्गस्य के अधिकार में यह सूत्र पढ़ा गया है। उसका पंचम्यन्त में विपरिणाम कर लिया जाता है। औङ आप: इस सूत्र से औङ: यह षष्ठ्यन्त पद अनुवर्तित होता है। जस: शी इस सूत्र से शी यह प्रथमान्त पद अनुवर्तित होता है। अत: यह सूत्रार्थ सम्पन्न होता है- नपुंसक अङ्ग से पर में विद्यमान औङ् के स्थान पर शी आदेश होता है। प्रथमा और द्वितीया के द्विवचन की औङ् संज्ञा होती है। यह बात औङ आप: सूत्र में बतलाया गया है।

उदाहरण - ज्ञाने।

सूत्रार्थ समन्वय - ज्ञान शब्द के प्रथमा द्विवचन में ज्ञान औ इस स्थिति में प्रस्तुत सूत्र से शी आदेश होता है। शकार की लशक्वतद्धिते इस सूत्र से इत्संज्ञा तस्य लोप: से लोप, ज्ञान + ई इस स्थिति में शी का स्थानिवद्भाव होने के कारण सुप्त्व आता है, अत: सुडनपुंसकस्य सूत्र में अनपुंसकस्य इस सूत्र से सर्वनाम स्थान संज्ञा नहीं होता है। परन्तु अजादि होने के कारण यचि भम् से भसंज्ञा, होती है। तब-

14.3 - यस्येति च ॥ 6.4.148

सूत्रार्थ - भसंज्ञक इवर्ण और अवर्ण का लोप होता है। ईकार और तद्धित परे रहते।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। यस्य ईति च यह पदच्छेद है। इस सूत्र में तीन पद है। यस्य षष्ठ्यन्त पद है। इश्च अश्च इति यम् समाहारद्वन्द्व समास तस्य यस्य। इवर्ण और उवर्ण का यह अर्थ होता है। इति यह सप्तम्येकवचनान्त पद है। च अव्यय पद है। भस्य के अधिकार में यह सूत्र पढ़ा गया है।

ध्यान दें:

नस्तद्धिते इस सूत्र से तद्धिते यह सप्तम्यन्त पद अनुवर्तित होता है। अल्लोपोऽनः सूत्र से लोपः इस प्रथमान्त पद की अनुवृत्ति होती है। अतः इस सूत्र का अर्थ सम्पन्न होता है- ईकार और तद्धित परे रहते भसंज्ञक इवर्ण और उवर्ण का लोप होता है।

उदाहरण - ज्ञाने।

सूत्रार्थ समन्वय- ज्ञान ई इस स्थल पर भसंज्ञक अकार का पूर्वोक्त सूत्र से लोप प्राप्त होता है। तत्पश्चात् औङः श्याम् प्रतिषेधो वाच्यः इस वार्तिक से औङ् के स्थान पर विहित शी आदेश को यस्येति च से प्राप्त लोप निषेध करने पर आद् गुणः से गुण एकादेश करने पर ज्ञाने यह रूप सिद्ध हो जाता है।

14.4 - जश्शसोः शिः ॥ 7.1.20 ॥

सूत्रार्थ - नपुंसकलिंग से पर में विद्यमान जस् और शस् को शि आदेश होता है।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। जश्शसः शिः यह पदच्छेद है। इस सूत्र में दो पद हैं। जश्शसोः यह षष्ठीद्विवचनान्त पद है। जश्च शश्च इति जश्शसौ तयोः जश्शसोः इतरेतरयोगद्वन्द्व समास। शि प्रथमान्त पद है। स्वमोर्नपुंसकात् इस सूत्र से नपुंसकात् यह पंचम्यन्त पद अनुवर्तित होता है। इस प्रकार सूत्रार्थ होगा- नपुंसकलिंग से पर में विद्यमान जस् और शस् के स्थान पर शि आदेश होता है। शि आदेश अनेकाल् है अतः अनेकाल्शित्सर्वस्य इस परिभाषा के द्वारा सर्वादेश होता है। शि आदेश का स्थानिवद् भाव होने के कारण विभक्ति संज्ञा, लशक्वतद्धिते सूत्र से शकार की इत्संज्ञा तस्य लोपः से लोप।

उदाहरण - ज्ञानानि।

सूत्रार्थ समन्वय- ज्ञान शब्द के प्रथमा बहुवचन में जस् प्रत्यय, प्रस्तुत सूत्र से जस् के स्थान पर शि आदेश, अनुबन्धलोप, ज्ञान + इ यह स्थिति बन गयी। तब-

पाठगत प्रश्न-1

यहां कुछ प्रश्न दिये जाते हैं।

1. ज्ञानम् में अमादेश किस सूत्र से होता है?
2. अतोऽम् यह सूत्र किसका अपवाद है?
3. नपुंसकाच्च इस सूत्र का अर्थ लिखो?
4. नपुंसकाच्च सूत्र से क्या किया जाता है?
5. नपुंसकलिंग में जस् को शि आदेश किस सूत्र से होता है?
6. यस्येति च इस सूत्र का अर्थ लिखो?

14.5 - शि सर्वनामस्थानम् ॥ 1.1.42

सूत्रार्थ - शि की सर्वनामस्थान संज्ञा होती है।

ध्यान दें:

सूत्र व्याख्या - यह संज्ञा सूत्र है। शि प्रथमैकवचनान्त पद है। सर्वनामस्थानम् यह प्रथमान्त पद है। अतः इस सूत्र से नपुंसकलिंग में जस् की सर्वनाम स्थान संज्ञा नहीं होती है। सुडनपुंसकस्य इस सूत्र में प्रतिपादित है। शस् के सुट्त्व न होने के कारण किसी भी लिंग में सर्वनाम स्थान संज्ञा नहीं होती है। अतः जश्शसो शि इस सूत्र से विहित शि आदेश की भी सर्वनाम स्थान संज्ञा होती है यह इस सूत्र का फलितार्थ है तथा इसीलिए इस सूत्र का आरम्भ किया गया है।

उदाहरण - ज्ञान इ इस अवस्था में शि आदेश की सर्वनाम स्थान संज्ञा वर्तमान सूत्र से होती है। तब-

14.6 - नपुंसकस्य झलचः ॥ 7.1.72 ॥

सूत्रार्थ - झलन्त और अजन्त नपुंसक लिंग को नुम् का आगम होता है सर्वनाम स्थान परे रहते।

सूत्र व्याख्या - सर्वनाम स्थान संज्ञक प्रत्यय परे रहते झलन्त तथा अजन्त नपुंसकलिंग शब्द को नुम् का आगम होता है। यह विधि सूत्र है। नपुंसकस्य झलचः यह पदच्छेद है। इस सूत्र में दो पद है। नपुंसकस्य यह षष्ठ्यन्त पद है। झलचः यह भी षष्ठ्यन्त पद है। झल् च अच् च इति झलच् तस्य झलचः समाहार द्वन्द्व समास। झलचः यह पद नपुंसकस्य इस पद का विशेषण है। अतः विशेषण होने के कारण तदन्तविधि के द्वारा झलन्त और अजन्त अङ्ग के स्थान पर यह अर्थ प्राप्त होता है। इदितो नुम्धातोः इस सूत्र से नुम् की अनुवृत्ति होती है। उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः इस सूत्र से सर्वनामस्थाने यह सप्तम्यन्त पद अनुवर्तित होता है। अतः इस सूत्र का अर्थ सम्पन्न होता है। सर्वनाम स्थान परे रहते झलन्त और अजन्त नपुंसकलिंग को नुमागम होता है। नुम् में मित्त्व नहीं होने पर मिदचोऽन्त्यात्परः इस परिभाषा के द्वारा अन्तिम अच् से पर में नुम् का आगम होता है, यह अर्थ लाभ होता है।

उदाहरण - ज्ञानानि।

सूत्रार्थ समन्वय - ज्ञान इस स्थिति में सर्वनाम स्थान संज्ञक अजन्त नपुंसकलिंग को प्रस्तुत सूत्र से नुम् का आगम होता है। अनुबन्ध लोप ज्ञान न् इ यह स्थिति बन गयी। तब-

14.7 - सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ॥ 6.4.8॥

सूत्रार्थ- नान्त के उपधा को दीर्घ होता है सम्बुद्धि सर्वनामस्थान पर में रहते।

सूत्र व्याख्या- यह विधि सूत्र है। सर्वनामस्थाने च असम्बुद्धौ यह पदच्छेद है। इस सूत्र में तीन पद है। सर्वनामस्थाने यह सप्तम्येकवचनान्त पद है। असम्बुद्धौ यह सप्तम्यन्त पद है।

न सम्बुद्धिः असम्बुद्धिः तस्मिन् असम्बुद्धौ, नञ् तत्पुरुष समास। सम्बुद्धि भिन्न यह अर्थ है। च अव्यय पद है। नोपधयाः यह सूत्र अनुवृत्त होता है। नः लुप्तषष्ठ्यन्त पद है। अङ्गस्य का अधिकार है। तथा वह न का विशेष्य बन जाता है। अतः तदन्तविधि के द्वारा नान्त अङ्ग को यह अर्थ प्राप्त हो जाता है। ढऊलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः सूत्र से दीर्घः यह प्रथमान्त पद अनुवर्तित होता है। अतः इस सूत्र का अर्थ होता है - नान्त के उपधा को दीर्घ होता है, सम्बुद्धि से भिन्न सर्वनाम स्थान के परे रहते।

उदाहरण - ज्ञानानि।

सूत्रार्थ समन्वय - ज्ञान न् इ इस स्थिति में शिप्रत्यय सम्बुद्धिभिन्न सर्वनामस्थानसंज्ञक है। अतः इस सूत्र से नान्त के उपधा अकार को दीर्घ आकार करने पर ज्ञाना न् इ यह स्थिति हो गयी। वर्ण सम्मेलन करने पर ज्ञानानि यह रूप सिद्ध हो जाता है।

ध्यान दें:

ज्ञान शब्द से सम्बोधन के एकवचन में सुप्रत्यय, अनुबन्ध लोप, हे ज्ञान स् इस स्थिति में स्वमोर्नपुंसकात् सूत्र से लुक् प्राप्त है पर होने के कारण लोप को बांधकर अतोऽम् इस सूत्र से सुप्रत्यय के स्थान पर अम् आदेश, अमि पूर्वः से पूर्वरूप हे ज्ञानम् यह रूप बन गया। तत्पश्चात् एङ्ह्रस्वात्सम्बुद्धेः इस सूत्र से ह्रस्व से पर में विद्यमान सम्बुद्धि के हल् मकार का लोप करने पर हे ज्ञान यह रूप सिद्ध हो जाता है।

सम्बोधन के द्विवचन में औ प्रत्यय, पूर्ववत् हे ज्ञाने यह रूप सिद्ध हो जाता है। बहुवचन में जस् प्रत्यय, हे ज्ञानानि यह रूप सिद्ध हो जाता है।

द्वितीया के एकवचन में अम् प्रत्यय अम् के लुक् को बाधकर अतोऽम् इस सूत्र से अमादेश, पूर्वरूप ज्ञानम् रूप सिद्ध हो जाता है। द्विवचन में औट् प्रत्यय अनुबन्धलोप, प्रथमा द्विवचन की तरह ज्ञाने यह रूप सिद्ध हो जाता है। बहुवचन में शस् प्रत्यय, जश्शसोः शि इस सूत्र से शि आदेश प्रथमा बहुवचन के तरह ज्ञानानि यह रूप सिद्ध हो जाता है।

अन्य वचनों में राम शब्द के तरह ज्ञानेन, ज्ञानाभ्याम्, ज्ञानैः, ज्ञानाय, ज्ञानाभ्याम्, ज्ञानेभ्यः, ज्ञानात्, ज्ञानाभ्याम्, ज्ञानस्य ज्ञानयोः ज्ञानानाम्, ज्ञाने ज्ञानयोः ज्ञानेषु इत्यादि रूप होते हैं।

॥श्रीपा॥

सूत्रावतरण – श्रियं पातीति श्रीपा शब्द विश्वपा शब्द के तरह क्विप्प्रत्ययान्त या विच्प्रत्ययान्त है। इस शब्द का विशेषण के रूप में व्यवहार किया जाता है। उससे तीनों लिंगों में व्यवहार होता है। नपुंसकलिंग में स्वादिप्रत्यय की विवक्षा में ह्रस्वविधान के लिए यह सूत्र प्रारम्भ होता है–

14.8 – ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य ॥ 1.2.47

सूत्रार्थ – नपुंसक लिंग में प्रातिपदिक अजन्त को ह्रस्व होता है।

सूत्र व्याख्या – यह विधि सूत्र है। ह्रस्वः नपुंसके प्रातिपदिकस्य यह पदच्छेद है। इस सूत्र में तीन पद है। ह्रस्वः प्रथमान्त पद है। नपुंसके यह सप्तम्येकवचनान्त पद है प्रातिपदिकस्य षष्ठी का एकवचन है। अचश्च इस परिभाषा के द्वारा ह्रस्वदीर्घ और प्लुत शब्दों के द्वारा जहां पर ह्रस्व दीर्घ और प्लुत विधान किये जाते हैं। वहां अचः यह षष्ठ्यन्त पद उपस्थित होता है। अचः यह पद प्रातिपकदकस्य का विशेषण है। अतः तदन्त विधि के द्वारा अजन्त प्रातिपदिक को यह अर्थ बन जाता है। प्रातिपदिकस्य पद में षष्ठी विभक्ति के श्रवण होने के कारण अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा के द्वारा अन्तिम अल् के स्थान पर ह्रस्व आदेश होता है। अतः इस सूत्र का अर्थ सम्पन्न होता है। नपुंसकलिंग में विद्यमान अजन्त प्रातिपदिक को ह्रस्व होता है।

उदाहरण – श्रीपम्।

सूत्रार्थ समन्वय – श्रीपा शब्द से नपुंसकलिंग में सुबुत्पत्ति की विवक्षा में अजन्त अङ्ग के आकार को ह्रस्व अकार करने पर श्रीप यह प्रातिपदिक होता है। उससे प्रथमा के एकवचन में सुप्रत्यय, अनुबन्ध लोप, श्रीप स् इस स्थिति में। स्वमोर्नपुंसकात् सूत्र से सु का लुक् प्राप्त है उसको बांधकर अतोऽम् सूत्र से अमादेश श्रीप + अम् बन गया। अमि पूर्वः सूत्र से पूर्वरूप करने पर श्रीपम् यह रूप सिद्ध हो जाता है।

द्विवचन की विवक्षा में औ प्रत्यय ज्ञान शब्द के तरह श्रीपे यह रूप सिद्ध हो जाता है।

बहुवचन में जस् प्रत्यय, ह्रस्व, श्रीप + जस् बन गया। जश्शसोः शि इस सूत्र से जस् के स्थान

ध्यान दें:

शि आदेश अनुबन्धलोप, श्रीप इ बन गया। तत्पश्चात् शि की सर्वनाम स्थान संज्ञा होती है। नपुंसकस्य झलचः सूत्र से अजन्त नपुंसक लिंग को सर्वनाम स्थान परे रहते नुम् आगम श्रीप न् इ स्थिति बन गया। तत्पश्चात् नकारान्त की उपधा अकार से असम्बुद्धि सर्वनामस्थान परे रहते सर्वनामस्थाने चा सम्बुद्धौ से दीर्घ आकार करने पर श्रीपा नि बन गया। तब-

14.9 - एकाजुत्तरपदे णः ॥ 8.4.12

सूत्रार्थ - एकाच् उत्तरपद में हो जिसके ऐसे समास में पूर्व पदस्थ निमित्त से पर में विद्यमान प्रातिपदिकान्त नुम् और विभक्तिस्थ नकार को णकार होता है

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में तीन पद हैं। एकाजुत्तरपदे यह सप्तम्यन्त पद है। एकः अच् यस्मिन् सः एकाच्, एकाच् उत्तरपदं यस्य सः एकाजुत्तरपदः तस्मिन् एकाजुत्तरपदे। बहुव्रीहिगर्भ बहुव्रीहि समास। समास का ही उत्तर पद होता है। अतः उत्तरपदे के द्वारा समास पद का लाभ हो जाता है। णः प्रथमान्त पद है। रषाभ्यां नो णः समानपदे यह समग्र सूत्र अनुवृत्त होता है। पूर्वपदात्संज्ञायामगः इस सूत्र से पूर्वपदात् यह पंचम्यन्त पद अनुवर्तित होता है। पूर्वं पदं यस्य तत् पूर्वपदम्, बहुव्रीहि समास। प्रातिपदिकान्तनुम्विभक्तिषु च सूत्र अनुवर्तित होता है। प्रातिष्पदिकस्य अन्तः प्रातिपदिकान्तः षष्ठी तत्पुरुष समास। इस सूत्र का फलितार्थ होता है- पूर्वपद में विद्यमान रेफ षकार से पर में स्थित प्रातिपदिकान्त तथा नुम् व विभक्तिस्थ नकार को णत्व होता है।

उदाहरण - श्रीपाणि।

सूत्र समन्वय - पूर्वसूत्रोक्त प्रकार से श्रीपा नि बन गया। यहां श्रीपा एक पद है। नि यह एक पद है। अतः श्रीपा नि में एकपद न होने के कारण से अट्कुप्वाङ्नुत्व्यवायेऽपि सूत्र से नकार को णकार असम्भव है। अतः श्रीपा नि इस अवस्था में पूर्व पद में स्थित रेफ से से पर में विद्यमान नकार को णकार करने पर श्रीपाणि यह रूप सिद्ध हो जाता है।

द्वितीया आदि विभक्तियों में ज्ञान शब्द के तरह श्रीपम् श्रीपे श्रीपाणि, श्रीपेण स, श्रीपाभ्याम्, श्रीपैः, श्रीपाय श्रीपाभ्याम् श्रीपेभ्यः, श्रीपात् श्रीपाभ्याम्, श्रीपेभ्यः, श्रीपस्य श्रीपयोः श्रीपाणाम् श्रीपे श्रीपयोः श्रीपेषु, हे श्रीप हे श्रीपे हे श्रीपाणि, इत्यादि रूप होते हैं।

पाठगत प्रश्न-2

7. शि आदेश की सर्वनाम स्थान संज्ञा करने वाला सूत्र कौन-सा है?
8. ज्ञानानि में नुम् आगम किस सूत्र से होता है?
9. ज्ञानानि में उपधा दीर्घ किससे होता है?
10. श्रीपम् में ह्रस्व किस सूत्र से होता है?
11. श्रीपाणि में णत्व किस सूत्र से होता है?
12. एकाजुत्तरपदे णः इस सूत्र का अर्थ लिखो?

ध्यान दें:

॥ वारि॥

14.10 - स्वमोर्नपुंसकात् ॥ 7.1.23

सूत्रार्थ - नपुंसकलिंग अङ्ग से पर में विद्यमान सु और अम् का लुक् होता है।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। स्वमोः नपुंसकात् यह पदच्छेद है। स्वमोः षष्ठीद्विवचनान्त पद है। सुश्च अम् च इति स्वमौ तयोः स्वमोः इतरेतर योग द्वन्द्व समास। नपुंसकात् पञ्चमी का एकवचन है। षड्भ्यो लुक् इस सूत्र से लुक् इस प्रथमान्त पद की अनुवृत्ति होती है। अङ्गस्य सूत्र का अधिकार है। वह पद प्रातिपदिकात् पद के साथ अन्वित होता है। अतः सूत्रार्थ सम्पन्न होता है - नपुंसक लिंग अङ्ग से परे सु और अम् प्रत्यय का लुक् होता है, यह अर्थ प्राप्त होता है।

विशेष विचार - यहां यह संदेह होता है कि आदेः परस्य इस सूत्र के द्वारा यह लुक् अम् के आदि वर्ण अकार का क्यों नहीं होता है। यहां इस विषय में समाधान दिया जाता है कि प्रत्ययस्य लुक्श्लुलुपः इस सूत्र से विधीयमान लुक् प्रत्ययावयव के अदर्शन का ही नामान्तर है। यहां पर अम् का लुक् करना है न तो अम् के अकार या मकार का। सम्पूर्ण अम् समुदाय ही प्रत्यय संज्ञक है। अतः सम्पूर्ण अम् का अदर्शन करेंगे तभी यह लुक् सार्थक होता है, अन्यथा निष्फल हो जाता है। अतः सम्पूर्ण अम् का लुक् होता है नकि अकार या मकार का।

उदाहरण - वारि।

सूत्रार्थ समन्वय - जलार्थक नित्य नपुंसक लिंग में विद्यमान अव्युत्पन्न वारिशब्द का अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् इस सूत्र से होती है। उससे प्रथमा के एकवचन की विवक्षा में सु प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, वारि + स् इस स्थिति में स्वमोर्नपुंसकात् इस सूत्र से नपुंसकलिंग अंग से पर में विद्यमान सकार का लुक् करने पर वारि यह रूप सिद्ध हो जाता है।

14.11 - प्रत्ययस्य लुक्श्लुलुपः ॥ 1.1.61

सूत्रार्थ - लुक् श्लु लुप् इन तीन शब्दों से किया गया प्रत्यय का अदर्शन क्रमशः लुक् श्लु लुप् संज्ञक होता है।

सूत्र व्याख्या - यह संज्ञा सूत्र है। प्रत्ययस्य षष्ठी एकवचनान्त पद है। अदर्शनं लोपः सूत्र से अदर्शनम् यह प्रथमान्त पद अनुवर्तित होता है। लुक्श्लुलुपः प्रथमा बहुवचनान्त पद है। लुक्च श्लुश्च लुप्च इतरेतर योगद्वन्द्व लुक्श्लुलुपः। प्रत्यय का अदर्शन लुक् श्लु लुप् संज्ञक होता है। यहां पर लुक्श्लुलुपः यह पद दो बार आवृत्त होता है। आवृत्त पद का तृतीयान्त पद में विपरिणाम कर दिया जाता है। जिसके कारण से लुक्श्लुलुप्शब्दैः यह अर्थ प्राप्त हो जाता है। इसका और अनुवर्तमान पद क अदर्शनम् पद के साथ अन्वय होता है। अतः यह अर्थ सम्पन्न होता है लुक् श्लु लुप् इन पदों का उच्चारण करके किया गया प्रत्यय का अदर्शन यथा क्रम से लुक् श्लु लुप् संज्ञक होते हैं।

14.12 - नलुमताङ्गस्य ॥ 1.1.63॥

सूत्रार्थ - लुक् श्लु लुप् ये तीन लुमान् है। इन लुंमान् शब्दों से लोप हाने पर उसको निमित्त मानकर अङ्ग को काई कार्य नहीं होता है।

सूत्र व्याख्या - यह निषेध सूत्र है। न लुमता अङ्गस्य यह पदच्छेद है। न अव्यय पद है। लुमता

ध्यान दें:

तृतीया का एकवचन है। लुः एकदेशः अस्यास्तीति लुमान् तेन लुमता। लुशब्द से लुक् श्लु लुप् का ग्रहण होता है। प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम् यह सूत्र अनुवर्तित होता है। अङ्गस्य यह षष्ठी एकवचनान्त पद है। इस सूत्र का अर्थ सम्पन्न होता है। - लुक् श्लु लुप् ये लुमान् है। लुमान् शब्दों से प्रत्यय लोप होने पर प्रत्यय को निमित्त मानकर अङ्गकार्य नहीं होते हैं।

उदाहरण - वारि।

सूत्रार्थ समन्वय - यहां वारि शब्द से पर में विद्यमान सु प्रत्यय का स्वमोर्नपुंसकात् सूत्र से लुक् हुआ। अतः प्रत्यय लोपे प्रत्यय लक्षणम् इस सूत्र से प्रत्यय लक्षण को निमित्त मानकर किया जाने वाला कार्य प्राप्त होते हैं। अतः इस सूत्र से प्रत्यय लक्षण का निषेध हो जाता है। अतः प्रत्यय लक्षण को निमित्त मानकर कार्य नहीं होते हैं।

14.13 - इकोऽचि विभक्तौ 7.1.73

सूत्रार्थ - इगन्त नपुंसक लिंग को नुम् का आगम होता है अजादि विभक्ति परे रहते।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इकः अचि विभक्तौ यह पदच्छेद है। सामान्य रूप से इस सूत्र का अर्थ है - अजादि विभक्ति यदि पर में है तो इगन्त नपुंसक लिंग शब्द को नुम् का आगम होता है। इस सूत्र में तीन पद है इकः षष्ठ्यन्त पद है। अचि सप्तम्येकवचनान्त पद है। विभक्तौ भी सप्तमी का एकवचन है। इदितो नुम्धातोः इस सूत्र से नुम् यह प्रथमान्त पद अनुवृत्त होता है। नपुंसकस्य झलचः इस सूत्र से नपुंसकस्य पद की अनुवृत्ति होती है जो कि इकः पद का विशेष्य होता है, फलस्वरूप तदन्तविधि के द्वारा इगन्त नपुंसक को यह अर्थ निष्पन्न होता है। अचि पद में तदादि विधि के द्वारा अजादि विभक्ति के परे रहते यह अर्थ प्राप्त हो जाता है। कुल सम्मिलित करके सूत्रार्थ बनता है - अजादि प्रत्यय पर में विद्यमान हो तो इगन्त नपुंसक को नुम् का आगम होता है। नुम् में मित्करण के कारण यह आगम है पता चलता है। नुम् के मित् होने से यह अन्तिम अच् से पर में जाकर स्थित होता है।

उदाहरण - वारिणी।

सूत्रार्थ समन्वय - वारिशब्द से प्रथमाद्विवचन में औप्रत्यय, उसको शी आदेश, अनुबन्ध लोप, वारि + ई बन गया। वारि शब्द इगन्त नपुंसक लिंग है। अतः उससे अजादि प्रत्यय के परे रहते नुम् का आगम, अनुबन्ध लोप, वारि न् ई बन गया। अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि इस सूत्र से णत्व करने पर वारिणी यह रूप सिद्ध हो जाता है।

प्रथमा के बहुवचन की विवक्षा में जस् प्रत्यय, अनुबन्धलोप, वारि + अस् यह स्थिति बन गयी। जश्शसोः शि इस सूत्र से शि आदेश शि सर्वनामस्थानम् से सर्वनामस्थानसंज्ञा, तत्पश्चात् इकोऽचि विभक्तौ से नुम् का आगम, अनुबन्ध लोप, वारि न् इ बन गया। सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ इस सूत्र से इस सूत्र से उपधा दीर्घ नकार को णत्व करने पर वारीणि यह रूप सिद्ध हो जाता है। वारि शब्द के द्वितीया विभक्ति में प्रथमा के ही तरह रूप होते हैं।

वारि शब्द से सम्बोधन के एकवचन में सुप्रत्यय अनुबन्धलोप, हे वारि स् बन गया। स्वमोर्नपुंसकात् सूत्र से सुप्रत्यय का लुक् करने पर हे वारि यह रूप बन जाता है। प्रत्यय लोपे प्रत्ययल क्षणम् इस सूत्र से प्रत्ययलक्षण मानकर ह्रस्वस्य गुणः से गुण प्राप्त है। लेकिन यहां सुप्रत्यय लुक् शब्द से लुप्त है अतः न लुमताङ्गस्य सूत्र से निषेध हो जाता है। उपरन्तु न लुमताऽङ्गस्य यह निषेध अनित्य है। अतः गुण एकार करने पर हे वारे स् बन गया। तत्पश्चात् एङ्ह्रस्वात्सम्बुद्धेः इस सूत्र से सम्बुद्धि का लोप करने पर हे वारे

ध्यान दें:

यह रूप सिद्ध हो जाता है। परन्तु जिस पक्ष में न लुमताङ्गस्य सूत्र अनित्य नहीं है उस पक्ष में गुण नहीं होगा तब हे वारि यह रूप सिद्ध होता है।

सम्बोधन के द्विवचन में औ प्रत्यय, पूर्ववत् हे वारिणी यह रूप सिद्ध हो जाता है। बहुवचन में जस् प्रत्यय करने पर हे वारीणि यह रूप सिद्ध होता है।

तृतीया के एकवचन में टा प्रत्यय वारि + आ बन गया। यहां इकोऽचि विभक्तौ से नुम् का आगम तथा आङो नास्त्रियाम् से ना आदेश एक साथ प्राप्त होता है। यहां पर में होने के कारण विप्रतिषेधे परं कार्यम् इस नियम से आङो नास्त्रियाम् से ना आदेश करने पर णत्व करने से वारिणा यह रूप सिद्ध होता है।

द्विवचन में भ्याम् प्रत्यय वारिभ्याम् रूप बनता है। बहुवचन में भिस् प्रत्यय सकार को रुत्व विसर्ग वारिभिः यह रूप सिद्ध हो जाता है। चतुर्थी के एकवचन में ङे प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, वारि ए इस स्थिति में इकारान्त होने के कारण शेषो घ्यसखि इस सूत्र से घिसंज्ञा होती है। तत्पश्चात् इकोऽचि विभक्तौ से प्राप्त नुमागम को बाधकर पर होने के कारण घेङिर्ति से गुण प्राप्त होता है। तत्पश्चात् वृद्ध्यौत्वतृज्वद्भावगुणेभ्यो नुम् पूर्वविप्रतिषेधेन इस वार्तिक से पर में विद्यमान गुण को भी बांधकर नुम् का आगम करने पर वारिन् ए बन गया। नकार को णत्व करने पर वारिणे यह रूप सिद्ध होता है।

चतुर्थी के द्विवचन में भ्याम् प्रत्यय वारिभ्याम् बहुवचन में भ्यस् प्रत्यय सकार को रुत्व विसर्ग करने पर वारिभ्यः रूप सिद्ध होते हैं।

पञ्चमी के एकवचन में ङसि प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, वारि अस् इस स्थिति में इकारान्त होने के कारण शेषो घ्यसखि इस सूत्र से घिसंज्ञा होती है। तत्पश्चात् इकोऽचि विभक्तौ से प्राप्त नुमागम को बांधकर पर होने के कारण घेङिति से गुण प्राप्त होता है। तत्पश्चात् वृद्ध्यौत्वतृज्वद्भावगुणेभ्यो नुम् पूर्वविप्रतिषेधेन इस वार्तिक से पर में विद्यमान गुण को भी बांधकर नुम् का आगम करने पर वारिन् अस् बन गया। नकार को णत्व करने पर वारिणः यह रूप सिद्ध होता है। द्विवचन में भ्याम् प्रत्यय वारिभ्याम्, बहुवचन में भ्यस् प्रत्यय वारिभ्यः रूप सिद्ध होता है।

षष्ठी के एकवचन में ङस् प्रत्यय अनुबन्ध लोप, पूर्ववत् पर में विद्यमान गुण को भी बाधकर नुम् का आगम सकार को रुत्व विसर्ग करने पर वारिणः यह रूप सिद्ध होता है।

षष्ठी के द्विवचन में ओस् प्रत्यय इको यणचि से यण् आदेश प्राप्त होता है उसे बांधकर इकोऽचि विभक्तौ से नुम् आगम अनुबन्ध लोप नकार के स्थान पर णकार करने पर वारिणोः यह रूप सिद्ध होता है।

षष्ठी के बहुवचन में आम् प्रत्यय, वारि + आम् यह स्थिति बन गयी। यहां इकोऽचि विभक्तौ से नुम् का आगम प्राप्त है तथा ह्रस्वनद्यापो नुट् से नुडागम प्राप्त है। परन्तु वृद्ध्यौत्वतृज्वद्भावगुणेभ्यो नुम् पूर्वविप्रतिषेधेन इस वार्तिक से पर नुट् को भी बाधकर नुम् का आगम करने पर नामि सूत्र से दीर्घ करने पर वारीणाम् यह रूप सिद्ध हो जाता है।

सप्तमी के एकवचन में ङिप्रत्यय, अनुबन्ध लोप, वारि इ इस स्थिति में अच्च घेः इस सूत्र से औकार आदेश प्राप्त है वृद्ध्यौत्वतृज्वद्भावगुणेभ्यो नुम् पूर्वविप्रतिषेधेन इस वार्तिक से पर औकारादेश को बाधकर नुम् आगम करने पर वरिन् इ इस स्थिति में णत्व करने पर वारिणि यह रूप सिद्ध होता है।

द्विवचन में ओस् प्रत्यय पूर्ववत् वारिणोः यह रूप सिद्ध होता है। बहुवचन में सुप् प्रत्यय

सकार को आदेशप्रत्यययोः से षकार आदेशा करने पर उ वारिषु यह रूप सिद्ध होता है।

वारि शब्द समाप्त हुआ।

ध्यान दें:

पाठगत प्रश्न-3

13. स्वमोर्नपुंसकात् इस सूत्र का अर्थ लिखो?

15. लुमान् कौन-कौन से हैं।

16. कब प्रत्यय लोप होने पर प्रत्यय लक्षण नहीं हुआ करता है?

17. वारीणि में नुम् आगम किस सूत्र से होता है?

18. वारि शब्द के सम्बोधन एकवचन में कितने रूप होते हैं?

दधि

नित्य नपुंसकलिंग में वर्तमान अव्युत्पन्न अजन्त दधि शब्द की अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् से प्रातिपदिक संज्ञा, उससे प्रथमा के एकवचन की विवक्षा में सुप्रत्यय, वारिशब्द के तरह दधि शब्द होता है। द्विवचन में औ प्रत्यय, दधिनी रूप होता है। बहुवचन में जस् प्रत्यय में दधीनि यह रूप सिद्ध होता है। द्वितीया में भी पूर्ववत् दधि दधिनी दधीनि ये रूप बनते हैं।

दधि शब्द से सम्बोधन के एकवचन में सु प्रत्यय अनुबन्ध लोप, हे दधि स् बन गया न लुमताङ्गस्य के अनित्यत्व के पक्ष में प्रत्यय लोपे प्रत्यय लक्षणम् के निषेध न होने के कारण वारिशब्द के तरह हे दधे यह रूप सिद्ध हो जाता है। निषेध पक्ष में प्रत्यय लक्षण के अभाव होने के कारण हे वारि यह रूप सिद्ध हो जाता है।

सम्बोधन के द्विवचन में औप्रत्यय, पूर्ववत् हे दधिनी यह रूप बनता है बहुवचन में जस् प्रत्यय में हे दधीनि यह रूप सिद्ध हो जाता है।

सूत्रावतरण - दधि शब्द के तृतीया के एकवचन में टा प्रत्यय, वारि + टा बन गया। शेषो घ्यसखि से दधि शब्द की घिसंज्ञा होती है। घिसंज्ञा होने के कारण आङो नास्त्रियाम् सूत्र से टा के स्थान पर ना आदेश प्राप्त रहता है। तब यह सूत्र आरम्भ होता है।

14.14 अस्थिदधिसक्थ्यक्ष्णामनङुदात्तः ॥ 7.1.75 ॥

सूत्रार्थ - इनके स्थान पर अनङ् आदेश होता है। वह आदेश उदात्त भी होता है।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। अस्थिदधिसक्थ्यक्ष्णाम् षष्ठी का बहुवचन है। अनङ् प्रथमान्त पद है। उदात्तः प्रथमान्त पद है। इस सूत्र में तीन पद है। अस्थि च दधि च सक्थिच अक्षिच अस्थिदधि सक्थ्यक्षीणि तेषाम् अस्थिदधिसक्थ्यक्ष्णाम् इतरेतर योग द्वन्द्व समास। अनङ् प्रथमान्त एक पद है। अनङ् का ङकार इत्संज्ञक है तथा अकार उच्चारणार्थक है। ङित् होने के कारण ङिच्च परिभाषा के द्वारा अन्तिम को आदेश होता है। अतः यह आदेश विधि है यह निश्चित होता है। उदात्तः प्रथमान्त पद है। इकोऽचि विभक्तौ से अचि और विभक्तौ ये दो सप्तम्यन्त पद अनुवर्तित होता है। उन दोनों का बहुवचनान्त विपरिणाम किया जाता है। अतः अक्षु विभक्तिषु यह अर्थ प्राप्त हो जाता है। यहां तदादि विधि के कारण अजादि तृतीया आदि विभक्ति परे रहते यह अर्थ होता है। तृतीयादिषु भाषितपुंस्कं पुंवद् गालवस्य इस सूत्र से तृतीयादिषु यह सप्तम्यन्त पद अनुवर्तित होता है। अतः इस सूत्र का अर्थ सम्पन्न होता है- अजादि तृतीया आदि विभक्तियों के परे रहते अस्थि दधि सक्थि अक्षि के स्थान पर अनङ् आदेश होता है। और वह उदात्त होता है।

ध्यान दें:

उदाहरण - दध्ना।

तृतीया के एकवचन में टाप्रत्यय, अनुबन्धलोप, दधि + आ इस स्थिति में अजादि प्रत्यय पर में हो अतः इस सूत्र से अन्तिम इकार के स्थान पर अनङ् आदेश, अनुबन्धलोप, दधन् आ बन गया। तब-

14.15 - अल्लोपोऽनः ॥ 6.4.134 ॥

सूत्रार्थ - अङ्ग का अवयव असर्वनामस्थान यकारादि तथा अजादि स्वादि पर में हो तो जो अन् उसके अकार का लोप होता है।

उदाहरण - यह विधि सूत्र है। अत् लोपः अनः यह पदच्छेद है। इस सूत्र में तीन पद है। अत् लुप्तषष्ठ्यन्त पद है। सुपां सुलुक्पूर्वसवर्णाच्छेडाड्याज्जालः इस सूत्र से षष्ठी विभक्ति का लुक् हुआ है। लोपः प्रथमान्त पद है अनः अवयवषष्ठ्यन्त पद अत् का विशेषण है। अतः अन् का अवयव जो अकार यह अर्थ प्राप्त होता है। अङ्गस्य का अधिकार है जो कि यहां अवयवषष्ठ्यन्त स्वीकार किया जाता है, तथा उसे अनः में अन्वित कर दिया जाता है। अतः अङ्ग का अवयव जो अन् उसके अवयव अकार का लोप होता है। भस्य का अधिकार है। वह अनः के साथ अन्वित होता है। इस प्रकार इस सूत्र का अर्थ होगा- असर्वनामस्थान यकारादि अजादि स्वादि परक जो अङ्ग का अवयव अन् उसके अवयव अकार का लोप होता है।

उदाहरण - दध्ना।

सूत्रार्थ समन्वय - तृतीया के एकवचन में टा प्रत्यय, अनङ् आदेश, दधन् आ बन गया। तत्पश्चात् इस सूत्र से अजादि प्रत्यय के परे रहते अन् के अकार का लोप करने पर दध्न् आ यह स्थिति बन गयी। वर्ण सम्मेलन करने पर दध्ना यह रूप सिद्ध होता है।

दधि शब्द से तृतीया द्विवचन की विवक्षा में भ्याम् प्रत्यय, दधिभ्याम् यह रूप सिद्ध हो जाता है। बहुवचन में भिस् प्रत्यय दधिभिः यह रूप सिद्ध हो जाता है।

चतुर्थी के एकवचन में ङे प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, पूर्ववत् अनङ् आदेश, अन् के अकार का लोप करने पर दध्ने यह रूप सिद्ध हो जाता है। बहुवचन में भ्यस् प्रत्यय करने पर दधिभ्यः यह रूप सिद्ध हो जाता है।

पञ्चमी के एकवचन में ङसि प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, पूर्ववत् अनङ् आदेश, अन् के अकार का लोप करने पर दध्नः यह रूप सिद्ध हो जाता है। द्विवचन में भ्याम् प्रत्यय, दधिभ्याम् यह रूप सिद्ध होता है। बहुवचन में भ्यस् प्रत्यय दधिभ्यः यह रूप सिद्ध होता है।

षष्ठी के एकवचन में ङस् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, पूर्ववत् अनङ् आदेश, अन् के अकार का लोप करने पर दध्नः यह रूप सिद्ध हो जाता है। द्विवचन मे ओस् प्रत्यय, पूर्ववत् अनङ् आदेश, अन् के अकार का लोप, दध्नोः यह रूप सिद्ध होता है। बहुवचन में आम् प्रत्यय पूर्ववत् अनङादेश, अन् के अकार का लोप करने पर दध्नाम् यह रूप सिद्ध होता है।

14.16 - विभाषा ङिश्योः ॥ 6.4.136

सूत्रार्थ - अङ्ग का अवयव असर्वनामस्थान यकारादि अजादि स्वादि परक जो अन् उसके अकार का लोप विकल्प से होता है। ङि और शी पर में हो तो।

ध्यान दें:

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। विभाषा यह विकल्पार्थक अव्यय पद है। ङिश्योः सप्तमी का द्विवचन है। ङिश्च शी च इति ङिश्यौ इतरेतर योग द्वन्द्व समास तयोः ङिश्योः। अल्लोपोनः सूत्र का अनुवर्तन होता है। अनः अवयवषष्ठ्यन्त है जो कि अत् का विशेषण है। इस कारण से अन् का अवयव जो अकार यह अर्थ प्राप्त हो जाता है। अङ्गस्य का अधिकार है। जो कि अवयव षष्ठ्यन्त स्वीकार किया जाता है। वह अनः के साथ अन्वित होता है। शी पद के द्वारा नपुंसकाच्च से विहित शी आदेश ही लिया जाता है नकि जश्शसो शि सूत्र से विहित शि आदेश, क्योंकि शि आदेश की शि सर्वनामस्थानम् सूत्र से सर्वनामस्थान संज्ञा होती है। अतः शि के परे रहते भसंज्ञा के न होने के कारण से यह सूत्र प्रवृत्त नहीं होता है। अतः इस सूत्र का अर्थ सम्पन्न होता है- अङ्ग का अवयव असर्वनामस्थान यकारादि अजादि स्वदि के परे रहते जो अन् उसके अकार का विकल्प से लोप होता है। ङि और शी के परे रहते।

उदाहरण- दध्नि।।

सूत्रार्थ समन्वय- सप्तमी के एकवचन में ङिप्रत्यय, अनुबन्ध लोप, अनङ् आदेश दधन् इ इस स्थिति में बन् के अकार का अल्लोपोऽनः सूत्र से नित्य से लोप प्राप्त हुआ उसे बांधकर इस सूत्र से विकल्प से अङ्ग के अवयव अन् के अकार का लोप करने पर दध्नि यह रूप सिद्ध हो जाता है। विकल्प से लोप होने के कारण लोप के अभाव पक्ष में दधनि यह रूप सिद्ध हो जाता है।

सप्तमी के द्विवचन में ओस् प्रत्यय, पूर्ववत् अनङ् आदेश, अन् के अकार का लोप सकार का रुत्व विसर्ग करने पर दध्नोः यह रूप सिद्ध हो जाता है। बहुवचन में सुप् प्रत्यय, सकार के स्थान पर मूर्धन्य षकार आदेश करने पर दधिषु यह रूप सिद्ध हो जाता है।

पाठगत प्रश्न-4

19. दधिशब्द की प्रातिपदिक संज्ञा किस सूत्र से होती है?
20. दधि शब्द के सम्बोधन के एकवचन में कितने रूप होते हैं?
21. अस्थिदधिसक्थ्यक्ष्णामनङुदात्तः इस सूत्र से क्या आदेश किया जाता है?
22. दध्ना में अन् के अकार का लोप किस सूत्र से हुआ है?
23. अल्लोपोऽनः सूत्र का अर्थ लिखो?
24. विभाषा ङिश्योः सूत्र से क्या विधान किया जाता है?

पाठ सार

इस पाठ में नपुंसक शब्दों के रूप कैसे होते हैं इस विषय की चर्चा की गयी है। यद्यपि नपुंसक शब्दों के भी रूप प्रायः पुल्लिंग के ही समान होते हैं। तथापि जिन स्थलों में विभिन्नता दिखाई देती है। उसका विवरण विस्तार से दिया गया है। पहले ज्ञान शब्द के रूप कैसे होते हैं? विवरण पूर्वक बतलाया गया है। तत्पश्चात् प्रत्ययलोप को मानकर प्रत्ययाश्रित कार्य कहां नहीं होते हैं उन स्थलों को विस्तार से बताया गया है। तत्पश्चात् नपुसक लिंग में ह्रस्व करने वाला सूत्र बताया गया है। कहां नुमागम होता है यह भी बतलाया गया। तत्पश्चात् दधिशब्द के प्रतिपादन में अजादि प्रत्यय परे रहते अन् के अकार का लोप कैसे होता है इसका भी विचार किया गया है। ये सभी इस पाठ में विस्तार से प्रतिपादित किये गये हैं।

ध्यान दें:

पाठान्त प्रश्न

1. अतोऽम् सूत्र की व्याख्या करो?
2. नपुंसकस्य झलचः सूत्र की व्याख्या करो?
3. सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ सूत्र की व्याख्या करो?
4. ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य सूत्र की व्याख्या करो?
5. एकाजुत्तरपदे णः सूत्र की व्याख्या करो?
6. स्वमोर्नपुंसकात् इस सूत्र की व्याख्या करो?
7. इकोऽचि विभक्तौ इस सूत्र की व्याख्या करो?
8. अस्थिदधिसक्थ्यक्ष्णामनङुदात्तः सूत्र की व्याख्या करे?
9. अल्लोपोऽनः इस सूत्र की व्याख्या करो?
10. सूत्रोल्लेखपूर्वक रूपसिद्धि करो? - ज्ञानानि, हे ज्ञाने, श्रीपाणि, वारीणि, वारिणे, दध्ना।

पाठगत प्रश्नोत्तर

उत्तर-1

1. अतोऽम् इस सूत्र से
2. स्वमोर्नपुंसकात् का
3. नपुंसक से पर में औङ् को शी आदेश होता है।
4. औङ् के स्थान पर शी आदेश होता है।
5. जश्शसोः शि से
6. भसंज्ञक इवर्ण और उवर्ण का लोप होता है ईकार तथा तद्धित परे रहते।

उत्तर-2

7. शि सर्वनामस्थानम् इस सूत्र से
8. नपुंसकस्य झलचः इस सूत्र से।
9. सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ इस सूत्र से।
10. ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य से।
11. एकाजुत्तरपदे णः के द्वारा
12. एकाच् उत्तरपद में हो जिसके उस समास में पूर्वपद में स्थित निमित्त से पर में विद्यमान प्रातिपदिकान्त, नुम् और विभक्तिस्थ नकार को णकार होता है।

ध्यान दें:

उत्तर-3

13. नपुंसक अङ्ग से पर में विद्यमान सु और अम् का लुक् होता है।
14. स्वमोर्नपुंसकात् सूत्र से।
15. लुक् श्लु, लुप् ये लुमान् है।
16. लुमान् शब्दों से लुप्त होने पर प्रत्यय को आश्रित मानकर कार्य नहीं होते हैं।
17. इकोऽचि विभक्तौ सूत्र से
18. दो रूप होते हैं - हे वारे, हे वारि।

उत्तर-4

19. अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्
20. दो रूप होते हैं। हे दधे हे दधि।
21. अनङ् आदेश
22. अल्लोपोऽनः सूत्र से
23. अङ्ग का अवयव असर्वनामस्थान यकारादि अजादि स्वादि पर में रहते जो अन् उसके अकार का लोप होता है।
24. विभाषा ङिश्योः - ङि और शी पर में हो तो अन् के अकार का विकल्प से लोप होता है।

15

हलन्त प्रकरण में लिह् दुह् इत्यादि शब्द रूप

ध्यान दें:

इस लोक में बहुत से शब्द प्रयुक्त होते हैं। उनमें कुछ शब्द अजन्त है। तथा कुछ शब्द हलन्त है। इस प्रकार से अजन्त और हलन्त के भेद से शब्द दो प्रकार के होते हैं ऐसा कह सकते हैं। इससे पूर्व अध्याय में अजन्त् शब्दों के रूप सिद्धि की प्रक्रिया विचार की गयी। लोक में जो प्रसिद्ध हलन्त शब्द व्यवहार में लाए जाते हैं, उनके रूप सिद्धि की प्रक्रिया को जानने के बाद अन्य प्रसिद्ध हलन्त शब्दों की भी रूप सिद्धि की प्रक्रिया आसान हो जाती है। वैसे ही शब्द यहां लिये गये हैं। उन रूपों की सिद्धि के लिए जिन सूत्रों की अपेक्षा होती है उनका भी सरल शैली से व्याख्या की जाती है। प्रसिद्ध सूत्रों की व्याख्या के लिए दुह् इत्यादि शब्द भी लिए गये हैं। इस अध्याय में जिन शब्दों का विचार किया जाएगा वे हैं- लिह्, दुह्, विश्ववाह् अनडुह्, सुदिव्, चतुर्, किम्, राजन्, मघवन्, युवन्, पथिन्, पंचन्, अष्टन्, तद्, अस्मद्, युष्मद्, महत्, विद्वस्, भवत्, अदस्, ददत्, पचत्। सभी चौबीस शब्दों की रूप सिद्धि की प्रक्रिया यहां बतलायी गयी है। उन शब्दों की सिद्धि के लिए इकहत्तर सूत्रों की व्याख्या की गयी है।

शब्दों के तीन लिंग होते हैं, यह आपने पहले जाना ही है। प्रसिद्ध ग्रन्थों का अवलोकन करें तो यह जान सकते हैं कि पहले पुल्लिंग शब्दों का, तत्पश्चात् स्त्रीलिंग शब्दों का तथा नपुंसकलिंग शब्दों का विवेचन होता है। उसी के लिए प्रकरण का भेद भी दिखलाई देता है। यहां तो एक ही शब्द को लेकर उसके पुल्लिंग में स्त्रीलिंग में तथा नपुंसकलिंग में जितने रूप होते हैं। उनका क्रमशः ही सिद्धि की गयी है। इससे पहले सुबन्त में अजन्त प्रकरण में पुल्लिंग स्त्रीलिंग तथा नपुंसकलिंग शब्दों का विचार किया गया। उनमें से बहुत से सूत्र यहां भी आते हैं। उनका फिर से व्याख्यान यहां नहीं किया गया है। केवल उन सूत्रों से क्या विधान किया जाता है। उसका उल्लेख मात्र किया गया है।

चारों पाठों में योग्यता बढ़ाना ही भाग है। वह योग्यता वृद्धि कभी-कभी पाठ के मध्य में कभी-कभी पाठ के अन्त में रखा गया है। उस भाग में जो विषय उल्लिखित है। वे वस्तुतः पाठ्य अंश में नहीं आते हैं। केवल अधिक ज्ञान प्राप्ति के लिए दिये गये हैं। लेकिन प्रत्येक पाठ में जो शब्द विचार किये गये हैं उनके रूप पाठ के अन्त में योग्यता वृद्धि वाले अंश में स्थापित किये गये हैं।

पाठ-15

हलन्त प्रकरण में लिह् दुह् इत्यादि शब्द रूप

ध्यान दें:

सुबन्त में हलन्त प्रकरण

हलन्त पुल्लिंग प्रकरण में लिह् दुह् इत्यादि शब्दों के रूप- इस पाठ में हकारान्त चार शब्द, एक वकारान्त, एक रेफान्त, एक मकारान्त, ये सात शब्द बताये गये हैं। इनके रूपों की सिद्धि के लिए इक्कीस प्रमुख सूत्रों की व्याख्या की गयी है। अथवा उल्लिखित है। सूत्र व्याख्या के क्रम में पदच्छेद, अनुवृत्ति, समास, विभक्ति, सूत्रार्थ, उदाहरण, सूत्रार्थ समन्वय, इत्यादि विषय प्रमुखतया दिये गये हैं। सूत्र सूत्रार्थ तथा समन्वय स्थल ये तीनों जो व्याकरण अच्छे से जानता है, वही सही मायने में व्याकरण है अन्य सभी तो निन्दित व्याकरण है। अत: सरलतया सूत्र, सूत्रार्थ, लक्ष्य, इन तीनों का ज्ञान होना पाणिनीयव्याकरण में प्राथमिक अवस्था में हो, तो पाणिनीय शास्त्र कठिन नहीं प्रतीत हो उस प्रकार से सूत्रों की यहां पर व्याख्या की गयी है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे

- हकार के स्थान पर ढ कब होता है जान पाने में;
- उसका अपवाद ह के स्थान पर घ कब होता है जान पाने में;
- दकारादिधातु है तो कब दकार को धकार होता है जान पाने में;
- विश्ववाह् शब्द रूप सिद्धि की प्रक्रिया को जान पाने में;
- सम्प्रसारण संज्ञा का ज्ञान प्राप्त कर जान पाने में;
- अनड्वुह् शब्द के रूपों की सिद्धि कैसे होती है जान पाने में;
- सुदिव् को औ और उकार आदेश कैसे होते हैं। जान पाने में;
- संख्यावचक चतुर् शब्द के तीनों लिंगों में रूप कैसे सिद्ध होते हैं? जान पाने में;
- किम् शब्द की रूप सिद्धि प्रक्रिया जान पाने में।

॥ लिह् शब्द॥

लिह् शब्द का अर्थ होता है आस्वादन करने वाला। लिह्धातु से क्विप् प्रत्यय करने पर लिह् शब्द निष्पन्न होता है। यह शब्द कृदन्त है। कृदन्त होने के कारण कृत्तद्धितसमासाश्च से प्रातिपदिक संज्ञा होती है। हलन्त शब्दों के विषय में यह कहा गया है कि प्राय: अजादि विभक्तियों में प्रक्रिया कार्य नहीं दिखाई देता है। हलादि विभक्ति के परे रहते प्रक्रिया कार्य दिखाई देता है।

15.1 - हों ढ: । 8.2.31 ।

सूत्रार्थ - हकार को ढकार होता है, झल् परे या पदान्त में।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से ढत्व का विधान होता है। अत: विधि सूत्र है। ह: ढ: ये दो पद हैं। इस सूत्र में झलो झलि इस सूत्र से झलि यह सप्तम्यन्त पद अनुवर्तित होता है। पदस्य सूत्र का अधिकार है। स्को: संयोगाद्योरन्ते च इस सूत्र से अन्ते यह सप्तम्यन्त पद अनुवर्तित होता है। ह: षष्ठी का एकवचन है ढ: प्रथमा का एकवचन है। पदस्य षष्ठी का एकवचन है। अन्ते सप्तमी का एकवचन है। अत: सूत्रार्थ सम्पन्न होता है - हकार के स्थान पर ढ आदेश होता है झल् प्रत्याहार पर में रहते या पदान्त में।

ध्यान दें:

उदाहरण - लिट् लिड्भ्याम् इत्यादि इसके उदाहरण है।

सूत्रार्थ समन्वय - लिह् शब्द से प्रथमा के एकवचन की विवक्षा में सुप्रत्यय, अनुबन्ध लोप, लिह् स् बन गया। अपृक्त एकाल्प्रत्ययः इस सूत्र से सकार की अपृक्त संज्ञा, हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् इस सूत्र से सकार का लोप करने पर लिह् रह गया। तत्पश्चात् प्रत्यय लोपे प्रत्यय लक्षणम् से प्रत्यय लक्षण के द्वारा सुप्तिङन्तं पदम् से पद संज्ञा होती है। तत्पश्चात् पदान्त में विद्यमान हकार को प्रस्तुत सूत्र से ढकार करने पर लिढ् बन गया, ढकार को झलां जशोऽन्ते इस सूत्र से डकार करने पर तथा वाऽवसाने सूत्र से डकार को विकल्प से टकार करने पर लिट् लिड् ये दो रूप बनते हैं। लिह् शब्द से प्रथमा द्विवचन में औ प्रत्यय वर्ण सम्मेलन, लिहौ यह रूप सिद्ध होता है।

लिह् शब्द से प्रथमा बहुवचन की विवक्षा में जस् प्रत्यय अनुबन्धलोप, लिह् अस् इस स्थिति में वर्ण सम्मेलन करने से लिहः यह रूप सिद्ध होता है। द्वितीया के एकवचन की विवक्षा में अम् प्रत्यय वर्ण सम्मेलन लिहम् रूप सिद्ध हो जाता है। द्वितीया बहुवचन की विवक्षा में शस् प्रत्यय अनुबन्ध लोप, लिह् अस् इस स्थिति में वर्ण सम्मेलन करने से लिहः यह रूप सिद्ध होता है।

तृतीया के एकवचन की विवक्षा में टाप्रत्यय अनुबन्ध लोप, वर्ण सम्मेलन लिहा रूप सिद्ध होता है। लिह् शब्द से तृतीया के द्विवचन की विवक्षा में भ्याम् प्रत्ययय लिह् भ्याम् इस स्थिति में स्वादिष्वसर्वनामस्थाने से लिह् की पद संज्ञा होती है। अत् हकार के पदान्त में विद्यमान होने के कारण हो ढः सूत्र से ढकार करने पर, झलां जशोऽन्ते से जश् आदेश ढकार के स्थान पर डकार करने पर लिड्भ्याम् रूप सिद्ध होता है।

लिह् शब्द से तृतीया के बहुवचन की विवक्षा में भिस् प्रत्यय पूर्ववत् लिह् की पद संज्ञा, पदान्त में विद्यमान हकार को ढकार, ढकार को झलां जशोऽन्ते से डकार करने पर वर्ण सम्मेलन लिड्भिः यह रूप सिद्ध होता है। लिह् शब्द से चतुर्थी के एकवचन में ङे प्रत्यय, लिह् ए इस स्थिति में वर्ण सम्मेलन लिहे, बन गया।

लिह् शब्द से चतुर्थी के द्विवचन की विवक्षा में भ्याम् प्रत्ययय लिह् भ्याम् इस स्थिति में स्वादिष्वसर्वनामस्थाने से लिह् की पद संज्ञा होती है। अतः हकार के पदान्त में विद्यमान होने के कारण हो ढः सूत्र से ढकार करने पर, झलां जशोऽन्ते से जश् आदेश ढकार के स्थान पर डकार करने पर लिड्भ्याम् रूप सिद्ध होता है।

लिह् शब्द से सप्तमी के बहुवचन की विवक्षा में सुप् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, लिह् सु यह स्थिति बन गयी। तत्पश्चात् स्वादिष्वसर्वनामस्थाने से पद संज्ञा, हो ढः सूत्र से पदान्त में विद्यमान हकार को ढकार लिढ् सु बन गया। झलां जशोऽन्ते सूत्र से जश्त्व डकार करने पर लिड् सु बन गया। इस अवस्था में खरि च और डः सि धुट् ये दोनों सूत्र एक साथ प्राप्त हुए। परन्तु खरि च यह सूत्र पूर्वत्रासिद्धम् सूत्र के बल से डः सि धुट् की दृष्टि में असिद्ध हो जाता है। अतः डः सि धुट् सूत्र से डकार से पर में विद्यमान सकार को विकल्प से धुट् का आगम, धुट् के टित् होने के कारण से आद्यन्तौ टकितौ सूत्र से सकार के आदि अवयव के रूप में धुट् का आगम होता है। धुट् में अनुबन्ध लोप करने से ध् मात्र अवशेष रहता है। यह धुटागम विकल्प से होता है। अतः धुटागम के पक्ष में लिड् ध् सु बन गया। दूसरा पक्ष में जहां धुट् का आगम नहीं। होता है उस पक्ष में लिड् सु बन गया। प्रथम पक्ष में ष्टुना ष्टुः इस सूत्र से धकार को डकार तथा दूसरे पक्ष में इसी सूत्र से सकार को षकार प्राप्त होता है। लेकिन न पदान्ताट्टोरनाम् इस सूत्र से ष्टुना ष्टुः का निषेध हो जाता है। अतः प्रथम पक्ष में खरि च सूत्र से धकार को तकार हो जाता है और तकार परे रहते खरि च इस सूत्र से डकार को टकार करने पर लिट्त्सु यह रूप सिद्ध हो जाता है। द्वितीय पक्ष में खरि च से डकार को टकार करने पर लिट्सु यह रूप सिद्ध होता है।

पाठ-15

हलन्त प्रकरण में लिह् दुह् इत्यादि शब्द रूप

ध्यान दें:

दुह् शब्द॥

दुह् धातु से कर्ता अर्थ में क्विप् प्रत्यय, दुह् यह रूप बनता है। अत: दुह् शब्द का अर्थ होता है दोहनकर्ता। यह शब्द कृदन्त है। अत: कृत्तद्धितसमासाश्च से प्रातिपदिक संज्ञा, दुह् शब्द से प्रथमा के एकवचन की विवक्षा में सु प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, दुह् स् इस स्थिति में अपृक्त एकाल्प्रत्यय: सूत्र से सकार की अपृक्त संज्ञा। हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् इस सूत्र से हलन्त से पर में विद्यमान अपृक्त सकार का लोप। दुह् बन गया। यहां हकार पदान्त में है अत: हो ढ: सूत्र से ढकार आदेश प्राप्त होता है। उसको बांधकर अगला सूत्र प्रवृत्त होता है-

15.2 - दादेर्धातोर्घ: ॥ 8.2.32 ॥

सूत्रार्थ - झल् परे रहते और पदान्त में उदेश अवस्था में जो दकारादि धातु उसके हकार को घ आदेश होता है।

सूत्र व्याख्या - इससे सूत्र से घ आदेश किया जाता है। अत: यह एक विधि सूत्र है। इस सूत्र में तीन पद है। दादे: धातो: घ:। झलो झलि सूत्र से झलि यह सप्तम्यन्त पद अनुवर्तित होता है। पदस्य का अधिकार है। स्को: संयोगाद्योरन्ते च इस सूत्र से अन्ते यह सप्तम्यन्त पद अनुवर्तित होता है। दादे: धातो: षष्ठ्येकवचनान्त पद है। घ: प्रथमान्त पद है। द: आदिर्यस्य स दादि: तस्य दादे: बहुव्रीहि समास इस प्रकार इस सूत्र का अर्थ होते हैं- उपदेश में जो दकारादि धातु उसके हकार के स्थान पर घकार होता है। झल् परे रहते या पदान्त में। इस सूत्र में दादि पद से उपदेश में जो दकारादि धातु यह अर्थ ही स्वीकृत किया गया है। यह अर्थ पतंजलि महाभाष्य में व्याख्यान से प्राप्त होता है।

बाध्य बाधक भाव - हो ढ: सूत्र का बाधक यह सूत्र है।

उदाहरण - धुक् इत्यादि इसके उदाहरण है।

सूत्रार्थ समन्वय - दुह् स् इस अवस्था में हो ढ: से हकार को ढकार प्राप्त है। परन्तु दुह् धातु उपदेश में दकारादि है और हकार पदान्त में भी है। अत: उस सूत्र का बाधकर प्रस्तुत सूत्र से हकार को धकार करने से दुघ् यह रूप बन जाता है। तब अगला सूत्र प्रवृत्त होता है।

15.3 - एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वो: ॥ 8.2.37

सूत्रार्थ - धातु का अवयव एकाच् झषन्त के बश् के स्थान पर भष् आदेश होता है। स् ध्व् पर में हो या पदान्त में।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से बश् के स्थान पर भष् आदेश होता है। अत: यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में पांच पद है एकाच: बश:, भष्, झषन्तस्य स्ध्वो: यह सूत्रपदच्छेद है। दादेर्धातोर्घ इस सूत्र से धतो: यह षष्ठ्यन्त पद अनुवर्तित होता है। पदस्य का अधिकार है। स्को: संयोगाद्योरन्ते च इस सूत्र से अन्ते यह सप्तम्यन्त पद अनुवर्तित होता है। एक: अच् यस्य स: एकाच् तस्य एकाच: बहुव्रीहि समास। झष् अन्ते यस्य स: झषन्त: तस्य झषन्तस्य बहुव्रीहि समास, स् च ध्व च इतरेतरयोगद्वन्द्व स्ध्वौ तयो: स्ध्वो:।

झष् पद के द्वारा झ् भ् घ्, द् ध् वर्णों का ग्रहण होता है। बश् के द्वारा ब्, ग्, ड्, द् वर्णों का ग्रहण होता है। अर्थात् यथासंख्यमनुदेश: समानाम् परिभाषा के द्वारा ब् के स्थान पर भ्, ग् के स्थान पर घ्, ड् के स्थान पर ढ्, द् के स्थान पर ध् आदेश होता है। बश: में स्थान षष्ठी है। एकाच: में अवयव षष्ठी है। झषन्तस्य यह पद शब्दस्य का विशेष्य होता है। इस सूत्र में झषन्त पद में अन्त का ग्रहण स्पष्टता

ध्यान दें:

के लिए है। सूत्र का सरल अर्थ होता है। धातु का अवयव जो एकाच् झषन्त, उसके अवयव बश् के स्थान पर भष् आदेश होता है। झल्प्रत्याहार सकार और ध्व शब्द परे रहते तथा पदान्त में।।

सूत्रार्थ समन्वय - दुघ् यद्यपि धातु है फिर भी व्यपदेशिवद्भाव से धातु का अवयव हो जाता है। यहां एकाच् झषन्त भी है। अत: यहां बश् दकार के स्थान पर भष्भाव करने के कारण ध् आदेश हो जाता है। अत: धुघ् हो जाता है। झलां जशोऽन्ते से घकार को जश्त्व गकार करने पर धुग् यह रूप निष्पन्न हो जाता है। तत्पश्चात् वाऽवसाने सूत्र से गकार को विकन्प से चर्त्व करने पर एक पक्ष में धुक् यह रूप सिद्ध हो जाता है। जिस पक्ष में चर्त्व नहीं होता है, उस पक्ष में धुग् यही रूप रह जाता है।

दुह् भ्याम् इस स्थिति में स्वादिष्वसर्वनामस्थाने से दुह् की पद संज्ञा होती है। तत्पश्चात् पदान्त में विद्यमान हकार को दादेर्धातोर्घ: सूत्र से घकार करने पर दुघ् भ्याम् यह स्थिति बन गयी। तत्पश्चात् एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वो: इस सूत्र से दकार को धकार करने पर धुघ् भ्याम् बन गया। झलां जशोऽन्ते से घकार को जश्त्व गकार करने पर धुग्भ्याम् यह रूप सिद्ध हो जाता है।

दुह् शब्द से सप्तमी के बहुवचन में सुप् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, दुह् सु इस स्थिति में हकार को घकार, दकार को भष् भाव धकार करने पर धुघ् सु बन गया तत्पश्चात् झलां जशोऽन्ते इस सूत्र से घकार को जश् भाव गकार करने पर धुग् सु बन गया। तत्पश्चात् खरि च से गकार को चर्त्व ककार करने पर धुक् सु बन गया। आदेश प्रत्यययो: सूत्र से सकार को षकार करने पर वर्ण सम्मेलन से धुक्षु यह रूप सिद्ध हो जाता है।

पाठगत प्रश्न-1

1. लिह् सु में सकार का लोप किस सूत्र से होता है?
2. लिह् शब्द के सप्तमी बहुवचन में कितने रूप बनते हैं? वे कौन से हैं?
3. दुह् इस स्थिति में हो ढ: सूत्र क्यों प्रवृत्त नहीं होता है?
4. धुक् में दकार को धकार किस सूत्र से होता है?
5. एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वो: इस सूत्र का अर्थ लिखो?
6. एकाचो बशो भष् इस सूत्र में कितने प्रत्याहार है?

विश्ववाह् शब्द।

विश्ववाह् शब्द ण्विप्रत्ययान्त है। इस शब्द का अर्थ होता है। जगत् का पालन करने वाले भगवान्। ण्विप्रत्यय कृदन्त है अत: कृत्तद्धितसमासाश्च से प्रातिपदिकसंज्ञा, होती है। विश्ववाह् शब्द से सर्वनाम स्थान प्रत्ययों के योग में लिह् शब्द के समान रूप होते हैं। भसंज्ञक प्रत्यय के स्थल में विशिष्टता दिखाई देती है। तब विश्ववाह् शब्द से शस् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, विश्ववाह् अस् इस स्थिति में अगला सूत्र प्रवृत्त होता है।

15.4 - इग्यण: सम्प्रसारणम् । 1.1.45 ।

सूत्रार्थ - यण् के स्थान पर प्रयुज्यमान जो इक् वह सम्प्रसारण संज्ञक होता है।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से सम्प्रसारण संज्ञा किया जाता है। अत: यह संज्ञा सूत्र है। इस सूत्र में इक् यण: सम्प्रसारणम् ये तीन पद है। इक् प्रथमान्त पद है। यण: षष्ठ्यन्त पद है। सम्प्रसारणम् - प्रथमान्त

ध्यान दें:

पद है। यण: इस पद में अनुयोगि के श्रवण होने के कारण षष्ठी स्थाने योगा इस सूत्र से स्थान पद का लाभ हो जाता है। सूत्र में यण् के द्वारा य् व् र्ल्इन चार का तथा इक् पद के द्वारा इ उ ऋ लृ इन चारों का ग्रहण होता है।

अत: यथासंख्यमनुदेश: समानाम् इस परिभाषा के द्वारा यकार के स्थान पर इकार, वकार के स्थान पर उकार, रेफ के स्थान पर ऋकार, लकार के स्थान पर लृ आदेशों की सम्प्रसारण संज्ञा होती है। यण: पद में षष्ठी विभक्ति के श्रवण के कारण षष्ठी स्थाने योगा इस सूत्र से स्थाने पद का लाभ हो जाता है। अत: सूत्र का सरल अर्थ होता है- यण् के स्थान पर होने वाला इक् सम्प्रसारण संज्ञक होता है। इस प्रकार से सम्प्रसारण संज्ञा करने के उपरान्त अगला सूत्र प्रवृत्त होता है।

15.5 - वाह ऊठ्

सूत्रार्थ - भसंज्ञक वाह् को सम्प्रसारण संज्ञक ऊठ् आदेश होता है।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से ऊठ् आदेश किया जाता है, अत: विधि सूत्र है। वाह: और ऊठ् ये दो पद है। भस्य यह सम्पूर्ण सूत्र अधिकृत होता है। वसो: सम्प्रसारणम् इस सूत्र से सम्प्रसारणम् इस प्रथमान्त पद की अनुवृत्ति होती है। भस्य षष्ठ्यन्त पद है। वाह: भी षष्ठ्येकवचनान्त पद है। सम्प्रसारणम् ऊठ् ये दोनों प्रथमान्त पद है। ऊठ् का ठकार हलन्त्यम् से इत्संज्ञक है। अत: ऊकार मात्र अवशेष रहता है। इस प्रकार से सूत्र का अर्थ सम्पन्न होगा- भसंज्ञक वाह् इस शब्द के स्थान पर सम्प्रसारणसंज्ञक ऊठ् आदेश होता है। यह आदेश वाह् में जो वकार है उसी के स्थान पर ही होता है।

सूत्रार्थ समन्वय - विश्ववाह् शब्द से द्वितीया के बहुवचन में शस् प्रत्यय, अनुबन्धलोप, विश्ववाह् अस् इस स्थिति में। यचि भम् से भसंज्ञा, तत्पश्चात् वाह् शब्द के घटक वकार के स्थान पर प्रस्तुत सूत्र से सम्प्रसारणसंज्ञक ऊठ् आदेश, विश्व ऊ आह् अस् बन गया। इस स्थिति में अगला सूत्र प्रवृत्त होता है-

15.6 - सम्प्रसारणाच्च ॥ 6.1.108 ॥

सूत्रार्थ - सम्प्रसारण से अच् पर में हो तो पूर्वरूप एकादेश होता है।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से पूर्व रूप एकादेश होता है। अत: विधि सूत्र है। सम्प्रसारणात् च यह पदच्छेद है। इको यणचि इस सूत्र से अचि यह सप्तम्यन्त पद अनुवर्तित होता है। एक:पूर्वपरयो: का अधिकार है। अमि पूर्व: से पूर्व: इस प्रथमान्त पद की अनुवृत्ति होती है। सम्प्रसारणात् पंचमी का एकवचन है। च अव्यय पद है। अचि सप्तम्येकवचनान्त पद है। एक: प्रथमान्त पद है। पूर्वपरयो: षष्ठी द्विवचनान्त पद है। पूर्व: प्रथमान्त पद है। पूर्वश्च परश्च पूर्वपरौ तयो: पूर्वपरयो:, इतरेतरयोगद्वन्द्वसमास स। सूत्र का अर्थ होता है सम्प्रसारण से अच् परे रहते पूर्व और पर के स्थान पर पूर्वरूप एकादेश होता है।

सूत्रार्थ समन्वय - विश्व ऊ आह् अस् इस अवस्था में सम्प्रसारण संज्ञक ऊ से पर में आकार रूप अच् पर में है। अत: प्रस्तुत सूत्र से ऊकार और आकार के स्थान पर पूर्व रूप ऊकार एकादेश करने पर विश्व ऊह् अस् बन गया। तत्पश्चात् एत्येधत्यूठ्सु इस सूत्र से वकारोत्तरवर्ति अकार और ऊठ् के ऊकार के स्थान पर वृद्धि एकादेश औकार करने पर विश्वौह् अस् यह रूप होता है। तत्पश्चात् वर्ण सम्मेलन करने से विश्वौहस् बन गया। सकार को रुत्व विसर्ग करने पर विश्वौह: यह रूप सिद्ध हो जाता है। इस प्रकार से सर्वनाम स्थान भिन्न प्रत्ययों के परे रहते यही प्रक्रिया सभी जगह समझनी चाहिए। सप्तमी के बहुवचन में तो लिह् शब्द के समान प्रक्रिया समझनी चाहिए।

ध्यान दें:

पाठगत प्रश्न-2

7. सम्प्रसारण संज्ञा करने वाला सूत्र कौन-सा है?
8. सम्प्रसारण संज्ञा का एक कार्य लिखो?
9. सम्प्रसारण से अच् परे रहते पूर्व रूप एकादेश होता है अथवा पर रूप एकादेश?
10. विश्ववाह् शब्द से जस् प्रत्यय, शस् प्रत्यय में क्या रूप होते हैं?
11. वाह ऊठ् सूत्र का अर्थ लिखो?
12. विश्व ऊ आह् इस अवस्था में अकार ऊकार के स्थान पर गुण होता है या वृद्धि?

अनडुह् शब्द

अन: शकटं वहति इति अनड्वान्। अर्थात् अनडुह् का अर्थ है - शकट यानि बैलगाड़ी को खींचने वाला। अनस् उपपद पूर्वक वह् धातु से अनसो डश्च इस सूत्र से क्विप् प्रत्यय और सकार को डकार आदेश करने पर, वचिस्वपियजादीनां किति इस सूत्र से वकार को सम्प्रसारण उकार करने पर तथा पूर्वरूप करने से अनडुह् शब्द निष्पन्न होता है। अनडुह् शब्द से सुप्रत्यय, अनुबन्ध लोप, अनडुह् स् बन गया इस दशा में अगला सूत्र प्रवृत्त होता है।

15.7 - चतुरनडुहोरामुदात्त: 7.1.98 ।

सूत्रार्थ - चतुर् और अनडुह् शब्द को आम् होता है सर्वनामस्थान परे रहते।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से आम् का आगम होता है। अत: यह एक विधि सूत्र है। इस सूत्र में तीन पद हैं। चतुरनडुहो: आम् उदात्त: यह पदच्छेद है। चतुरनडुहो: षष्ठी द्विवचनान्त पद है। आम् प्रथमान्त पद है उदात्त: प्रथमान्त पद है। आम् प्रथमान्त पद है। उदात्त: प्रथमान्त पद है। इतोऽत्सर्वनामस्थाने इस सूत्र से सर्वनामस्थाने सूत्र से सर्वनामस्थाने यह पद अनुवर्तित होता है। अत: इस सूत्र का सरलार्थ होता है। चतुर् शब्द और अनडुह् शब्द के स्थान पर आम् का आगम होता है। सर्वनाम स्थान संज्ञक प्रत्यय परे रहते।

यह आम् आगम मित् है क्योंकि हलन्त्यम् से मकार की इत्संज्ञा होती है। तस्य लोप: से लोप भी हो जाता है। मित् होने के कारण मिदचोऽन्त्यात्पर: इस परिभाषा के द्वारा यह आगम अन्तिम अच् से पर में रहेगा। यह आम् आगम उदात्त होता है। उसका फल स्वर प्रकरण में है। अधिक जानना चाहने वाले जिज्ञासु कौमुदी आदि ग्रन्थों को देखें।

सूत्रार्थ समन्वय- अनडुह् स् इस स्थिति में, यहां सर्वनामस्थान संज्ञक प्रत्यय पर में है। अत: उसके पर रहते अनडुह् शब्द के अन्तिम अच् से पर में प्रस्तुत सूत्र से आम् आगम, मकार का अनुबन्ध लोप। अनडु आ ह् स् बन गया। तत्पश्चात् इको यणचि से उकार को यण् वकार करने पर अनड् व् आ ह् स् बन गया। तब अगला सूत्र प्रवृत्त होता है-

15.8 - सावनडुह: 7.1.82

सूत्रार्थ - अनडुह् शब्द को नुम् आगम होता है सु परे रहते।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से नुम् का आगम होता है। अत: यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में दो पद

ध्यान दें:

है। सौ अनडुहः यह पदच्छेद है। सौ सप्तमी का एकवचन है। अनडुहः षष्ठी का एकवचन है। आच्छीनद्योर्नुम् इस सूत्र से नुम् इस प्रथमान्त पद की अनुवृत्ति होती है। अतः इस सूत्र का सरल अथ। होता है। अनडुह् शब्द के स्थान पर नुम् का आगम होता है। सु विभक्ति परे रहते।

यह नुम् आगम मित् है। नुम् में नकार मात्र अवशेष रहता है। मित् होने के कारण से मिदचोऽन्त्यात्परः इस सूत्र से अन्तिम अच् से पर में यह आगम होगा।

सूत्रार्थ समन्वय - अनड्वाह् स् इस स्थिति में सुप्रत्यय पर में है। अतः उस प्रत्यय के परे रहते प्रस्तुत सूत्र से अन्तिम अच् आकार से पर में नुम् का आगम। अनुबन्ध लोप, अनड्वा न् ह् स् यह स्थिति बन गयी। हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् से सकार का लोप, अनड्वान् ह् बन गया। संयोगान्तस्य लोपः इस सूत्र से संयोग के अन्त में विद्यमान हकार का लोप करने पर अनड्वान् यह रूप सिद्ध होता है। यहां संयोगान्त लोप असिद्ध है अतः न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य से नकार का लोप हो नहीं हो पाता है।

अनडुह् शब्द से सम्बोधन के एकवचन में सुप्रत्यय, अनुबन्धलोप, अनडुह् स् इस अवस्था में चतुरनडुहोरामुदात्तः से आमागम प्राप्त है। उसका अपवाद रूप से अगला सूत्र प्रवृत्त होता है।

15.9 - अम् सम्बुद्धौ 7.1.99॥

सूत्रार्थ - चतु और अनडुह् के स्थान पर अम् आगम होता है सम्बुद्धि परे रहते।

सूत्र व्याख्या - अम् आगम के विधान के कारण, यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में अम् प्रथमान्त पद है। सम्बुद्धौ सप्तम्यन्त पद है। इस सूत्र में चतुरनडुहोरामुदात्तः इस सूत्र से चतुरनडुहोः यह षष्ठी द्विवचनान्त पद अनुवर्तित होता है। अतः इस सूत्र का अर्थ होता है- चतुर् और अनडुह् शब्द को अम् का आगम होता है, सम्बुद्धि संज्ञक सु के परे रहते। यह अमागम मित् होने के कारण मिदचोऽन्त्यात्परः इस परिभाषा के द्वारा अन्तिम अच् से पर में होगा।

सूत्रार्थ समन्वय - अनडुह् स् इस स्थिति में। यहां स् सम्बोधन का एकवचन है अतः एकवचनं सम्बुद्धिः इस सूत्र से सम्बुद्धि संज्ञक है। अतः उसके परे रहते प्रस्तुत सूत्र से अनडुह् शब्द के अन्तिम अच् से पर में अम् आगम, अनुबन्ध लोप, अनडु अ ह् स् यह स्थिति बन गयी। अब अकाररूप अच् पर में होने के कारण इको यणचि से यणादेश अनड् व् अ ह् स् हो गया। सावनडुहः इस सूत्र से अकार से पर में नुम् आगम, अनुबन्ध लोप, अनड्व् अ न् ह् स् बन गया। हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं ह् इस सूत्र से सकार का लोप, संयोगान्तस्य लोपः से हकार का लोप, वर्ण सम्मेलन, अनड्वन् यह रूप सिद्ध हो जाता है। अनडुह् भ्याम इस स्थिति में स्वादिष्वसर्वनामस्थान से अनडुह् शब्द की पद संज्ञा होती है। तब अगला सूत्र आता है।

15.10 वसुस्रंसुध्वंस्वनडुहां दः 8.2.72

सूत्रार्थ - सकारान्त वस्वन्त तथा स्रंस् आदि के स्थान पर दकार होता है। पदान्त में इस सूत्र में दो पद है। वसुस्रंसुध्वंस्वनडुहाम् षष्ठी बहुवचनान्त है। दः आदेश बोधक प्रथमान्त पद है। ससजुषो रुः इस सूत्र से सः षष्ठी एकवचन पदांश की अनुवृत्ति होती है। पदस्य का अधिकार है। यहां वचन विपरिणाम से पदानाम् बन जाता है। वसुश्च स्रंसुश्च ध्वंसुश्च अनड्वान् च इस विग्रह में इतरेतर योग द्वन्द्व समास वसुस्रंसुध्वंस्वनडुहः तेषाम् वसुस्रंसुध्वंस्वनडुहाम् अनुवृत्त सः यह पद सिर्फ वसु के साथ अन्वित होता है। स्रंसु ध्वंसु में दोष न होने के कारण, अनडुह् में सकार सम्भव ही नहीं है। अतः तदन्त विधि के द्वारा सान्त वसु यह अर्थ प्राप्त हो जाता है। वसु एक प्रत्यय है जो कि शतृ के स्थान पर होता है। उसके

ध्यान दें:

स्थानिवद्भाव करने से वसु में भी प्रत्ययत्व आ जाता है। अत: प्रत्यय ग्रहणे तदन्त ग्राह्या: इस नियम से तदन्त विधि, वस्वन्त यह अर्थ प्राप्त होता है। स्रंसु ध्वंसु, अनडुह् में विशेषण में रूप में। अन्वित होता है। अत: फिर से तदन्त विधि हो जाती है। सूत्रार्थ सम्पन्न होता है- सान्त वसुप्रत्ययान्त तथा स्रसाद्यन्त धातुओं के तथा अनडुह् शब्द के अन्तिम वर्ण के स्थान पर दकार होता है। दकार में अकार उच्चारणार्थ है। यह आदेश अलोऽन्त्स्य इस परिभाषा के द्वारा अन्तिम वर्ण के स्थान पर होता है।

सूत्रार्थ समन्वय - अनडुह् भ्याम् इस स्थिति में व्यपदेशिवद् भाव से अनडुह् शब्द अनडुहन्त पद भी है। अत: प्रस्तुत सूत्र से हकार के स्थान परे दकार आदेश, वर्ण सम्मेलन करने पर अनडुद्भ्याम् यह रूप सिद्ध होता है।

सुदिव् शब्द

दिव् शब्द नित्य स्त्रीलिंग है उसका अर्थ होता है। आकाश या स्वर्ग। सु शोभना द्यौ: आकाशं यस्य इस विग्रह में बहुव्रीहि समास करने पर सुदिव् शब्द निष्पन्न होता है। अब यह शब्द पुल्लिंग में हो गया। समास होने के कारण से कृत्तद्धितसमासाश्च सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा। उससे प्रथमा के एकवचन की विवक्षा में सुप्रत्यय अनुबन्ध लोप, सुदिव् स् बन गया। हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् से सकार का लोप प्राप्त होने पर अगला सूत्र प्रवृत्त होता है।

15.11 - दिव औत् । 7.1.84

सूत्रार्थ - दिव् इस प्रातिपदिक को औकार आदेश होता है सु प्रत्यय परे रहते।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से औकार आदेश होता है। अत: यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में दिव औत् ये दो पद है। सावनडुह: इस सूत्र से सौ यह पद अनुवर्तित होता है। दिव: षष्ठी का एकवचन है। औत् प्रथमान्त पद है। सौ सप्तमी का एकवचन है। सूत्रार्थ होता है- सुप्रत्यय परे रहते दिव् इस प्रातिपदिक के स्थान पर औकार आदेश होता है।

ध्यान देने योग्य विषय - यहां सूत्र में दिव् अव्युत्पन्न प्रातिपदिक स्वीकार किया जाता है। औत् में तपर करण उच्चारणार्थक है। यदि तकार भी विधेय होता तो अनेकाल्शित्सर्वस्य इस परिभाषा के द्वारा सम्पूर्ण दिव् के स्थान पर औकार आदेश प्राप्त हो जाता जो कि अनिष्ट है।

यह सूत्र अङ्गस्य के अधिकार में पठित है। अत: दिव् इस प्रातिपदिक के स्थान पर जो आदेश होता है। वहीं दिव् शब्दान्त के स्थान पर भी होता है क्योंकि पदाङ्गाधिकारे तस्य च तदन्तस्य च इस परिभाषा के द्वारा तदन्त को भी होता है। अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा के द्वारा दिव् के वकार को होता है।

सूत्रार्थ समन्वय - सुदिव् स् इस अवस्था में हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् इस सूत्र सें सकार का लोप प्राप्त है उसे बांधकर प्रस्तुत सूत्र से वकार के स्थान पर औ आदेश, सुदिऔ स् इस स्थिति में इको यणचि से औकार रूप अच् परे रहते यण् आदेश सुद् य् औ स्, वर्ण सम्मेलन करने पर सुद्यौस् बन गया सकार को रुत्व विसर्ग करने पर सुद्यौ: यह रूप सिद्ध होता है।

विचार - यहां सुदिव् स् इस स्थिति में हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् इस सूत्र से सकार लोप तथा दिव औत् से वकार के स्थान पर औकार आदेश एक साथ प्राप्त होता है परन्तु नित्य होने के कारण पहले दिव औत् यही सूत्र प्रवृत्त होता है क्योंकि नियम है। कृताकृतप्रसङ्गी नित्य:। सुदिव् स् इस अवस्था में सकार का लोप किया जाए अथवा न दोनों परिस्थितियों में दिव औत् यह सूत्र प्रवृत्त होता है। परन्तु दिव औत् सूत्र से वकार को औकार करने पर हलन्त न होने के कारण से हल्ङ्याब्भ्यो- सूत्र

ध्यान दें:

प्रवृत्त नहीं होता है। अत: दिव औत् सूत्र नित्य है। हल्ङ्याब्भ्यो यह अनित्य विधि है। अत: दिव औत् से वकार को औकार आदेश ही होता है। सुदिव् भ्याम् इस अवस्था में अगला सूत्र प्रवृत्त होता है-

15.12 दिव उत् । 6.1.131 ।

सूत्रार्थ - दिव् को उकार अन्तादेश होता है, पदान्त में।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से उकार आदेश होता है। अत: यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में दिव: उत् ये दो पद है। एङ: पदान्तादति इस सूत्र से पदान्तात् यह पद विभक्ति विपरिणाम करके पदान्ते यह सप्तम्यन्त पद अनुवर्तित होता है। दिव: षष्ठी का एकवचन है। उत् प्रथमा का एकवचन है। पदस्य अन्त: पदान्त: षष्ठी तत्पुरुष समास तस्मिन् पदान्ते। सूत्र का सामान्य अर्थ होता है। पदान्त में स्थित दिव् शब्द के स्थान पर उकार आदेश होता है।

उत् का तकार उच्चारणार्थक है। अत: उसकी इत्संज्ञा नहीं होती है। यह उ आदेश अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा के द्वारा दिव् के अन्तिम वकार के स्थान पर होता है।

सूत्रार्थ समन्वय - सुदिव् भ्याम् इस स्थिति में स्वादिष्वसर्वनामस्थाने इस सूत्र से सुदिव् की पद संज्ञा होती है। अत: पदान्त में स्थित वकार के स्थान पर प्रस्तुत सूत्र से उकार आदेश करने पर सुदि उ भ्याम् बन गया। तत्पश्चात् इका यणचि से यण् आदेश यकार करने पर सुद् य् उ भ्याम्, वर्ण सम्मेलन करने पर सुद्युभ्याम् बन गया।

इसी प्रकार से भिस् भ्यस् सप्तमी के बहुवचन सुप् प्रत्यय के पर रहते ऐसे ही कार्य होते हैं।

पाठगत प्रश्न-3

13. सावनडुह: सूत्र से क्या विधान किया जाता है?
14. अनडुह् भिस् में हकार के स्थान पर क्या आदेश होता है?
15. दिव औत् सूत्र का क्या कार्य है? एक उदाहरण लिखो?
16. दिव औत् में तकार का क्या प्रयोजन है?
17. दिव औत् यह सूत्र किसके अधिकार में पठित है?
18. सुदिव् स् में हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् यह सूत्र प्रवृत्त क्यों नहीं होता है?
19. दिव उत् सूत्र का अर्थ लिखो?
20. उकार आदेश अन्तिम वर्ण वकार या दिव् इस सम्पूर्ण के स्थान पर होता है?
21. सुदिव् भ्याम् में सुदिव् की पद संज्ञा किस सूत्र से होती है?

चतुर शब्द

यह शब्द नित्य बहुवचनान्त है, अर्थात् एकवचन और द्विवचन में इसके रूप नहीं मिलते हैं।

किन्तु तीनों लिंगों में इसका व्यवहार होता है।

पुल्लिंग में चतुर शब्द।

ध्यान दें:

चतुर शब्द से प्रथमा के बहुवचन में जस् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, चतुर + अस् इस अवस्था में चतुरनडुहोरामुदात्तः इस सूत्र से आम् आगम होता है। आम् का आकार मात्र बचता है। यह आम् आगम मित् है। अतः मिदचोऽन्त्यात्परः इस सूत्र की सहायता से अन्तिम अच् उकार के बाद में बैठ जाएगा। अतः चतु आर् अस् बन गया। इका यणचि से आकार रूप अच् परे रहते उकार के स्थान पर यणादेश वकार करने पर चत्वारस् बन गया। सकार को रुत्व और विसर्ग करने पर चत्वारः यह रूप सिद्ध होता है। चतुर शब्द से द्वितीया के बहुवचन में शस् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, चतुर अस् इस स्थिति में वर्ण सम्मेलन करने पर चतुरस्, सकार को रुत्व विसर्ग करने चतुरः यह रूप सिद्ध हो जाता है। चतुर शब्द से भिस् भ्यस् में सकार को रुत्व विसर्ग करने पर चतुर्भिः चतुर्भ्यः रूप सिद्ध हो जाता है।

चतुर शब्द से षष्ठी बहुवचन की विवक्षा में आम् प्रत्यय, चतुर् आम् इस स्थिति में चतुर् शब्द न तो ह्रस्वान्त आबन्त या नद्यन्त है। अतः ह्रस्वनद्यापो नुट् इस सूत्र से नुट् का आगम असम्भव है। अतः अगला सूत्र प्रवृत्त होता है-

15.13 - षट्चतुर्भ्यश्च। 7.1.55॥

सूत्रार्थ - षट् संज्ञक तथा चतुर शब्द से परे आम् को नुट् का आगम होता है।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से आम् को नुट् का आगम होता है। अतः यह विधि सूत्र है। षट्चतुर्भ्यः च ये दो पद है इस सूत्र में। आमि सर्वनाम्नः सुट् इस सूत्र से आमि इस सप्तम्यन्त का विभक्ति विपरिणाम के द्वारा षष्ठ्यन्त आमः यह पद अनुवर्तित होता है। ह्रस्वनद्यापो नुट् इस सूत्र से नुट् पद की अनुवृत्ति होती है। षट्चतुर्भ्यः पंचमी बहुवचनान्त पद है। च अव्यय पद है। आमः षष्ठ्यन्त पद है। नुट् प्रथमान्त पद है। षट् च चत्वारश्च इतरेतर योग द्वन्द्व षट्चत्वारः तेभ्यः षट्चतुर्भ्यः सूत्र का स्पष्टार्थ होता है। षट् संज्ञक और चतुर शब्द से पर में विद्यमान आम् को नुट् का आगम होता है। नुट्का टकार हलन्त्यम् के द्वारा इत्संज्ञक है। उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इत् इस सूत्र से इत्संज्ञा। यह आगम टित् है अतः आद्यन्तौ टकितौ इस सूत्र से आम् का आद्य अवयव होता है। अतः नुट् करने पर अनुबन्ध लोप, चतुर् नआम् इस स्थिति में अगला सूत्र प्रवृत्त होता है।

15.14- रषाभ्याम् नो णः समानपदे ॥ 8.4.1

सूत्रार्थ - रेफ और षकार से पर में विद्यमान नकार को णकार होता है। एकपद में।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से नकार के स्थान पर णकार होता है।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से नकार के स्थान पर णकार आदेश होता है। अतः यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में रषाभ्याम् नः णः समानपदे ये चार पद है। रषाभ्याम् पंचमी का द्विवचनान्त पद है। नः षष्ठी का एकवचन है। णः प्रथमान्त पद है। समानपदे सप्तमी का एकवचन है। रश्च षश्च इस विग्रह में इतरेतर योग द्वन्द्व समास रषौ ताभ्याम् रषाभ्याम्। समानं च तत्पदम् इस विग्रह में कर्मधारय समास समानपदम् तस्मिन् समानपदे। सूत्रार्थ सम्पन्न होता है। समानपद में विद्यमान रेफ और षकार से पर में विद्यमान नकार को णकार होता है।

विशेष - इस सूत्र में समान पद के द्वारा अखण्ड पद ही स्वीकृत है। अतः अग्निर्नयति चतुर्नवति इत्यादि में रेफ से पर में स्थित नकार को णकार नहीं होता है।

सूत्रार्थ समन्वय - चतुर् नआम् इस स्थिति में। यह समान पद है। अतः प्रस्तुत सूत्र से रेफ से पर में विद्यमान नकार को णकार करने पर चतुर् णआम् बनता है। यहां अचो रहाभ्याम् द्वे इस सूत्र से णकार को विकल्प से द्वित्व करने पर चतुर्ण्णाम्, दूसरे पक्ष में चतुर्णाम् यह रूप सिद्ध हो जाता है।

ध्यान दें:

चतुर शब्द से सप्तमी के बहुवचन की विवक्षा में सुप् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, चतुर् सु बन गया। सकार रूप खर् प्रत्याहार परे रहते खरवसानयोर्विसर्जनीयः सूत्र से रेफ के स्थान पर विसर्ग प्राप्त है, तब अगला सूत्र प्रवृत्त होता है।

15.15 - रोः सुपि। 8.3.16॥

सूत्रार्थ - रु को ही विसर्ग होता है सुप् परे रहते।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से रु के स्थान पर विसर्ग आदेश का नियमन किया जाता है। अतः यह नियम सूत्र है। इस सूत्र में रोः सुपि ये दो पद है। खरवसानयोर्विसर्जनीयः सूत्र से विसर्जनीयः यह प्रथमान्त पद अनुवर्तित होता है। रोः यह षष्ठी एकवचन है। सुपि सप्तमी का एकवचन है। विसर्जनीयः यह प्रथमान्त पद है। अतः सूत्र का सरल अर्थ है- सप्तमी के बहुवचन सुप् परे रहते रु के ही रेफ को विसर्ग होता है अन्य रेफ को नहीं ।

विचार - सुप् प्रत्यय परे रहते रु के स्थान पर विसर्गादेश खरवसानयोर्विसर्जनीयः इस सूत्र से ही सिद्ध है। फिर इस सूत्र से पुनः रु के स्थान पर विसर्ग आदेश किया गया है। अतः पूर्वतः सिद्ध विसर्ग का पुनः विधान करने से यह सूत्र नियम बन जाएगा। नियम सूत्र की परिभाषा है- किसी कार्य के सिद्ध रहने पर पुनः विधान किया जा रहा विधि नियम होता है। अतः सुप् प्रत्यय के परे रहते रु सम्बन्धित रेफ को ही विसर्ग होता है न कि अन्य रेफ को। यह नियम इस सूत्र से होता है।

चतुर् सु इस अवस्था में चतुर् का रेफ रु सम्बन्धित नहीं है। अतः इस सूत्र से नियम किये जाने के कारण से रेफ के स्थान पर विसर्ग आदेश नहीं होता है।

चतुर् सु इस अवस्था में आदेश प्रत्ययथयोः इस सूत्र से सकार के स्थान पर षकार रूप आदेश होता है। अतः चतुर्षु यह रूप सिद्ध हो जाता है। तत्पश्चात् अचो रहाभ्यां द्वे सूत्र से षकार के स्थान पर विकल्प से द्वित्व प्राप्त है। तत्पश्चात् अगला सूत्र प्रवृत्त होता है।

15.16 - शरोऽचि॥ 8.4.49॥

सूत्रार्थ - अच् परे रहते शर् प्रत्याहार के वर्णों को द्वित्व नहीं होता है।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से द्वित्व का निषेध होता है। अतः यह निषेध सूत्र है। इस सूत्र में दो पद है।

शरः अचि यह पदच्छेद है। नादिन्याक्रोशे पुत्रस्य इस सूत्र से न इस अव्यय पद की अनुवृत्ति होती है। अचो रहाभ्यां द्वे इस सूत्र से द्वे इस प्रथमान्त पद की अनुवृत्ति होती है। शरः षष्ठी का एकवचन है। अचि सप्तमी का एकवचन है। न अव्यय पद है। द्वे प्रथमा द्विवचनान्त पद है। सूत्रार्थ है- अच् प्रत्याहार परे रहते शर् को द्वित्व नहीं होता है।

सूत्रार्थ समन्वय - चतुर् षु इस स्थिति में यहां अचो रहाभ्यां द्वे से षकार को द्वित्व प्राप्त है। परन्तु षकार रू शर् से पर में उकार रूप अच् है। अतः अच् परे रहते शर् षकार का प्राप्त द्वित्व का इस सूत्र से निषेध हो जाता है। अतः चतुर्षु यह रूप सिद्ध होता है।

स्त्रीलिंग में चतुर शब्द॥

चतुर शब्द का स्त्रीलिंग में त्रिचतुरोः स्त्रियां तिसृचतसृ इस सूत्र से चतसृ आदेश होता है। चतसृ

ध्यान दें:

अस् इस स्थिति में प्रथमयो: पूर्वसवर्ण से पूर्वसवर्ण दीर्घ प्राप्त है इसे बांधकर ऋतो ङिसर्वनामस्थानयो: इस सूत्र से ऋकार को गुण प्राप्त है उसे बांधकर अचि र ऋत: सूत्र से अजादि अस् प्रत्यय परे रहते ऋकार के स्थान पर र् आदेश, चतस् र् अस् बन गया सकार को रुत्व विसर्ग करने पर चतस्र: यह रूप सिद्ध होता है।

चतसृ + अस (शस्) इस अवस्था में सर्वनाम स्थान संज्ञक प्रत्यय पर में नहीं है। अत: ऋतो ङिसर्वनामस्थानयो: से गुण प्राप्त नहीं है। अत: प्रथमयो: प्रथमयो: पूर्व सवर्ण: से पूर्व सवर्ण दीर्घ प्राप्त है उसे बांधकर अचि र ऋत: सूत्र से रेफ आदेश पूर्ववत् प्रक्रिया कार्य करने पर चतस्र: यह रूप सिद्ध होता है। चतसृ आम् में अचि र ऋत: से रेफ प्राप्त रहता है उसे बांधकर नुमचिरतृज्वद्भावगुणेभ्यो नुट् पूर्वविप्रतिषेधेन इस वार्तिक से ह्रस्वनद्यापो नुट् इस सूत्र से नुट् आगम, अनुबन्ध लोप, चतसृ नाम् बन गया। नामि से दीर्घ प्राप्त होता है। उसका न तिसृचतसृ सूत्र से निषेध होता है। तत्पश्चात् ऋवर्णान्नस्य णत्वं वाच्यम् इस वार्तिक से नकार को णकार करने पर चतसृणाम् यह रूप सिद्ध होता है।

चतुर शब्द के स्त्रीलिंग में रूप-

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	-	-	चतस्र:
द्वितीया	-	-	चतस्र:
तृतीया	-	-	चतसृभि:
चतुर्थी	-	-	चतसृभ्य:
पंचमी	-	-	चतसृभ्य:
षष्ठी	-	-	चतसृणाम्
सप्तमी	-	-	चतसृषु

नपुंसकलिंग में चतुर शब्द

चतुर् अस् इस स्थिति में जश्शसो: शि: इस सूत्र से जस् के स्थान पर शि आदेश, अनुबन्धलोप, शि सर्वनामस्थानम् से सर्वनामस्थान संज्ञा, चतुरनडुहोरामुदात्त: इस सूत्र से आम् का आगम, आम् आगम मित् है अत: मिदचोऽन्त्यात् पर: से अन्तिम अच् उकार के बाद आम् आगम होता है। अनुबन्ध लोप, चतु आ ई बन गया। इको यणचि से उकार से आकार रूप अच् परे रहने के कारण यण् आदेश, चत्वारि यह रूप सिद्ध हो जाता है।

द्वितीया के बहुवचन में भी वैसे ही रूप होता है और सभी रूप पुल्लिंग के ही तरह होते हैं।

चतुर शब्द का नपुंसक लिंग में रूप होते हैं-

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	-	-	चत्वारि
द्वितीया	-	-	चत्वारि

अन्य रूप पुल्लिंग के तरह होंगे।

ध्यान दें:

किम् शब्द।।

किम् शब्द सर्वादिगण में पठित है। अत: सर्वादीनि सर्वनामानि से इस की सर्वनाम संज्ञा होती है। किम् शब्द के तीनों लिंगों में रूप दिखाई देते हैं।

पुल्लिंग में किम् शब्द-

15.17 - किम: क:। 7.2.103

सूत्रार्थ - किम् के स्थान पर क आदेश होता है विभक्ति पर में हो तो।

क: यह अकारान्त आदेश है। अत: यह आदेश अनेकाल् है। जिस कारण से अनेकाल्शित्सर्वस्य इस सूत्र से सम्पूर्ण किम् के स्थान पर यह आदेश होता है। इक्कीस विभक्तियों के परे रहते किम् के स्थान पर क आदेश होता है। क के अदन्त होने के कारण से: पुल्लिंग में। सर्व शब्द के तरह रूप बनते हैं।

बाध्यबाधकभाव - हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र का यह बाधक सूत्र है।

सूत्रार्थ समन्वय - किम् शब्द से पुल्लिंग में प्रथमा के एकवचन की विवक्षा में सुप्रत्यय अनुबन्ध लोप, किम् स् इस अवस्था में हल्ङ्याब्भ्यो इस सूत्र से अपृक्त संज्ञक सकार का लोप प्राप्त होता है। उसे बांधकर प्रस्तुत सूत्र से सम्पूर्ण किम् के स्थान पर क आदेश, क स् बन गया। सकार को रुत्व विसर्ग करने पर क: यह रूप सिद्ध हो जाता है।

अन्य रूप पुल्लिंग में सर्वशब्द के तरह होते हैं।

स्त्रीलिंग में किम् शब्द के रूप -

स्त्रीलिंग में किम् शब्द से विभक्ति पर में रहते किम् के स्थान पर क यह अकारान्त आदेश होता है। अत: क यह अकारान्त सम्पन्न हो जाता है। तत्पश्चात् स्त्रीत्व की विवक्षा में अजाद्यतष्टाप् से टाप् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप क आ बन गया। अक: सवर्णे दीर्घ: से सवर्णदीर्घ करने पर का रूप सिद्ध हो जाता है। का शब्द का भी सर्वाशब्द के ही तरह रूप होते हैं। अत: सर्वा शब्द की सिद्धि के लिए जिन सूत्रों की आवश्यकता होती है। वे सभी सूत्र यहां आवश्यक है। अत: निष्कर्ष रूप में यह प्राप्त होता है कि, किम् शब्द के स्त्रीलिंग में सर्वाशब्द के तरह रूप होते हैं।

स्त्रीलिंग में किम् शब्द के रूप।

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	का	के	का:
द्वितीया	काम्	के	का:
तृतीया	कया	काभ्याम्	काभि:
चतुर्थी	कस्यै	काभ्याम्	काभ्य:
पंचमी	कस्या:	काभ्याम्	काभ्य:
षष्ठी	कस्या:	कयो:	कासाम्
सप्तमी	कस्याम्	कयो:	कासु

ध्यान दें:

नपुंसक लिंग में किम् शब्द-

नपुंसक लिंग में किम् शब्द से प्रथमा के एकवचन की विवक्षा में सु प्रत्यय, किम् सु हो गया। स्वमोर्नपुंसकात् से सु का लुक् करने पर किम् रूप सिद्ध हो जाता है। यहां लुक् होने पर प्रत्यय लक्षण को मानकर किम् के स्थान पर क आदेश नहीं होता है। क्योंकि न लुंमताऽङ्गस्य से निषेध हो जाता है। तत्पश्चात् औ आदि विभक्तियों में किमः कः से कादेश करने पर सभी रूप सर्व शब्द के समान चलते हैं।

नपुंसकलिंग में किम् शब्द के रूप-

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	किम्	के	कानि
द्वितीया	किम्	के	कानि

अन्य रूप ज्ञान शब्द के तरह होते हैं।

पाठगत प्रश्न-4

22. चतुरः में आमागम क्यों नहीं हुआ?
23. नुडागम करने वाले दो सूत्र लिखो?
24. चतुर् न आम् में णत्व क्यों नहीं होता है?
25. चतुर् सु रेफ को विसर्ग क्यों नहीं होता है?
26. रोः सुपि में सुप् प्रत्यय है या प्रत्याहार?
27. शरोऽचि से क्या निषेध होता है?
28. किम् स् इस स्थिति में कौन-सा सूत्र प्रवृत्त होता है?
29. क आदेश किसके स्थान पर होता है?

पाठ सार

हलन्त शब्दों से अजादि प्रत्यय परे रहते कार्य नहीं होते हैं। केवल हलादि विभक्तियों में सु भ्याम्, भिस् भ्यस् सुप् में ही अधिक कार्य होते हैं। कहीं-कहीं भसंज्ञा के स्थल पर भी विशिष्ट कार्य होते हैं।

लिह् शब्द के हकार को झल् और पदान्त में ढ आदेश होता है। भकारादि प्रत्ययों में हकार के स्थान पर ढकार आदेश, झलां जशोऽन्ते से डकार, आदेश होता है। सुप् प्रत्यय में डः सि धुट् से विकल्प से धुट् का आगम। अतः सुप् प्रत्ययों में दो रूप बनते हैं।

दुह् शब्द दकारादि है। अतः दादेर्धातोर्घ से हकार को घकार आदेश होता है। यहां हलादि विभक्ति पर में रहते दकार के स्थान पर ध् आदेश होता है। हलादि विभक्ति के परे रहते विहित घकार के स्थान पर झलां जशोऽन्ते से जश्त्व, गकार, सुप्रत्यय में केवल गकार को विकल्प से चर्त्व करने पर दो रूप सिद्ध हो जाते हैं।

पाठ-15

हलन्त प्रकरण में लिह् दुह् इत्यादि शब्द रूप

ध्यान दें:

विश्ववाह् शब्द से सर्वनामस्थान संज्ञक प्रत्यय परे रहते लिह् शब्द के समान रूप चलता है। भसंज्ञक प्रत्यय स्थलों में सम्प्रसारण संज्ञा का ज्ञान होता है। तत्पश्चात् ऊठ् यह सम्प्रसारण संज्ञक कार्य होता है। ऊठ् परे रहते एतेधत्यूठ्सु से वृद्धि होती है।

अनडुह् शब्द से सर्वनास्थान संज्ञक प्रत्यय परे रहते आम् का आगम होता है। सम्बुद्धि से भिन्न सु के परे रहते नुम् का आगम होता है। सम्बुद्धिसंज्ञक सुप्रत्यय परे रहते अम् का आगम भी होता है। पदान्त में अनडुह् शब्द के हकार के स्थान पर दकार आदेश होता है। सुदिव् में वकार से सुप्रत्यय परे रहते दिव औत् से औ आदेश होता है। अन्य स्थलों में हलादि प्रत्यय के पर में रहते दिव उत् सूत्र से उकार आदेश होता है।

चतुर् शब्द से सर्वनामस्थान संज्ञक जस् प्रत्यय परे रहते आम् आगम होता है, चतुरनडुहोरामुदात्तः सूत्र से, शस् प्रत्य में तो नहीं होता है। आम् प्रत्यय में तो षट्चतुर्भ्यश्च से नुट् का आगम, रषाभ्यां नो णः समानपदे से णकार आदेश। उस णकारादेश का भी अचो रहाभ्यां द्वे से विकल्प से द्वित्व चतुर्ण्णाम् चतुर्णाम् ये दो रूप बनते हैं। सुप् प्रत्यय में तो द्वित्व का निषेध शरोऽचि सूत्र से निषेध होता है।

किम् शब्द से विभक्ति पर में रहने पर क यह सर्वादेश होता है। इसके भी रूप सर्वशब्द के तरह चलते हैं।

योग्यता वर्धन-

इस पाठ में वे शब्द दिये गये हैं जिनके रूप नीचे दिये गये हैं। शब्द रूपों के कण्ठस्थीकरण के लिए यह भाग छात्रों के उपकार के लिए होंगे-

1- लिह् शब्द के रूप -

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	लिट्/लिड्	लिहौ	लिहः
द्वितीया	लिहम्	लिहौ	लिहः
तृतीया	लिहा	लिड्भ्याम्	लिड्भिः
चतुर्थी	लिहे	लिड्भ्याम्	लिड्भ्यः
पंचमी	लिहः	लिड्भ्याम्	लिड्भ्यः
षष्ठी	लिहः	लिहोः	लिहाम्
सप्तमी	लिहि	लिहोः	लिट्त्सु/लिट्सु
सम्बोधन	हे लिट्/लिड्	हे लिहौ	हे लिहः

ध्यान दें:

दुह् शब्द के रूप-

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	धुक्/धुग्	दुहौ	दुहः
द्वितीया	दुहम्	दुहौ	दुहः
तृतीया	दुहा	धुग्भ्याम्	धुग्भिः
चतुर्थी	दुहे	धुग्भ्याम्	धुग्भ्यः
पंचमी	दुहः	धुग्भ्याम्	धुग्भ्यः
षष्ठी	दुहः	दुहोः	दुहाम्
सप्तमी	दुहि	दुहोः	धुक्षु
सम्बोधन	हे धुक्/धुग्	हे दुहौ	हे दुहः

3-विश्ववाह् शब्द के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	विश्ववाट्/विश्ववाड्	विश्ववाहौ	विश्ववाहः
द्वितीया	विश्ववाहम्	विश्ववाहौ	विश्वौहः
तृतीया	विश्वौहा	विश्ववाड्भ्याम्	विश्ववाड्भिः
चतुर्थी	विश्वौहे	विश्ववाड्भ्याम्	विश्ववाड्भ्यः
पंचमी	विश्वौहः	विश्ववाड्भ्याम्	विश्ववाड्भ्यः
षष्ठी	विश्वौहः	विश्वौहोः	विश्वौहाम्
सप्तमी	विश्वौहि	विश्वौहोः	विश्ववाट्त्सु/विश्ववाट्सु
सम्बोधन	हे विश्ववाट्/विश्ववाड्	हे विश्ववाहौ	हे विश्ववाहः

4- अनडुह् शब्द के रूप -

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अनड्वान्	अनड्वाहौ	अनड्वाहः
द्वितीया	अनड्वाहम्	अनड्वाहौ	अनडुहः
तृतीया	अनडुहा	अनडुद्भ्याम्	अनडुद्भिः
चतुर्थी	अनडुहे	अनडुद्भ्याम्	अनडुद्भ्यः
पंचमी	अनडुहः	अनडुद्भ्याम्	अनडुद्भ्यः
षष्ठी	अनडुहः	अनडुहोः	अनडुहाम्
सप्तमी	अनडुहि	अनडुहोः	अनडुत्स
सम्बोधन	हे अनड्वन्	हे अनड्वाहौ	हे अनड्वाहः

पाठ-15

हलन्त प्रकरण में लिह् दुह् इत्यादि शब्द रूप

ध्यान दें:

5-सुदिव् शब्द के रूप-

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सुद्यौः	सुदिवौ	सुदिवः
द्वितीया	सुदिवम्	सुदिवौ	सुदिवः
तृतीया	सुदिवा	सुद्युभ्याम्	सुद्युभिः
चतुर्थी	सुदिवे	सुद्युभ्याम्	सुद्युभ्यः
पंचमी	सुदिवः	सुद्युभ्याम्	सुद्युभ्यः
षष्ठी	सुदिवः	सुदिवोः	सुदिवाम्
सप्तमी	सुदिवि	सुदिवोः	सुद्युषु
सम्बोधन	हे सुद्यौः	हे सुदिवौ	हे सुदिवः

6- चतुर् शब्द के पुल्लिंग में रूप-

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	-	-	चत्वारः
द्वितीया	-	-	चतुरः
तृतीया	-	-	चतुर्भिः
चतुर्थी	-	-	चतुर्भ्यः
पंचमी	-	-	चतुर्भ्यः
षष्ठी	-	-	चतुर्ण्णाम्/चतुर्णाम्
सप्तमी	-	-	चतुर्षु

7- पुल्लिंग में किम् शब्द के रूप-

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कः	कौ	के
द्वितीया	कम्	कौ	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पंचमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

ध्यान दें:

पाठान्त प्रश्न

1. लिह् शब्द के सप्तमी बहुवचन में कितने रूप होते हैं? सूत्राल्लेख पूर्वक सिद्धि करो?
2. दादेर्धातोर्घः सूत्र की व्याख्या करो?
3. एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः सूत्र की व्याख्या करो,
4. विश्वौहः इस रूप की सिद्धि करो?
5. सम्प्रसारण संज्ञा करने वाला सूत्र तथा उसका फल लिखो?
6. दिव औत् सूत्र की व्याख्या करो?
7. नित्यविधि कौन-सी है?
8. वसुस्रंसुध्वंस्वनडुहां दः इस सूत्र की व्याख्या करो?
9. अनड्वान् रूप की सिद्धि करो?
10. अनडुह् शब्द के सम्बोधन के एकवचन की रूप सिद्धि करो?
11. दिव उत् सूत्र की व्याख्या करो?
12. सुद्यौः रूप सिद्ध करो?
13. चतुर शब्द से आम् विभक्ति में कितने रूप होते हैं? सूत्र उल्लेख करके सिद्ध करो?
14. चतुर् सु में रेफ को विसर्ग क्यों नहीं होता है। इसका कारण स्पष्ट करो?

पाठगत प्रश्नोत्तर

उत्तर -1

1. हल्ङ्याब्भ्यो सूत्र से
2. दो रूप होते हैं। लिट्त्सु, लिट्सु।
3. दुह् धातु दकारादि है। अतः होढः सूत्र प्रवृत्त नहीं होता है। उसका अपवाद सूत्र दादेर्धातोर्घ से घकार आदेश हो जाता है।
4. एकाचो बशो. इस सूत्र से
5. धात्ववयव एकाच् झषन्त के बश् को भष् होता है।
6. चार प्रत्याहारों का- अच् बश् भष् झष्।

उत्तर-2

7. इग्यणः सम्प्रसारणम् से। यण् के स्थान पर प्रयुज्यमान इक् सम्प्रसारण संज्ञक होता है।
8. सम्प्रसारणाच्च से पूर्वरूप एकादेश।

ध्यान दें:

9. पूर्वरूप होता है। सम्प्रसारणाच्च के प्राबल्य से

10. जस् में विश्ववाहः, शस् में विश्वौहः।

11. भसंज्ञक वाह् को सम्प्रसारण ऊठ् आदेश होता है।

12. एत्येधत्यूठ्सु से वृद्धि होती है।

उत्तर-3

13. सु प्रत्यय के परे रहते अनडुह् शब्द के अन्तिम अच् से पर में नुम् आगम होता है।

14. वसुस्रसुघ्वंस्वनडुहां दः से दकार होता है।

15. सु परे रहते दिव् को औकार करने वाला यह सूत्र है। सुद्यौः इसका उदाहरण है।

16. तकार यहां केचल उच्चारण के लिए है।

17. अङ्गस्य का अधिकार है।

18. दिव औत् इस नित्य विधि से हल्ङ्याब्भ्यो का बाध होता है।

19. दिव् का उकार अन्तादेश होता है।

20. अलोऽन्त्यस्य परिभाषा के द्वारा अन्तिम वकार को होता है।

21. स्वादिष्वसर्वनामस्थाने।

22. चतुर अस् में शस् सर्वनामस्थान संज्ञक नहीं है अतः चतुरनडुहोरामुदात्तः से आम् आगम नहीं होता है।

23. ह्रस्वनद्यापो नुट् षट्चतुर्भ्यश्च

24. रषाभ्याम् नो णः समानपदे

25. शरोऽचि से निषेध हो जाने के कारण।

26. सुप् यहां प्रत्यय है।

27. अचो रहाभ्यां द्वे से प्राप्त द्वित्व का निषेध करता है।

28. किमः कः सूत्र प्रवृत्त होता है।

29. अनेकाल्शित्सर्वस्य परिभाषा के द्वारा सर्वादेश क होता है।

30. किम् शब्द से पुल्लिंग में जस् प्रत्यय, प्रक्रिया कार्य, क अस् बन गया। जसः शी से जस् के स्थान पर शी आदेश करने पर के रूप सिद्ध हो जाता है।

16

हलन्त प्रकरण में इदम् राजन् इत्यादि शब्दों के रूप

ध्यान दें:

पूर्व पाठ में लिह् आदि सात शब्दों का विवेचन किया गया है। अब इस पाठ में इदम् इस मकारान्त तथा राजन्, मघवन्, युवन्, पथिन् पंचन् अष्टन् इन पांच नकारान्त शब्दों के रूपों का विचार किया गया है। इस पाठ में कुल सात शब्द हैं। इन शब्दों के जितने रूप होते हैं। उनकी सिद्धि के लिए इक्कीस सुत्रों की उपस्थापना की गयी है। अन्य ग्रन्थों का सम्यक् रूप से आलोचन करके सरल शैली से सूत्रों की व्याख्या की गयी है। अत: इस पाठ के अध्ययन से सूत्रों का सामान्य ज्ञान, उदाहरणों में सूत्रार्थ कैसे घटेगा? ये सभी विषय बुद्धि में चिरस्थायी हो जाएंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे-

- इदम् राजन् शब्दों के रूप सिद्धि की प्रक्रिया जान पाने में;
- राजन् शब्द के सम्बोधन में नकार का लोप क्यों नहीं होता है यह जान पाने में;
- नलोप कहां असिद्ध होता है यह जान पाने में;
- मघवत् शब्द स्थल में विकल्प से तृ आदेश करने पर कौन-कौन से रूप होते हैं यह जान पाने में;
- सम्प्रसारण पूर्व को होगा की पर को इसका निर्णय प्राप्त कर सकते हैं जान पाने में;
- पथिन् शब्द सिद्धि की प्रक्रिया जान पाने में;
- अष्टन् शब्द के दोनों पक्ष में कौन-से रूप होंगे यह जान पाने में।

इदम् शब्द॥

इदम् शब्द सर्वादि गण में। पढ़ा गया है। अत: सर्वादीनि सर्वनामानि से सर्वनाम संज्ञा होती है। तीनों ही लिंगों में इसका प्रयोग दिखता है। अत्यन्त समीप के वस्तु को संकेत करने के लिए इदं शब्द का उपयोग होता है। जैसा कि श्लोक प्रसिद्ध है।

पाठ-16

हलन्त प्रकरण में इदम् राजन् इत्यादि शब्दों के रूप

ध्यान दें:

इदमस्तु सन्निकृष्टे, समीपतरवर्ति चैतदो रूपम्।

अदसस्तु विप्रकृष्टे तदिति परोक्षे विजानीयात्॥

पुल्लिंग में इदम् शब्द

16.1 - इदमो मः। 7.2.108

सूत्रार्थ - इदम् के मकार को मकार होता है सु परे रहते।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से म आदेश विधान किया जाता है। अतः विधि सूत्र है। इस सूत्र में दो पद है। इदमः षष्ठी वचनान्त पद है। मः प्रथमान्त पद है। तदोः सः सावनन्त्ययोः से सौ यह सप्तम्यन्त पद अनुवर्तित होता है। सूत्रार्थ होता है। इदम् के स्थान पर म् आदेश होता है। सुप्रत्यय परे रहते। म का अकार उच्चारणार्थक है। अतः यह आदेश अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा के द्वारा इदम् शब्द के अन्तिम अवयव मकार के स्थान पर ही मकार आदेश होता है।

इस सूत्र से मकार के स्थान पर मकार ही आदेश होता है। मकार के स्थान पर फिर से मकार आदेश व्यर्थ है। अतः इसका यह तात्पर्य समझना चाहिए की- त्यदादीनामः सूत्र से मकार के स्थान पर अकार न हो जाए इसलिए मकार के स्थान पर मकार करके यथा स्थिति बन जाए एतदर्थ यह सूत्र पाणिनि ने रचा है। अतः त्यदादीनमः इस सूत्र अपवाद यह सूत्र है।

सूत्रार्थ समन्वय - इदम् शब्द से प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सु प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, इदम् स् इस स्थिति में त्यदादीनामः से मकार के स्थान पर अकार आदेश प्राप्त रहता है उसको बाधकर इदमो मः से मकार को मकार ही हो जाता है। अतः इदम् स् बन गया। तब अगला सूत्र प्रवृत्त होता है।

16.2 - इदोऽय् पुंसि 7.2.111

सूत्रार्थ - इदम् के इद् को अय् आदेश होता है। पुल्लिंग में।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से अय् आदेश होता है। अतः यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में तीन पद है। इदः षष्ठ्यन्त पद है। अय् प्रथमान्त पद है पुंसि सप्तमी का एकवचन है। इदमो मः इस सूत्र से इदमः यह षष्ठ्यन्त पद अनुवर्तित होता है। यः सौ से सौ यह सप्तम्यन्त पद अनुवर्तित होता है। इदमः इस पद में अवयव षष्ठी है। अतः इस सूत्र का फलितार्थ बनता है। इदम् शब्द का अवयव जो इद् भाग, उसके स्थान पर अय् आदेश होता है सु परे रहते पुल्लिंग में।

यह अय् आदेश अनेकाल् होने के कारण अनेकालसित् इस परिभाषा के द्वारा सम्पूर्ण इद् भाग के स्थान पर ही होता है। अय् के यकार की हलन्त्यम् से इत् संज्ञा प्रयोजन के अभाव होने के कारण नहीं होती है।

सूत्रार्थ समन्वय - पुल्लिंग में इदम् शब्द स् इस स्थिति में प्रस्तुत सूत्र से इदम् के इद् इस भाग के स्थान पर अय् आदेश करने पर अय् अम् स् बन गया। हल्ङ्याब्भ्यो सूत्र से सकार का लोप करने पर अयम् यह रूप सिद्ध हो जाता है।

इदम् औ इस स्थिति में सुप्रत्यय के पर में न होने के कारण इदमो मः यह सूत्र प्रवृत्त नहीं होता है। अतः त्यदादीनाम् इस सूत्र से मकार के स्थान पर अकार आदेश इद अ औ बन गया तब अगला सूत्र प्रवृत्त होता है।

ध्यान दें:

16.3 - अतो गुणे - 6.1.97

सूत्रार्थ - अपदान्त अकार से गुण परे रहते पररूप एकादेश होता है।

सूत्र व्याख्या - पररूप एकादेश विधान करने के कारण यह सूत्र विधि सूत्र है। इस सूत्र में दो पद है। अतः पञ्चमी का एकवचन है। गुणे सप्तमी का एकवचनान्त पद है। उस्यपदान्तात् इस सूत्र से अपदान्तात् यह पंचम्यन्त पद अनुवर्तित होता है तथा अतः इस पंचम्यन्त पद के साथ अन्वित होता है। एकः पूर्वपरयोः का अधिकार है। एकः प्रथमान्त पद है। पूर्वपरयोः षष्ठीद्विवचनान्त पद है। एङि पररूपम् सूत्र से पररूपम् यह प्रथमान्त पद अनुवर्तित होता है। अदेङ् गुणः सूत्र के द्वारा अ ए ओ गुण संज्ञक होते हैं। अतः सूत्रार्थ सम्पन्न होता है। अपदान्त अकार से गुण संज्ञक वर्ण पर में हो तो पूर्व और पर के स्थान पर पररूप एकादेश होता है। यह सूत्र अकः सवर्णे दीर्घः और वृद्धिरेचि सूत्रों का अपवाद है।

सूत्रार्थ समन्वय - इद अ औ इस स्थिति में अपदान्त अकार दकार से उत्तर में स्थित अकार से गुण संज्ञक अकार पर में होने पर पूर्व और पर के स्थान पर पररूप अकार करने पर इद औ इस स्थिति में अग्रिम सूत्र प्रवृत्त होता है।

16.4 - दश्च । 7.2.97

सूत्रार्थ - इदम् के दकार के स्थान पर मकार आदेश होता है। विभक्ति पर में हो तो।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से म् आदेश होता है। आदेश विधान होने के कारण से यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में दो पद है। दः श् षष्ठी का एकवचन है। च अव्यय पद है। अष्टन आ विभक्तौ से विभक्तौ यह पद अनुवर्तित होता है। इदमो मः यः सम्पूर्ण पद अनुवर्तित होता है। यहां इदमः षष्ठ्यन्त पद है। मः प्रथमान्त पद है। यहां मकार के बाद का अकार उच्चारणार्थक है। अतः सूत्रार्थ सम्पन्न होता है। विभक्ति पर में रहते इदम् शब्द के अवयव जो दकार उसके स्थान पर मकार आदेश होता है।

सूत्रार्थ समन्वय - इद औ इस स्थिति में विभक्ति पर में रहते प्रस्तुत सूत्र से दकार के स्थान पर मकार आदेश करने पर इम् अ औ बन गया। वृद्धिरेचि से वृद्धि एकादेश प्राप्त होने पर उसे बाधकर प्रथमयोः पूर्वसवर्णः इस सूत्र से पूर्वसवर्णदीर्घ प्राप्त होने पर नादिचि से निषेध फिर वृद्धिरेचि इस सूत्र से अकार और औकार के स्थान पर वृद्धि एकादेश करने पर इमौ यह रूप सिद्ध हो जाता है।

इदम् शब्द से प्रथमा के एकवचन की विवक्षा में जस् प्रत्यय, अनुबन्धलोप, इदम् अस् बन गया, त्यदादीनामः से मकार के स्थान पर अकार आदेश होने पर, इद अ अस् बन गया। अतो गुणे इस सूत्र से अपदान्त अकार से पर में स्थित अकार से अकार परे रहते पररूप करने इद अस् हो गया। तत्पश्चात् दश्च से दकार के स्थान पर मकार आदेश इम अस् बन गया। स्थानिवद्भाव के द्वारा इम इस अंश की भी सर्वादीनि सर्वनामानि से सर्वनाम संज्ञा होती है। तत्पश्चात् जसः शी इस सूत्र से जस् के अस् के स्थान परे शी आदेश, शी में अनुबन्धलोप, ईकार मात्र अवशेष रहता है। तत्पश्चात् इम ई इस स्थिति में आद् गुणः से अकार और ईकार के स्थान पर गुण एकार करने पर वर्ण सम्मेलन करने पर इमे यह रूप सिद्ध होता है।

विशेष द्रष्टव्य : त्यदादिगण में (त्यद्, तद्, यद्, एतद्, इदम्, अदस्, एक, द्वि, युष्मद्, अस्मद्, भवतु, किम्) पठित शब्दों के सम्बोधन में रूप नहीं होते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि इदम् शब्द के सम्बोधन में रूप प्रथमा विभक्ति में जैसे रूप होते हैं। उसी तरह रूप होते हैं। परन्तु लोक में उनका प्रयोग नहीं होता है।

ध्यान दें:

इदम् शब्द से द्वितीया विभक्ति के एकवचन की विवक्षा में अम् प्रत्यय, इदम् अम् इस स्थिति में त्यदादीनामः इस सूत्र से मकार के स्थान पर मकार के स्थान पर अकार आदेश होता है तो इद् अ अम् इस स्थिति में अतो गुणे से दोनों अकार के स्थान पर पररूप एकादेश करने पर इद अम् बन गया। दश्च से दकार के स्थान पर मकार आदेश इम + अम् बन गया अमि पूर्वः सूत्र से अक् मकार उत्तरवर्ती अकार से अम्सम्बन्धित अकार परे रहते पूर्व रूप एकादेश करने पर इमम् यह रूप सिद्ध हो जाता है।

इदम् शब्द से द्वितीया के बहुवचन में शस् प्रत्यय अनुबन्ध लोप इदम् अस् इस स्थिति में त्यदादीचनामः से मकार के स्थान पर अकार आदेश, इद अ अस् बन गया। अतो गुणे से पररूप एकादेश करने पर इद + अस् बन गया। दश्च सूत्र से दकार के स्थान पर मकार आदेश करने पर इम अस् बन गया। प्रथमयोः पूर्वसवर्णः से पूर्वसवर्णदीर्घ करने पर इमास् बन गया। तस्माच्छसो नः पुंसि से सकार के स्थान पर नकार आदेश करने पर इमान् यह रूप सिद्ध हो जाता है।

इदम् शब्द से तृतीया के एकवचन में टा प्रत्यय अनुबन्ध लोप, इदम् आ इस स्थिति में त्यदादीनामः से अकार, अतो गुणे से पर रूप करने पर इद आ बन गया। तब अगला सूत्र प्रवृत्त होता है-

16.5 - अनाप्यकः । 7.2.112

सूत्रार्थ - ककार से रहित इदम् शब्द के इद् के स्थान पर अन् आदेश होता है। आप् विभक्तियों के परे रहते।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से अन् आदेश होता है। अतः यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में तीन पद हैं। अन् प्रथमान्त पद है। आपि सप्तम्यन्त पद है। अकः यह षष्ठ्यन्त पद अनुवर्तित होता है। नास्ति कः यस्मिन् सः अक् तस्य अकः इस विग्रह में बहुव्रीहि समास होता है। इदमो मः इस सूत्र से इदमः यह षष्ठ्यन्त पद अनुवर्तित होता है। यहां षष्ठी विभक्ति अवयवार्थक है। इदोऽय् पुंसि इस सूत्र से इदः यह षष्ठ्यन्त पद अनुवर्तित होता है। अष्टन आ विभक्तौ इस सूत्र से विभक्तौ। इस सूत्र से विभक्तौ यह सप्तम्यन्त पद अनुवृत्त है। इस सूत्र में आप् इस पद क के द्वारा प्रत्याहारों का ग्रहण होता है। टा के आकार से लेकर सप्तमी बहुवचन के सुप् प्रत्यय के पकार तक आप् प्रत्याहार होता है। अतः आप् इस पद से तृतीया विभक्ति से लेकर सप्तमी विभक्ति तक जितने प्रत्यय आते हैं। उनका ग्रहण होता है। अतः सूत्र का सरल अर्थ होता है- तृतीया आदि विभक्तियों के परे रहते ककार रहित इदम् शब्द के अवयवभूत इद् के स्थान पर अन् आदेश होता है। यह आदेश अनेकाल् है। अतः अनेकाल्शित्सर्वस्य इस सूत्र से सम्पूर्ण इद् के स्थान पर आदेश होता है।

अककार से तात्पर्य है- अव्ययसर्वनाम्नामकच् प्राक्टेः इस सूत्र से सर्वनामसंज्ञक इदम् शब्द का जो अम् है उससे पूर्व अकच् प्रत्यय, अनुबन्धलोप च, इदकम् बन गया। एकदेशविकृतन्याय से इदम् के द्वारा अकच्सहित इदकम् का भी ग्रहण होता है। अकः इस पद के ग्रहण के कारण से ककाररहित इदम् के इद् भाग को अन् आदेश नहीं होता है।

सूत्रार्थ समन्वय - इद आ इस स्थिति में प्रस्तुत सूत्र से इद् भाग के स्थान पर अन् आदेश अन् अ आ बन गया टाङसिङसामिनात्स्याः इस सूत्र से टा के स्थान पर इन आदेश अन इन हो गया। तत्पश्चात् आद्गुणः से अकार इकार के स्थान पर गुण एकार करने पर अनेन यह रूप सिद्ध हो जाता है।

इदम् शब्द से तृतीया के बहुवचन में भ्याम् प्रत्यय, इदम् भ्याम् इस स्थिति में त्यदादीनामः से मकार के स्थान पर अकार आदेश अतो गुणे से पर रूप करने पर इद भ्याम् बन गया। अनाप्यकः सूत्र से सम्पूर्ण इद् भाग के स्थान पर अन् आदेश प्राप्त रहता है। उसका अपवाद यह सूत्र प्रवृत्त होता है।

ध्यान दें:

16.6 - हलि लोपः। 7.2.113

सूत्रार्थ - ककार से रहित इदम् शब्द के इद् भाग का लोप होता है, हलादि विभक्ति के परे रहते।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से इद् भाग का लोप होता है। अतः यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में पदद्वय हैं। हलि यह सप्तम्येकवचनान्त पद है। लोपः प्रथमान्त पद है। अनाप्यकः इस सूत्र से अकः यह षष्ठ्यन्त पद अनुवर्तित होता है। इदमो मः इस सूत्र से इदमः यह षष्ठ्यन्त पद अनुवर्तित होता है। इदोऽय् पुंसि से इदः यह षष्ठ्यन्त पद अनुवर्तित होता है। अनाप्यकः से आपि यह सप्तम्यन्त पद तथा अष्टन आ विभक्तौ इस सूत्र से विभक्तौ यह पद अनुवर्तित होता है। हलि यह पद विभक्तौ का विशेषण है, हलि सप्तम्यन्त पद है साथ में अल् भी है। अतः यस्मिन्विधिस्तदादावल्ग्रहणे इस सूत्र से तदादि विधि करने पर हलादि विभक्ति यह अर्थ सिद्ध हो जाता है। सूत्र का अर्थ सम्पन्न होता है- अकच्प्रत्यय के ककार से रहित इदम् शब्द के अवयव इद् भाग का लोप होता है। तृतीया आदि हलादि विभक्ति परे रहते। अनाप्यकः का अपवाद यह सूत्र है।

सूत्रार्थ समन्वय- इद भ्याम् इस स्थिति में भ्याम् तृतीया विभक्ति का द्विवचन है, हलादि भी है। उसके परे रहते अनाप्यकः इस सूत्र को बांधकर हलि लोपः इस सूत्र से इद् भाग का लोप प्राप्त है। परन्तु यह लोप अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा के द्वारा अन्तिम दकार का लोप प्राप्त होता है। परन्तु यह नियम है कि अनर्थक में अलोऽन्त्यस्य यह परिभाषा प्रवृत्त नहीं होती है। नानर्थकेऽलोऽन्त्यविधिरनभ्यासविकारे। कौन सार्थक है कौन अनर्थक है? इस प्रश्न का भी एक समाधान है- समुदाय अर्थवान् होता है, उसका एक हिस्सा अनर्थक होता है। अर्थात् जो समुदाय होता है वह ही सार्थक होता है। समुदाय का एक भाग निरर्थक होता है। यह नियम माना जाए तो इद् यह समुदाय सार्थक है, समुदाय का एकदेश दकार अनर्थक है। अतः सम्पूर्ण समुदाय सार्थक का ही लोप होता है, नकि निरर्थक इद् भाग के अवयव दकार का। अतः इद्भाग सम्पूर्ण के लोप करने पर अभ्याम् बन गया। सुपि च इस सूत्र से अकार को दीर्घ प्राप्त रहता है। परन्तु यह सूत्र यहां प्रवृत्त नहीं हो सकता है क्योंकि सुपि च सूत्र का अर्थ होता है यञादि सुप् परे रहते अदन्त अङ्ग को दीर्घ होता है। परन्तु अकार अदन्त अङ्ग नहीं होता है। तब अगला सूत्र प्रवृत्त होता है।

16.7 - आद्यन्तवदेकस्मिन् । 1.1.20

सूत्रार्थ - एक स्थानी के स्थान पर किया जाने वाला कार्य आदि और अन्त के समान होता है।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से एक स्थानी में आदि और अन्त का अतिदेश होता है। अतः यह अतिदेश सूत्र है। अतिदेश सूत्र का लक्षण है सूत्र में वति पद का विद्यमान होना अतिदेश सूत्र कहलाता है। इस सूत्र में दो पद है। आद्यन्तवद् अव्यय पद है। एकस्मिन् सप्तमी का एकवचन है। आदिश्च अन्तश्च इतरेतरयोगद्वन्द्वः आद्यन्तौ आद्यन्तयोरिव आद्यन्तवत्। यहां तत्र तस्येव इस सूत्र से वति प्रत्यय होता है। सूत्रार्थ होता है- आदि और अन्त के रहते जो कार्य होते हैं वे काय एक के स्थान पर भी होते हैं।

आदि शब्द और अन्त शब्द सापेक्षवाचक है। अर्थात् ये दोनों शब्द किसी अन्य की भी अपेक्षा रखते हैं। महाभाष्यकार कहते हैं- जिससे पूर्व में कुछ न हो, पर में हो वह आदि है तथा जिससे पूर्व में कुछ हो लेकिन पर में न हो वह अन्त है।

इस प्रकार के आदि और अन्त के स्थान पर किया जाने वाला कार्य एक वर्ण में नहीं प्राप्त रहता है क्योंकि जब एक ही वर्ण रहेगा तो उससे पूर्व या पर में कोई वर्ण नहीं रहता है तो वहां आदि या अन्त दोनों नहीं हो सकता। अतः एक वर्ण में भी जिस प्रकार से आद्यन्त के भांति कार्य हो जाए तदर्थ यह सूत्र महर्षि पणिनि ने रचा है।

ध्यान दें:

सूत्रार्थ समन्वय - रामाभ्याम् इत्यादि इसके उदाहरण है। राम भ्याम् में राम शब्द अदन्त अङ्ग है। आ र् म् अ यहां अकार से पूर्व में वर्णों की स्थिति देखी जाती है लेकिन पर में कोई वर्ण नहीं है अत: सुपि च इस सूत्र से अकार को दीर्घ करने पर रामाभ्याम् बन जाता है। इसी प्रकार से अ भ्याम् इस स्थिति में कवल अकार को भी प्रस्तुत सूत्र से अदन्त होने के कारण सुपि च से दीर्घ एकादेश करने पर आभ्याम् यह रूप सिद्ध हो जाता है।

इदम् शब्द से तृतीया के बहुवचन में भिस् प्रत्यय, इदम् भिस् इस स्थिति में त्यदादीनम: से इदम् के मकार के स्थान पर अकार आदेश, अतो गुणे से पर रूप करने पर इद भिस् हो गया। तत्पश्चात् हलि लोप: से इद् भाग का लोप, अ भिस् बन गया, यहां पर अतो भिस ऐस् इस सूत्र से ऐस् आदेश प्राप्त होता है। उसका निषेध अगला सूत्र प्रवृत्त होता है-

16.8 - नेदमदसोरकोः । 7.1.11 ।

सूत्रार्थ - ककार से रहित इदम् और अदस् से पर में विद्यमान भिस् के स्थान पर ऐस् आदेश नहीं होता है।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से भिस् के स्थान पर ऐस् आदेश का निषेध होता है। अत: निषेध सूत्र है यह। इस सूत्र में तीन पद है। न अव्यय पद है। इदमदसो: षष्ठी द्विवचनान्त पद है। यहां षष्ठी सम्बन्ध अर्थ में है। अको: यह षष्ठी द्विवचनान्त पद है। अतो भिस ऐस् इस सूत्र से भिस: यह षष्ठ्यन्त पद तथा ऐस् यह प्रथमान्त पद अनुवर्तित होता है। इदम् च अदस् च इतरेतरयोगद्वन्द्वसमास इदमदसौ। तयो: इदमदसो:। नास्ति क: ययो: तौ अकौ तयो: अको: बहुव्रीहि समास। सूत्रार्थ बनता है- ककार से रहित इदम् और अदस् से सम्बन्धित जो भिस् प्रत्यय उसके स्थान पर ऐस् आदेश नहीं होता है।

अ भिस् इस स्थिति में प्रस्तुत सूत्र से भिस् के स्थान पर प्राप्त ऐस् आदेश का निषेध होता है तत्पश्चात् बहुवचने झल्येत् इस सूत्र से झलादि बहुवचन में भिस् प्रत्यय परे रहते अकार के स्थान पर एकार करने पर ए भिस् हो जाने पर सकार को रुत्व विसर्ग करने पर एभि: इस रूप सिद्ध हो जाता है। इदम् शब्द से चतुर्थी के एकवचन में ङेप्रत्यय अनुबन्धलोप, इदम् ए इस स्थिति में त्यदादीनाम: इस सूत्र से मकार के स्थान पर अकार करने पर, अतो गुणे से पररूप, इद ए यह स्थिति बन जाती है। यहां पर सर्वनाम्न: स्मै इस सूत्र से एकार के स्थान पर स्मै आदेश तथा अनाप्यक: इस सूत्र से इद् भाग के स्थान पर अन् आदेश एक साथ प्राप्त होता है। दोनों सूत्रों में अनाप्यक: यह पर सूत्र है। अत: विप्रतिषेधे परं कार्यम् इस सूत्र से अनाप्यक: इस सूत्र से अन् आदेश प्राप्त होता है लेकिन अनादेश यहां अपेक्षित नहीं है। अत: इस स्थिति में यह परिभाषा प्रवृत्त होता है-

पूर्वपरनित्यान्तरङ्गापवादानामुत्तरोत्तरं बलीय:। इस परिभाषा का तात्पर्य है- पूर्व सूत्र की अपेक्षा में पर नित्य अन्तरङ्ग अपवाद सूत्र तथा पर सूत्र अपेक्षा में नित्य अन्तरंग और अपवाद सूत्र, नित्य सूत्र की अपेक्षा में अन्तरङ्ग और अपवाद सूत्र तथा अन्तरङ्ग की अपेक्षया अपवाद सूत्र बलवान होते हैं।

इद ए इस स्थिति में अनाप्यक: यद्यपि परसूत्र है लेकिन सर्वनाम्न: स्मै यह नित्य सूत्र है। परसूत्र से नित्यसूत्र बलवान् होता है। नित्य सूत्र वह होता है- जो किसी कार्य के होने या न होने दोनों स्थितियों में प्रवृत्त होता है यहां अनाप्यक: इस सूत्र से अन् आदेश करने पर भी सर्वनाम्न: स्मै यह सूत्र प्रवृत्त होता है। अन् आदेश न करने पर भी स्मै आदेश प्राप्त होता है। परन्तु स्मै आदेश करने पर हलादि होने पर अनाप्यक: यह सूत्र प्रवृत्त नहीं होता है। अत: सर्वनाम्न: स्मै यह नित्य सूत्र है। अत: इस सूत्र से पहले स्मै आदेश करने पर इद स्मै हो गया। तत्पश्चात् हलि लाप: से इद् भाग का लोप होने पर अस्मै यह रूप सिद्ध हो जाता है।

ध्यान दें:

इदम् शब्द से पञ्चमी के एकवचन में ङसिप्रत्यय, अनुबन्धलोप, इदम् अस् इस स्थिति में त्यादादीनाम: से अकार, पररूप, इद अस् बन गया। ङसिङ्योः स्मात्स्मिनौ इस सूत्र से ङसि के स्थान पर स्मात् आदेश। इद स्मात् बन गया। तत्पश्चात् हलि लोप: से इद् भाग का लोप होने पर अस्मात् यह रूप सिद्ध हो जाता है।

इदम् शब्द से षष्ठी के एकवचन में ङस् प्रत्यय अनुबन्ध लोप, इदम् अस् इस स्थिति से त्यदादीनाम: से अत्व पररूप करने पर इद अस् बन गया टाङसिङसामिनात्स्या: से अस् प्रत्यय के स्थान पर स्य आदेश, इद स्य बन गया तत्पश्चात् हलि लोप: से इद् भाग का लोप करने पर अस्य यह रूप सिद्ध हो जाता है।

इदम् शब्द से षष्ठी के द्विवचन में ओस् प्रत्यय त्यदादीनाम: से अत्व पररूप, इद ओस् बन गया अनाप्यक: इस सूत्र से इद् भाग के स्थान पर अन् आदेश अन् अ ओस् बन गया। तत्पश्चात् ओसि च इस सूत्र से अकार के स्थान पर एकार करने पर अने ओस् बन गया। एचोऽयवायाव: से अय् आदेश करने पर अन् अय् ओस् बन गया सकार को रुत्व विसर्ग करने पर अनयो: यह रूप सिद्ध हो जाता है।

इदम् शब्द से षष्ठी बहुवचन की विवक्षा में आम् प्रत्यय, इदम् आम् इस स्थिति में। त्यदादीनाम: से अकार आदेश, पररूप, इद आम् बन गया, आमि सर्वनाम्न: सुट् इस सूत्र से आम् प्रत्यय को सुट् आगम, अनुबन्धलोप, सुट् के टित् होने के कारण आद्यन्तौ टकितौ से आद्य अवयव, इद स् आम् बन गया। इद साम् इस स्थिति में हलादि विभक्ति साम् पर में रहते हलि लोप: से इद् भाग का लोप, अ साम् बन गया। बहुवचने झल्येत् से एकार आदेश करने पर एसाम् इस स्थिति में आदेश प्रत्यययों: से षकार आदेश करने पर एषु यह रूप सिद्ध हो जाता है।

इदम् शब्द से सप्तमी एकवचन की विवक्षा में ङिप्रत्यय, अनुबन्ध लोप, इदम् इ इस स्थिति में त्यदादीनाम: से अकार, पररूप, इद इ होता है। तत्पश्चांत् ङसिङ्योः स्मात्स्मिनौ से ङि प्रत्यय के इकार के स्थान पर स्मिन् आदेश, इद स्मिन् बन गया। यहां हलादि विभक्ति स्मिन् के परे रहते हलि लोप: से इद् भाग का लोप अस्मिन् यह रूप सिद्ध होता है।

इदम् शब्द के सप्तमी बहुवचन में सुप् प्रत्यय, अनुबन्धलोप, इदम् सु इस स्थिति में के स्थान पर पूर्ववत् त्यदादीनाम: से अकार, पररूप, करने पर इद सु बन गया। हलादि सुप् परे रहते हलि लोप: से इद् का लोप होने पर अ सु बन गया। बहुवचने झल्येत् से अकार के स्थान पर एकार आदेश आदेश प्रत्यययो: से षकार आदेश करने पर एषु यह रूप सिद्ध हो जाता है।

इदम् शब्द के द्वितीया विभक्ति में, टा और ओस् प्रत्ययों में कुछ विशेष प्रक्रिया दिखाई देती है। उनमें दो रूप होते हैं। अधिक जिज्ञासु जन व्याकरण सिद्धान्त कौमुदी तथा लघुसिद्धान्त कौमुदी आदि ग्रन्थों को देखें।

स्त्रीलिंग में इदम् शब्द

स्त्रीलिंग में इदम् शब्द से सुप्रत्यय अनुबन्धलोप, इदम् स् इस स्थिति में अगला सूत्र प्रवृत्त होता है।

16.9 - य: सौ। 7.2.110

सूत्रार्थ - इदम् के दकार को यकार होता है। सु परे रहते।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से य आदेश होता है। अत: यह एक विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद

ध्यान दें:

है। यः प्रथमान्त पद है। सौ सप्तमी का एकवचन है। इदमो मः से इदमः तथा दश्च इस सूत्र से दः यह षष्ठ्यन्त पद अनुवर्तित होता है। इदमः में षष्ठी अवयवार्थक है। दः में षष्ठी स्थाने योगा इस परिभाषा के बल से स्थाने यह पद आ जाता है। य का अकार उच्चारणार्थक है। सूत्रार्थ होता है- इदम् शब्द का अवयव दकार के स्थान पर य् आदेश होता है।

विशेष - पुल्लिंग और नपुंसकलिंग में यह सूत्र प्रवृत्त नहीं होता है क्योंकि पुल्लिंग में इदोऽय् पुंसि इस सूत्र से इद् भाग के स्थान पर अय् आदेश हो जाता है। नपुंसकलिंग में स्वमोर्नपुंसकात् इस सूत्र से सुप्रत्यय का लुक् होता है। लुक् होने पर न लुमताङ्गस्य सूत्र से प्रत्यय लक्षण का निषेध हो जाने से प्रत्यय लक्षण नहीं हो पाता है।

सूत्रार्थ समन्वय - इदम् स् इस स्थिति में प्रस्तुत सूत्र से सुप्रत्यय पर में रहते इदम् शब्द के अवयव दकार के स्थान पर यकार आदेश इय् अ म् स् बन गया। तत्पश्चात् हल्ङ्याब्भ्यो इस सूत्र से अपृक्तसंज्ञक स्कार का लोप करने पर इयम् यह रूप सिद्ध होता है।

इस भाग में इदम् शब्द के स्त्रीलिंग में अन्य रूप तथा नपुंसक लिंग में रूपों की सिद्धि की गयी है। अतः जिज्ञासु छात्रों के लिए यह भाग उपकारी है।

इदम् शब्द के स्त्रीलिंग में अन्य रूप-

इदम् औ इस अवस्था में त्यदादीनामः से अत्व, पररूप इद औ इस अवस्था में स्त्रीत्व की विवक्षा में टाप् प्रत्यय, अकः सवर्णे दीर्घ से दीर्घ, इदा औ बन गया, दश्च से दकार को मकार, औङ आपः से औ के स्थान पर शी आदेश, अनुबन्ध लोप, इमा ई बन गया। आद् गुणः सूत्र आकार और ईकार के स्थान पर गुण एकार करने पर इमें यह रूप सिद्ध हो जाता है।

इदम् शब्द से जस् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, इदम् अस् इस स्थिति में प्रक्रिया कार्य करने पर इमा अस् बन गया। प्रथमयोः पूर्वसवर्ण से पूर्वसवर्ण दीर्घ प्राप्त है। दीर्घाज्जसि च से निषेध। पुनः अकः सवर्णे दीर्घः से सवर्ण दीर्घ करने पर तथा सकार को रुत्व विसर्ग करने पर इमाः यह रूप सिद्ध हो जाता है।

इदम् अम् इस स्थिति में पूर्ववत् प्रक्रिया कार्य करने पर इमा अम् बन गया। अमि पूर्वः से पूर्व रूप करने पर इमाम् यह रूप सिद्ध होता है।

इदम् शब्द से शस् प्रत्यय में इदम् अस् इस स्थिति में पूर्ववत् प्रक्रिया कार्य करने पर इमा अस् बन गया, प्रथमयोः पूर्वसवर्णः से पूर्वसवर्ण दीर्घ करने पर इमाः यह रूप सिद्ध हो जाता है।

इदम् आ (टा) इस स्थिति में त्यदादीनामः से अत्व, पररूप, अजाद्यतष्टाप् से टाप् प्रत्यय, प्रक्रिया कार्य करने पर इदा आ बन गया। अनाप्यकः से इदम् के इद् भाग के स्थान पर अन् आदेश, अना आ हो गया। आङि चापः से नकार उत्तरवर्ती आकार के स्थान पर एकार अने आ बन गया। एचोऽयवायावः से अय् आदेश करने पर अनया यह रूप सिद्ध हो जाता है।

इदम् भ्याम् इस स्थिति में त्यदादीनामः से अकार, पररूप, इद भ्याम् इस स्थिति में अजाद्यतष्टाप् से टाप् प्रत्यय प्रक्रिया कार्य करने पर इदा भ्याम् बन गया। हलि लोपः से इदम् के इद् भाग का लोप करने पर आभ्याम् यह रूप सिद्ध हो जाता है।

इदम् भिस् में पूर्ववत् प्रक्रिया कार्य करने पर इदा भिस् बन गया। हलि लोपः इस सूत्र से इद् भाग का लोप, सकार को रुत्व विसर्ग करने पर आभिः यह रूप सिद्ध होता है।

हलन्त प्रकरण में इदम् राजन् इत्यादि शब्दों के रूप

पाठ-16

हलन्त प्रकरण में इदम् राजन् इत्यादि शब्दों के रूप

ध्यान दें:

इदम् शब्द से ङेप्रत्यय अनुबन्धलोप, इदम् ए इस स्थिति में त्यदादीनाम: से अकार, पररूप, टाप् प्रत्यय अनुबन्ध लोप, सवर्ण दीर्घ, इदा ए बन गया। इदम् शब्द के सर्वादि गण में पाठ होने के कारण एकदेशविकृतन्याय से इदा की भी सर्वनाम संज्ञा, सर्वनाम्न: स्याड्ढ ऊस्वश्च से एकार को स्याट् का आगम, टित् होने के कारण आद्यावयव, अनुबन्ध लोप, आप् को हऊस्व करने पर इद स्या ए बन गया वृद्धिरेचि से वृद्धि करने पर इद स्यै हो गया, हलि लोप से इद् भाग का लोप करने पर अस्यै यह रूप सिद्ध हो जाता है।

इदम् शब्द से ङसि प्रत्यय अनुबन्ध लोप, इदम् अस् में पूर्ववत् प्रक्रिया कार्य करने पर इदा अस् बन गया, पूर्ववत् सर्वनामसंज्ञा, स्याट् का आगम, आप् को हऊस्वादेश, इद स्या अस् बन गया, अक: सवर्णे दीर्घ: से सवर्ण दीर्घ करने पर इद स्यास् बन गया। हलि लोप: से इदम् के इद् भाग का लोप, सकार को रुत्व विसर्ग करने पर अस्या: रूप सिद्ध हो जाता है।

इदम् ओस् इस स्थिति में पूर्ववत् प्रक्रिया कार्य करने पर इदा ओस् बन गया, अनाप्यक: से इद् भाग के स्थान पर अन् आ ओस् बन गया। आङि चाप: से एकार करने पर अने ओस् बन गया, एचोऽयवायाव: से अय् आदेश करने पर अनयोस् इस स्थिति में सकार को रुत्वविसर्ग करने पर अनयो: यह रूप सिद्ध होता है।

इदम् आम् इस स्थिति में पूर्ववत् प्रक्रिया कार्य करने पर इदा आम् इस अवस्था में सर्वनाम संज्ञा, सर्वनाम्न: सुट् से सुट् का आगम, अनुबन्ध लोप, इदा स् आम् बन गया, साम् इस हलादि प्रत्यय के पर में होने के कारण हलि लोप: इस सूत्र से इद् भाग का लोप करने पर आसाम् यह रूप सिद्ध हो जाता है।

इदम् शब्द से ङिप्रत्यय, अनुबन्ध लोप, इदम् इ इस स्थिति में प्रक्रिया कार्य करने पर इदा इ बन गया। ङेराम्नद्याम्नीभ्य: इस सूत्र से आम् आदेश, सर्वनाम्न: स्याड्ढ ऊस्वश्च इस सूत्र से स्याट् का आगम और आप् के स्थान पर हऊस्व आदेश करने पर इद स्या आम् बन गया। हलि लोप: इस सूत्र से इदम् के इद् भाग का लोप, अ स्या आम् बन गया, अक: सवर्णे दीर्घ से दीर्घ एकादेश करने पर अस्याम् यह रूप सिद्ध हो जाता है।

इदम् शब्द से सुप् प्रत्यय इदम् सु इस स्थिति में पूर्ववत् प्रक्रिया कार्य करने पर इदा सु बन गया, हलादि सुप्प्रत्यय परे रहते हलि लोप: से इद् भाग का लोप करने पर आसु यह रूप बनता है।

स्त्रीलिंग में इदम् शब्द के रूप-

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	इयम्	इमे	इमा:
द्वितीया	इमम्	इमे	इमा:
तृतीया	अनया	आभ्याम्	आभि:
चतुर्थी	अस्यै	आभ्याम्	आभ्य:
पञ्चमी	अस्या:	आभ्याम्	आभ्य:
षष्ठी	अस्या:	अनयो:	आसाम्
सप्तमी	अस्याम्	अनयो:	आसु

पाठ-16

हलन्त प्रकरण में इदम् राजन् इत्यादि शब्दों के रूप

ध्यान दें:

नपुंसकलिंग में इदम् शब्द के रूप-

नपुंसक लिंग मकं इदम् शब्द से सुप्रत्यय स्वमोर्नपुंसकात् इस सूत्र से सुप्रत्यय का लोप, इदम् यह रूप सिद्ध होता है।

इदम् औ इस स्थिति में त्यदादीनाम: से अकार क, पररूप, इद औ यह स्थिति होती है। तत्पश्चात् नपुंसकाच्च से औ के स्थान पर अनेकाल्शित्सर्वस्य इस परिभाषा के द्वारा सर्वादेश, अनुबन्ध लोप, इद ई बन गया। तत्पश्चात् आद् गुण: से गुण एकार, दश्च इस सूत्र से दकार के स्थान पर मकार इमे यह रूप सिद्ध हो जाता है।

इदम् अस् (जस्) इस स्थिति में पूर्ववत् प्रक्रिया कार्य करने पर इद अस् बन गया। जश्शसो: शि: इस सूत्र से जस् के स्थान पर शि आदेश अनुबन्ध लोप, इद इ हो गया। मिदचोऽन्त्यात्पर: इस परिभाषा के सहयोग से नपुंसकस्य झलच: इस सूत्र से इद के अन्त्य अच् में पर में नुम् का आगम, अनुबन्ध लोप, इद न् इ बन गया। सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ इस सूत्र से उपधा को दीर्घ करने पर इदान् इ बन गया। तत्पश्चात् दश्च इस सूत्र से दकार को मकार करने पर इमानि यह रूप सिद्ध हो जाता है।

द्वितीया विभक्ति में भी ये ही रूप होते हैं। अन्य स्थलों में पुल्लिंग के समान रूप सिद्धि होती है।

नपुंसकलिंग में इदम् शब्द के रूप-

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	इदम्	इमे	इमानि
द्वितीया	इदम्	इमे	इमानि

अन्य रूप पुल्लिंग के समान होता है।

पाठगत प्रश्न-1

1. इदमो म: यह किसका अपवाद है?
2. अतो गुणे इस सूत्र का अर्थ लिखो?
3. इदम् के दकार के स्थान पर मकार करने वाला सूत्र कौन-सा है? उसका अर्थ लिखो।
4. अनाप्यक: इस सूत्र में आप् के द्वारा किसका ग्रहण होता है?
5. अलोऽन्त्यस्य परिभाषा कहां प्रवृत्त नहीं होती है?
6. आद्यन्तवदेकस्मिन् इसका एक फल लिखो?
7. आद्यन्त शब्दों से क्या समझ में आता है?
8. य: सौ इस सूत्र का अर्थ लिखो?

राजन् शब्द

राजृ दीप्तौ यहां धातु है। राजते दीप्यते इस अर्थ में राज् धातु से कनिन् प्रत्यय में राजन् शब्द निष्पन्न

ध्यान दें:

होता है। राजन् शब्द का अर्थ होता है राजा। राजन् शब्द से प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सुप्रत्यय, अनुबन्ध लोप, राजन् स् इस स्थिति में हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् से सुलोप, सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ से उपधा दीर्घ दोनों एक साथ प्राप्त होता है। पर होने के कारण पहले उपधा दीर्घ, तत्पश्चात् सु का लोप करने पर राजान् बन गया। न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य से नकार का लोप करने पर राजा यह रूप सिद्ध होता है।

राजन् औ इस स्थिति में सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ से उपधा दीर्घ वर्ण सम्मेलन राजानौ यह रूप सिद्ध हो जाता है।

राजन् शब्द से जस् प्रत्यय अनुबन्ध लोप राजन् अस् इस स्थिति में सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ इस सूत्र से उपधा दीर्घ करने पर, राजानस् बन गया सकार को रुत्व विसर्ग करने पर राजानः यह रूप सिद्ध हो जाता है।

राजन् शब्द से सम्बोधन के एकवचन की विवक्षा में सुप्रत्यय, अनुबन्धलोप, राजन् स् इस स्थिति एकपवचनं सम्बुद्धिः से सम्बुद्धि संज्ञा होने के कारण सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ से उपधा दीर्घ सम्भव नहीं है। तत्पश्चात् हल्ङ्याब्भ्यो से सकार का लोप राजन् बन गया। यहां नकार पदान्त में अतः नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य सूत्र से नकार का लोप प्राप्त रहता है। अतः उसका निषेध करने के लिए अगला सूत्र प्रवृत्त होता है।

16.10 - न ङि सम्बुद्ध्योः। 8.2.8

सूत्रार्थ - नकार का लोप होता है। ङि और सम्बुद्धि परे रहते।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से नकारलोप का निषेध किया जाता है। अतः यह निषेध सूत्र है। इस सूत्र में न अव्यय पद है। ङिसम्बुद्ध्योः सप्तमी का द्विवचन है। न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य सूत्र से न यह लुप्तषष्ठ्यन्त पद, लोपः प्रथमान्त पद, अनुवर्तित होता है। ङिश्च सम्बुद्धिश्च इतरेतर योग द्वन्द्व समास ङिसम्बुद्धी तयोः ङिसम्बुद्ध्योः। सूत्रार्थ सम्पन्न होता है- ङि और सम्बुद्धिसंज्ञक प्रत्यय परे रहते नकार का लोप नहीं होता है।

उदाहरण - ङि प्रत्यय के पर रहते नलोप का निषेध वैदिक प्रयोगों में ही दिखाई देता है। इसका उदाहरण है- परमे व्योमन् यहां नकार लोप का प्रस्तुत सूत्र से निषेध होता है।

सम्बुद्धि परे रहते का उदाहरण है - हे राजन्।

सूत्रार्थ समन्वय - राजन् इस स्थिति में यद्यपि सम्बुद्धि संज्ञक सुप्रत्यय लुप्त है फिर भी प्रत्यय लोपे प्रत्यय लक्षणम् इस सूत्र के सहयोग से लोप प्राप्त है, जिसका निषेध प्रस्तुत सूत्र से करने पर राजन् यह रूप सिद्ध हो जाता है।

राजन् शब्द से अम् प्रत्यय में सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ से उपधा दीर्घ करने पर राजानम् यह रूप सिद्ध होता है। राजन् शब्द से शस् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, राजन् अस् इस स्थिति में यचि भम् से अजादि प्रत्यय परे रहते भसंज्ञा, अल्लोपोऽनः से अन् भाग के अकार का लोप करने पर राज् न् अस् बन गया। स्तोः श्चुना श्चुः इस सूत्र से नकार को श्चुत्वकार करने पर, वर्ण सम्मेलन राज्ञः यह रूप सिद्ध होता है।

राजन् शब्द से टाप्रत्यय, अनुबन्ध लोप, राजन् आ इस स्थिति में पूर्ववत् भसंज्ञा, अल्लोपोऽनः से अन् भाग के अकार का लोप करने पर राज् न् आ बन गया। स्तोः श्चुना श्चुः से श्चुत्व करने पर राज्ञा यह रूप सिद्ध हो जाता है।

ध्यान दें:

राजन् शब्द से भ्याम् प्रत्यय, स्वादिष्वसर्वनामस्थाने से पद संज्ञा, होती है। तत्पश्चात् न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य से नकार का लोप, होता है। अतः राज भ्याम् इस स्थिति में सुपि च इस सूत्र से अदन्त अङ्ग को दीर्घ प्राप्त रहता है। तब अगला सूत्र प्रवृत्त होता है।

16.11 - नलोपः सुप्स्वरसंज्ञातुग्विधिषु कृति।

सूत्रार्थ - सुप् विधि, स्वरविधि, संज्ञा विधि तथा कृत् प्रत्यय के परे रहते तुक् आगम की विधि में नलोप असिद्ध होता है, अन्यत्र नहीं।

सूत्र व्याख्या - छः प्रकार के पाणिनीय सूत्रों में यह नियम सूत्र है। किसी कार्य के प्रकारान्तर से सिद्ध होने पर भी आरम्भ की गयी विधि नियम विधि होती है। इस सूत्र में नलोपः सुप्स्वरसंज्ञातुग्विधिषु कृति ये तीन पद है। नलोपः प्रथमान्त पद है। सुप्स्वरसंज्ञातुग्विधिषु सप्तमी बहुवचनान्त पद है। कृति सप्तमी का एकवचन है। पूर्वत्रासिद्धम् इस सूत्र से असिद्धम् यह प्रथमान्त पद अनुवर्तित होता है। नलोपः इस पद में षष्ठी तत्पुरुष समास है। नस्य लोपः नलोपः। सुप्स्वरसंज्ञातुग्विधिषु पद में द्वन्द्व गर्भ षष्ठी तत्पुरुष समास इस का विग्रह वाक्य है- सुप्च् स्वरश्च संज्ञाच तुक्च इतरेतरयोग द्वन्द्व सुप्स्वरसंज्ञातुकः। सुप्स्वरसंज्ञातुकाम् विधयः सुप्स्वरसंज्ञातुग्विधयः षष्ठी तत्पुरुष समास। तेषु सुप्स्वरसंज्ञातुग्विधिषु। कृति इस पद का अन्वय सिर्फ तुक् के साथ ही होता है क्योंकि अन्यत्र तुगागम सम्भव नहीं है। सूत्रार्थ सम्पन्न होता है- सुप् विधि में, स्वर विधि में तथा संज्ञा विधि में तथा कृत् परे रहते तुक् आगम की विधि में नकार का लोप असिद्ध होता है। अन्यत्र नहीं। पूर्वत्रासिद्धम् इस सूत्र से ही असिद्धत्व सिद्ध हो जाता है। पुनः इस सूत्र का आरम्भ यह नियमन करता है कि सुबादिविधियों में ही नकार का लोप असिद्ध होता है। अन्यत्र नहीं।

उदाहरण -

सुब्विधि - सुप् का आश्रय लेकर विधि करने पर नलोप असिद्ध होता है। यह सुंबाश्रयविधि दो प्रकार की होती है। सुप् के स्थान पर विधि और सुप् के परे रहते विधि। पहले का उदाहरण है राजभिः। दूसरे का राजभ्याम्, राजभ्यः इत्यादि उदाहरण है।

संज्ञा विधि - दण्डिदत्तौ, दत्तदण्डिनौ ये दोनों उदाहरण है।

कृति तुग्विधि का उदाहरण - कृत् परे रहते जो तुक् उसकी विधि में नलोप असिद्ध होता है। इसके उदाहरण है- वृत्रहभ्याम् वृत्रहभिः इत्यादि इसके उदाहरण है।

सूत्रार्थ समन्वय - सुब्विधि में नलोप असिद्ध होता है इस नियम के कारण से राजभ्याम् इसमें नलोः प्रातिपदकान्तस्य इस सूत्र से विहित नलोप असिद्ध होता है अतः सुपि च इस सूत्र से दीर्घ नहीं प्रवृत्त होता है क्योंकि सुपि च यह विधि सुब्विधि होता है। अतः नकार का यद्यपि लोप होता है। तथापि प्रस्तुत सूत्र के बल से उसके असिद्ध हो जाने के कारण से यह सूत्र नकार ही देखता है। अतः अङ्ग के अदन्त न होने के कारण सुपि च से दीर्घ प्रवृत्त नहीं होता है। अतः राजभ्याम् यह रूप ही सिद्ध हो जाता है।

इस सूत्र से नियम करने के कारण राजाश्वः में नकार का लोप असिद्ध नहीं होता है। अतः यहां राज्ञः अश्वः इस विग्रह में राजन् अश्वः बन गया नकार का लोप करने पर राज अश्व हो गया, अकः सवर्णे दीर्घः इस सूत्र से दीर्घ करने पर राजाश्व बन गया। तत्पश्चात् सुबुत्पत्ति सकार को रुत्व विसर्ग करने पर राजाश्वः यह रूप सिद्ध होता है। सवर्ण दीर्घ विधि के सुब्विधि में अन्तर्भाव न होने के कारण उसकी कर्तव्यता में नकार का लोप असिद्ध नहीं होता है। अतः सवर्ण दीर्घ होगा ही।

ध्यान दें:

पाठगत प्रश्न-2

9. राजन् स् इस स्थिति में कौन-सा सूत्र पहले प्रवृत्त होता है?
10. सम्बोधन में राजन् शब्द के नकार का लोप क्यों नहीं होता है?
11. न ङिसम्बुद्ध्योः इस सूत्र का अर्थ लिखो?
12. राज भ्याम् इस अवस्था में सुपि च यह सूत्र क्यों नहीं प्रवृत्त होता है?
13. नलोपः सुप्स्वरसंज्ञातुग्विधिषु कृति इस सूत्र का अर्थ लिखो?
14. राजन् शब्द के सप्तमी के एकवचन में कौन-से दो रूप होते हैं?
15. नलोपः सुप्स्वरसंज्ञातुग्विधिषु कृति इस सूत्र में नियमकरण से क्या नहीं होता है?

मघवत् शब्द-

मह पूजायाम् यह धातु है। मह्यते पूज्यते इस अर्थ में कनिन् प्रत्यय मघवन् शब्द निष्पन्न होता है।

इन्द्रो मरुत्वान् मघवा विडौजाः पाकशासनः। वृद्धश्रवाः सुनासीरः पुरूहूतः पुरन्दरः। इस अमरकोश के वचनानुसार मघवन् शब्द इन्द्र का वाचक है।

16.12 - मघवा बहुलम्। 6.4.128

सूत्रार्थ - मघवन् शब्द के स्थान पर विकल्प से तृ अन्तादेश होता है।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से तृ अन्तादेश होता है। अतः यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में दो पद है। मघवा षष्ठी के अर्थ में प्रथमा विभक्ति, बहुलम् प्रथमान्त पद है। अर्वणस्त्रसावनः इस सूत्र से तृ यह प्रथमान्त पद अनुवर्तित होता है। वस्तुतः यहां प्रथमा विभक्ति का लुक् विधान किया गया है। तृ का ऋकार अनुनासिक है। अतः उपदेशेऽजनुनासिक इत् इस सूत्र से इत्संज्ञा होती है। सूत्रार्थ सम्पन्न होता है - मघवन् शब्द के स्थान पर विकल्प से तृ यह अन्तादेश होता है।

यह आदेश अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा के द्वारा मघवन् शब्द के नकार के स्थान पर यह अनेकाल् आदेश होता है। यद्यपि इस आदेश के अनेकाल् होने के कारण अनेकाल्शित्सर्वस्य इस सूत्र से सम्पूर्ण मघवन् के स्थान पर आदेश प्राप्त होता है। फिर भी नानुबन्धकृतमनेकाल्त्वम् इस परिभाषा के प्राबल्य से सर्वादेश नहीं होता है। परिभाषा का अर्थ है- अनुबन्ध से युक्त कोई आदेश अनेकाल् नहीं होता है।

सूत्रार्थ समन्वय- मघवन् शब्द के नकार के स्थान पर प्रस्तुत सूत्र से विकल्प से तृ आदेश, अनुबन्धलोप, मघवत् शब्द निष्पन्न होता है। अर्थात् जिस पक्ष में तृ आदेश नहीं होता है। उस पक्ष में मघवन् शब्द रहता है।

मघवत् शब्द से प्रथमा के एकवचन की विवक्षा में सुप्रत्यय, अनुबन्ध लोप, मघवत् स् इस स्थिति में अगला सूत्र प्रवृत्त होता है।

ध्यान दें:

16.13 - उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः। 7.1.70

सूत्रार्थ - धातु से भिन्न उगित् तथा नलोप वाले अंचु धातु को नुम् का आगम होता है, सर्वनाम स्थान परे रहते।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से नुम् का आगम किया जाता है अतः यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में उगिदचाम् सर्वनामस्थाने अधातोः ये तीन पद है। उगिदचां षष्ठी बहुवचनान्त पद है। सर्वनामस्थाने सप्तम्यन्त पद है। अधातोः षष्ठी का एकवचन है। इदितो नुम् धातोः से नुम् इस प्रथमान्त पद की अनुवृत्ति होती है। उगिदचाम् इस पद में बहुव्रीहि गर्भेतरेतरयोग द्वन्द्व समास है। उक् इत् येषां ते उगितः बहुव्रीहि समास। उगितश्च अच् च इतरेतर योग द्वन्द्वः उगिदचः तेषाम् उगिदचाम्। सूत्रार्थ होता है- सर्वनामस्थान यानि सु औ जस् अम् औट् इन पांच प्रत्ययों के परे रहते धातु से भिन्न उगित (इ, उ, ऋ, लृ इत् है जिसके) तथा नलोपवाले अंचु धातु के स्थान पर नुम् का आगम होता है।

इस सूत्र में अच् शब्द से अच्प्रत्याहार नहीं स्वीकृत किया जाता है। बल्कि अच्पद के द्वारा नलोपवाले अंचु। गतिपूजनयोः धातु का ग्रहण होता है। अधातोः इस पद का विशेषण उगित् ही होगा न कि अंचु धातु क्योंकि जो स्वयं धातु है उसका अधातु विशेषण नहीं हो सकता।

जिस शब्द में उकार, ऋकार, लृकार, इत्संज्ञक हो लेकिन वह शब्द धातुसंज्ञक नहीं हो तो उस शब्द के स्थान पर तथा नलोप अंचु धातु के स्थान पर नुम् आगम होता है। नुम् का मकार हलन्त्यम् से इत्संज्ञक है। उकार उच्चारणार्थक है। इस कारण से नकारमात्र अवशेष रहता है। अतः मिदचोऽन्त्यात्परः से अन्तिम अच् से पर में नुम् का आगम होता है।

सूत्रार्थ समन्वय - मघवत् स् इस स्थिति में मघवत् यह उगित् है। क्योंकि नकार के स्थान पर मघवा बहुलम् इस सूत्र से तृ आदेश हुआ है। तृ का ऋकार इत्संज्ञक है। ऋकार उक् प्रत्याहार में आता है। सुप्रत्यय सुडनपुंसकस्य से सर्वनाम स्थान संज्ञक है। उसके पर में रहते प्रस्तुत सूत्र से सर्वनाम स्थान संज्ञक है। उस सर्वनाम स्थान संज्ञक सुप्रत्यय के परे रहते मघवत् शब्द को प्रस्तुत सूत्र से नुमागम अन्तिम अच् से पर में होता है। जिस कारण से मघव न् त् स् हो गया। तत्पश्चात् हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् इस सूत्र से अपृक्तसंज्ञक सकार का लोप, मघवन् त् इस अवस्था में संयोगान्तस्य लोपः इस सूत्र से तकार का लोप करने पर मघवन् बन गया, प्रत्यय लक्षण से सुप्रत्यय पर में है तो उसे मानकर सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ से मघवन् में उपधा दीर्घ करने पर मघवान् यह रूप सिद्ध हो जाता है।

मघवत् शब्द से प्रथमा के द्विवचन में औ प्रत्यय, औ प्रत्यय, मघवत् औ इस स्थिति में प्रस्तुत सूत्र से नुम् आगम, अनुबन्धलोप, मघव न् त् औ बन गया। नश्चापदान्तस्य झलि इस सूत्र से नकार को अनुस्वार मघवं त् औ बन गया। अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः इस सूत्र से परसवर्ण नकार करने पर मघवन्तौ यह रूप सिद्ध हो जाता है।

मघवत् शब्द से सम्बोधन एकवचन की विवक्षा में सुप्रत्यय, अनुबन्धलोप, मघवत् स् बन गया। उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः से नुमागम, अनुबन्धलोप, मघवन् त् स् इस स्थिति में हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात इस सूत्र से अपृक्तसंज्ञक सकार का लोप, मघवन् त् बन गया, संयोगान्तस्य लोपः इस सूत्र से संयोग के अन्त में स्थित तकार का लोप हो जाता है। तो मघवन् यह रूप सिद्ध हो जाता है। यहां सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ इस सूत्र से उपधा को दीर्घ नहीं होता है क्योंकि असम्बुद्धौ यह निर्देश होने के कारण से। यहां सुप्रत्यय एकवचनं सम्बुद्धिः से सुप्रत्यय सम्बुद्धि संज्ञक है। अतः मघवन् यही रूप रहता है।

ध्यान दें:

मघवत् शब्द से तृतीया के द्विवचन में भ्याम् प्रत्यय, मघवत् भ्याम् इस स्थिति में झलां जशोऽन्ते से तकार के स्थान पर जश्त्व दकार करने पर मघवद्भ्याम् यह रूप सिद्ध हो जाता है।

भ्यस् प्रत्यय में भी इसी सूत्र से तकार को दकार करने पर मघवद्भ्यः यह रूप बनता है।

मघवत् शब्द से सुप् प्रत्यय, वर्ण सम्मेलन मघवत्सु यह रूप सिद्ध होता है।

मघवा बहुलम् इस सूत्र से तृ आदेश विकल्प से विधान किया जाता है। उसके अभाव पक्ष में सर्वनाम स्थानसंज्ञक प्रत्यय परे रहते राजन् शब्द के समान रूप होते हैं।

मघवन् शब्द से द्वितीया बहुवचन की विवक्षा में शस् प्रत्यय अनुबन्ध लोप, मघवन् अस् इस स्थिति में अगला सूत्र प्रवृत्त होता है।

16.14 - श्वयुवमघोनामतद्धिते 6.4.133

सूत्रार्थ - अन् अन्त वाले भसंज्ञक को सम्प्रसारण होता है। तद्धित भिन्न प्रत्यय परे रहते।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से सम्प्रसारण होता है। अतः यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में श्वयुवमघोनाम् अतद्धिते ये दो पद है। अल्लोपोऽनः इस सूत्र से अनः यह षष्ठ्यन्त पद अनुवर्तित होता है। अनाम् यह वचन विपरिणाम से अन्वित होता है। भस्य इस सूत्र का अधिकार है। उसका वचनविपरिणाम करने से भानाम् हो जाता है। वसोः सम्प्रसारणं इस सूत्र से सम्प्रसारणं यह प्रथमान्त विधेय पद अनुवर्तित होता है। श्वा च युवा च मघवा च इस विग्रह में इतरेतरयोग द्वन्द्व करने पर श्वयुवमघवानः तेषां श्वयुवमघोनाम्। न तद्धितः अतद्धितः तस्मिन् अतद्धिते नं तत्पुरुष समास। अतद्धितप्रत्यय से तद्धितभिन्न तद्धित के समान प्रत्यय का ग्रहण होता है। अनाम् यह पद भानाम् का विशेषण है। विशेषण होने के कारण से तदन्तविधि के द्वारा अन्नन्त यह अर्थ प्राप्त होता है। सूत्रार्थ होता है। अन्नन्त भसंज्ञक श्वन् युवन्, मघवन् इन शब्दों से तद्धितभिन्न प्रत्यय परे रहते सम्प्रसारण होता है यह सूत्रार्थ है। नं दो प्रकार का होता है। पर्युदास और प्रसज्य। इस सूत्र में पर्युदास अर्थ वाला नं स्वीकृत है। जिसका तात्पर्य है उससे भिन्न तथा उसके सदृश्।

सूत्रार्थ समन्वय - मघवन् अस् इस स्थिति में। यहां मघवन् शब्द अन्नन्त है। यचि भम् से भसंज्ञा, यहां पर तद्धित से भिन्न शस् प्रत्यय पर में भी है। अतः प्रस्तुत सूत्र से मघवन् शब्द के वकार को सम्प्रसारण उकार मघ उ अन् अस् इस स्थिति में सम्प्रसारणाच्च से उकार और अकार के स्थान पर पूर्व रूप मघ उन् अस् इस स्थिति में आद् गुणः से अकार और उकार के स्थान पर ओकार गुण आदेश करने पर मघोनस् बन गया। सकार को रुत्व विसर्ग करने पर मघोनः यह रूप सिद्ध होता है।

इस प्रकार भसंज्ञा स्थल में सभी जगह इसी सूत्र से सम्प्रसारण होता है। अन्यत्र भ्यामादिप्रत्ययस्थल में राजन् शब्द की तरह नकार का न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य से नलोप होता है।

पाठगत प्रश्न-3

16. उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः इस सूत्र का अर्थ लिखो?

17. उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः इस सूत्र में अच् इससे किसका ग्रहण होता है?

18. मघवा बहुलम् इस सूत्र से क्या होता है?

19. मघोनः में सम्प्रसारण किस सूत्र से होता है?

20. मघवन् शब्द के प्रथमा के एकवचन में कौन-से दो रूप होते हैं?

पाठ-16

हलन्त प्रकरण में इदम् राजन् इत्यादि शब्दों के रूप

ध्यान दें:

युवन् शब्द

यु मिश्रणामिश्रणयो: इस धातु से कनिन् प्रत्यय, युवन् शब्द निष्पन्न होता है। युवन् शब्द का अर्थ होता है युवा या श्रेष्ठ। सर्वनामस्थानसंज्ञक प्रत्यय परे रहते राजन् शब्द के तरह रूप होते हैं।

राजन् अस् इस स्थिति में श्वयुवमघोनामतद्धिते इस सूत्र से वकार को सम्प्रसारण उकार परे रहते यु उ अन् अस् हो गया। सम्प्रसारणाच्च से पूर्वरूप करने पर यु उन् अस् यह स्थिति बन गयी। तत्पश्चात् अक: सवर्णे दीर्घ: इस सूत्र से दोनों उकार के स्थान पर सवर्ण दीर्घ करने पर यून् अस् यह स्थिति बन गयी। इस स्थिति में श्वयुवमघोनामतद्धिते इस सूत्र से पुन: यकार के स्थान पर सम्प्रसारण इकार प्राप्त होता है। परन्तु यह करना अभीष्ट नहीं है। तब अगला सूत्र प्रवृत्त होता है।

16.15 - न सम्प्रसारणे सम्प्रसारणम् । 6.1.37

सूत्रार्थ - सम्प्रसारण परे रहते पूर्व के यण् को सम्प्रसारण नहीं होता है।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से सम्प्रसारण का निषेध होता है। अत: यह निषेध सूत्र है। इस सूत्र में न सम्प्रसारणे, सम्प्रसारणम् ये तीन पद हैं। न अव्यय पद है। सम्प्रसारणे सप्तमी का एकवचन है। सम्प्रसारणम् प्रथमान्त पद है। यहां सम्प्रसारणे में सप्तमी के निर्देश के कारण से तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य इस परिभाषा से पूर्वस्य यह पद उपस्थित होता है। सूत्रार्थ होता है- सम्प्रसारण करने पर पूर्व यण् को सम्प्रसारण नहीं होता है।

सूत्रार्थ समन्वय- यून् अस् इस स्थिति में यकार को सम्प्रसारण प्राप्त होता है। जिसका प्रस्तुत सूत्र से निषेध हो जाता है क्योंकि युवन् अस् इस स्थिति में वकार को पहले सम्प्रसारण हुआ है। अत: एक बार वकार को सम्प्रसारण रूप कार्य हुआ है। अत: पुन: पूर्व यण् यकार का सम्प्रसारण प्रस्तुत सूत्र से निषेध होता है। वर्ण सम्मेलन यून: यह रूप सिद्ध होता है।

विचार- अब यह शंका उत्पन्न होती है कि युवन् अस् इस स्थिति में श्वयुवमघोनामतद्धिते इस सूत्र से यकार का भी सम्प्रसारण प्राप्त होता है वकार का भी। किसका सर्म्प्रसारण पहले होना चाहिए तथा किसका बाद में। अत: पहले यकार को सम्प्रसारण कर दिया जाए, तत्पश्चात् वकार को न सम्प्रसारणे सम्प्रसारणम् सूत्र से सम्प्रसारण का निषेध भी नहीं करना पड़ेगा। अत: समाधान रूप में यह कहा जाता है कि पहले यदि पूर्व को सम्प्रसारण कर दिया जाए तो यह सूत्र व्यर्थ हो जाएगा क्योंकि सूत्र का अर्थ है- सम्प्रसारण करने पर पूर्व के यण् को सम्प्रसारण नहीं होता है। यदि पहले आदि के ही यण् का सम्प्रसारण कर दिया जाए तो यह सूत्र कैसे प्रवृत्त होगा? अत: यह सूत्र व्यर्थ होकर ज्ञापित करता है कि पर में विद्यमान यण् को ही पहले सम्प्रसारण होता है। इस प्रकार के नियम के कारण पर में विद्यमान यण् वकार को सम्प्रसारण होता है। तत्पश्चात् उकार सम्प्रसारण के परे रहते यकार को प्राप्त सम्प्रसारण का इस सूत्र से निषेध हो जाता है।

पथिन् शब्द

पतन्ति गच्छन्ति जना : यत्र स इस विग्रह में पतस्थश्च इस उणादि सूत्र से इनिप्रत्यय, तथा तकार के स्थान पर थकार आदेश पथिन् शब्द निष्पन्न होता है। पथिन् शब्द का अर्थ होता है- मार्ग। जैसा कि अमरकोश के भूमिवर्ग में कहा गया है- अयनं वर्त्म मार्गाध्वपन्थान: पदवी सृति: (श्लोक सं. 14)

पथिन् शब्द से प्रथमा के एकवचन की विवक्षा में सु प्रत्यय, अनुबन्धलोप, पथिन् स् इस स्थिति में अगला सूत्र प्रवृत्त होता है-

ध्यान दें:

16.16 - पथिमथ्यृभुक्षामात् 7.1.85

सूत्रार्थ - इनके स्थान पर आकार होता है, सु परे रहते।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से आकार अन्तादेश होता है। अतः यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में पथिमथ्यृभुक्षाम् आत् ये दो पद है। पथिमथ्यृभुक्षाम् षष्ठी का बहुवचन है। आत् प्रथमा का एकवचन है। पन्थाश्च मन्थाश्च ऋभुक्षाश्च इस विग्रह में इतरेतर योग द्वन्द्व समास करने पर पथिमथ्यृभुक्षाणः तेषां पथिमथ्यृभुक्षाम्। सूत्रार्थ होता है- सुप्रत्यय पर में हो तो उससे पूर्व में विद्यमान पथिन् मथिन् ऋभुक्षिन् शब्दों के स्थान पर आकार अन्त्यादेश होता है। यह अन्त्यादेश अर्थ अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा सूत्र से आता है। अतः यह आदेश अन्तिम अल् नकार के ही स्थान पर होता है।

सूत्रार्थ समन्वय- पथिन् स् इस स्थिति में सुप्रत्यय पर में रहते पूर्व में विद्यमान पथिन् शब्द का जो अन्तिम अल् नकार उसके स्थान पर आकार करने पर पथि आ बन गया। तत्पश्चात् अग्रिम सूत्र प्रवृत्त होता है।

16.17- इतोऽत् सर्वनामस्थाने 7.1.86

सूत्रार्थ - पथिन् आदि के इकार के स्थान पर अकार आदेश होता है। सर्वनाम स्थान परे रहते।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से अकार रूप आदेश होता है। अतः यह एक विधि सूत्र है। इस सूत्र में इतः अत् सर्वनामस्थाने ये तीन पद है। इतः षष्ठ्यन्त पद है अत् प्रथमान्त तथा सर्वनामस्थाने सप्तमी का एकवचन है। पथिमथ्यृभुक्षामात् इस सूत्र से पथिमथ्यृभुक्षाम् यह षष्ठ्यन्त पद अनुवर्तित होता है। सूत्रार्थ सम्पन्न होता है- सर्वनामस्थानसंज्ञक प्रत्यय परे रहते पथिन् मथिन् ऋभुक्षिन् इन तीनों शब्दों के इकार के स्थान पर अकार आदेश होता है। इस सूत्र में इतः और अतः दोनों जगह तपरकरण मुख सुखार्थ है।

उदाहरण - पथि आ स् इस स्थिति में सु सर्वनामस्थानसंज्ञक है। उसके परे रहते पथिन् शब्द के अवयव इकार के स्थान पर प्रस्तुत सूत्र से हऊस्व अकार आदेश होता है। जिसके कारण पथ् अ आ स् बन गया। इस स्थिति में अगला सूत्र प्रवृत्त होता है।

16.18- थो न्थः 7.1.87

सूत्रार्थ - पथिन् और मथिन् के थकार के स्थान पर न्थ आदेश होता है सर्वनाम स्थान परे रहते।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से न्थ आदेश होता है। अतः यह एक विधिसूत्र है। यहां पर थः न्थः ये दो पद है। थः षष्ठी का एकवचन है। न्थः प्रथमान्त पद है। यहां अकार उच्चारणार्थक है। पथिमथ्यृभुक्षामात् इस सूत्र से पथिमथिपद का अनुवर्तन होता है। ऋभुक्षि का ग्रहण नहीं होता है उसमें थकार के असम्भव होने के कारण से। इतोऽत्सर्वनामस्थाने इस सूत्र से सर्वनामस्थाने यह सप्तम्यन्त पद अनुवृत्त होता है। सूत्रार्थ सम्पन्न होता है। पथिन् और मथिन् शब्द के थकार के स्थान पर न्थ आदेश होता है। सर्वनामस्थान प्रत्यय परे रहते। न्थः का अकार उच्चारणार्थक है।

सूत्रार्थ समन्वय - पथ् अ आ स् इस स्थिति में। यहां सर्वनाम स्थान संज्ञक प्रत्यय है सु उसके पर में रहते प्रस्तुत सूत्र से पथिन् शब्द के अवयव थकार के स्थान पर न्थ आदेश पन्थ् अ आ स् अकः सवर्णे दीर्घः से सवर्ण दीर्घ करने पर पन्थास् बन गया। सकार को रुत्व विसर्ग करने पर पन्थाः यह रूप सिद्ध हो जाता है।

ध्यान दें:

पथिन् शब्द से द्वितीया के बहुवचन में शस् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, पथिन् अस् यह स्थिति बन गयी। यहां शस् प्रत्यय सर्वनाम स्थान संज्ञक नहीं है। अतः उसके परे रहते इतोऽत् सर्वनामस्थाने, सर्वनामस्थाने चाऽसम्बुद्धौ ये दोनों सूत्र प्रवृत्त नहीं होते हैं। अतः अग्रिम सूत्र प्रवृत्त होता है।

16.19 - भस्य टेर्लोपः । 7.1.88

सूत्रार्थ - भसंज्ञक पथिन् आदि के टिसंज्ञक का लोप होता है।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से टिसंज्ञक का लोप होता है। अतः यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में भस्य टेः लोपः ये तीन पद है। भस्य टेः दोनों पद षष्ठी का एकवचन है। लोपः प्रथमान्त पद है। पथिमथ्यृभुक्षामात् इस सूत्र से पथिमथ्यृभुक्षाम् यह षष्ठ्यन्त पद अनुवर्तित होता है। सूत्रार्थ होता है- भसंज्ञक पथिन् शब्द, मथिन् शब्द तथा ऋभुक्षिन् शब्दों के टि भाग का लोप होता है।

सूत्रार्थ समन्वय - पथिन् अस् इस स्थिति में यचि भम् से पथिन् की भसंज्ञा, अतः प्रस्तुत सूत्र से टिभाग इन् का लोप होने से पथ् अस् बन गया सकार को रुत्व विसर्ग करने पर पथः यह रूप सिद्ध हो जाता है।

भ्यामादि विभक्तियों में जहां पर स्वादिष्वसर्वनामस्थाने से पद संज्ञा होती है। वहां नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य से न का लोप हो जाता है।

पाठगत प्रश्न-4

21. न सम्प्रसारणे सम्प्रसारणम् इस सूत्र का अर्थ लिखो?
22. न सम्प्रसारणे सम्प्रसारणम् सूत्र से क्या ज्ञापन होता है?
23. पथिन् में इकार को आकार किस सूत्र से होता है?
24. इतोऽत्सर्वनामस्थाने सूत्र का अर्थ लिखो?
25. पथिन् शब्द के थकार के स्थान पर न्थ आदेश कब होता है?
26. भस्य टेर्लोपः इस सूत्र का एक उदाहरण लिखो?

पञ्चन् शब्द

पञ्चन् शब्द नकारान्त संख्या वाचक नित्यबहुवचनान्त पद है। अतः उसके एकवचन और द्विवचन में रूप नहीं होते हैं। तीनों लिंगों में समान रूप होते हैं।

पञ्चन् शब्द से प्रथमा बहुवचन की विवक्षा में जस् प्रत्यय, अनुबन्ध लो, पञ्चन् अस् बन गया। इस अवस्था में अगला सूत्र प्रवृत्त होता है।

16.20 ष्णान्ता षट्। 1.1.24

सूत्रार्थ - षकारान्त और नकारान्त संख्या की षट्संज्ञा होती है।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से षट् संज्ञा होती है। अतः यह एक संज्ञा सूत्र है। यहां ष्णान्ता षट् ये

ध्यान दें:

दो पद प्रथमान्त है। बहुगणवतुडति संख्या इस सूत्र से संख्या यह प्रथमान्त पद अनुवर्तित होता है। ष्णान्ता में द्वन्द्वगर्भ बहुव्रीहि समास। ष् च नश्च तयोः इतरेतर योग द्वन्द्व समास ष्णौ नकार के बाद का अकार उच्चारणार्थक है। यहां ष्टुना ष्टुः से नकार को णकार होता है। ष्णौ अन्तौ यस्याः सा इस विग्रह में बहुव्रीहि समास करने पर ष्णान्ता यह रूप बनता है। सूत्रार्थ सम्पन्न होता है- षकारान्त और नकारान्त संख्या की षट् संज्ञा होती है।

सूत्रार्थ समन्वय - पञ्चन् शब्द संख्या वाचक और नकारान्त है अतः इस सूत्र से पञ्चन् शब्द की षट् संज्ञा होती है। षट्संज्ञा के फलस्वरूप पञ्चन् शब्द से पर में विद्यमान जस् प्रत्यय का षड्भ्यो लुक् से लुक् हो जाता है। तत्पश्चात् न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य से नकार का लोप करने पर पञ्च यह रूप बन जाता है।

इसी प्रकार से भिस् आदि प्रत्ययों में पञ्चन् शब्द की स्वादिष्वसर्वनामस्थाने इस सूत्र से पद संज्ञा होती है। तत्पश्चात् नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य से लोप होता है।

पञ्चन् शब्द से षष्ठी बहुवचन की विवक्षा में आम् प्रत्यय, पञ्चन् आम् इस स्थिति में पञ्चन् शब्द की षट्संज्ञा होने के कारण से षट्चतुर्भ्यश्च से आम् को नुट् आगम होता है। नुट् आगम में नकार अवशेष रहता है। नुट् आगम टित् है। अतः आद्यन्तौ टकितौ इस परिभाषा से आम् का आद्यावयव होता है। अतः पञ्चन् न् आम् बन गया तब अगला सूत्र प्रवृत्त होता है।

16.21 नोपधायाः। 6.4.7

सूत्रार्थ - नकारान्त की उपधा को दीर्घ होता है नाम् परे रहते।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से दीर्घ होता है। अतः यह षड्विध पाणिनीय सूत्रों में विधि सूत्र है।

इस सूत्र में न उपधायाः ये दो पद है। न लुप्तषष्ठ्यन्त पद है। उपधायाः षष्ठी का एकवचन है। ढऊलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः इस सूत्र से दीर्घः इस प्रथमान्त पद की अनुवृत्ति होती है। नामि सूत्र से नामि इस सप्तम्यन्त पद की अनुवृत्ति होती है। अङ्गस्य इस सम्पूर्ण सूत्र का अधिकार है। न यह पद अङ्गस्य का विशेषण है। अतः येन विधिस्तदन्तस्य इस परिभाषा के द्वारा तदन्त विधि के द्वारा नान्त उपधा को यह अर्थ प्राप्त होता है। अतः सूत्रार्थ सम्पन्न होता है- नान्त अङ्ग के उपधा को दीर्घ होता है नाम् परे रहते।

सूत्रार्थ समन्वय- पञ्चन् नाम् इस स्थिति में पञ्चन् नकारान्त अङ्ग है उससे पर में नाम् है। अतः नाम् परे रहते प्रस्तुत सूत्र से उपधा में विद्यमान चकार के उत्तरवर्ती अकार को दीर्घ करने पर पञ्चान् नाम् बन गया स्वदिष्वसर्वनामस्थाने इस सूत्र से पञ्चान् की पद संज्ञा न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य से नकार का लोप पञ्चनाम् यह रूप सिद्ध होता है।

विशेष - पञ्चन् नाम् में नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य से नलोप प्राप्त होता है। परन्तु पूर्वत्रासिद्धम् इस सूत्र के प्रभाव से नामि सूत्र की दृष्टि में नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य यह सूत्र असिद्ध है। उसके असिद्ध होने के कारण नामि से दीर्घ नहीं प्राप्त रहता है। अतः इस सूत्र का आरम्भ हुआ है।

अष्टन् शब्द

यह शब्द नकारान्त संख्या वाचक तथा नित्यबहुवचनान्त है। अष्टन् शब्द से प्रथमा बहुवचन की विवक्षा में जस् प्रत्यय अनुबन्ध लोप जस् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, अष्टन् अस् इस स्थिति में अग्रिम सूत्र प्रवृत्त होता है।

ध्यान दें:

16.22 - अष्टन आ विभक्तौ। 7.2.84

सूत्रार्थ - अष्टन् शब्द को आत्व विकल्प से होता है, हलादि विभक्ति परे रहते।

सूत्र व्याख्या - छः प्रकार के पाणिनीय सूत्रों में यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से आकार का विधान होता है। इस सूत्र में अष्टन आ विभक्तौ ये तीन पद है। अष्टनः षष्ठी का एकवचन है। आ प्रथमा का एकवचन है विभक्तौ सप्तमी का एकवचन है। रायो हलि इस सूत्र से हलि यह सप्तम्यन्त पद अनुवर्तित होता है। जो कि विभक्तौ का विशेषण है अतः यस्मिन् विधिस्तदादावल्ग्रहणे इस परिभाषा से तदादिविधि करने पर हलादि विभक्ति परे रहते यह अर्थ होता है। सूत्रार्थ होता है- हलादि विभक्ति परे रहते अष्टन् शब्द को आकार आदेश होता है। यह आकार अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा के द्वारा अष्टन् शब्द के अन्तिम अल् नकार के स्थान पर आकार आदेश होता है।

विशेष - इस सूत्र से जो आत्व का विधान होता है। वह विकल्प से होता है। अष्टनो दीर्घात् इस सूत्र में दीर्घ ग्रहण के सामर्थ्य से क्योंकि यदि अष्टन आ विभक्तौ से यदि आकार नित्य से होता तो सभी जगह दीर्घ प्राप्त होता उसकी व्यावृत्ति के लिए। दीर्घ ग्रहण करना व्यर्थ हो जाता। परन्तु आकार आदेश के वैकल्पिक होने पर आत्व के अभाव पक्ष में अष्टभिः के व्यावृत्ति के लिए दीर्घग्रहण सार्थक है। अतः अष्टनो दीर्घात् इस सूत्र में दीर्घग्रहण अष्टन् के आत्व के विकल्प में ज्ञापक है।

यह सूत्र हलादि विभक्तियों के पर में रहते ही प्रवृत्त होता है। जस् और शस् प्रत्यय के अनुबन्ध लोप अस् हो गया। अतः यह अजादि है। तो यहां पर यह सूत्र प्रवृत्त नहीं होता है। अतः अगला सूत्र प्रवृत्त होता है।

16.23 - अष्टाभ्य औश् 7.1.21

सूत्रार्थ - कृत आकार अष्टन् शब्द से पर में विद्यमान जस् और शस् के स्थान पर औश् आदेश होता है।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से औश् आदेश होता है। अतः यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में अष्टाभ्यः औश् ये दो पद है। अष्टाभ्यः यह पद अष्टाप्रकृतिकपंचम्यन्त पद है। अष्टन् शब्द से पञ्चमी के बहुवचन में अष्टाभ्यः अष्टभ्यः ये दो रूप होते हैं। परन्तु इस सूत्र में अष्टन् शब्द के पञ्चमी बहुवचन में जो रूप अष्टभ्यः रूप भी बनता है उसका ग्रहण नहीं होता है। बल्कि पञ्चमी बहुवचन में जो अष्टाभ्यः यह रूप बनता है उसका ग्रहण होता है। अष्टन् शब्द को आकार करने के बाद अष्टा का अनुकरण है। औश् प्रथमान्त विधेयबोधक पद है। जश्शसोः शिः इस सूत्र से जश्शसोः यह षष्ठी द्विवचनान्त पद अनुवर्तित होता है। सूत्रार्थ होता है- कृताकार अष्टन् शब्द से पर में विद्यमान जस् शस् के स्थान पर औश् आदेश होता है।

औश् इस आदेश में औकार मात्र अवशेष रहता है। यह आदेश शित् है अतः अनेकाल्शित्सर्वस्य से सम्पूर्ण जस् और शस् के स्थान आदेश होता है।

विचार - यहां यह शङ्का उत्पन्न होती है- अष्टन आ विभक्तौ इस सूत्र से हलादि विभक्ति पर में रहते अष्टन् शब्द के नकार को आकार हुआ है। जस् और शस् प्रत्यय अनुबन्धलोप करने के बाद अजादि ही है। अतः अजादि विभक्ति के परे रहते अष्टन् शब्द के स्थान पर आकार अन्तादेश किसी भी प्रकार से सम्भव नहीं है। यदि सम्भव नहीं है तो फिर अष्टाभ्य औश् इस सूत्र से जश् और शस् के स्थान पर औश् आदेश कैसे होता है? इसका उत्तर है- अष्टभ्यः कहना चाहिए था आत्वयुक्त निर्देश जस् और

ध्यान दें:

शस् के विषय में आत्व का ज्ञापन करता है। इसका तात्पर्य यह है कि यदि सूत्रकार आकारादेश रहित अष्टन् शब्द से पर में जस् और शस् को औश् आदेश करना होता तो अष्टनो दीर्घात् अष्टन आ विभक्तौ इन सूत्रों के तरह अष्टाभ्य औश् के स्थान पर अष्टभ्य औश् यही सूत्र बनाते एकमात्रा का लाघव भी होता। जैसा कि यह कथन प्रसिद्ध है- अर्धमात्रालाघवेन पुत्रोत्सवं मन्यन्ते वैयाकरणाः अर्थात् एक मात्रा के लाघव होने पर वैयाकरण लोग पुत्र प्राप्ति का उत्सव मनाते हैं। इस प्रकार अष्टभ्य औश् कहने के स्थान पर कृताकार अष्टाभ्यः का ग्रहण यह ज्ञापित करता है कि जस् और शस् के विषय में भी आत्व होता है।

अतः यह सिद्धान्त आता है कि जस् और शस् परे रहते अष्टन् शब्द को आकारान्तादेश विधान में स सूत्र क्या नहीं होता है। केवल अष्टाभ्यः औश् इस सूत्र में आत्वनिर्देश होने से वहां भी आत्व होता है यह ज्ञापित होता है।

सूत्रार्थ समन्वय - अष्टन् जस् इस स्थिति में। यहां अष्टाभ्य औश् इस सूत्र में आत्व निर्देश होने के कारण अष्टन् शब्द के स्थान पर आकार अन्तादेश, करने पर अष्ट आ अस् तत्पश्चात् अष्टाभ्य औश् इस सूत्र से जस् के स्थान पर औश् आदेश अनुबन्ध लोप, अकः सवर्णे दीर्घः अकार और आकार के स्थान पर से दीर्घ एकादेश करने पर अष्टा औ बन गया। तत्पश्चात् वृद्धिरेचि से आकार और औकार के स्थान पर वृद्धि एकादेश करने पर अष्टौ यह रूप सिद्ध हो जाता है।

अष्टन् शब्द से हलादि विभक्तियों भिस् भ्यस् के परे रहते अष्टन आ विभक्तौ से नकार के स्थान पर आत्व, सवर्ण दीर्घ करने पर अष्टा भिस् इस स्थिति में सकार को रुत्व विसर्ग करने पर अष्टाभिः, अष्टाभ्यः यह रूप सिद्ध हो जाता है।

अष्टन् शब्द से आम् प्रत्यय करने पर अष्टन् आम् इस स्थिति में। अष्टन् शब्द नकारान्त संख्यावाचक है अतः ष्णान्ता षट् सूत्र से षट् संज्ञक है। षट्चतुर्भ्यश्च से आम् को नुट् का आगम, अनुबन्ध लोप, नुट् के टित् होने के कारण आद्यावयव, अष्टन् नाम् बन गया, हलादि नाम् के परे रहते अष्टन आ विभक्तौ से नकार को आकार, सवर्ण दीर्घ करने पर अष्टानाम् यह रूप सिद्ध होता है।

अष्टन् शब्द से सप्तमी के। बहुवचन की विवक्षा में सुप् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, अष्टन् सु बन गया। अष्टन आ विभक्तौ से नकार के स्थान पर आकार सवर्ण दीर्घ आकार करने पर अष्टासु यह रूप सिद्ध हो जाता है। अष्टन आ विभक्तौ के वैकल्पिक होने के कारण जिस पक्ष में आत्व नहीं होता है, उस पक्ष में पंचन् शब्द के तरह रूप होते हैं।

आम् प्रत्यय में तो दोनों जगह अष्टानाम् ही बनता है। लेकिन प्रक्रिया में भेद परिलक्षित होता है।

पाठगत प्रश्न-5

27. षट् संज्ञा करने वाला सूत्र कौन-सा है?
28. पंचानाम् में दीर्घ किस सूत्र से होता है?
29. नोपधायाः सूत्र का अर्थ लिखो?
30. अष्टाभ्य औश् सूत्र का अर्थ लिखो?
31. अष्टन आ विभक्तौ इस सूत्र से विधीयमान कार्य के वैकल्पिक होने में क्या ज्ञापक है?
32. अष्टाभ्य औश इस सूत्र में अष्टाभ्यः इस आत्व निर्देश से क्या ज्ञापित होता है?

पाठ-16

हलन्त प्रकरण में इदम् राजन् इत्यादि शब्दों के रूप

ध्यान दें:

पाठ सार

इदम् शब्द का व्यवहार सन्निकटस्थ वस्तु को बतलाने के लिए किया जाता है। इस शब्द के विचार के समय कुछ विषय दृष्टिपथ में आते हैं। जैसे कि सुप्रत्यय पर में रहते इदम् शब्द के मकार के स्थान पर त्यदादीनाम: से मकार के स्थान पर अकार न हो जाए एतदर्थ मकार को मकार ही आदेश होता है। तत्पश्चात् इदम् के इद् भाग के स्थान पर अय् आदेश होता है। औ से लेकर शस् प्रत्यय तक कोई प्रत्यय पर में हो तो इदम् शब्द के दकार के स्थान पर मकार होता है। आप् प्रत्यय यानि टा प्रत्यय से लेकर सुप् प्रत्यय तक के परे रहत् इदम् के इद् भाग के स्थान पर अन् आदेश होता है। परन्तु हलादि विभक्ति के परे रहते इद् भाग का लोप होता है। इदम् शब्द से पर में भिस् के स्थान पर ऐस् आदेश नहीं होता है।

राजन् शब्द से प्रथमा एकवचन सुप्रत्यय परे रहते सकार का लोप होता है। नकार का भी नलोप: प्रातिपदिकान्तस्य इस सूत्र से लोप होता है। परन्तु सम्बोधन के एकवचन में सुप्रत्यय के पर में रहते, सुप्रत्यय के लोप होने पर नकार का लोप नहीं होता है। न ङिसम्बुद्ध्यो: इस सूत्र से निषेध हो जाता है। राजन् भिस् इस स्थिति में नलोप यद्यपि पूर्वत्रासिद्धम् इस सूत्र से असिद्ध होता है, तथापि नलोप: सुप्स्वरसंज्ञातुग्विधिषु कृति से उस असिद्धत्व का निषेध हो जाता है। अत: राजभि: में सुपि च यह सूत्र प्रवृत्त नहीं होता है।

मघवन् शब्द के नकार के स्थान पर विकल्प से तृ अन्त्यादेश, अत: दो शब्द होता है। मघवन् शब्द और मघवत् शब्द। जिस पक्ष में तृ आदेश होता है उस पक्ष में निष्पन्न मघवत् शब्द उगित् है। अत: उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातो: इस सूत्र से सर्वनामस्थान संज्ञक प्रत्यय पर में रहते नुम् का आगम होता है। जिस पक्ष मं तृ आदेश नहीं होता है। उस पक्ष में मघवन् शब्द उगित् नहीं होता है। अत: नुम् आगम नहीं होता है। तो मघवा यह रूप बनता है। दोनों जगह पर सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ से उपधा को दीर्घ होता है। तृत्व के पक्ष में भ्याम् आदि प्रत्ययों में झलां जशोऽन्ते से तकार को जश्त्व हो जाता है। तृत्व के अभाव पक्ष में भसंज्ञा के स्थल में वकार के स्थान पर श्वयुवमघोनामतद्धितें इस सूत्र से सम्प्रसारण होता है। भ्याम् आदि प्रत्ययों में तो न लोप: प्रातिपदिकान्तस्य इस सूत्र से नकार का लोप होता है।

पथिन् शब्द के विचार के अवसर पर देखा जाता है कि सुप्रत्यय परे रहते पथिन् शब्द के नकार के स्थान पर आकार रूप अन्तादेश हुआ है। सर्वनामस्थानसंज्ञक प्रत्यय परे रहते पथिन् शब्द के इकार के स्थान पर अकार अन्तादेश हुआ है। थकार के स्थान पर न्थ् आदेश होता है। भसंज्ञास्थल पर पथिन् शब्द के टिभाग का लोप हुआ है।

पंचन् शब्द के विचार में नकारान्त और षकारान्त संख्यावाचक शब्द की षट्संज्ञा होती है। षट्संज्ञा होने पर जस् और शस् का लुक्, षट्चतुर्भ्यश्च इस सूत्र से नुट् का आगम होता है। नामि इस सूत्र से नाम् परे रहते नकारान्त के उपधा को दीर्घ करने पर पंचानाम् यह रूप सिद्ध हो जाता है।

अष्टन् शब्द स्थल में अष्टन आ विभक्तौ इस सूत्र से विहित आत्व भिसादिहलादि विभक्ति परे रहते विकल्प से होता है। तत्पश्चात् अष्टाभ्य औश् इस सूत्र में अष्टाभ्य: यह कहने के स्थान पर कृत आत्व निर्देश के कारण जस् और शस् के विषय में भी आकार आदेश प्रवृत्त होता है। जिस पक्ष में आत्व नहीं होता है उस पक्ष में पंचन् शब्द के तरह रूप होते हैं।

योग्यता वृद्धि - इस पाठ में जिन शब्दों के रूप सिद्धि का विचार किया गया है। वे नीचे दिये गये हैं। शब्द रूपों को याद करने के लिए यह भाग छात्रों के उपकार के लिए होगा।

हलन्त प्रकरण में इदम् राजन् इत्यादि शब्दों के रूप

1- पुल्लिंग में इदम् शब्द के रूप-

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अयम्	इमौ	इमे
द्वितीया	इमम्	इमौ	इमान्
तृतीया	अनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पञ्चमी	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः	एषु

2- राजन् शब्द के रूप-

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	राजा	राजानौ	राजानः
द्वितीया	राजानम्	राजानौ	राज्ञः
तृतीया	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः
चतुर्थी	राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्यः
पञ्चमी	राज्ञः	राजभ्याम्	राजभ्यः
षष्ठी	राज्ञः	राज्ञोः	राज्ञाम्
सप्तमी	राज्ञि, राजनि	राज्ञोः	राजसु
सम्बोधन	हे राजन्	हे राजानौ	हे राजानौ

ध्यान दें:

ध्यान दें:

3-मघवन् शब्द के रूप-

1.1- तृ आदेश के पक्ष में

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मघवान्	मघवन्तौ	मघवन्तः
द्वितीया	मघवन्तम्	मघवन्तौ	मघवतः
तृतीया	मघवता	मघवद्भ्याम्	मघवद्भिः
चतुर्थी	मघवते	मघवद्भ्याम्	मघवद्भ्यः
पञ्चमी	मघवतः	मघवद्भ्याम्	मघवद्भ्यः
षष्ठी	मघवतः	मघवतोः	मघवताम्
सप्तमी	मघवति	मघवतोः	मघवत्सु
सम्बोधन	मघवन्	मघवन्तौ	मघवन्तः

1.2 तृत्वाभाव पक्ष में -

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मघवा	मघवानौ	मघवानः
द्वितीया	मघवानम्	मघवानौ	मघोनः
तृतीया	मघोना	मघवद्भ्याम्	मघवद्भिः
चतुर्थी	मघोने	मघवद्भ्याम्	मघवद्भ्यः
पञ्चमी	मघोनः	मघवद्भ्याम्	मघवद्भ्यः
षष्ठी	मघोनः	मघोनोः	मघोनाम्
सप्तमी	मघोनि	मघोनोः	मघवत्सु
सम्बोधन	हे मघवन	हे मघवानौ	हे मघवानः

ध्यान दें:

4-युवन् शब्द के रूप-

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	युवा	युवानौ	युवानः
द्वितीया	युवानम्	युवानौ	यूनः
तृतीया	यूना	युवभ्याम्	युवभिः
चतुर्थी	यूने	युवभ्याम्	युवभ्यः
पञ्चमी	यूनः	युवभ्याम्	युवभ्यः
षष्ठी	यूनः	यूनोः	यूनाम्
सप्तमी	यूनि	यूनोः	युवसु
सम्बोधन	हे युवन्	हे युवानौ	हे युवानः

5- पथिन् शब्द रूप-

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पन्थाः	पन्थानौ	पन्थानः
द्वितीया	पन्थानम्	पन्थानौ	पथः
तृतीया	पथा	पथिभ्याम्	पथिभ्यः
चतुर्थी	पथे	पथिभ्याम्	पथिभ्यः
पञ्चमी	पथः	पथिभ्याम्	पथिभ्यः
षष्ठी	पथः	पथोः	पथाम्
सप्तमी	पथि	पथोः	पथिषु
सम्बोधन	पन्थाः	पन्थानः	पन्थानः

पञ्चन् शब्द के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	-	-	पञ्च
द्वितीया	-	-	पञ्च
तृतीया	-	-	पथिभ्यः
चतुर्थी	-	-	पञ्चभ्यः
पञ्चमी	-	-	पञ्चभ्यः
षष्ठी	-	-	पञ्चानाम्
सप्तमी	-	-	पञ्चसु

पाठ-16

हलन्त प्रकरण में इदम् राजन् इत्यादि शब्दों के रूप

ध्यान दें:

अष्टन् शब्द के रूप-

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	(आत्वपक्ष)	अनात्वपक्ष
प्रथमा				अष्टौ	अष्ट
द्वितीया				अष्टौ	अष्ट
तृतीया				अष्टाभि:	अष्टभि:
चतुर्थी				अष्टाभ्य:	अष्टभ्य:
पञ्चमी				अष्टाभ्य:	अष्टभ्य:
षष्ठी				अष्टानाम्	अष्टानाम्
सप्तमी				अष्टासु	अष्टसु

पाठान्त प्रश्न

1. अयम् रूप की सिद्धि करो?
2. अनाप्यक: सूत्र का उदाहरण सहित व्याख्या लिखिए?
3. हलि लोप: सूत्र का उदाहरण सहित व्याख्या लिखिए?
4. अनर्थक में अलोऽन्त्यस्य परिभाषा प्रवृत्त नहीं होता है, उदाहरण स्पष्ट करो?
5. आद्यन्तवदेकस्मिन् इस सूत्र की उदाहरण पूर्वक व्याख्या कीजिए?
6. अस्मै रूप सिद्ध करो?
7. उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातो: सूत्र की व्याख्या करो?
8. नलोप सुप्स्वरसंज्ञातुग्विधिषु कृति इस सूत्र की व्याख्या करो?
9. मघोन: रूप सिद्ध करो?
10. न सम्प्रसारणे सम्प्रसारणम् सूत्र की व्याख्या करो?
11. यून: यह रूप सिद्ध करो?
12. पन्था: यह रूप सिद्ध करो?
13. पञ्चानाम् यह रूप सिद्ध करो?
14. अष्टन आ विभक्तौ इस सूत्र की व्याख्या करो?
15. अष्टाभ्य औश् सूत्र की व्याख्या करो?

ध्यान दें:

पाठगत प्रश्नोत्तर

उत्तर-1

1. त्यदादीनामः सूत्र का अपवाद है।
2. अपदान्त अकार से गुण परे रहते पर रूप एकादेश होता है।
3. दश्च इस सूत्र का अर्थ है इदम् के दकार के स्थान पर मकार होता है।
4. आप् इस पद के द्वारा प्रत्याहार लिया जाता है। जो कि टा के आकार से लेकर सुप् प्रत्यय के पकार तक है।
5. अभ्यास विकार को छोड़कर अन्यत्र अनर्थक में प्रवृत्त नहीं होता है।
6. आद्यन्तवदेकस्मिन् इस सूत्र से अन्तवद्भाव करने पर अ भ्याम् इस अवस्था में अकारान्त होने के कारण सुपि च से दीर्घ करने पर आभ्याम् बन जाता है।
7. जिससे पर में तो कुछ है, परन्तु पूर्व में नहीं है वह आदि है। जिससे पर में हो तथा, पूर्व नहीं हो तो वह अन्त होता है।
8. इदम् के दकार को मकार होता है। यह सूत्रार्थ है।

उत्तर-2

9. पर होने से सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ यह सूत्र पहले प्रवृत्त होता है, नकि हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् यह सूत्र।
10. न ङिसम्बुद्ध्योः इस सूत्र से निषेध होने से।
11. नकार का लोप नहीं होता है। ङि और सम्बुद्धि पर में रहते।
12. नलोपः सुप्स्वरसंज्ञातुग्विधिषु कृति इस सूत्र से सुब्विधि में नलोप असिद्ध होता है इस नियमकरण के कारण राज भ्याम् इस स्थिति में सुपि च यह सूत्र प्रवृत्त नहीं होता है।
13. सुब्विधि, स्वरविधि, संज्ञाविधि, तथा कृत् परे रहते तुक् की विधि में नलोपः असिद्ध होता है अन्यत्र नहीं। यह सूत्रार्थ है।
14. राज्ञि राजानि ये दो रूप होते हैं।
15. राजभ्याम् में सुपि च से दीर्घ, राजभिः में अतो भिस ऐस् इस सूत्र से ऐसादेश, तथा राजभ्यः इस स्थिति में बहुवचने झल्येत् इस सूत्र से एकार आदेश नहीं होते हैं।

उत्तर-3

16. धातु भिन्न उगित्, नलोपी अंचु धातु को नुम् आगम होता है, सर्वनामस्थान परे रहते यह सूत्रार्थ है।
17. अच् इस पद से नकार लोप वाले अंचु गतिपूजनयोः इस धातु का ग्रहण होता है।
18. विकल्प से तृ अन्तादेश होता है।

ध्यान दें:

19. श्वयुवमघोनामतद्धिते इस सूत्र से।

20. मघवान् मघवा।

उत्तर-4

21. सम्प्रसारण पर में रहते पूर्व यण् को सम्प्रसारण नहीं होता है। यह सूत्रार्थ है।

22. अन्तिम यण् को सम्प्रसारण पहले होता है। यह ज्ञापित होता है।

23. इतोऽत्सर्वनामस्थाने इस सूत्र से।

24. पथिन् आदि के इकार के स्थान पर अकार आदेश होता है। सर्वनामस्थान परे रहते यह सूत्रार्थ है।

25. सर्वनामस्थान संज्ञक प्रत्यय परे रहते।

26. पथः।

उत्तर-5

27. ष्णान्ता षट्।

28. नोपधायाः यह सूत्र है।

29. नान्त की उपधा को दीर्घ होता है, नाम् परे रहते यह सूत्रार्थ है।

30. कृत आकार अष्टन् शब्द से पर में जस् और शस् के स्थान पर औश् आदेश होता है।

31. अष्टनो दीर्घात् इस सूत्र में दीर्घग्रहण होने के कारण से।

32. जस् और शस् के विषय में भी आत्व होता है यह ज्ञापित होता है।

17

हलन्त प्रकरण में तत् इत्यादि शब्दों के रूप

ध्यान दें:

इस पाठ में तद् युष्मद् अस्मद् इन तीन शब्दों के रूप सिद्ध किये गये हैं। उसके लिए उन्नीस सूत्रों की व्याख्या की गयी है। सूत्र व्याख्या प्रकरण में पूर्व में स्वीकृत नियम का यहां भी अनुसरण किया गया है। संस्कृतवाङ्मय में तत्, युष्मद्, अस्मद् शब्दों का बहुत प्रकार से प्रयोग दिखाई देता है। व्याकरण शब्द सिद्धि हेतु तत्पर रहते है। अत: यहां तीन शब्दों के जितने रूप है, उनकी सिद्धि प्रक्रिया को भली -भांति समझना चाहिए। अस्मद् और युष्मद् शब्द के रूपों की सिद्धि प्रक्रिया में जितने सूत्र महर्षि पाणिनि ने बनाये हैं, उतने किसी भी शब्द की सिद्धि के लिए नहीं। अठारह सूत्र तो सिर्फ दोनों शब्दों के रूपसिद्धि के लिए बनाये हैं। उन सूत्रों का सुबोध एवं सरल शैली में छात्रों के आसानी से अवबोध के लिए यहां व्याख्यात है। अत: प्राथमिक छात्रों को डरने की कोई बात नहीं है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे

- तत् शब्द के सिद्धि की प्रक्रिया को जान पाने में;
- युष्मद् और अस्मद् शब्द सिद्धि की प्रक्रिया को समझ पाने में;
- युष्मद् और अस्मद् शब्द के स्थान पर कब कौन-से आदेश होंगे यह ज्ञात कर पाने में;
- इन शब्दों से पर में कब कौन-सी विभक्ति के स्थान पर क्या आदेश होंगे जान पाने में;
- टिलोप और अन्त्यलोप के पक्ष में कौन-से दो रूप होते हैं जान पाने में;
- साम आकम् सुट् सहित आम् के ग्रहण में क्या कारण है जान पाने में।

पाठ-17

हलन्त प्रकरण में तत् इत्यादि शब्दों के रूप

ध्यान दें:

तद् शब्द

तनादिगणीय विस्तारार्थक तन् धातु से औणादिक अदि प्रत्यय करने पर प्रक्रिया कार्य के द्वारा तद् शब्द निष्पन्न होता है। यह शब्द सर्वादि गण में पठित है, अतः सर्वादीनि सर्वनामानि से सर्वनाम संज्ञक है। परोक्ष वस्तु का बोध कराने के लिए तद्शब्द का व्यवहार किया जाता है।

पुल्लिंग में तद् शब्द।

तद् शब्द से पुल्लिंग में प्रथमा के एकवचन की विवक्षा में सुप्रत्यय, अनुबन्ध लोप, तद् स् बन गया। तब अगला सूत्र प्रवृत्त होता है।

17.1 - तदोः सः सावनन्त्ययोः। 7.2.106

सूत्रार्थ - त्यदादियों के अनन्तिम तकार और दकार के स्थान पर सकार होता है सु परे रहते।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से तकार और दकार के स्थान पर सकार आदेश होता है। अतः यह एक विधि सूत्र है। तदोः सः सौ अनन्त्ययोः ये चार पद है इस सूत्र में। त्यदादीनामः इस सूत्र से त्यदादीनाम् यह पद अनुवर्तित होता है। अनन्त्ययोः तदोः ये दोनों षष्ठी द्विवचनान्त पद है। सः प्रथमान्त पद है। सौ सुप्रत्यय का सप्तम्यन्त पद है। त्यद् आदिर्येषां ते इस विग्रह में तद्गुणसंविज्ञान बहुव्रीहि समास त्यदादयः तेषां त्यदादीनाम्। तश्च दश्च तयोः इतरेतरयोगद्वन्द्व समास तदौ तयोः तदोः। अन्त्यं च अन्त्यं च अन्त्ये एकशेष समास। न अन्त्ये अनन्त्ये तयोः अनन्त्ययोः, नञ् तत्पुरुष समास। सूत्रार्थ होता है- त्यदादिगण में पठित शब्दों के अनन्तिम में विद्यमान तकार और दकार के स्थान पर सकार आदेश होता है।

सूत्रार्थ समन्वय - तत् शब्द से प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सुप्रत्यय अनुबन्ध लोप, तद् स् बन गया।

त्यदादीनामः से दकार को अकार, त अ स् बन गया अतो गुणे सूत्र से पर रूप त स् बन गया। तत्पश्चात् सुप्रत्यय परे रहते अन्तिम तकार के स्थान पर सकार आदेश करने पर सस् बन गया। सकार को रुत्व विसर्ग करने पर सः यह रूप सिद्ध हो जाता है।

अवधेय विषय - विभक्ति परे रहते तद् शब्द के दकार के स्थान पर त्यदादीनामः इस सूत्र से अकार होता है। अतो गुणे से पर रूप करने पर त अकारान्त शब्द निष्पन्न होता है। तद् शब्द के सर्वादिगण में पाठ होने के कारण एकदेशविकृतन्याय से सर्वादीनि सर्वनामानि इस सूत्र सर्वनाम संज्ञा होती है। अतः सुप्रत्यय को छोड़कर सभी रूपों की सिद्धि की प्रक्रिया पुल्लिंग सर्व शब्द के तरह होता है।

स्त्रीलिंग में तद्शब्द-

स्त्रीलिंग में तद् शब्द से सुप्रत्यय अनुबन्धलोप, तद् स् इस स्थिति में त्यदादीनामः से अकार, पर रूप, अजाघतष्टाप् सूत्र से टाप् प्रत्यय, सवर्ण दीर्घ करने पर ता स् बन गया। तदोः सः सावनन्त्ययोः इस सूत्र से तकार को सकार, हल्ङ्याब्भ्यो इस सूत्र से सकार के लोप होने से सा यह रूप सिद्ध हो जाता है।

इसी प्रकार से अन्यत्र स्थानों में त्यदादीनमः से अत्व पररूप, टाप् प्रत्यय, सवर्ण दीर्घ, करने पर ता बन गया। सर्वादीनि सर्वनामानि से सर्वनाम संज्ञा होती है। अन्य रूप तो स्त्रीलिंग में सर्वाशब्द के समान होते हैं।

ध्यान दें:

स्त्रीलिंग में तद् शब्द के रूप-

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पञ्चमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

नपुंसकलिंग में तद् शब्द से सुप्रत्यय, स्वमोर्नपुंसकात् इस सूत्र से सुप्रत्यय का लोप, तद् बन गया वाऽवसाने सूत्र स दकार के स्थान पर विकल्प से चर्त्व करने पर तत् तद् ये दो रूप सिद्ध होते हैं क्योंकि सुप्रत्यय का यहां लुक् हुआ है। अतः तदोः सः सावनन्त्ययोः इस सूत्र से तकार के स्थान पर सकार नहीं होता है।

तद् औ इस स्थिति में त्यदादीनामः से अत्व, पररूप, त औ बन गया। नपुंसकाच्च इस सूत्र से औ के स्थान पर शी आदेश अनुबन्ध लोप, त ई बन गया। आद् गुणः इस सूत्र से गुण करने पर ते यह रूप सिद्ध होता है।

तद् जस् इस स्थिति में पूर्ववत् प्रक्रिया कार्य करने पर त अस् बन गया। जश्शसोः शिः इस सूत्र से जस् के स्थान पर शि आदेश, अनुबन्धलोप, त इ बन गया, तत्पश्चात् मिदचोऽन्त्यात्परः इस परिभाषा के द्वारा परिष्कृत नपुंसकस्य झलचः इस सूत्र से अन्तिम अच् से पर में नुम् आगम करने पर त् न् इ बन गया। सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ सूत्र से उपधा दीर्घ करने पर तानि यह रूप सिद्ध हो जाता है।

द्वितीया विभक्ति में भी इसी प्रकार से रूप होते हैं।

नपुंसकलिंग में तद् शब्द रूप -

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि

अन्य रूप पुल्लिंग के तरह होते हैं।

पाठगत प्रश्न-1

1. तदोः सः सावनन्त्ययोः सूत्र का अर्थ लिखो?
2. तदोः सः सावनन्त्ययोः से किया जाने वाला आदेश किसके स्थान पर होता है?

ध्यान दें:

3. तदोः सः सावनन्त्ययोः इस सूत्र में अनन्त्ययोः में कौन-सा समास है?

4. किस अर्थ का अवबोधन कराने के लिए तद् शब्द का उपयोग होता है?

युष्मद् और अस्मद् शब्द-

युष्मद् और अस्मद् शब्द तीनों लिंगों में समान रूप वाले हैं। उनके प्रयोग इस प्रकार होते हैं। जैसे - त्वं पुमान्, अहं पुमान्, त्वं युवतिः, अहं युवतिः। त्वं दैवतम्, अहं दैवतम्। युष्मद् और अस्मद् शब्द से प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सुप्रत्यय, अनुबन्ध लोप, युष्मद् स् अस्मद् स् इस स्थिति में अग्रिम सूत्र प्रवृत्त होता है।

17.2 - ङेप्रथमयोरम्। 7.1.128

सूत्रार्थ - युष्मद् और अस्मद् शब्द से पर में विद्यमान ङे विभक्ति तथा प्रथमा और द्वितीया विभक्ति के स्थान पर अम् आदेश होता है।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से अम् आदेश होता है अतः यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में तीन पद है ङे प्रथमयोः अम् यह सूत्रपदच्छेद है। युष्मदस्मद्भ्यां ङसोऽश् इस सूत्र से युष्मदस्मद्भ्याम् यह पञ्चमी द्विवचनान्त पद अनुवृत्त होता है। ङे वस्तुतः षष्ठ्येकवचनान्त पद है परन्तु यहां षष्ठी विभक्ति का लुक् होता है। प्रथमयोः षष्ठीद्विवचनान्त पद है। अम् प्रथमैकवचनान्त पद है। युष्मद् च अस्मद् च इस विग्रह मे इतरेतर योग द्वन्द्व समास युष्मदस्मदौ तयोः युष्मदस्मदोः प्रथमा च प्रथमा च तयोः इतरेतर योग द्वन्द्वः प्रथमे तयोः प्रथमयोः एकशेष।यहां प्रथमयोः पद में दो प्रथमा पद है। पहले प्रथमा शब्द का अर्थ है - प्रथमा विभक्ति। तथा दूसरे प्रथमा का अर्थ है द्वितीया विभक्ति। सूत्रार्थ होता है- युष्मद् और अस्मद् शब्द से पर में विद्यमान ङे विभक्ति तथा प्रथमा द्वितीया विभक्ति के स्थान पर अम् आदेश होता है।

अम् के मकार की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा नहीं होती है। न विभक्तौ तुस्माः से निषेध होने के कारण से।

उदाहरण - युष्मद् सु अस्मद् सु इस स्थिति में सुप्रत्यय प्रथमा विभक्ति के अन्तर्गत है अतः प्रस्तुत सूत्र से सु के स्थान पर अम् आदेश युष्मद् अम् अस्मद् अम् बन गया इस स्थिति में अग्रिम सूत्र प्रवृत्त होता है।

17.3 - त्वाहौ सौ। 7.2.94

सूत्रार्थ - युष्मद् और अस्मद् शब्द के मपर्यन्त भाग के स्थान पर क्रमशः त्व और अह आदेश होते हैं। सु परे रहते।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से त्व और अह आदेश होते हैं। अतः यह एक विधि सूत्र है। त्वाहौ सौ दो पद है। यहां युष्मदस्मदोरनाकौ इस सूत्र से युष्मदस्मदोः यह पद अनुवर्तित होता है। मपर्यन्तस्य सूत्र का अधिकार है। युष्मदस्मदोः षष्ठी द्विवचनान्त पद है। मपर्यन्तस्य षष्ठी का एकवचन है। सौ सप्तमी का एकवचन है।

त्वाहौ प्रथमाद्विवचनान्त पद है। युष्मद् च अस्मद् च इस विग्रह में इतरेतर योगद्वन्द्व समास करने पर युष्मदस्मदौ तयोः युष्मदस्मदोः। मं इति यावत् इस विग्रह में मयूरव्यंसकादयश्च से समास करने पर मपर्यन्तम् तस्य मपर्यन्तस्य। त्वश्च अहश्च तयोः इतरेतर योग द्वन्द्व समास त्वाहौ। सूत्रार्थ होता है - सुप्रत्यय पर में रहते युष्मद् और अस्मद् शब्द के मपर्यन्त भाग के स्थान पर क्रमशः त्व और अह आदेश होते हैं।

ध्यान दें:

निष्कर्ष - युष्मद् के युष्म् इस भाग के स्थान पर त्व आदेश तथा अस्मद् के अस्म् इस भाग के स्थान पर अह आदेश होता है।

सूत्रार्थ समन्वय - युष्मद् अम् अस्मद् अम् इस स्थिति में स्थानिवद्भाव के द्वारा अमादेश को सु प्रत्यय के रूप में मानकर उसके पर में रहते प्रस्तुत सूत्र से मपर्यन्त भाग के स्थान पर त्व अह आदेश करने पर त्व अद् अम् अह अद् अम् हो गया। तत्पश्चात् अग्रिम सूत्र प्रवृत्त होता है-

17.4 - शेषे लोपः। 7.2.90

सूत्रार्थ - युष्मद् और अस्मद् के टिसंज्ञक का लोप होता है।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से लोप होता है। अतः यह एक विधि सूत्र है। इस सूत्र में शेषे लोपः ये दो पद है। युष्मदस्मदोरनाकौ इस सूत्र से युष्मदस्मदोः यह षष्ठी द्विवचनान्त पद अनुवर्तित होता है। मपर्यन्तस्य इस अधिकृत पद पञ्चमी विभक्ति में विपरिणमित होता है। शेषे सप्तमी का एकवचन है। लोपः प्रथमान्त पद है। युष्मद् च अस्मद् च युष्मदस्मदौ तयोः युष्मदस्मदोः इतरेतर योग द्वन्द्व समास। में इति यावत् इस विग्रह में मयूरव्यंसकादयश्च से समास मपर्यन्तम् तस्य मपर्यन्तस्य। सूत्रार्थ सम्पन्न होता है- युष्मद् और अस्मद् शब्द का जो मपर्यन्त भाग युष्म् अस्म् उससे पर में जो अन्तिम अद् भाग उसका लोप होता है।

अवधेय विषय - इस सूत्र से युष्मद् और अस्मद् के अद् भाग का लोप होता है। यह अद् भाग टिसंज्ञक ही है। अतः लघुसिद्धान्तकौमुदी में इस सूत्र का यही अर्थ लिखा है कि- एतयोष्टिलोपः स्यात् अर्थात् इनके टि का लोप होता है।

यहां दो पक्ष हैं। कुछ लोगों के मत में प्रस्तुत सूत्र से अद् भाग के अन्तिम दकार का लोप होता है। कुछ लोगों के मत में सम्पूर्ण अद् भाग का लोप प्राप्त होता है। दोनों पक्ष में भी लक्ष्य की सिद्धि होती है।

सूत्रार्थ समन्वय - अन्त्यलोप पक्ष में त्व अद् अम्, अह् अद् अम् इस स्थिति में अतो गुणे से पररूप एकादेश करने पर त्वद् अम् अहद् अम् इस स्थिति में प्रस्तुत सूत्र से अन्तिम दकार का लोप, करने पर त्व अम्, अह अम् बन गया अमि पूर्वः इस सूत्र से पूर्वरूप करने पर त्वम् अहम् ये दो रूप सिद्ध हो जाते हैं।

अद् भाग के लोप पक्ष में त्व अद् अम् अह अद् अम् इस स्थिति में प्रस्तुत सूत्र से अद् भाग का लोप करने पर त्व अम् अह अम् बन गया अमि पूर्वः से पूर्व रूप करने पर त्वम् अहम् रूप सिद्ध होते हैं।

युष्मद् औ अस्मद् औ इस स्थिति में डेप्रथमयोरम् इस सूत्र से औ के स्थान पर अम् आदेश, युष्मद् अम् अस्मद् अम् बन गया, तब अगला सूत्र प्रवृत्त होता है।

17.5 - युवावौ द्विवचने। 7.2.92

सूत्रार्थ - द्विवचन की विवक्षा में युष्मद् और अस्मद् शब्द के मपर्यन्त भाग के स्थान पर क्रमशः युव और आव आदेश होते हैं, विभक्ति के परे रहते।

सूत्र व्याख्या - युव और आव आदेश विधान होने के कारण यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में युवावौ द्विवचने ये दो पद हैं। यहां अष्टन आ विभक्तौ इस सूत्र से विभक्तौ यह सप्तम्यन्त पद अनुवर्तित होता है। युष्मदस्मदोरनाकौ इस सूत्र से युष्मदस्मदोः यह पद अनुवर्तित होता है। मपर्यन्तस्य इस सम्पूर्ण सूत्र का अधिकार है। विभक्तौ सप्तमी का एकवचन है। युष्मदस्मदोः षष्ठी द्विवचनान्त पद है। मपर्यन्तस्य यह

ध्यान दें:

षष्ठ्यन्त अधिकृत पद पंचम्यन्त के रूप में विपरिणमित किया जाता है। युवावौ प्रथमा का द्विवचन है। द्विवचने सप्तमी का एकवचन है। युष्मद् च अस्मद् तयोः इतरेतरयोगद्वन्द्व समासः युष्मदस्मदौ तयोः युष्मदस्मदोः। मं इति यावत् मपर्यन्तम् तस्य मपर्यन्तस्य, मयूरव्यंसकादयश्च से समास। युव च आव च तयोः इतरेतरयोगद्वन्द्व समास युवावौ। द्वयोः वचनं द्विवचनम्, तस्मिन् द्विवचने, षष्ठीतत्पुरुष समास। सूत्रार्थ होता है- द्वित्व की उक्ति में युष्मद् और अस्मद् के मपर्यन्त भाग के स्थान पर यथाक्रम से युव और आव आदेश होते हैं विभक्ति पर में रहते।

सूत्रार्थ समन्वय - युष्मद् और अस्मद् शब्द से प्रथमा के द्विवचन की विवक्षा में औ प्रत्यय, युष्मद् औ अस्मद् औ बन गया, ङेप्रथमयोरम् इस सूत्र से औ के स्थान पर अम् आदेश करने पर युष्मद् अम्, अस्मद् अम् बन गया। युवावौ द्विवचने इस सूत्र से युष्मद् और अस्मद् शब्द के मपर्यन्त भाग के स्थान पर क्रमशः युव और आव आदेश करने पर युव अद् अम् आव अद् अम् बन गया। इस अवस्था में अग्रिम सूत्र प्रवृत्त होता है।

17.6 - प्रथमायाश्च द्विवचने भाषायाम्। 7.2.88

सूत्रार्थ - औङ् प्रत्ययों के परे रहते युष्मद् और अस्मद् शब्द को आत्व होता है। लौकिक प्रयोगों में।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से आत्व का विधान होता है। अतः यह विधि सूत्र है। प्रथमायाः च द्विवचने भाषायाम् ये चार पद है इस सूत्र में। अष्टन आ विभक्तौ इस सूत्र से विभक्तौ यह सप्तम्यन्त पद अनुवर्तित होता है। युष्मदस्मदोरनाकौ इस सूत्र से युष्मदस्मदोः यह षष्ठी द्विवचनान्त पद अनुवर्तित होता है। प्रथमायाः षष्ठी का एकवचन है। च अव्ययपद है। द्विवचने सप्तम्यन्त पद है। भाषायाम् सप्तमी का एकवचन है। युष्मद् च अस्मद् च इस विग्रह में इतरेतर योग द्वन्द्व समास करने पर युष्मदस्मदौ तयोः युष्मदस्मदोः। द्वयोः वचनं द्विवचनम् तस्मिन् द्विवचने, षष्ठी तत्पुरुष समास। सूत्रार्थ सम्पन्न होता है- लोक में प्रथमा विभक्ति का द्विवचन पर में हो तो युष्मद् और अस्मद् शब्द के स्थान पर आकार आदेश होता है।

यह आ आदेश अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा से अन्तिम अल् दकार के स्थान पर होता है।

सूत्रार्थ समन्वय- युव अद् अम् अह अद् अम् इस स्थिति में स्थानिवद्भाव के द्वारा अमादेश को औ प्रत्यय मानकर औ प्रत्यय पर में होने के कारण प्रस्तुत सूत्र से दकार के स्थान पर आकार आदेश करने पर युव अ आ अम् तथा आव अ आ अम् इस बन गया। तत्पश्चात् अतो गुणे से पर रूप करने पर युव आम् आव आम् बन गया। अकः सवर्णे दीर्घ इस सूत्र से सवर्ण दीर्घ एकादेश करने पर युवाम् आवाम् ये दो रूप सिद्ध हो जाते है।

युष्मद् और अस्मद् शब्द से प्रथमा बहुवचन की विवक्षा में जस् प्रत्यय करने पर युष्मद् जस् अस्मद् जस् इस स्थिति में ङेप्रथमयोरम् इस सूत्र से जस् के स्थान पर अम् आदेश युष्मद् अम् अस्मद् अम् हो गया तब अगला सूत्र प्रवृत्त होता है।

17.7 यूयवयौ जसि। 7.2.93

सूत्रार्थ -युष्मद् अस्मद् शब्द के मपर्यन्त भाग के स्थान पर यूय वय आदेश होते हैं, जस् परे रहते।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से यूय वय आदेश होते हैं। अतः यह विधि सूत्र है। यूयवयौ जसि ये दो पद है इस सूत्र में। युष्मदस्मदोरनाकौ इस सूत्र युष्मदस्मदोः यह षष्ठी द्विवचनान्त पद अनुवर्तित है। मपर्यन्तस्य यह सम्पूर्ण सूत्र षष्ठ्यन्त पद अधिकृत है। यूयवयौ प्रथमा द्विवचनान्त पद है जसि सप्तमी का

ध्यान दें:

एकवचन है। युष्मद् च अस्मद् च इस विग्रह में इतरेतरयोग द्वन्द्व समास करने पर युष्मदस्मदौ तयोः युष्मदस्मदोः। द्वयोः वचनम् द्विवचनम् तस्मिन् द्विवचने षष्ठी तत्पुरुष समास। मं यावत् इस विग्रह में मयूरव्यंसकादयश्च से समास मपर्यन्तम् तस्य मपर्यन्तस्य। यूय च वय च इस विग्रह में इतरेतर योग द्वन्द्व समास यूयवयौ। सूत्रार्थ निष्पन्न होता है- युष्मद् और अस्मद् का जो मपर्यन्त का भाग युष्म् और अस्म् उसके स्थान पर क्रमशः यूय वय ये दो आदेश होता है जस् प्रत्यय परे रहते।

सूत्रार्थ समन्वय - युष्मद् अम् अस्मद् अम् यह स्थिति है। यहां स्थानिवद्भाव के द्वारा अम् को जस् प्रत्यय जाना जाएगा। अतः उसके पर में रहते प्रस्तुत सूत्र से मपर्यन्त भाग के स्थान पर क्रम से यूय वय आदेश होते हैं। यूय अद् अम् वय अद् अम् यह स्थिति बनती है। तत्पश्चात् शेषे लोपः से टिलोप के पक्ष में टि के अद् भाग का लोप यूय अम् वय अम् बन गया। अमि पूर्वः से पूर्व रूप करने पर यूयम् वयम् ये रूप सिद्ध होते हैं।

शेषे लोपः इस सूत्र से अन्त्यलोप के पक्ष में यूय अद् अम् वय अद् अम् इस अवस्था में अतो गुणे से पररूप करने पर यूयद् अम् वयद् अम् बन गया। शेषे लोपः से अन्तिम दकार का लोप करने पर यूय अम् वय अम् हो गया। तत्पश्चात् अमि पूर्वः से पूर्वरूप करने पर यूयम् वयम् ये रूप सिद्ध होते हैं।

पाठगत प्रश्न-2

5. युष्मद् और अस्मद् शब्द से पर में कहां अम् आदेश होता है?
6. त्व और अह आदेश कहां होते हैं?
7. शेषे लोपः का दोनों पक्ष लिखो?
8. युवावौ द्विवचने इस सूत्र का अर्थ लिखो?
9. युष्मद् शब्द से जस् प्रत्यय में कौन-सा आदेश किस सूत्र से होता है?
10. प्रथमायाश्च द्विवचने भाषायाम् इस सूत्र से क्या होता है?

युष्मद् और अस्मद् शब्द से द्वितीया विभक्ति के द्विवचन में क्रमशः युष्मद् अम् अस्मद् अम् इस स्थिति में अग्रिम सूत्र प्रवृत्त होता है।

17.8 - त्वमावेकवचने। 7.2.97

सूत्रार्थ - एकवचन की विवक्षा में युष्मद् और अस्मद् शब्द के मपर्यन्त भाग को त्व और म आदेश होते हैं, विभक्ति पर में हो तो ।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से त्व और म आदेश होते हैं। अतः यह विधि सूत्र है। त्वमौ एकवचने ये दो पद है इस सूत्र में। अष्टन आ विभक्तौ इस सूत्र से विभक्तौ यह पद तथा युष्मदस्मदोरनादेशे इस सूत्र से युष्मदस्मदोः यह पद अनुवर्तित होता है। मपर्यन्तस्य का अधिकार है। विभक्तौ सप्तमी का एकवचन है। युष्मदस्मदोः षष्ठी का द्विवचन है। मपर्यन्तस्य षष्ठी का एकवचन है। त्वमौ प्रथमा का द्विवचन है। एकवचने सप्तमी का एकवचन है। युष्मद् च अस्मद् च इस विग्रह में इतरेतर योग द्वन्द्व समास युष्मदस्मदौ तयोः युष्मदस्मदोः। एकस्य वचनं एकवचनं तस्मिन् एकवचने षष्ठी तत्पुरुष समास। त्व च म च इस विग्रह में इतरेतरयोगद्वन्द्व समास त्वमौ। सूत्रार्थ होता है- एकवचन की विवक्षा में युष्मद् और अस्मद् शब्द के

ध्यान दें:

मपर्यन्त भाग को त्व और म आदेश होते हैं, विभक्ति पर में हो तो।

सूत्रार्थ समन्वय - युष्मद् अम् अस्मद् अम् इस स्थिति में द्वितीया का एकवचन है अम्प्रत्यय। अत: उसके परे रहते युष्मद् और अस्मद् शब्द के मपर्यन्त भाग के स्थान पर क्रम से त्व और म आदेश करने पर त्व अद् अम्, म अद् अम् बन गया। तब अगला सूत्र प्रवृत्त होता है।

17.9 - द्वितीयायांञ्च 7.2.97

सूत्रार्थ - युष्मद् और अस्मद् के स्थान पर आत्व होता है, द्वितीया विभक्ति परे रहते।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से आत्व होता है। अत: यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में द्वितीयायाम् च ये दो पद है। अष्टन आ विभक्तौ इस सूत्र से विभक्तौ यह पद अनुवर्तित होता है। युष्मदस्मदोरनादेशे इस सूत्र से युष्मदस्मदो: यह पद अनुवर्तित होता है। विभक्तौ सप्तमी का एकवचन है। युष्मदस्मदो: षष्ठी का द्विवचन है। द्वितीयायाम् सप्तमी का एकवचन है। च अव्यय पद है। युष्मद् च अस्मद्च इस विग्रह में इतरेतरयोगद्वन्द्व समास करने पर युष्मदस्मदे तयो: युष्मदस्मदो:। अत: सूत्रार्थ सम्पन्न होता है। द्वितीया विभक्ति पर में हो तो, युष्मद् और अस्मद् शब्द के स्थान पर आकार आदेश होता है।

इस सूत्र से आकार आदेश विहित है। आत् में आकार मात्र अवशेष रहता है। वह आकारादेश अलोऽन्त्यस्य परिभाषा के द्वारा दकार के स्थान पर होता है।

सूत्रार्थ समन्वय - त्व अद् अम्, म अद् अम् इस स्थिति में द्वितीया विभक्ति पर में है। अत: प्रस्तुत सूत्र से दकार के स्थान पर आकार आदेश, त्व अ आ अम्, म अ आ अम् बन गया। अतो गुणे से पररूप करने पर त्व आ अम् म आ अम् यह स्थिति बनती है। तब अक: सवर्णे दीर्घ: इस सूत्र से सवर्णदीर्घ एकादेश करने पर त्वा अम् मा अम् बन गया। अमि पूर्व: से पूर्वरूप करने पर त्वाम् माम् ये दो रूप सिद्ध होते हैं।

युष्मद् और अस्मद् शब्दों से द्वितीया विभक्ति के द्विवचन की विवक्षा में औट् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, युष्मद् औ, अस्मद् औ इस स्थिति में ङेप्रथमयोरम् इस सूत्र से औ के स्थान पर अम् आदेश करने पर युष्मद् अम् अस्मद् अम् बन गया। युवावौ द्विवचने इस सूत्र से युष्मद् और अस्मद् शब्द के मपर्यन्त भाग के स्थान पर क्रमश: युव और आव आदेश होते हैं। युव अद् अम् आव अद् अम् बन गया। द्वितीया यांच इस सूत्र से दकार के स्थान पर आकार आदेश करने पर युव अ आ अम् आव अ आ अम् यह स्थिति बन गयी। तत्पश्चात् अतो गुणे से पररूप, अक: सवर्णे दीर्घ: से दीर्घ युवा अम् आवा अम् बन गया। अमि पूर्व: से पूर्व रूप एकादेश करने पर युवाम् आवाम् ये दो रूप सिद्ध होते हैं।

अवध्यातव्य विषय - युष्मद् और अस्मद् शब्द के प्रथमा विभक्ति के द्विवचन तथा द्वितीया विभक्ति के द्विवचन में समान रूप होते हैं- युवाम् आवाम्। रूपों के समान होते हुए भी आकार आदेश करने वाले सूत्रों में भेद दिखाई देता है। प्रथमा विभक्ति में प्रथमायाश्च द्विवचने भाषायाम् इस सूत्र से तथा द्वितीया विभक्ति में द्वितीया यांच से आकार आदेश होता है।

युष्मद् और अस्मद् शब्द से द्वितीया बहुवचन की विवक्षा में शस् प्रत्यय अनुबन्ध लोप, युष्मद् अस् अस्मद् अस् इस स्थिति में ङेप्रथमयोरम् इस सूत्र से शस् प्रत्यय के स्थान पर अमादेश प्राप्त रहता है तब अगला सूत्र प्रवर्तित होता है।

ध्यान दें:

17.10 शसो न। 7.1.29

सूत्रार्थ - युष्मद् और अस्मद् शब्द से पर में विद्यमान शस् के स्थान पर आदेश होता है।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से शस् प्रत्यय के स्थान पर नकार आदेश होता है अतः यह विधि सूत्र है। शसः न ये दो पद है इस सूत्र में। युष्मदस्मद्भ्यां ङसोऽश् इस सूत्र से युष्मदस्मद्भ्याम् यह पञ्चमी द्विवचनान्त पद अनुवर्तित होता है। शसः षष्ठी का एकवचन है तथा न प्रथमा का एकवचन है। न इस पद में सु विभक्ति का छान्दस लुक् होता है। युष्मद्च अस्मद्च इस विग्रह में इतरेतर योग द्वन्द्व समास करने पर युष्मदस्मदौ ताभ्यां युष्मदस्मद्भ्याम्। सूत्रार्थ सम्पन्न होता है। युष्मद् और अस्मद् शब्द से पर में विद्यमान शस् के स्थान पर नकार आदेश होता है।

इस सूत्र से विधीयमान नकारादेश अलोऽन्त्यस्य परिभाषा के द्वारा अन्तिम अल् सकार के स्थान पर प्राप्त होता है परन्तु आदेः परस्य इस परिभाषा के द्वारा शस् सम्बन्धित अस् के अकार के स्थान पर होता है।

बाध्यबाधकभावः - ङेप्रथमयोरम् इस सूत्र से शस् विभक्ति के स्थान पर अमादेश प्राप्त होने पर यह सूत्र आरब्ध है। अतः यह सूत्र ङेप्रथमयोरम् इस सूत्र का बाधक है।

सूत्रार्थ समन्वय - युष्मद् अस् अस्मद् अस् बन गया। तब इस सूत्र से अस् के अकार के स्थान पर नकार आदेश करने पर युष्मद् न् स् अस्मद् न् स् बन गया। द्वितीया यांच इस सूत्र से दकार के स्थान पर आकार आदेश, युष्म आ न् स् अस्म आ न् स् बन गया। अकः सवर्णे दीर्घः इस सूत्र से दीर्घ करने पर युष्मान् स् अस्मान् स् बन गया संयोगान्तस्य लोपः से सकार का लोप करने पर युष्मान् अस्मान् ये दो रूप सिद्ध हो जाते है।

अवध्यातव्य विषय - संयोगान्तस्य लोपः यह सूत्र नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य इस सूत्र की दृष्टि में असिद्ध है। अतः युष्मान् अस्मान् मे नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य से न लोप नहीं होता है और युष्मान् में भी अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि सूत्र से णकार रूप आदेश प्राप्त होता है। परन्तु पदान्तस्य इस निषेध के कारण उसका निषेध हो जाता है।

युष्मद् और अस्मद् शब्द से तृतीया के एकवचन में टा प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, युष्मद् आ अस्मद् आ बन गया। त्वमावेकवचने से युष्म के स्थान पर त्व तथा अस्म के स्थान पर म आदेश करने पर त्व अद् आ, म अद् आ बन गया। तब अगला सूत्र प्रवृत्त होता है।

17.11 - योऽचि। 7.2.89

सूत्रार्थ - युष्मद् और अस्मद् को यकार आदेश होता है। अनादेश अजादि प्रत्यय पर में रहते।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से युष्मद् और अस्मद् शब्द के स्थान पर यकार आदेश होता है अतः यह विधि सूत्र है। यः अचि ये दो पद है। युष्मदस्मदोरनादेशे यह सम्पूर्ण सूत्र अनुवर्तित होता है। अष्टन आ विभक्तौ इस सूत्र से विभक्तौ यह पद अनुवर्तित होता है। युष्मदस्मदोः यह षष्ठी द्विवचनान्त पद है। अनादेशे विभक्तौ अचि ये सप्तम्यन्त पद है। यः प्रथमा का एकवचन है। युष्मद् च अस्मद् च इस विग्रह में इतरेतरयोगद्वन्द्व समास युष्मदस्मदौ तयोः युष्मदस्मदोः न आदेशः अनादेशः नं तत्पुरुष समास तस्मिन् अनादेशे। सूत्रार्थ होता है- आदेश रहित अजादि विभक्ति परे रहते युष्मद् अस्मद् के स्थान पर य् आदेश होता है।

ध्यान दें:

इस सूत्र से विधीयमान य आदेश का अन्तिम अकार उच्चारणार्थक है। अत: य् आदेश होता है। यह आदेश अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा के द्वारा युष्मद् और अस्मद् के दकार के स्थान पर होता है। अत: यस्मिन् विधिस्तदादावल्ग्रहणे इस परिभाषा से अजादि विभक्ति परे रहते यह अर्थ होता है।

सूत्रार्थ समन्वय - त्व अद् आ म अद् आ यह स्थिति बनती है। यहां टा विभक्ति अजादि है। उसके स्थान पर कोई आदेश भी नहीं हुआ है। अत: उस अनादेश अजादि विभक्ति के परे रहते प्रस्तुत सूत्र से दकार के स्थान पर य् आदेश हुआ। त्व अ य् आ म अ अय् आ बन गया अतो गुणे से पर रूप करने पर त्वया मया ये दो रूप सिद्ध होते हैं।

अनादेश पद विचार - सूत्र में अनादेशे यह पद है, अनादेशे इस पद से यह अर्थ प्राप्त होता है- ऐसे अजादि प्रत्यय परे रहते युष्मद् और अस्मद् के स्थान पर य् आदेश होता है। जो अजादि विभक्ति आदेश घटित न हो। अत: युष्मत् अस्मत् इत्यादि में य् आदेश नहीं होता है। क्योंकि युष्मत् अस्मत् पञ्चमी का बहुवचन है। यहां भ्यस् प्रत्यय के स्थान पर पंचम्या अत् इस सूत्र से अत् आदेश होता है। अत् अजादि विभक्ति है परन्तु अत् आदेश से निष्पन्न अजादि है।

युष्मद् और अस्मद् शब्द से तृतीया के द्विवचन की विवक्षा में भ्याम् प्रत्यय, क्रमश: युष्मद् भ्याम् अस्मद् भ्याम् बन गया युवावौ द्विवचने से युष्मद् और अस्मद् के मपर्यन्त भाग के स्थान पर युव और आव आदेश युव अद् भ्याम् आव अद् भ्याम् बन गया। तब अगला सूत्र प्रवर्तित होता है।

17.12 - युष्मदस्मदोरनादेशे। 7.2.86

सूत्रार्थ - युष्मद् और अस्मद् के स्थान पर आत् आदेश होता है। अनादेश हलादि विभक्ति पर में रहते।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से युष्मद् और अस्मद् शब्द के स्थान पर आकार आदेश होता है। अत: यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में युष्मदस्मदो: अनादेशे ये दो पद हैं। रायो हलि सूत्र से हलि तथा अष्टन आ विभक्तौ से विभक्तौ यह पद अनुवर्तित होता है। युष्मदस्मदो: षष्ठीद्विवचनान्त तथा हलि अनादेशे विभक्तौ ये सप्तम्यन्त पद है। हलि यह पद विभक्तौ का विशेषण है। अत: यस्मिन्विधिस्तदादावल्ग्रहणे इस परिभाषा के द्वारा तदादिविधि के कारण हलादि विभक्ति परे रहते यह अर्थ है। आ प्रथमा का एकवचन है। युष्मद् च अस्मद् च इस विग्रह में इतरेतरयोग द्वन्द्व युष्मदस्मदौ तयो: युष्मदस्मदो:। न आदेश: अनादेश: नं तत्पुरुष समास तस्मिन् अनादेशे। सूत्रार्थ होता है- आदेश भिन्न हलादि विभक्ति पर में रहते युष्मद् और अस्मद् शब्द के स्थान पर आ आदेश होता है।

इस सूत्र से विधीयमान आदेश अलोऽन्त्यस्य परिभाषा के द्वारा युष्मद् और अस्मद् के दकार के स्थान पर आदेश होता है।

सूत्रार्थ समन्वय- युव अद् भ्याम् आव अद् भ्याम् इस स्थिति में भ्याम् प्रत्यय हलादि है और उसके स्थान पर कोई आदेश भी नहीं हुआ है। अत: उस अनादि हलादि विभक्ति परे रहते दकार के स्थान पर आकार आदेश युव अ आ भ्याम्, आव अ आ भ्याम् बन गया। तत्पश्चात् अक: सवर्णे दीर्घ: से अकार और आकार के स्थान पर सवर्ण दीर्घ करने पर युवाभ्याम् आवाभ्याम् ये दो रूप सिद्ध होते हैं।

युष्मद् और अस्मद् शब्द से तृतीया बहुवचन की विवक्षा में भिस् प्रत्यय, युष्मद् भिस् अस्मद् भिस् इस स्थिति में युष्मदस्मदोरनादेशे इस सूत्र से दकार के स्थान पर आकार आदेश करने पर युष्म आ भिस् अस्म आ भिस् बन गया। अक: सवर्णे दीर्घ से अकार और आकार के स्थान पर सवर्णदीर्घ एकादेश करने पर सकार को रुत्व विसर्ग करने पर युष्माभि: अस्माभि: ये दो रूप सिद्ध होते हैं।

ध्यान दें:

पाठगत प्रश्न-3

11. त्वमावेकवचने इस सूत्र का अर्थ लिखो?

12. युष्मद् और अस्मद् शब्द से द्वितीया विभक्ति में आत् आदेश किस सूत्र से होता है?

13. शसो न यह सूत्र किसका अपवाद सूत्र है?

14. शसो न इस सूत्र से किया जाने वाला कार्य किसके स्थान पर होता है?

15. युष्मदस्मदोरनादेशे इस सूत्र का अर्थ लिखो?

16. त्वया इस पद में यकारादेश विधायक सूत्र कौन-सा है?

17. युष्मा न् स् इस स्थिति में सकार का लोप किस सूत्र से होता है?

युष्मद् और अस्मद् शब्द से चतुर्थी एकवचन की विवक्षा में ङे प्रत्यय क्रमशः युष्मद् ङे अस्मद् ङे इस स्थिति में ङेप्रथमयोरम् इस सूत्र से ङे विभक्ति के स्थान पर अम् आदेश युष्मद् अम् अस्मद् अम् बन गया। तब अगला सूत्र प्रवर्तित होता है।

17.13 - तुभ्यमह्यौ ङयि। 7.2.95

सूत्रार्थ - युष्मद् और अस्मद् के मपर्यन्त भाग के स्थान पर तुभ्य और मह्य आदेश होते हैं, ङे प्रत्यय परे रहते।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से युष्मद् और अस्मद् के मपर्यन्त भाग के स्थान पर तुभ्य मह्य आदेश होते हैं, अतः यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में तुभ्यमह्यौ ङयि ये दो पद है। इस सूत्र में युष्मदस्मदोरनादेशे इस सूत्र से युष्मदस्मदोः यह षष्ठी द्विवचनान्त पद अनुवर्तित होता है। मपर्यन्तस्य इस षष्ठ्यन्त पद का अधिकार है।

तुभ्यमह्यौ प्रथमा का द्विवचन है। ङयि सप्तमी का एकवचन है। युष्मद् च अस्मद् च इस विग्रह में इतरेतर योग द्वन्द्व समास करने पर युष्मदस्मदौ तयोः युष्मदस्मदोः। मं इति यावत् मपर्यन्तम् तस्य मपर्यन्तस्य मयूरव्यंसकादयश्च से समास। तुभ्यश्च मह्यश्च इस विग्रह में इतरेतर योग द्वन्द्व समास करने पर तुभ्यमह्यौ बन जाता है।

सूत्रार्थ होता है - ङे विभक्ति पर में रहते युष्मद् और अस्मद् के मपर्यन्त भाग के स्थान पर तुभ्य मह्य आदेश होता है।

सूत्रार्थ समन्वय - युष्मद् अम् अस्मद् अम् इस स्थिति में स्थानिवद्भाव के द्वारा अम् आदेश का ङे विभक्ति के रूप में मानकर उसके पर में रहते तुभ्य अद् अम् मह्य अद् अम् बन गया। तत्पश्चात् टिलोप के पक्ष में शेषे लोपः इस सूत्र से शेषे लोपः इस सूत्र से टिसंज्ञक अद् का लोप करने पर तुभ्यम् मह्यम् ये दो रूप सिद्ध होते हैं।

अन्त्यलोप के पक्ष में तुभ्य अद् अम् मह्य अद् अम् बन जाने पर पहले अतो गुणे से पररूप करने पर तुभ्यद् अम् मह्यद् अम् बन गया। शेषे लोपः से दकार का लोप करने पर तुभ्य अम् मह्य अम् बन गया। अमि पूर्वः से पूर्वरूप एकादेश करने पर तुभ्यम् मह्यम् ये दो रूप सिद्ध होते हैं।

ध्यान दें:

युष्मद् और अस्मद् शब्द से चतुर्थी के बहुवचन की विवक्षा में भ्यस् प्रत्यय, युष्मद् भ्यस् अस्मद् भ्यस् इस स्थिति में शेषे लोपः इस सूत्र से अद् भाग का टिलोप युष्म् भ्यस् अस्म् भ्यस् बन गया तब अगला सूत्र प्रवर्तित होता है।

17.14 - भ्यसोऽभ्यम्। 7.1.30

सूत्रार्थ - युष्मद् और अस्मद् शब्द से पर में विद्यमान भ्यस् के स्थान पर अभ्यम् आदेश होता है।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से भ्यस् के स्थान पर अभ्यम् आदेश होता है। अतः यह एक विधि सूत्र है। इस सूत्र में दो पद है भ्यसः और अभ्यम्। युष्मदस्मद्भ्यां ङसोऽश् इस सूत्र से युष्मदस्मद्भ्यां यह पञ्चमी द्विवचनान्त पद अनुवर्तित होता है। भ्यसः षष्ठी का एकवचन तथा अभ्यम् प्रथमा का एकवचन है। युष्मद् च अस्मद् च इस विग्रह में इतरेतर योग द्वन्द्व समास करने पर युष्मदस्मदौ ताभ्याम् युष्मदस्मद्भ्याम्। सूत्रार्थ सम्पन्न होता है- युष्मद् और अस्मद् शब्द से पर में विद्यमान भ्यस् प्रत्यय के स्थान पर अभ्यम् आदेश होता है। इस सूत्र से विधीयमान आदेश अनेकाल्शित्सर्वस्य इस परिभाषा के द्वारा सम्पूर्ण भ्यस् विभक्ति के स्थान पर अभ्यम् आदेश होता है।

सूत्रार्थ समन्वय - युष्म् भ्यस् अस्म् भ्यस् इस अवस्था में प्रस्तुत सूत्र से भ्यस् के स्थान पर अभ्यम् आदेश करने पर युष्मभ्यम् अस्मभ्यम् ये दो रूप सिद्ध होते हैं।

अवध्यातव्य विषय - शेषे लोपः इस सूत्र से अन्तिम भाग का लोप होता है। जो लोग ये कहते हैं उनके मत में सूत्र का स्वरूप बनता है- भ्यसो भ्यम् इस पक्ष में युष्मद् भ्यस् अस्मद् भ्यस् इस स्थिति में शेषे लोपः से दकार का लोप करने पर युष्म भ्यस् अस्म भ्यस् बन गया। प्रस्तुत सूत्र से भ्यस् प्रत्यय के स्थान पर भ्यम् आदेश, वर्ण सम्मेलन करने पर युष्मभ्यम् अस्मभ्यम् ये दो रूप सिद्ध होते हैं।

17.15 - एकवचनस्य च। 7.1.32

सूत्रार्थ - युष्मद् और अस्मद् शब्द से पर में विद्यमान पञ्चमी के एकवचन के स्थान पर अत् आदेश होता है।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से ङसि विभक्ति के स्थान पर अत् आदेश होता है। अतः यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में एकवचनस्य च ये दो पद है। युष्मदस्मद्भ्यां ङसोऽश् इस सूत्र से युष्मदस्मद्भ्यां यह पद तथा पंचम्या अत् यह सम्पूर्ण सूत्र अनुवर्तित होता है। युष्मदस्मद्भ्याम् पञ्चमी का द्विवचन है तथा पंचम्याः एकवचनस्य ये दोनों षष्ठी के एकवचन है। च अव्यय पद तथा अत् प्रथमान्त पद अनुवर्तित होता है। युष्मद्च अस्मद्च इस विग्रह में इतरेतर योग द्वन्द्व समास युष्मदस्मदौ ताभ्यां युष्मदस्मद्भ्याम्। सूत्रार्थ होता है- युष्मद् और अस्मद् शब्द से पर में विद्यमान पञ्चमी के एकवचन के स्थान पर अत् आदेश होता है। यह अत् आदेश अनेकाल्शित्सर्वस्य इस परिभाषा के द्वारा सम्पूर्ण ङसि प्रत्यय के स्थान पर अत् आदेश होता है।

सूत्रार्थ समन्वय - युष्मद् और अस्मद् शब्द से पञ्चमी विभक्ति के एकवचन में ङसि प्रत्यय युष्मद् ङसि, अस्मद् ङसि बन गया। इस स्थिति में प्रस्तुत सूत्र से ङसि प्रत्यय के स्थान पर अत् आदेश युष्मद् अत् अस्मद् अत् बन गया। त्वमावेकवचने इस सूत्र से युष्मद् और अस्मद् के मपर्यन्त भाग के स्थान पर क्रमानुसार त्व म आदेश करने पर त्व अद् अत्, म अद् अत् बन गया शेषे लोपः से टिलोप पक्ष में अद् भाग का लोप करने पर त्व अत् म अत् बन गया। अतो गुणे से पररूप करने पर त्वत् मत् ये दो रूप सिद्ध होते हैं।

ध्यान दें:

शेषे लोपः से अन्त्यलोप के पक्ष में पहले अतो गुणे से पररूप, त्वद् अत् मद् अत् बन गया। शेषे लोपः से दकार का लोप करने पर त्व अत् म अत् बन गया। अतो गुणे से पररूप करने पर त्वत् मत् ये दो रूप सिद्ध होते हैं।

अवधेय विषय - अत् के तकार की हलन्त्यम् इस सूत्र से इत्संज्ञा नहीं होगी, क्योंकि न विभक्तौ तुस्माः से निषेध हो जाता है।

युष्मद् और अस्मद् शब्द से पञ्चमी विभक्ति के बहुवचन की विवक्षा में भ्यस् प्रत्यय क्रमानुसार युष्मद् भ्यस् और अस्मद् भ्यस् बन गया इस स्थिति में अग्रिम सूत्र प्रवृत्त होता है।

17.16 - पञ्चम्या अत्। 7.1.31

सूत्रार्थ - युष्मद् और अस्मद् शब्द से पर में पञ्चमी के भ्यस् के स्थान पर अत् आदेश होता है।

सूत्रार्थ व्याख्या - इस सूत्र से भ्यस् प्रत्यय के स्थान पर अत् आदेश होता है। अतः यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में पंचम्याः अत् ये दो पद है। युष्मदस्मद्भ्यां ङसोऽश् इस सूत्र से युष्मदस्मद्भ्यां यह पद अनुवर्तित होता है। भ्यसोऽभ्यम् इस सूत्र से भ्यसः यह पद अनुवर्तित होता है। युष्मदस्मद्भ्याम् यह पञ्चमी का द्विवचनान्त पद है। भ्यसः पंचम्याः ये दोनों षष्ठ्यन्तपद है। अत् प्रथमा का एकवचन है। युष्मद् च अस्मद् च इस विग्रह में इतरेतर योग द्वन्द्व समास करने पर युष्मदस्मदौ ताभ्यां युष्मदस्मद्भ्याम्। सूत्रार्थ सम्पन्न होता है- युष्मद् और अस्मद् शब्द से पर में पञ्चमी के भ्यस् के स्थान पर अत् आदेश होता है।

इस सूत्र से विधीयमान आदेश अत् आदेश अनेकाल्शित्सर्वस्य इस परिभाषा के द्वारा सम्पूर्ण भ्यस् के स्थान पर अत् आदेश होता है।

सूत्रार्थ समन्वय - युष्मद् भ्यस् अस्मद् भ्यस् इस अवस्था में प्रस्तुत सूत्र से भ्यस् के स्थान पर अत् आदेश, युष्मद् अत् अस्मद् अत् बन गया, शेषे लोपः इस सूत्र से टिलोप के पक्ष में टि के अद् भाग के लोप होने पर युष्म् अत् तथा अस्म् अत् बन गया, वर्ण सम्मेलन युष्मत् अस्मत् ये दो रूप सिद्ध होता है।

अन्त्यलोप पक्ष पहले युष्मद् अत् अस्मद् अत् बन गया। शेषे लोपः इस सूत्र से दकार का लोप करने पर युष्म अत् अस्म अत् बन गया। अतो गुणे से पर रूप युष्मत् अस्मत् ये दो रूप सिद्ध होता है।

युष्मद् और अस्मद् शब्द से षष्ठी एकवचन की विवक्षा में ङस् प्रत्यय, युष्मद् ङस् अस्मद् ङस् बन गया। इस स्थिति में सूत्र आता है।

17.17 - तवममौ ङसि। 7.2.96

सूत्रार्थ - युष्मद् और अस्मद् के मपर्यन्त के स्थान पर तव और मम आदेश होता है। ङस् प्रत्यय परे रहते।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से युष्मद् और अस्मद् के स्थान पर क्रम से तव और मम आदेश होते हैं, अतः विधि सूत्र है। इस सूत्र में तवममौ ङसि ये दो पद है। युष्मदस्मदोरनादेशे इस सूत्र से युष्मदस्मदोः पद अनुवर्तित है तथा मपर्यन्तस्य का अधिकार है। युष्मदस्मदोः षष्ठी द्विवचनान्त पद है तथा मपर्यन्तस्य षष्ठी का एकवचन है। तवममौ प्रथमा द्विवचनान्त तथा ङसि सप्तमी का एकवचन है। युष्मद् च अस्मद् च इस विग्रह में इतरेतर योग द्वन्द्व समास करने पर युष्मदस्मदौ तयोः युष्मदस्मदोः। मं इति यावत् इस विग्रह में मयूरव्यंसकादि समास करने पर मपर्यन्तम् तस्य मपर्यन्तस्य। तव च मम च इतरेतर योग द्वन्द्व समास

ध्यान दें:

तवममौ। सूत्रार्थ होता है- युष्मद् और अस्मद् के मपर्यन्त भाग के स्थान पर क्रमानुसार तव मम आदेश होते हैं ङस् प्रत्यय परे रहते।

उदाहरण - तव मम ये दो उदाहरण है।

सूत्रार्थ समन्वय - युष्मद् ङस् अस्मद् ङस् इस अवस्था में ङस् प्रत्यय परे रहते प्रस्तुत सूत्र से मपर्यन्त भाग के स्थान पर तव और मम आदेश करने पर तव अद् ङस् मम अद् ङस् बन गया तब अगला सूत्र प्रवृत्त होता है।

17.18 - युष्मदस्मद्भ्यां ङसोऽश्। 7.1.27

सूत्रार्थ - युष्मद् और अस्मद् शब्द से पर में विद्यमान ङस् के स्थान पर अश् आदेश होता है।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से ङस् के स्थान पर अश् आदेश होता है। अतः यह एक विधि सूत्र है। इस सूत्र में तीन पद है। युष्मदस्मद्भ्यां ङसः अश् ये तीन पद है इस सूत्र में। युष्मदस्मद्भ्याम् पञ्चमी का द्विवचन है। ङसः षष्ठी का एकवचन है। अश् प्रथमा का एकवचन है। युष्मद् च अस्मद् इस विग्रह में इतरेतर योग द्वन्द्व समास करने पर युष्मदस्मदौ ताभ्यां युष्मदस्मद्भ्याम्। युष्मद् और अस्मद् शब्द से पर में विद्यमान ङस् विभक्ति के स्थान पर अश् आदेश होता है।

यद्यपि इस सूत्र से विहित अश् आदेश आदेः परस्य परिभाषा के द्वारा अस् के अकार के स्थान पर प्राप्त होता है। परन्तु अनेकाल्शित्सर्वस्य परिभाषा के द्वारा सम्पूर्ण ङस् के स्थान पर आदेश होता है अशादेश का अकार मात्र अवशेष रहता है।

सूत्रार्थ समन्वय - तव अद् अस् मम अद् अस् बन जाने पर प्रस्तुत सूत्र से ङस् के स्थान पर अश् आदेश, अनुबन्ध लोप तव अद् अ मम अद् अ बन गया। शेषे लोपः से टिलोप के पक्ष में टिसंज्ञक अद् भाग का लोप करने पर तव अ मम अ बन गया इस स्थिति में अतो गुणे से पररूप करने पर तवम म ये दो रूप सिद्ध होते हैं।

शेषे लोपः के अन्त्यलोप पक्ष में पहले अतो गुणे से पररूप तवद् अ ममद् अ बन गया। शेषे लोपः से अन्तिम दकार का लोप करने पर तव अ मम अ बन गया अतो गुणे से पररूप करने पर तव मम ये दो रूप सिद्ध होते हैं।

षष्ठी द्विवचन में युष्मद् ओस् अस्मद् ओस् इस अवस्था में युवावौ द्विवचने से युष्मद् और अस्मद् के मपर्यन्त् भाग के स्थान पर युव और आव आदेश करने पर युव अद् ओस् आव अद् ओस् बन गया। योऽचि से दकार के स्थान पर यकार आदेश करने पर युव अय् ओस् आव अय् ओस् बन गया। अतो गुणे से पर रूप एकादेश करने पर तथा सकार को रुत्वविसर्ग करने पर युवयोः आवयोः ये दो रूप सिद्ध हो जाते है।

17.19 - साम आकम्। 7.1.33

सूत्रार्थ - युष्मद् और अस्मद् से पर में विद्यमान साम् के स्थान पर आकम् आदेश होता है।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से युष्मद् और अस्मद् शब्द से पर में साम् के स्थान पर आकम् आदेश होता है।

अतः यह विधि सूत्र है। सामः आकम् ये दो पद है इस सूत्र में। युष्मदस्मद्भ्यां ङसोऽश् इस सूत्र

ध्यान दें:

से युष्मदस्मद्भ्याम् यह पद अनुवर्तित होता है। युष्मदस्मद्भ्याम् पञ्चमी का द्विवचन है। साम: षष्ठी का एकवचन है। आकम् प्रथमा का एकवचन है। युष्मद् च अस्मद् च इस विग्रह में इतरेतर योग द्वन्द्व समास करने पर युष्मदस्मदौ ताभ्यां युष्मदस्मद्भ्याम्। सूत्रार्थ होता है- युष्मद् और अस्मद् शब्द से पर में विद्यमान साम् के स्थान पर आकम् आदेश होता है।

इस सूत्र में साम् यह पद सुट्सहित आम् का ग्रहण है। यह आकम् आदेश अनेकाल्शित्सर्वस्य इस परिभाषा के द्वारा सम्पूर्ण साम् के स्थान पर आकम् आदेश होता है।

विचार - युष्मद् आम् अस्मद् आम् इस स्थिति में ये दोनों शब्द अवर्णान्त नहीं है। अत: आमि सर्वनाम्न: सुट् सूत्र से सुट् का आगम प्राप्त नहीं होता है। अत: सुट्सहित आम् के अभाव में सूत्र में साम् का निर्देश क्यों किया गया है। इसका समाधान यह है कि भविष्यत्काल में प्राप्त सम्भावित सुट् आगम की निवृत्ति के लिए सुट्सहित निर्देश किया गया है क्योंकि यदि आम आकम् यह सूत्र बनाया गया होता तो आम् के स्थान पर आकम् आदेश करने के पश्चात् शेषे लोप: इस सूत्र से दकार का लोप करने पर युष्म आकम् अस्म आकम् बन गया। इस स्थिति में युष्मद् और अस्मद् शब्द अकारान्त हो गये। इस अवस्था में आमि सर्वनाम्न: सुट् से सुट् का आगम प्राप्त है। यह सुट् का आगम न हो पाये इसके लिए साम: यह सुट् आगम युक्त निर्देश किया गया है। अत: आकम् आदेश करने के बाद में ही शेषे लोप: इस सूत्र से अन्त्य के लोप के पक्ष में यद्यपि युष्मद् और अस्मद् शब्द अकारान्त सम्पन्न हो जाते हैं फिर भी सुट् प्राप्त नहीं होता है। अन्यथा सुट्सहित निर्देश करना व्यर्थ हो जाता।

सूत्रार्थ समन्वय - युष्मद् और अस्मद् शब्द से षष्ठी के बहुवचन की विवक्षा में आम् प्रत्यय, युष्मद् आम् अस्मद् आम् बन गया। इस स्थिति में साम आकम् इस सूत्र से आम् के स्थान पर आकम् आदेश, युष्मद् आकम् अस्मद् आकम् बन गया। अन्त्यलोप के पक्ष में शेषे लोप: इस सूत्र से दकार का लोप होने पर युष्म आकम् और अस्म आकम् बन गया, अक: सवर्णे दीर्घ: इस सूत्र से सवर्ण दीर्घ करने पर युष्माकम् अस्माकम् ये दो रूप बनते हैं। टिलोप के पक्ष में अद् भाग का लोप करने पर युष्म् आकम् अस्म् आकम् बन गया वर्ण सम्मेनलन करने पर युष्माकम् अस्माकम् ये दो रूप बन जाते हैं।

पाठगत प्रश्न-4

18. ङे प्रत्यय परे रहते युष्मद् और अस्मद् के स्थान पर कौन-सा आदेश होता है?
19. भ्यस् प्रत्यय के स्थान पर कौन-सा आदेश होता है?
20. युष्मद् और अस्मद् शब्द से पर में ङसि प्रत्यय के स्थान पर कौन-सा आदेश होता है?
21. ङस् प्रत्यय के परे रहते युष्मद् और अस्मद् के मपर्यन्त भाग के स्थान पर क्या आदेश होता है?
22. साम आकम् सूत्र का अर्थ लिखिए?
23. पंचम्या अत् इस सूत्र का अर्थ लिखिए?
24. युष्मद् और अस्मद् शब्द से पर में ङस् के स्थान पर किस सूत्र से क्या आदेश होता है?

द्वितीया चतुर्थी तथा षष्ठी विभक्तियों में युष्मद् और अस्मद् शब्द के विषय में कुछ विशेष कार्य दिखाई देते हैं। इस भाग में वह विषय सूत्रोल्लेख पूर्वक विचार किया जाता है।

पाठ-17

हलन्त प्रकरण में तत् इत्यादि शब्दों के रूप

ध्यान दें:

17.20- युष्मदस्मदोः षष्ठी चतुर्थी द्वितीया स्थयोर्वान्नावौ॥ 8.1.20

सूत्रार्थ - पद से पर पाद के आदि में स्थित न हों, ऐसे षष्ठी चतुर्थी और द्वितीया युक्त युष्मद् और अस्मद् के स्थान पर क्रमशः वाम् और नौ आदेश होते हैं।

सूत्र व्याख्या- इस सूत्र से युष्मद् और अस्मद् के स्थान पर क्रमशः वाम् और नौ आदेश होते हैं। अतः यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में तीन पद हैं- युष्मदस्मदोः षष्ठी चतुर्थी द्वितीया स्थयोः वान्नावौ। इस सूत्र में पदात् का अधिकार है। जो कि पञ्चमी का एकवचन है। अनुदात्तं सर्वमापदादौ (8.1.18) इस सूत्र का भी अधिकार है। अपादादौ इस पद में नञ् तत्पुरुष समास है। यहां पर नञ् प्रसज्यप्रतिषेध वाला है। पदस्य (8.1.16) का अधिकार है। उसका द्विवचनान्त के रूप में विपरिणाम किया जाता है। युष्मदस्मदोः षष्ठी द्विवचनान्त तथा इतरेतर योग द्वन्द्व समास से निष्पन्न है। षष्ठी चतुर्थी द्वितीया स्थयोः षष्ठी द्विवचनान्त इतरेतर योग द्वन्द्व से निष्पन्न पद है। वान्नावौ प्रथमा द्विवचनान्त आदेश बोधक पद है। अतः सूत्र का अन्वय होता है। अतः सूत्र का सामान्य अर्थ होता है- पद से पर में षष्ठी, चतुर्थी और द्वितीया विभक्ति के साथ वर्तमान युष्मद् और अस्मद् के स्थान पर क्रमशः वाम् और नौ आदेश होते हैं। परन्तु यह आदेश पाद के आदि में नहीं होता है।

उदाहरण -

द्वितीया विभक्ति में - शिक्षकः वां (युवां) पाठयति। शिक्षकः नौ (आवां) पाठयति।

चतुर्थी विभक्ति में - राजा वां (युवाभ्याम्) धनं यच्छति। राजा नौ (आवाभ्याम्) धनं यच्छति।

षष्ठी विभक्ति में - इदं पुस्तकं वाम् (युवयोः) अस्ति। इदं पुस्तकं नौ (आवयोः) अस्ति।

सूत्रार्थ समन्वय - यहां सभी जगह द्वितीया विभक्तिस्थ युष्मद् और अस्मद् शब्द पाद के आदि में नहीं है और वे किसी पद से पर में ही प्रयुक्त है। अतः इस सूत्र से सम्पूर्ण द्वितीयादिविभक्तिस्थ युष्मद् और अस्मद् शब्द के स्थान पर क्रम से वाम् और नौ आदेश होते हैं।

एक श्लोक में चार पाद होते हैं। इस सूत्र में अपादादौ इस निषेध के कारण पाद के आदि में ये दोनों आदेश नहीं होते हैं। जैसे आवयोर्हरसि व्यथाम् इस अनुष्टुप् छन्द के श्लोक में एक पाद के आदि में स्थित युष्मद् शब्द के स्थान पर वाम् आदेश नहीं होता है। यह सूत्र केवल द्वितीया, चतुर्थी, षष्ठी विभक्तियों के द्विवचन में ही प्रयुक्त होता है। अब इसके अपवाद सूत्र बताये जाते हैं।

17.21 - बहुवचनस्य वस्नसौ। 8.1.21

सूत्रार्थ - पद से पर पाद के आदि में स्थित न हों, ऐसे षष्ठी चतुर्थी और द्वितीया बहुवचन युक्त युष्मद् और अस्मद् के स्थान पर क्रमशः वस् और नस् आदेश होता है।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से वस् और नस् आदेश होते हैं। अतः यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। बहुवचनस्य षष्ठी का एकवचन है। वस्नसौ प्रथमा का द्विवचन है। पूर्वसूत्र में अधिकृत पद यहां भी यथावत् अनुवर्तित होते हैं। पूर्व सूत्र से युष्मदस्मदोः षष्ठी चतुर्थी द्वितीया स्थयोर्वान्नावौ इस सूत्र से युष्मदस्मदोः यह षष्ठी द्विवचनान्त तथा षष्ठी चतुर्थी द्वितीया स्थयोः यह षष्ठीद्विवचनान्त पद अनुवर्तित होते हैं। अतः इस सूत्र का सामान्य अर्थ बनता है- पद से पर में विद्यमान षष्ठीबहुवचनान्त, चतुर्थी बहुवचनान्त तथा द्वितीया बहुवचनान्त युष्मद् और अस्मद् शब्द के स्थान पर क्रमशः वस् और नस् आदेश होते है। परन्तु यह आदेश पाद के आदि में नहीं होता है।

ध्यान दें:

उदाहरण -

द्वितीया - शिक्षकः वः (युष्मान्) पाठयति। शिक्षकः नः (अस्मान्) पाठयति।

चतुर्थी में - राजा वः (युष्मभ्यं) धनं यच्छति। राजा नः (युष्मभ्यम्) धनं यच्छति।

षष्ठी विभक्ति - इदं पुस्तकं वः (युष्माकम्) अस्ति। इदं पुस्तकं नः (अस्माकम्) अस्ति।

सूत्रार्थ समन्वय - प्रस्तुत उदाहरणों में सर्वत्र युष्मद् और अस्मद् शब्द पाद के आदि में नहीं है। और वे पद किसी पद के पर में है तथा षष्ठ्यादि बहुवचनान्त भी है। अतः इस सूत्र से यहां वस् और नस् आदेश होता है।

इस सूत्र से अपादादौ इस कथन के कारण से पादादि में यदि षष्ठ्यादि बहुवचनान्त युष्मद् और अस्मद् शब्द हो तो इस सूत्र से वस् नस् ये आदेश नहीं होता है।

17.22 तेमयावेकवचनस्य। 8.1.22

सूत्रार्थ - पद से पर में युष्मद् और अस्मद् शब्द के षष्ठी चतुर्थी के एकवचनान्त के स्थान पर ते में आदेश होते हैं। पाद के आदि में हो तो नहीं।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से ते और में आदेश होते हैं। अतः यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में दो पद है। तेमयौ प्रथमा द्विवचनान्त आदेश बोधक पद है। एकवचनस्य षष्ठी का एकवचन है जो कि पष्ठी द्विवचनान्त के रूप में विपरिणाम कर दिया जाता है। पूर्व सूत्र में अधिकृत पदों का अधिकार इस सूत्र में भी आता है।

पूर्व सूत्र युष्मदस्मदोः षष्ठी चतुर्थी द्वितीया स्थयोर्वान्नावौ इस सूत्र से युष्मदस्मदोः षष्ठी चतुर्थी द्वितीया स्थयोः ये दो पद अनुवर्तित होता है। परन्तु इस सूत्र का अपवाद भूत अग्रिम सूत्र प्रवृत्त होता है त्वामौ द्वितीयायाः। वह सूत्र द्वितीयैकवचनान्त युष्मद् और अस्मद् शब्द के स्थान पर आदेश करता है। अतः तेमयावेकवचनस्य यह सूत्र षष्ठी के एकवचन तथा चतुर्थी के एकवचन कार्य करता है। अतः सूत्रार्थ इस प्रकार होता है-

पद से पर में युष्मद् और अस्मद् शब्द के षष्ठी चतुर्थी के एकवचनान्त के स्थान पर ते में आदेश होते हैं। पाद के आदि में हो तो नहीं।

उदाहरण- चतुर्थी - राजा ते (तुभ्यम्) धनं ददाति। राजा में (मह्यम्) धनं यच्छति।

षष्ठी- विष्णुः ते (तव) स्वामी। त्वं में (मम) दासः।

सूत्रार्थ समन्वय- पूर्वोक्त उदाहरणों में युष्मद् और अस्मद् शब्द चतुर्थी एकवचनान्त, षष्ठी एकवचनान्त है।

ये दोनों पद से पर में भी है। लेकिन पाद के आदि में नहीं है। अतः प्रस्तुत सूत्र से युष्मद् शब्द के स्थान पर ते अस्मद् के स्थान पर में आदेश होता है।

पूर्ववत् इस सूत्र में भी अपादादौ इस कथन के कारण यदि पाद के आदि में युष्मद् अस्मद् चतुर्थ्यन्त षष्ठ्यन्त होंगे तो उनके स्थान पर ते में आदेश नहीं होंगे।

ध्यान दें:

17.23 - त्वामौ द्वितीयायाः। 8.1.23

सूत्रार्थ - पद से पर में द्वितीया एकवचनान्त युष्मद् और अस्मद् शब्द के स्थान पर त्वा मा आदेश होता है। पाद के आदि में हो तो नहीं।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से त्वा मा आदेश होते हैं अतः यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में त्वामौ प्रथमा का द्विवचनान्त है। द्वितीयायाः षष्ठी का एकवचन है। पूर्व सूत्र में अधिकृत सूत्र यहां भी आते हैं। युष्मदस्मदोः षष्ठी चतुर्थी द्वितीया स्थयोर्वान्नावौ इस सूत्र से युष्मदस्मदोः यह षष्ठी द्विवचनान्त पद अनुवर्तित होता है। तेमयावेकवचनस्य इस सूत्र से एकवचनस्य यह षष्ठी एकवचनान्त पद अनुवर्तित होता है। जो कि षष्ठी द्विवचनान्त के रूप में विपरिणमित कर दिया जाता है।

जिस कारण से सूत्र का सरल अर्थ होता है। पद से परे द्वितीया के एकवचनान्त युष्मद् और अस्मद् शब्द के स्थान पर क्रमानुसार त्वा और मा आदेश होता है। पाद के आदि में हो तो नहीं।

उदाहरण - देवः त्वा (त्वाम्) अवतु। देवः मा (मांम्) अवतु।

सूत्रार्थ समन्वय - पूर्वोक्त उदाहरण में युष्मद् और अस्मद् शब्द द्वितीयैकवचनान्त है। और ये दोनों पद के पर में भी है। तथा पाद के आदि में भी नहीं है। अतः प्रस्तुत सूत्र से युष्मद् शब्द के स्थान पर त्वा तथा अस्मद् शब्द के स्थान पर मा आदेश होता है।

पूर्व सूत्रों की भांति इस सूत्र में भी अपादादौ इस कथन के कारण से पादादि में द्वितीया एकवचनान्त युष्मद् अस्मद् शब्द हों तो इस सूत्र से त्वा मा आदेश नहीं होते हैं।

युष्मद् और अस्मद् को जो आदेश विहित हुए हैं। वे समान वाक्य में ही होते हैं। वाक्य का मतलब जहां एक तिङन्त मुख्य हो। इस कारण से ओदनं पच, तव भविष्यति। यहां दो वाक्य सम्पन्न होते हैं। अतः तव पद से पर में नहीं होता है। अतः तव पद के स्थान पर ते आदेश नहीं होता है।

इस प्रकार युष्मद् और अस्मद् के स्थान पर आदेश के बहुत से नियम है। अधिक जानने की इच्छा हो तो लघु सिद्धान्त कौमुदी सिद्धान्त कौमुदी आदि ग्रन्थों का परिशीलन करें।

पाठ सार

पाठ के शुरुआत में तत् शब्द का विचार किया गया। तीनों लिंगों में प्रयुक्त यह शब्द परोक्ष वस्तु का बोध कराता है। यहां सुप्रत्यय पर में रहते दकार के स्थान पर त्यदादीनामः से अकार अतो गुणे से पररूप, तत्पश्चात् तदोः सः सावनन्त्ययोः से अनन्त्य तकार के स्थान पर सकार करने पर सः बनता है। अन्यत्र सर्व शब्द के तरह रूप चलते हैं।

युष्मद् और अस्मद् शब्दों के विचार के समय कुछ विषय हमने देखे। उन्हें क्रमशः यहां उपस्थापन किया जाता है।

- मपर्यन्त के आदेश के विषय में-
  - ❖ एकवचन में सुप्रत्यय ङेप्रत्यय, ङस् प्रत्ययों को छोड़कर अन्यत्र सभी जगह त्वमावेकवचने सूत्र प्रवर्तित होता है। सुप्रत्यय में त्वाहौ सौ यह सूत्र तथा ङेप्रत्यय में तुभ्यमह्यौ ङयि यह सूत्र तथा ङस् प्रत्यय के स्थल में तवममौ ङसि यह सूत्र प्रवृत्त होता है।

ध्यान दें:

- ❖ द्विवचन में सर्वत्र मपर्यन्त के स्थान पर युवावौ द्विवचने से युव और आव आदेश होते हैं।
- ❖ बहुवचन में जस् प्रत्यय को छोड़कर कहीं भी मपर्यन्त के स्थान पर कोई आदेश नहीं होता है। सिर्फ जस् प्रत्यय में यूयवयौ जसि से यूय और वय आदेश होते हैं।

- विभक्ति के स्थान पर आदेश के विषय में-

  शस् प्रत्यय को छोड़कर प्रथमा द्वितीया विभक्ति के स्थान पर, ङे प्रत्यय के स्थान पर ङेप्रथमयोरम् इस सूत्र से अम् आदेश होता है। शस् के स्थान पर शसो न इस सूत्र से न आदेश तथा आम् के स्थान पर साम आकम् इस सूत्र से आकम् आदेश, पञ्चमी के एकवचन और बहुवचन के स्थान पर युष्मदस्मद्भ्यां ङसोऽश् इस सूत्र से अश् आदेश होता है। पञ्चमी के एकवचन और बहुवचन के स्थान पर पंचम्या अत् इस सूत्र से अत् आदेश होता है। अन्यत्र विभक्तियों के स्थान पर कोई आदेश नहीं होता है।

- आत्व के विषये में-

  प्रथमा द्विवचन में औ प्रत्यय परे रहते प्रथमायाश्च द्विवचने भाषायाम् इस सूत्र से तथा द्वितीया विभक्ति में द्वितीया यांच इस सूत्र से, भ्याम्, भिस् सुप् प्रत्यय परे रहते युष्मदस्मदोरनादेशे इस सूत्र से युष्मद् और अस्मद् के दकार के स्थान पर आकार आदेश होता है।

- यत्व के विषय में-

  टा प्रत्यय, ओस् तथा ङिप्रत्यय पर में रहते योऽचि इस सूत्र से यकार आदेश होता है।

- शेषे लोपः सूत्र के विषय में -

  प्रथमा, पञ्चमी, चतुर्थी तथा षष्ठी के एकवचन में शेषे लोपः यह सूत्र प्रवृत्त होता है।

  योग्यता वृद्धि -

इस भाग में तद् शब्द, युष्मद् अस्मद् शब्दों के रूप दिये जा रहे हैं। इनके रूप छात्र गण कण्ठस्थ कर ले।

1- पुल्लिंग में तद् शब्द के रूप-

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

पाठ-17

हलन्त प्रकरण में तत् इत्यादि शब्दों के रूप

ध्यान दें:

2- अस्मद् शब्द के रूप-

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्	आवाम्	अस्मान्
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्	आवाभ्याम्	अस्मभ्यम्
पञ्चमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम	आवयोः	अस्माकम्
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

3- युष्मद् शब्द के रूप -

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्	युवाम्	युष्मान्
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्	युवाभ्याम्	युष्मभ्यम्
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव	युवयोः	युष्माकम्
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

पाठान्त प्रश्न

1. शेषे लोपः सूत्र की व्याख्या करो?
2. युष्मद् और अस्मद् के मपर्यन्त भाग के स्थान पर विहित आदेशों को सूत्र पूर्वक लिखो?
3. युष्मद् और अस्मद् से पर में विभक्ति के स्थान पर कौन-कौन से आदेश होते हैं? उदाहरण व सूत्र लिखो?
4. युष्मदस्मदोरनादेशे सूत्र की व्याख्या करो?
5. साम आकम् सूत्र की व्याख्या करो?
6. शसो न इस सूत्र का उदाहरण और व्याख्या लिखो?
7. प्रदत्त रूपों की सिद्धि करो - सः, युष्मान्, अस्माकम्, आवाम्, त्वम् त्वाम्, अहम् त्वया, अस्मत्।

ध्यान दें:

पाठगत प्रश्नोत्तर

उत्तर-1

1. त्यदादियों के अनन्तिम तकार दकार के स्थान पर सकार आदेश होता है। सु प्रत्यय परे रहते।
2. अनन्तिम तकार और दकार के स्थान पर होता है।
3. अन्त्यं च अन्त्यं च अन्त्ये इतरेतरयोगद्वन्द्व समास। न अन्त्ये अनन्त्ये नञ्तत्पुरुषसमास तयो: अनन्त्ययो:।
4. परोक्ष वस्तु का बोध कराने के लिए उपयोग होता है।

उत्तर-2

5. ङे और प्रथमा द्वितीया के स्थान पर अम् आदेश होता है।
6. युष्मद् और अस्मद् के मपर्यन्त भाग के स्थान पर त्व और अह आदेश होता है।
7. अन्त्य लोप पक्ष तथा टिलोप पक्ष।
8. द्वित्व की विवक्षा में युष्मद् और अस्मद् के मपर्यन्त भाग को युव और आव आदेश होते हैं।
9. यूयवयौ जसि इस सूत्र से युष्मद् के मपर्यन्त भाग के स्थान पर यूय आदेश होता है।
10. प्रथमा के द्विवचन में औ विभक्ति में युष्मद् और अस्मद् के अन्तिम के स्थान पर आकार आदेश होता है।

उत्तर-3

11. एकत्व की विवक्षा में युष्मद् और अस्मद् के मपर्यन्त भाग के स्थान पर त्व म आदेश होते हैं। विभक्ति परे रहते।
12. द्वितीयायांच इस सूत्र से।
13. ङेप्रथमयोरम् इस सूत्र का अपवाद है।
14. आदे: परस्य इस परिभाषा के प्राबल्य से शस् के अकार के स्थान पर नकार होता है।
15. युष्मद् और अस्मद् के स्थान पर आकार होता है। अनादेश हलादि विभक्ति परे रहते।
16. योऽचि इस सूत्र से
17. संयोगान्तस्य लोप: इस सूत्र से।

ध्यान दें:

उत्तर-4

18. तुभ्यमह्यौ ङयि इस सूत्र से तुभ्य और मह्य आदेश होता है।

19. भ्यसोऽभ्यम् इस सूत्र से अभ्यम् आदेश होता है।

20. एकवचनस्य च इस सूत्र से अत् आदेश होता है।

21. तव मम आदेश होता है।

22. युष्मद् और अस्मद् से पर में साम् के स्थान पर आकम् आदेश होता है। यह सूत्रार्थ है।

23. पञ्चमी विभक्ति के भ्यस् के स्थान पर अत् आदेश होता है।

24. युष्मद् अस्मद् शब्द से पर में ङस् के स्थान पर अश् आदेश होता है।

18

हलन्त प्रकरण में महत् इत्यादि शब्दों के रूप

ध्यान दें:

पूर्व पाठ में तद् युष्मद् अस्मद् इन तीन शब्दों के रूप सिद्धि के लिए उन्नीस सूत्रों का विचार किया गया।

इस पाठ में महत्, विद्वस्, भवत् अदस् ददत्, तुदत् पचत् इन सात शब्दों के रूप यहां सिद्ध किए जाएंगे। कुल मिलाकर 12 सूत्रों की यहां व्याख्या हुई है। संस्कृत साहित्य में ये शब्द प्रसिद्ध है। महत् और भवत् शब्द यद्यपि तकारान्त है लेकिन उनके रूप में भेद दिखाई देता है। इसी प्रकार से विद्वस् और अदस् शब्द में भी है। अत: तकारान्त और सकारान्त समानता देखकर रूप समान होंगे ये नहीं सोचना चाहिए। अत: सूत्रों का विचार करना चाहिए। इस पाठ में विद्यमान सूत्र वैयाकरण कुल में प्रसिद्ध है। सरल शैली में यहां सूत्र व्याख्यात है जोकि छात्रों के लिए सुबोध योग्य है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे

- महत् शब्द के उपधा को दीर्घ कब होगा जान पाने में;
- भवत् शब्द के दो भेद जान पाने में;
- विद्वस् शब्द रूपों की सिद्धि के लिए अपेक्षित सूत्रों का परिचय प्राप्त कर पाने में;
- अदस् शब्द के दकार, उत्तरवर्ती अकार तथा सकार के स्थान पर कौन-कौन से आदेश होते हैं। जान पाने में;
- अदस् शब्द के विषय में पूर्वत्रासिद्धम् इस सूत्र से प्राप्त असिद्धत्व का निषेध कैसे होता है। यह समझ पाने में;
- अभ्यस्त संज्ञा के विषय में परिचय प्राप्त कर पाने में;
- शतृप्रत्ययान्त शब्दों में नुम् आगम की विधि जान पाने में।

पाठ-18

हलन्त प्रकरण में महत् इत्यादि शब्दों के रूप

ध्यान दें:

महत् शब्द

महत् शब्द तकारान्त है। मह्यते पूज्यते इति महान्। यहां पर पृषद्बृहन्महज्जगच्छतृवच्च इस उणादि सूत्र से (उणा 241) मह् धातु से कर्म अर्थ में अति प्रत्यय, शतृवत् आदेश भी होता है। अतः महत् शब्द शतृप्रत्ययान्त हुआ। शतृप्रत्यय में ऋकार इत्संज्ञक है अतः यह शब्द उगित् है। महत् शब्द से सुप्रत्यय, अनुबन्ध लोप, महत् स् इस स्थिति में महत् शब्द उगित् है अतः सर्वनाम स्थान प्रत्यय परे रहते उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः इस सूत्र से नुमागम, अनुबन्ध लोप, महन् स् बन गया इस स्थिति में अग्रिम सूत्र प्रवृत्त होता है-

18.1 सान्त महतः संयोगस्य 6.4.10

सूत्रार्थ - सान्त संयोग और महत् शब्द का जो नकार उसकी उपधा को दीर्घ होता है, असम्बुद्धि सर्वनामस्थान पर में रहते।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से उपधा को दीर्घ होता है। अतः यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में सान्त महतः संयोगस्य ये तीन पद हैं इस सूत्र में। सान्त लुप्त षष्ठ्यन्त पद है। अतः सान्तस्य यह अर्थ प्राप्त होता है। महतः और संयोगस्य ये दो षष्ठ्यन्त पद है। सान्त यह लुप्तषष्ठ्यन्त पद संयोगस्य के साथ अभेद से अन्वित होता है। अतः सान्त जो संयोग यह अर्थ प्राप्त होता है। नोपधायाः इस सूत्र से न यह लुप्तषष्ठ्यन्त पद तथा ढऊलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः इस सूत्र से दीर्घः यह प्रथमान्त पद, सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ इस सूत्र से सर्वनामस्थाने और असम्बुद्धौ ये दो सप्तम्यन्त पद अनुवर्तित होते हैं। महतः की षष्ठी अवयवार्थक है। यह भी पद न के साथ अन्वित होता है। सूत्रार्थ है- सकारान्त संयोग और महत् शब्द का जो नकार उसके उपधा को दीर्घ होता है, सम्बुद्धि भिन्न सर्वनामस्थान परे रहते।

सूत्रार्थ समन्वय- महन् त् स् यह स्थिति है। यहां सुप्रत्यय का सकार सम्बुद्धिसंज्ञक से भिन्न है। उसके परे रहते महत् शब्द का जो अवयव नकार, उसकी उपधा में विद्यमान हकार उत्तरवर्ती अकार उसको दीर्घ प्रस्तुत सूत्र से होता है। अतः महान् त् स् बन गया अपृक्त एकाल्प्रत्ययः से सकार की अपृक्त संज्ञा हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् इस सूत्र से सकार का लोप करने पर महान् त् रूप बना। पुनः संयोगान्तस्य लोपः से संयोग के अन्त में विद्यमान तकार का लोप करने पर महान् यह रूप सिद्ध होता है। यहां संयोगान्तस्य लोपः के असिद्ध होने के कारण न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य से महान् के नकार का लोप नहीं होता है।

महत् शब्द से औ प्रत्यय, उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः इस सूत्र से नुम् आगम अनुबन्ध लोप, महन् त् औ बन गया। सान्त महतः संयोगस्य से उपधा को दीर्घ करने पर महान् त् औ बन गया। तत्पश्चात् नश्चापदान्तस्य झलि इस सूत्र से नकार को तकार रूप झल् परे रहते अनुस्वार, अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः इस सूत्र से अनुस्वार को पर सवर्ण नकार करने पर महान्तौ यह रूप सिद्ध होता है।

महत् शब्द से जस् प्रत्यय अनुबन्ध लोप महत् अस् बन गया। सर्वनामस्थाने चाऽसम्बुद्धौ इस सूत्र से नुम् आगम, अनुबन्ध लोप, सान्त महतः संयोगस्य इस सूत्र से उपधादीर्घ, नकार को अनुस्वार, परसवर्ण करने पर महान्तस् बन गया सकार को रुत्व विसर्ग करने पर महान्तः यह रूप सिद्ध होता है।

महत् शब्द से भ्याम् प्रत्यय, महत् भ्याम् बन गया, झलां जशोऽन्ते से तकार को दकार करने पर महद्भ्याम् यह रूप सिद्ध होता है।

ध्यान दें:

महत् शब्द से सम्बोधन के एकवचन में सु प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, नुम् आगम, सु प्रत्यय की एकवचनं सम्बुद्धिः इस सूत्र से सम्बुद्धि संज्ञा, अतः उसके परे रहते सान्त महतः संयोगस्य सूत्र की प्राप्ति नहीं होती है। अतः महन् त् स् बन गया। हल्ङ्यचाब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् से सकार का तथा संयोगान्तस्य लोपः से तकार का लोप करने पर महन् यह रूप सिद्ध होता है।

विद्वस् शब्द

विद ज्ञाने इस अदादिगणपठित विद् धातु से शतृप्रत्यय, विदेः शतुर्वसुः इस सूत्र से शतृ के स्थान पर वसु आदेश, करने पर विद्वस् शब्द निष्पन्न होता है। वसु के उकार की इत्संज्ञा होती है अतः यह विद्वस् शब्द उगित् है।

विद्वस् शब्द से सुप्रत्यय, अनुबन्ध लोप, विद्वस् स् इस स्थिति में विद्वस् शब्द उगित् है अतः उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः से नुम् आगम, अनुबन्ध लोप, विद्वन् स् स् बन गया। सान्त महतः संयोगस्य सूत्र से सान्त संयोग के नकार की उपधा वकारोत्तरवर्ती अकार को दीर्घ करने पर विद्वान् स् बनने पर हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् इस सूत्र से स् का लोप करने पर संयोगान्तस्य लोपः से संयोगान्त में विद्यमान सकार को लोप करने पर विद्वान् यह रूप सिद्ध हो जाता है।

विद्वस् शब्द से औ प्रत्यय, नुमागम, विद्वन् स् औ इस स्थिति में, सान्त महतः संयोगस्य इस सूत्र से उपधा दीर्घ करने पर विद्वान् स् औ बन गया। नश्चापदान्तस्य झलि से नकार को अनुस्वार करने पर विद्वांसौ यह रूप सिद्ध होता है।

विद्वस् शब्द से जस् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, विद्वस् अस् इस स्थिति में पूर्ववत् नुम् आगम, उपध दीर्घ, नकार को अनुस्वार विद्वांस् अस् बन गया। सकार को रुत्व विसर्ग करने पर विद्वांसः यह रूप सिद्ध हो जाता है।

इसी प्रकार से अम् और औट् में भी समझना चाहिए।

विद्वस् शब्द से शस् प्रत्यय अनुबन्ध लोप, विद्वस् अस् इस स्थिति में अग्रिम सूत्र प्रवृत्त होता है-

18.2 - वसोः सम्प्रसारणम्। 6.4.131

सूत्रार्थ - वसु प्रत्ययान्त भसंज्ञक को सम्प्रसारण होता है।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से सम्प्रसारण होता है। अतः यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में वसोः सम्प्रसारणम् ये दो पद है। यहां वसोः षष्ठी का एकवचन है। सम्प्रसारणम् प्रथमान्त विधेय बोधक पद है। भस्य और अङ्गस्य का अधिकार समझना चाहिए। वसोः यह पद भस्य का विशेषण है। अतः विशेषण होने के कारण तदन्त विधि के द्वारा वस्वन्त भसंज्ञक यह अर्थ प्राप्त होता है। अङ्गस्य की षष्ठी स्थाने योगा इस परिभाषा के प्राबल्य से अङ्ग के स्थान पर यह अर्थ प्राप्त कराता है। सूत्रार्थ होता है - वसु प्रत्ययान्त भसंज्ञक अङ्ग के स्थान पर सम्प्रसारण होता है।

सूत्रार्थ समन्वय - विद्वस् अस् यह स्थिति है। यहां विद्वस् शब्द वसु प्रत्ययान्त है। तथा यचि भम् से भसंज्ञक है। यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम् से अङ्ग संज्ञक है। अतः अन्तिम यण् वकार को सम्प्रसारण उकार करने पर विदु अस् अस् बन गया। सम्प्रसारणाच्च से उकार और अकार के स्थान पर पूर्वरूप एकादेश, करने पर विदुस् अस् बन गया। आदेशप्रत्यययोः से वसुप्रत्यय के अवयव सकार को षकार करने पर विदुषस् बन गया। सकार को रुत्व विसर्ग करने से विदुषः यह रूप सिद्ध होता है।

ध्यान दें:

विद्वस् भ्याम् इस स्थिति में वसुस्रसुध्वंस्वनडुहां दः इस सूत्र से सकार को दकार करने पर विद्वद्भ्याम् यह रूप सिद्ध हो जाता है।

विद्वस् शब्द से सम्बोधन के एकवचन में सुप्रत्यय, अनुबन्ध लोप, विद्वस् स् बन गया। उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः से नुम् आगम, अनुबन्ध लोप, अपृक्तसंज्ञक सकार का लोप करने पर विद्वन् स् बन गया। संयोगान्तस्य लोपः से संयोग के अन्त में विद्यमान सकार का लोप करने पर विद्वन् यह रूप सिद्ध होता है।

भवत् शब्द

अदादिगणपठित दीप्त्यर्थक भा धातु से भातेर्डवतु इस औणादिक सूत्र से डवतु प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, भा अवत् बन गया। यहां पर भा यद्यपि भसंज्ञक नहीं है फिर भी डवतु प्रत्यय के डित् होने के कारण से भसंज्ञा रहित होने पर भी उसके टिभाग आकार का लोप होता है। वर्ण सम्मेलन करने पर भवत् शब्द निष्पन्न होता है। यचि भम् इस सूत्र से चतुर्थ और पंचम अध्याय में विहित प्रत्ययों के परे रहते पूर्व की भसंज्ञा होती है। यहां डवतु प्रत्यय उणादिगणपठित है और उणादिप्रत्यय तृतीय अध्याय में पढ़े गये हैं। अतः उनके परे रहते भ संज्ञा नहीं होती है यह इसका आशय है।

भवत् शब्द से प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सु प्रत्यय अनुबन्ध लोप, भवत् स् इस स्थिति में अग्रिम सूत्र प्रवृत्त होता है।

18.3 - अत्वसन्तस्य चाधातोः। 6.4.14

सूत्रार्थ - अत्वन्त की उपधा को दीर्घ होता है। तथा धातु से भिन्न असन्त को भी दीर्घ होता है सम्बुद्धिसंज्ञक भिन्न सु प्रत्यय परे रहते।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से उपधा को दीर्घ होता है। अतः यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में चार पद है। अतु असन्तस्य च अधातोः यह पदच्छेद है। अतु लुप्तषष्ठीकपद है। असन्तस्य अधातोः षष्ठ्येकवचनान्त पद है। च अव्यय पद है। अङ्गस्य का अधिकार है। नोपधायाः इस सूत्र से उपधायाः यह षष्ठ्यन्त पद, सर्वनामस्थाने चाऽसम्बुद्धौ से असम्बुद्धौ यह सप्तम्येकवचनान्त पद सौ च इस सूत्र से सौ यह सप्तम्यन्त पद अनुवर्तित होता है। ढऊलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः से दीर्घः यह पद अनुवर्तित होता है। अस् अन्ते यस्य सः असन्तः बहुव्रीहि समास तस्य असन्तस्य। न धातुः अधातुः तस्य अधातोः नञ्तत्पुरुषसमास। असम्बुद्धौ में भी नञ्तत्पुरुषसमास है। अतु यह पद अङ्गस्य का विशेषण है अतः तदन्तविधि के द्वारा अत्वन्त अर्थ होता है। इस सूत्र में अधातोः यह पद असन्त के साथ में ही अन्वित होता है। अतः सूत्रार्थ प्राप्त होता है। अत्वन्त अङ्ग तथा धातुभिन्न असन्त की उपधा को दीर्घ होता है, सम्बुद्धि भिन्न सु प्रत्यय परे रहते।

सूत्र में अतु के द्वारा मतुप् वतुप् डवतु प्रत्ययों का ग्रहण होता है।

सूत्रार्थ समन्वय - भवत् स् यह स्थिति है। यहां भवत् शब्द अत्वन्त है। उससे पर में स्थित सु प्रत्यय सम्बुद्धिभिन्न सुप्रत्यय है। अतः उसके परे रहते अत्वन्त भवत् शब्द के उपधा वकारोत्तरवर्ती अकार को दीर्घ, भवात् स् बन गया। तत्पश्चात् उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः से नुमागम, अनुबन्ध लोप, भवान् त् स् बन गया। तत्पश्चात् हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् से सकार का लोप करने पर भवान् त् बन गया। तत्पश्चात् संयोगान्तस्य लोपः से संयोग के अन्त में विद्यमान तकार का लोप करने पर भवान् यह रूप सिद्ध होता है।

ध्यान दें:

भवत् औ में सुप्रत्यय पर में न होने के कारण से पूर्वसूत्र से उपधा दीर्घ नहीं होता है। यहां केवल नुमागम, पूर्ववत् प्रक्रियाकार्य करने पर भवन्तौ यह रूप सिद्ध होता है।

इस प्रकार से सर्वनामस्थान संज्ञक प्रत्ययों के परे रहते नुम् आगम होता है। सम्बोधन के एकवचन में सुप्रत्यय के सम्बुद्धिसंज्ञक होने के कारण अत्वसन्तस्य चाधातोः इस सूत्र से उपधादीर्घ नहीं होता है। अतः भवन् यह रूप सिद्ध होता है। यद्यपि भवत् शब्द का सम्बोधन में रूप नहीं होता है। फिर भी उसका उल्लेख केवल सम्भावना मात्र है।

यह भवत् शब्द सर्वादिगण में पठित है अतः सर्वनामसंज्ञक भी है। सर्वनाम संज्ञा का फल है अकच्प्रत्यय का विधान।

प्रसंगवश यह भी जानना चाहिए कि सत्तार्थक भू धातु से शतृप्रत्यय करने पर भी प्रक्रिया कार्य एक जैसा ही रहता है। लेकिन अत्वसन्तस्य चाधातोः यह सूत्र प्रवृत्त नहीं होता है क्योंकि यह शब्द शतृप्रत्ययान्त है नकि अत्वन्त है। अतः उपधा दीर्घ के अभाव में भवन् यह रूप होता है। अन्य सभी रूप भवत् शब्द के ही समान होते हैं।

पाठगत प्रश्न-1

1. सान्तमहतः संयोगस्य इस सूत्र का अर्थ लिखो?
2. वसोः सम्प्रसारणम् इस सूत्र का अर्थ लिखो?
3. महत् शब्द के सम्बोधन के एकवचन में उपधा दीर्घ होता है कि नहीं क्यों?
4. महन् त् स् इस स्थिति में नुमागम किस सूत्र से होता है?
5. वसोः सम्प्रसारणम् इस सूत्र का एक उदाहरण लिखो?
6. अत्वसन्तस्य चाधातोः सूत्र का अर्थ लिखो?
7. भवात् स् में उपधा दीर्घ किस सूत्र से होता है?
8. अत्वसन्तस्य चाधातोः में अतु पद के द्वारा किनका ग्रहण होता है?

अदस् शब्द

अदस् शब्द सर्वादि गण में पठित है अतः सर्वनाम संज्ञक है। दूर के वस्तु को बताने के लिए अदस् शब्द का प्रयोग किया जाता है। तीनो लिंगों में इसका प्रयोग होता है।

पुल्लिंग में अदस् शब्द

पुल्लिंग में विद्यमान अदस् शब्द से प्रथमा विभक्ति के एकवचन की विवक्षा में सुप्रत्यय परे रहते त्यदादीनामः यह सूत्र प्राप्त होता है परन्तु उसे बांधकर यह सूत्र आता है।

18.4 - अदस औ सुलोपश्च। 7.2.107

सूत्रार्थ - अदस् को औकार अन्तादेश होता है, सु परे रहते तथा सु का लोप होता है।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से औकार आदेश होता है तथा लोप होता है। अतः यह विधि सूत्र है।

ध्यान दें:

इस सूत्र में चार पद हैं। अदसः औ सुलोपः च यह सूत्रपदच्छेद है। इस सूत्र में तदोः सः सावनन्त्ययोः इस सूत्र से सौ यह सप्तम्यन्त पद अनुवर्तित होता है। अदसः षष्ठी का एकवचन है। औ प्रथमा का एकवचन है। सुलोपः प्रथमा का एकवचन है। च अव्यय पद है। सोर्लोपः सुलोपः षष्ठी तत्पुरुष समास।

अदसः यह षष्ठ्यन्त पद है अतः अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा के द्वारा अदस् के अन्तिम अल् सकार के स्थान पर कार्य होता है। वह कार्य होता है औ अन्तादेश। अतः इस सूत्र से एक समय में दो कार्य होते हैं- औ यह अन्तादेश होता है तथा सुविभक्ति का लोप होता है। अतः इस सूत्र में च यह पद दिया गया है। इस सूत्र में सौ इस पद की अनुवृत्ति के कारण सौ इस पद में सप्तमी विभक्ति के दर्शन के कारण से उस सुविभक्ति में परे रहते पूर्व में विद्यमान अदस् शब्द के अन्तिम सकार के स्थान पर औ आदेश होता है। इन्हीं दो कार्यों के सूचित करने के लिए च यह पद रखा गया है।

अतः इस सूत्र का अर्थ होता है- सुविभक्ति के परे रहते अदस् के सकार के स्थान पर औकार आदेश, सुप्रत्यय का लोप भी होता है।

बाध्य बाधक भाव - यह सूत्र त्यदादीनामः इस सूत्र का अपवाद है।

उदाहरण - असौ।

सूत्रार्थ समन्वय - अदस् सु यह स्थिति है। यहां सुप्रत्यय पर में है। अतः प्रस्तुत सूत्र से अदस् के सकार के स्थान पर औकार आदेश, सुविभक्ति का लोप एक साथ प्राप्त होता है। अतः अद औ बन गया। वृद्धिरेचि इस सूत्र से अकार और औकार के स्थान पर वृद्धि औकार रूप एकादेश करने पर अदौ यह रूप बनता है। तदोः सः सावनन्त्ययोः दकार के स्थान पर सकार करने पर असौ यह रूप सिद्ध होता है।

अदस् शब्द से प्रथमा द्विवचन में त्यदादीनामः से सकार के स्थान पर अकार, अतो गुणे से पररूप अद औ इस स्थिति में वृद्धिरेचि इस सूत्र से अकार और औकार के स्थान पर वृद्धि औकार एकादेश करने पर अदौ बन गया। इस स्थिति मे अगला सूत्र प्रवृत्त होता है।

18.5 - अदसोऽसेर्दादु दो मः। 8.2.80

सूत्रार्थ - असकारान्त अदस् के दकार से पर में उकार ऊकार आदेश होते हैं तथा दकारे को मकार होता है।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से उकार मकार आदेश होते हैं। अतः यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में छः पद है। अदसः असेः दाद् उ दः मः यह सूत्र पदच्छेद है। अदसः यह षष्ठी का एकवचन है। असेः भी षष्ठी का एकवचन है। जो कि अदसः का विशेषण है। दात् पंचमी का एकवचन है। उ प्रथमा का एकवचन है। मः प्रथमा का एकवचन है। नास्ति सिः सकारः यस्मिन् सः असिः तस्य असेः। नञ्बहुव्रीहिसमास। असिः का इकार उच्चारणार्थक है। उ इस पद में समाहार द्वन्द्व हुआ उश्च ऊश्च यह विग्रह वाक्य है।

दात् में दिग्योग पञ्चमी है। उसके बाद में परस्य यह पद अध्याहार करना चाहिए। दः षष्ठी विभक्ति है। यहां अनुयोगी पद के श्रवण न होने के कारण से षष्ठी स्थाने योगा इस सूत्र से स्थाने यह पद आता है। असेः यह पद अदसः का विशेषण है अतः तदन्त विधि के द्वारा असन्त यह अर्थ प्राप्त हो जाता है। अतः ऐसा अदस् शब्द विवक्षित है जिसके अन्त में सकार न हो। ऐसे सकारान्त भिन्न अदस् शब्द के दकार से पर में उवर्ण आदेश होता है तथा दकार को मकार होता है।

ध्यान दें:

अदस् शब्द का अवयव जो दकार है उससे पर का वर्ण कभी ह्रस्व होता है तो कभी दीर्घ अतः ऐसी स्थिति में स्थानेऽन्तरतमः इस परिभाषा के द्वारा ह्रस्व के स्थान पर ह्रस्व उकार तथा दीर्घ के स्थान पर दीर्घ ऊकार आदेश होता है।

उदाहरण - अमू

सूत्रार्थ समन्वय - अदौ यह स्थिति है। यह अदस् शब्द सकारान्त भिन्न है। अतः इस सूत्र से दकार से पर में विद्यमान औकार के स्थान पर ऊकार आदेश करने पर तथा दकार को मकार करने पर अमू यह रूप सिद्ध हो जाता है।

अदस् शब्द से प्रथमा के बहुवचन में जस् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, अदस् अस् बन गया त्यदादीनामः से अदस् शब्द के सकार के स्थान पर अकार करने पर अद अ अस् यह स्थिति बन गयी। अतो गुणे से पररूप करने पर अद अस् बन गया। तत्पश्चात् जसः शी इस सूत्र से सम्पूर्ण जस् के स्थान पर शी आदेश अनुबन्ध लोप, अद ई बन गया। आद् गुणः से अकार और ईकार को गुण एकार करने पर अदे यह स्थिति प्राप्त है। तत्पश्चात् अदसोऽसेर्दादु दो मः इस सूत्र से ऊकार आदेश तथा दकार को मकार आदेश प्राप्त होता है। उसे बांधकर अग्रिम सूत्र प्रवृत्त होता है।

18.6 - एत ईब्दहुवचने 8.2.81

सूत्रार्थ - अदस् के दकार से पर में एकार को ईकार होता है तथा दकार को मकार होता है। बहुवचन में।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से ईकार और मकार आदेश होता है। अतः यह विधि सूत्र है। इस सूत्र मे तीन पद है। एतः ईद् बहुवचने यह पदच्छेद है। इस सूत्र में अदसोऽसेर्दादु दो मः इस सूत्र से अदसः दात् दः मः ये चार पद अनुवर्तित होते हैं। अदसः षष्ठी का एकवचन है। यहां षष्ठी अवयव अर्थ में है। दात् पंचमी का एकवचन है। एतः षष्ठी का एकवचन है। ईत् प्रथमा का एकवचन है। दः षष्ठी का एकवचन है। मः प्रथमा का एकवचन है। बहुवचने सप्तमी का एकवचन है। बहूनां वचनं बहुवचनम् तस्मिन् बहुवचने। षष्ठीतत्पुरुषसमास। सूत्रार्थ है- अदस् के दकार से पर में विद्यमान एकार को ईकार होता है तथा दकार को मकार होता है बहुवचन में।

बाध्य बाधक भाव - अदसोऽसेर्दादु दो मः का अपवाद यह सूत्र है।

उदाहरण - अमी यह इसका उदाहरण है।

सूत्रार्थ समन्वय - अदे इस स्थिति में यहां जस् प्रत्यय है अतः बहुवचन भी है। अतः प्रस्तुत सूत्र से दकार से पर में एकार को ईकार तथा दकार को मकार होता है। जिससे अमी यह रूप सिद्ध होता है।

अमुम् - अदस् शब्द से द्वितीया एकवचन की विवक्षा में अम्, अदस् अम् इस स्थिति में त्यदादीनामः से अदस् के सकार के स्थान पर अकार तथा अतो गुणे से पररूप करने पर अद अम् बन गया। अब इस अवस्था में दो कार्य प्राप्त होते हैं। पहला तो अमि पूर्वः से दकारोत्तर अकार और अम् के अकार के मध्य में पूर्वरूप तथा अदसोऽसेर्दादु दो मः से उत्व मत्व। अब इन दोनों सूत्रों में से कौन-सा सूत्र पहले प्रवर्तित होवे इस जिज्ञासा में इसका उत्तर दिया जाता है कि - पूर्वत्रासिद्धम् इस सूत्र के प्राबल्य से अमि पूर्वः यह सूत्र पहले ही प्रवृत्त होता है। तत्पश्चात् अदसोऽसेर्दादु दो मः यह सूत्र। क्योंकि अष्टाध्यायी में अमि पूर्व की सूत्र संख्या है- 6.1.104 तथा अदसोऽसेर्दादु दो मः इस सूत्र की संख्या है -8.2.80 अतः सपादसप्ताध्यायी के अमि पूर्वः की दृष्टि में अदसोऽसेर्दादु दो मः यह सूत्र असिद्ध है।

ध्यान दें:

अतः पहले अमि पूर्वः ही प्रवृत्त होता है। अतः अद अम् में पूर्वरूप करने पर अदम् बन गया। अब अदसोऽसेर्दादु दो मः से दकार को मकार तथा अकार को उकार करने पर अमुम् यह रूप सिद्ध होता है।

अमून् - अदस् शब्द से द्वितीया बहुवचन में शस् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, त्यदादीनामः से अत्व, अतो गुणे से पररूप, करने पर अद अस् इस स्थिति में यहां भी सूत्रद्वय प्राप्त होते हैं। अदसोऽसेर्दादु दो मः (8.2.80) तथा प्रथमयोः पूर्वसवर्णः (6.1.102)। अदसोऽसेर्दादु दो मः सूत्र त्रिपादी में है तथा प्रथमयोः पूर्वसवर्णः सपादसप्ताध्यायी में है। अतः पूर्वत्रासिद्धम् के प्राबल्य से प्रथमयोः पूर्वसवर्णः इस सूत्र की दृष्टि में अदसोऽसेर्दादु दो मः यह सूत्र असिद्ध होता है। अतः अद अस् इस अवस्था में पूर्वसवर्णदीर्घ करने पर अदास् बन गया। तस्माच्छसो नः पुंसि से सकार को नकार करने पर अदान् बन गया। पुनः अदसोऽसेर्दादु दो मः से आकार को ऊत्व तथा दकार को मत्व करने पर अमून् यह रूप सिद्ध हो जाता है।

18.7 - न मु ने। 8.2.3

सूत्रार्थ - नाभाव के कर्तव्यता में या करने पर मुभाव असिद्ध नहीं होता है।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से असिद्धत्व का निषेध होता है। अतः यह निषेध सूत्र है। इस सूत्र में न मु ने ये तीन पद है। यहां पूर्वत्रासिद्धम् इस सूत्र से असिद्धम् यह पद अनुवर्तित होता है। ना का सप्तम्यन्त रूप है ने यहां सप्तमी भाव या विषय अर्थ में है। मु प्रथमा का एकवचन है। न अव्यय पद है। असिद्धम् प्रथमा का एकवचन है। म् च उश्च इस विग्रह में समाहार द्वन्द्व करने पर मु यह पद निष्पन्न होता है। ना भाव कर्तव्य हो या किया जा चुका हो तो मुभाव असिद्ध नहीं होता है।

बाध्य बाधक भाव - पूर्वत्रासिद्धम् का अपवाद भूत यह सूत्र है।

उदाहरण - अमुना इसका उदाहरण है।

सूत्रार्थ समन्वय - अमु आ इस स्थिति में आङो नाऽस्त्रियाम् इस सूत्र से टा के स्थान पर ना आदेश कर्तव्यता में अदसोऽसेर्दादु दो मः इस सूत्र से विहित मुभाव असिद्ध नहीं होता है। अतः शेषो घ्यसखि इस सूत्र से अमु की घिसंज्ञा होती है। अतः आङो नाऽस्त्रियाम् से आ के स्थान पर ना आदेश करने पर अमुना यह रूप सिद्ध होता है।

विशेष - सूत्रार्थ में कर्तव्यता या करने पर मुभाव असिद्ध नहीं होता है यह कहा गया है। नाभाव करने पर मुभाव असिद्ध नहीं होता है यह अर्थ न लिया जाय तो अमुना इस रूप में नाभाव करने पर मुभाव असिद्ध होता तो सुपि च इस सूत्र से अदन्त अङ्ग को दीर्घ प्राप्त होता। परन्तु इस प्रकार का अर्थ स्वीकार करने के कारण न मु ने इस सूत्र से मु आदेश सिद्ध होता है। अतः सुपि च यह सूत्र प्रवृत्त नहीं होता है। अतः ने में सप्तमी विभक्ति का दो अर्थ स्वीकार किया गया है। नाभाव कर्तव्यता या करने पर।

अमूभ्याम् - अदस् भ्याम् इस स्थिति में त्यदादीनामः से अत्व, पररूप, अद भ्याम् बन गया सुपि च दीर्घ करने पर अदा भ्याम् बन गया अदसोऽसेर्दादु दो मः से आकार को ऊकार और दकार को मकार करने पर अमूभ्याम् यह रूप सिद्ध होता है।

अमीभिः - अदस् भिस् इस स्थिति में त्यदादीनामः से अकार, पररूप करने पर अद भिस् हो गया। यहां पर अतो भिस ऐस् यह सूत्र प्राप्त होता है। परन्तु नेदमदसोरकोः इस सूत्र से उसका निषेध हो जाता है। तत्पश्चात् बहुवचने झल्येत् से झलादि बहुवचन सुप् परे रहते पूर्व के अकार को एकार करने पर अदेभिस् बन गया। तत्पश्चात् एत ईद् बहुवचने से ईकार और मकार करने पर अमीभिस् बन गया सकार को रुत्व विसर्ग करने पर अमीभिः यह रूप सिद्ध होता है।

ध्यान दें:

अमुष्मै - अदस् शब्द से ङेविभक्ति अनुबन्धलोप, अदस् ए इस स्थिति में त्यदादीनाम: से अत्व, पररूप, करने पर अद ए बन गया। सर्वनाम्न: स्मै से ङे के स्थान पर स्मै आदेश, अदस्मै हो गया। तत्पश्चात् अदसोऽसेर्दादु दो म: से अकार को उकार तथा दकार को मकार करने पर अमु स्मै बन गया। आदेशप्रत्यययो: से सकार को षत्व करने पर अमुष्मै यह रूप सिद्ध होता है।

अमीभ्य: - अदस् भ्यस् इस स्थिति में त्यदादीनाम: से अत्व पररूपत्व, बहुवचने झल्येत् से एत्व, अदे भ्यस् बन गया। एत ईद् बहुवचने से एकार को ईकार तथा दकार को मकार करने पर अमी भ्यस् बन गया सकार को रुत्व विसर्ग करने पर अमीभ्य: यह रूप सिद्ध होता है।

अमुष्मात् - अदस् शब्द से ङसि प्रत्यय, अनुबन्धलोप, त्यदाद्यत्व, पररूपत्व, अद अस् इस स्थिति में ङसिङ्यो: स्मात्स्मिनौ इस सूत्र से ङसि के स्थान पर स्मात् आदेश। अद स्मात् इस स्थिति में अदसोऽसेर्दादु दो म: से अकार को उकार तथा दकार को मकार करने पर अमुस्मात् बन गया। आदेशप्रत्यययो: से सकार को षकार करने पर अमुष्मात् यह रूप सिद्ध होता है।

अमुष्य- अदस् शब्द से ङस् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, त्यदादीनाम: से अत्व पररूप, टाङसिङसामिनात्स्या: से स्य आदेश तथा उत्व मत्व, सकार को षकार करने पर अमुष्य यह रूप सिद्ध होता है।

अमुयो: - अदस् शब्द से ओस् प्रत्यय, त्यदाद्यत्व, पररूप, अद ओस् इस स्थिति में ओसि च अकार को एत्व, अदे ओस् बन गया। एचोऽयवायाव: से ओकार रूप अच् परे एकार के स्थान पर अय् आदेश अदयोस् इस स्थिति में अदसोऽसेर्दादु दो म: से उत्व मत्व करने पर अमुयोस् बन गया। सकार को रुत्व विसर्ग करने पर अमुयो: यह रूप सिद्ध होता है।

अमीषाम् - अदस् शब्द से आम् प्रत्यय, त्यदाद्यत्व, पररूप, अद आम् इस स्थिति में आमि सर्वनाम्न: सुट् से आम् को सुट् आगम, अनुबन्धलोप, अद साम् हो गया। तत्पश्चात् बहुवचने झल्येत् इस सूत्र से दकारोत्तरवर्ती अकार को एकार करने पर अदे साम् हो गया। तत्पश्चात् एत ईद् बहुवचने से दकारोत्तरवर्ती एकार को ईकार तथा दकार को मकार करने पर अमी साम् बन गया, आदेश प्रत्यययो: से सकार को षकार करने पर अमीषाम् यह रूप सिद्ध होता है।

अमुष्मिन् - अदस् शब्द से ङिविभक्ति, अनुबन्धलोप, त्यदादीनाम: से अत्व, पररूप, ङसिङ्यो: स्मात्स्मिनौ से ङि के स्थान पर स्मिन् आदेश, उत्व मत्व करने पर तथा सकार को षत्व करने पर अमुष्मिन् यह रूप सिद्ध होता है।

अमीषु - अदस् शब्द से सुप् प्रत्यय, अनुबन्धलोप, त्यदाद्यत्व, पररूप, बहुवचने झल्येत् से एत्व ईत्वमत्व करने पर, तत्पश्चात् सकार को षकार करने पर अमीषु यह रूप सिद्ध होता है।

स्त्रीलिंग में अदस् शब्द।

स्त्रीलिंग मे अदस् शब्द से प्रथमा के एकवचन की विवक्षा में पुल्लिंग के समान रूप होता है।

प्रथमा के द्विवचन की विवक्षा में औ प्रत्यय, अदस् औ बन गया। त्यदाद्यत्व, पररूप, अद औ हो गया। स्त्रीत्वविवक्षा में टाप् प्रत्यय, अनुबन्धलोप, सवर्णदीर्घ करने पर अदा औ बन गया। औङ आप: से औ के स्थान पर शी आदेश, अनुबन्धलोप, अदा ई हो गया। आद् गुण: से गुण करने पर अदे बन गया अदसोऽसेर्दादु दो म: इस सूत्र से एकार को ऊकार, तथा दकार को मकार करने पर अमू यह रूप सिद्ध होता है।

अदस् अस् इस स्थिति में त्यदाद्यत्व, पररूप, टाप्, सवर्णदीर्घ, अदा अस् बन गया प्रथमयो:

ध्यान दें:

पूर्वसवर्णः से पूर्वसवर्णदीर्घ करने पर अदास् बन गया। पूर्ववत् अदसोऽसेर्दादु दो मः से दकार को मकार तथा आकार को ऊकार करने पर अमूस् बन गया सकार को रुत्व विसर्ग करने पर अमूः यह रूप सिद्ध होता है।

अदस् अम् इस स्थिति में पूर्ववत् प्रक्रिया कार्य करने पर अदा अम् बन गया अमि पूर्वः से पूर्वरूप करने पर अदाम् बन गया। तत्पश्चात् अदसोऽसेर्दादु दो मः से दकार को मकार और आकार को ऊकार करने पर अमूम् यह रूप सिद्ध होता है।

अदस् अस् इस स्थिति में प्रक्रिया कार्य करने पर अदा अस् बन गया। प्रथमयोः पूर्वसवर्णः से पूर्वसवर्ण दीर्घ करने पर अदास् बन गया। पूर्ववत् ऊत्व और मत्वा तथा सकार को रुत्व विसर्ग करने पर अमूः यह रूप सिद्ध होता है।

अदस् आ इस स्थिति में पूर्ववत् प्रक्रिया कार्य करने पर अदा आ बन गया। आङि चापः से आप् को एकार करने पर अदे आ बन गया। एचोऽयवायावः से एकार के स्थान पर अयादेश अदया बन गया पूर्ववत् दकार को मकार तथा अकार को उकार करने पर वर्ण सम्मेलन अमुया बन गया।

अदस् भ्याम् इस स्थिति में प्रक्रिया कार्य करने पर अदा भ्याम् बन गया पूर्ववत् ऊत्व और मत्व करने पर अमूभ्याम् बन गया।

इसी प्रकार से अमूभिः अमूभ्यः में भी समझना चाहिए।

अदस् ए इस अवस्था में प्रक्रिया कार्य करने पर अदा ए बन गया। सर्वनाम संज्ञा होने के कारण सर्वनाम्नः स्याड्ढऊस्वश्च से स्याट् आगम अनुबन्ध लोप, आबन्त को ह्रस्व करने पर तथा वृद्धिरेच से वृद्धि ऐकार करने पर अद स्यै मे पूर्ववत् उत्व और मत्व करने पर तथा सकार को षत्व करने पर अमुष्यै यह रूप सिद्ध होता है।

अदस् अस् इस स्थिति में पूर्ववत् प्रक्रिया कार्य करने पर अदा अस् बन गया। सर्वनाम्नः स्याड्ढऊस्वश्च से स्याट् आगम और ह्रस्व, अद स्या अस् बन गया। अकः सवर्णे दीर्घ से सवर्ण दीर्घ करने पर अद स्यास् बन गया। पूर्ववत् उत्व मत्व करने पर अमुष्यास् बन गया तथा सकार को रुत्व विसर्ग करने पर अमुष्याः यह रूप सिद्ध होता है।

अदस् ओस् इस अवस्था में पूर्ववत् प्रक्रिया कार्य करने पर अदा ओस् बन गया आङि चापः से आप् के स्थान पर एकार, अयादेश, अदय् ओस् बन गया, पूर्ववत् उत्व मत्व करने पर अमुयोस् बन गया सकार को रुत्व विसर्ग करने पर अमुयोः यह रूप सिद्ध होता है।

अदस् आम् इस स्थिति में पूर्ववत् प्रक्रिया कार्य करने पर अदा आम् बन गया, आमि सर्वनाम्नः सुट् से सुट् आगम, अदा साम् बन गया पूर्ववत् ऊत्व और मत्व करने पर तथा सकार को षकार करने पर अमूषाम् यह रूप सिद्ध होता है।

अदस् इ इस अवस्था में पूर्ववत् प्रक्रिया कार्य करने पर अदा इ बन गया। ङेराम्नद्याम्नीभ्यः से ङि के स्थान पर आम् आदेश, अदा आम् बन गया। सर्वनाम्नः स्याड्ढऊस्वश्च से आम् का स्याट् आगम और ह्रस्व, अद स्या आम् बन गया सवर्ण दीर्घ करने पर तथा पूर्ववत् उत्व मत्व करने पर, और सकार को षत्व करने पर अमुष्याम् यह रूप सिद्ध होता है।

अदस् सु में पूर्ववत् प्रक्रियाकार्य करने पर अदा सु बन गया पूर्ववत् ऊत्व मत्व करने पर अमू सु बन गया, आदेश प्रत्यययोः इस सूत्र से सकार को षकार करने पर अमूषु यह रूप सिद्ध होता है।

ध्यान दें:

स्त्रीलिंग में अदस् शब्द के रूप -

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	असौ	अमू	अमूः
द्वितीया	अमूम्	अमू	अमूः
तृतीया	अमुया	अमूभ्याम्	अमूभिः
चतुर्थी	अमुष्यै	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
पंचमी	अमुष्याः	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
षष्ठी	अमुष्याः	अमुयोः	अमूषाम्
सप्तमी	अमुष्याम्	अमुयोः	अमूषु

नपुंसकलिंग में अदस् शब्द -

अदस् सु इस स्थिति में स्वमोर्नपुंसकात् इस सूत्र से सुप्रत्यय का लोप, पदान्त में विद्यमान सकार का रुत्व विसर्ग करने पर अदः यह रूप सिद्ध होता है। अदस् औ इस स्थिति में नपुंसकाच्च से औ के स्थान पर शी आदेश, अनुबन्धलोप, अदस् ई बन गया। त्याद्यत्व, अतो गुणे से पररूप करने अद ई बन गया आद् गुणः से गुण करने पर अदे बन गया अदसोऽसेर्दादु दो मः इस सूत्र से ऊत्व मत्व करने पर अमू यह रूप सिद्ध होता है।

अदस् अस् इस स्थिति में जश्शसोः शिः इस सूत्र से जस् के स्थान पर शि आदेश, अनुबन्धलोप, अदस् इ बन गया। त्यदाद्यत्व, पररूप, अद इ बन गया नपुंसकस्य झलचः से नुम् आगम अद न् इ बन गया। सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ से उपधा दीर्घ करने पर अदानि यह रूप सिद्ध होता है।

द्वितीया विभक्ति में भी इसी तरह रूप होते हैं। अन्यत्र पुल्लिंग अदस् शब्द के समान रूप होते हैं यह समझना चाहिए।

क्लीबलिंग में अदस् शब्द के रूप -

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अदः	अमू	अमूनि
द्वितीया	अदः	अमू	अमूनि

अन्य रूप पुल्लिंग के समान होता है।

पाठगत प्रश्न-2

9. अदस औ सुलोपश्च सूत्र का अर्थ लिखो?

10. अदस औ सुलोपश्च इस सूत्र से कितने कार्य होते हैं?

11. अदस औ सुलोपश्च यह सूत्र किसका अपवाद है?

ध्यान दें:

12. अदसोऽसेर्दादु दो मः इस सूत्र का अर्थ लिखो?

13. एत ईद् बहुवचने इस सूत्र से क्या होता है?

14. न मु ने इस सूत्र का अर्थ लिखो?

15. अदसोऽसेर्दादु दो मः इसका अपवाद सूत्र कौन-सा है?

ददत् शब्द

जुहोत्यादिगण में पठित दाधातु से लट् लकार, उसके स्थान पर शतृ प्रत्यय, शप् प्रत्यय, जुहोत्यादिभ्यः श्लुः सूत्र से श्लु, श्लौ इस द्वित्व विधायक सूत्र से दाधातु को द्वित्व होता है। अतः दा दा अत् बन गया पूर्वोऽभ्यासः से पूर्व दा की अभ्यास संज्ञा, ह्रस्वः से अभ्यास को ह्रस्व, श्नाभ्यस्तयोरातः इस सूत्र से ददा के आकार का लोप होने पर दद् अत् बन गया। वर्णसम्मेलन करने पर ददत् यह शब्द निष्पन्न होता है। वस्तुतः यह प्रक्रिया आप तिङन्तप्रकरण को जान सकते हैं। यहां तो प्रसङ्गवश उल्लेख मात्र किया गया है। तीनों लिंगों में ददत् शब्द का प्रयोग होता है। परन्तु पुल्लिंग नपुंसकलिंग में नुमागम के विषय में कुछ विशेष दिखाई देती है।

पुल्लिंग मे ददत् शब्द

ददत् शब्द से सुप्रत्यय, अनुबन्ध लोप, ददत् स् यह स्थिति बन गयी। यह ददत् शब्द शतृप्रत्ययान्त है अतः उगित् है। इस कारण से उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः इस सूत्र से नुम् आगम प्राप्त है तो अग्रिम सूत्र प्रवृत्त होता है।

18.8 - उभे अभ्यस्तम्। 6.1.5।

सूत्रार्थ - षष्ठाध्याय के द्वित्व प्रकरण में जो द्वित्व हुआ है। वे दोनों अभ्यस्त संज्ञक होते हैं।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से अभ्यस्त संज्ञा होती है। अतः यह संज्ञा सूत्र है। इस सूत्र में दो पद है - उभे प्रथमा का द्विवचनान्त पद है। अभ्यस्तम् प्रथमा का एकवचन है। द्वे उभे अभ्यस्तम् यह अन्वय है। द्वित्व विधायक सूत्र अष्टाध्यायी के दो अध्यायों में दिखते हैं तथा षष्ठाध्याय के प्रथम पाद में प्रथम सूत्र से बारहवें सूत्र तक कुछ सूत्र तथा अष्टमाध्याय के प्रथमपाद में पहले सूत्र से पन्द्रहवें सूत्र तक कुछ सूत्र है। इस सूत्र में जो द्वित्व विधान किया गया है। वह षष्ठाध्यायस्थ सूत्रों के विषय में। नियम हैं अनन्तरस्य विधिर्वा भवति प्रतिषेधो वा। इसका तात्पर्य है कि निकटस्थों की विधि और प्रतिषेध होते हैं। न कि दूरस्थ को। उभे अभ्यस्तम् यह सूत्र षष्ठाध्याय में पढ़ा गया है। अतः अभ्यस्त संज्ञा षष्ठाध्यायस्थ सूत्रों द्वारा सम्पादित द्वित्व की ही होती है। इस प्रकार से सूत्रार्थ सम्पन्न होता है - षष्ठाध्यायस्थसूत्रों से जो द्वित्व का विधान किया गया है। वे दोनों अभ्यस्त संज्ञक होते हैं।

सूत्रार्थ समन्वय - षष्ठद्वित्व प्रकरण में स्थित श्लौ इस सूत्र से द्वित्वविधान होने के कारण से दद् इस समुदाय की उभे अभ्यस्तम् से अभ्यस्त संज्ञा होती है। तत्पश्चात् अग्रिम सूत्र प्रवृत्त होता है-

18.9 - नाभ्यस्ताच्छतुः। 7.1.78

सूत्रार्थ - अभ्यस्त से पर मे शतृ को नुम् आगम नहीं होता है।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से नुम् आगम का निषेध होता है। अतः यह निषेध सूत्र है। इस सूत्र

ध्यान दें:

में तीन पद है। न अभ्यस्तात् शतुः यह सूत्रगतपदच्छेद है। न अव्यय पद है अभ्यस्तात् पंचमी का एकवचन है। शतुः षष्ठी का एकवचन है। इस सूत्र में इदितो नुम् धातोः इस सूत्र से नुम् इस प्रथमान्त पद की अनुवृत्ति होती है। अभ्यस्तात् शतुः नुम् न यह अन्वय है। सूत्रार्थ होता है- अभ्यस्त से पर शतृप्रत्यय को नुम् का आगम नहीं होता है।

सूत्रार्थ समन्वय - ददत् स् यह स्थिति है। यहां पर उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः से नुम् आगम प्राप्त है। दद् इस अभ्यस्त संज्ञक से पर में शतृ के अत् भाग को नुम् आगम इस सूत्र से निषिद्ध होता है। अतः ददत् स् बन गया हल्ङ्याब्भ्यो से सकार का लोप करने पर ददत् बन गया। तत्पश्चात् झलां जशोऽन्ते से तकार को दकार करने पर ददद् रूप बना। दकार को पुनः वाऽवसाने से विकल्प से चर्त्व करने पर ददत् ददद् ये दो रूप सिद्ध होते हैं।

हलादिविभक्तियों में ददत् के तकार को झलां जशोऽन्ते से दकार होता है।

नपुंसकलिंग में ददत् शब्द

नपुंसकलिंग में ददत् शब्द से सुप्रत्यय स्वमोर्नपुंसकात् से सु का लुक् ददत् बन गया। तत्पश्चात् झलां जशोऽन्ते से तकार को जश्त्व दकार वावसाने से दकार को विकल्प से चर्त्व करने पर ददत् ददद् ये दो रूप बनते हैं। ददत् शब्द से औप्रत्यय, ददत् औ बन गया नपुंसकाच्च से औ के स्थान पर शी आदेश अनुबन्धलोप, ददत् ई बन गया वर्ण सम्मेलन करने पर ददती यह रूप सिद्ध होता है।

ददत् शब्द से जस् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप ददत् अस् इस स्थिति में जश्शसोः शिः इस सूत्र से शि आदेश, अनुबन्धलोप, शि सर्वनामस्थानम् से शि की सर्वनामस्थान संज्ञा होती है। तत्पश्चात् उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः से, नपुंसकस्य झलचः इस सूत्र ददत् शब्द को नुमागम प्राप्त है। परन्तु दद् भाग की उभे अभ्यस्तम् अभ्यस्त संज्ञा, उससे पर में अत् के स्थान पर प्राप्त नुमागम नाभ्यस्ताच्छतुः इस सूत्र से निषिद्ध होता है। तत्पश्चात् अग्रिम सूत्र आता है-

18.10 - वा नपुंसकस्य। 7.1.79

सूत्रार्थ - अभ्यस्त से जो शतृप्रत्यय तदन्त नपुंसकलिंग को विकल्प से नुम् आगम होता है। सर्वनाम स्थान परे रहते।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से विकल्प से नुमागम होता है। अतः यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में दो पद है। वा अव्यय पद है नपुंसकस्य षष्ठी का एकवचन है। नाभ्यस्ताच्छतुः इस सूत्र से अभ्यस्तात् यह पंचम्यन्त पद तथा शतुः यह षष्ठ्यन्त पद अनुवर्तित होता है। अङ्गस्य का अधिकार है। इदितो नुम् धातोः इस सूत्र से नुम् यह प्रथमान्त पद अनुवर्तित होता है। उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः से सर्वनाम स्थाने यह सप्तम्यन्त पद अनुवर्तित होता है। अन्वय है - अभ्यस्तात् शतुः नपुंसकस्य अङ्गस्य वा नुम् सर्वनामस्थाने। सूत्रार्थ होता है- अभ्यस्त से पर में विद्यमान जो शतृप्रत्यय तदन्त जो नपुंसकलिंग उसको विकल्प से नुम् आगम होता है। सर्वनामस्थान पर में रहते।

सूत्रार्थ समन्वय- ददत् इ यह स्थिति है। यहां शिप्रत्यय की सर्वनाम स्थान संज्ञा हुई है तथा दद् भाग की उभे अभ्यस्तम् से अभ्यस्त संज्ञा भी हुई है। उससे पर में अत् शतृप्रत्यय है। तदन्त नपुंसक को विकल्प से नुमागम होता है। अतः जिस पक्ष में नुम् आगम होता है उस पक्ष में दद् न् त् इ बन गया वर्ण मेलन करने पर ददन्ति यह रूप बनता है तथा जिस पक्ष में नुम् आगम नहीं होता है उस पक्ष में ददति यह रूप बनता है।

ध्यान दें:

तुदत् शब्द

तुदादि गण में पठित व्यथनार्थक तुद् धातु से लट् लकार, उसके स्थान पर शतृप्रत्यय शप् विकरण, प्रक्रिया कार्य, तुद् अ अत् बन गया। यहां तुद् अ यह भाग यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम् से अङ्ग संज्ञक है। तब अतो गुणे से पर रूप करने पर तुदत् शब्द निष्पन्न होता है। इस शब्द का नुम् आगम के विषय में कुछ विशेष कार्य दिखाई देते हैं।

तुदत् शब्द से प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सुप्रत्यय करने पर शेष कार्य ददत् शब्द के समान ही होते हैं।

तुदत् से औ प्रत्यय तुदत् औ इस स्थिति में नपुंसकाच्च सं औ के स्थान पर शी आदेश अनुबन्ध लोप, तुदत् ई बन गया तब अगला सूत्र प्रवृत्त होता है।

18.11 - आच्छीनद्योर्नुम् । 7.1.80

सूत्रार्थ - अवर्णान्त अङ्ग से पर में जो शतृ उसका जो अवय तदन्त को नुम् विकल्प से होता है। शी और नदी पर में रहते।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से विकल्प से नुम् आगम होता है। अतः यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में तीन पद है। आत् शीनद्योः नुम् यह सूत्रगतपदच्छेद है। आत् पंचमी का एकवचन है। शीनद्योः सप्तमी का द्विवचन है। नुम् प्रथमा का एकवचन है। अङ्गस्य सूत्र का अधिकार है। जो कि पंचम्यन्त पद में विपरिणाम किया जाता है। अङ्गस्य का पुनः अधिकार है। नाभ्यस्ताच्छतुः से शतुः यह षष्ठ्यन्त पद अनुवर्तित होता है। वा नपुंसकस्य इस सूत्र से वा यह अव्यय पद अनुवर्तित होता है। आत् अङ्गात् शतुः अङ्गस्य वा नुम् यह अन्वय है। यहां आत् यह पद अङ्गात् का विशेषण है। जिसके कारण अदन्तात् यह पद प्राप्त होता है।

सूत्रार्थ होता है- अदन्त अङ्ग से पर में विद्यमान जो शतृप्रत्यय का अवयव तदन्त अङ्ग को विकल्प से नुम् आगम होता है। शी और नदी पर में रहते।

सूत्रार्थ समन्वय- तदत् में तुद अङ्गसंज्ञक है। उससे पर में त् शतृप्रत्यय का अवयव है। तदन्त अङ्ग है तुदत्। उससे पर में शी आदेश है। अतः उसके परे रहते विकल्प से नुम् आगम होता है।

जिस पक्ष में नुम् आगम होता है उस पक्ष में तुद न् त् ई बन गया वर्ण सम्मेलन करने पर तुदन्ती यह रूप सिद्ध होता है तथा नुमभाव पक्ष में तुदती यह रूप सिद्ध होता है।

तुदत् शब्द से जस् में जश्शसोः शिः से जस् के स्थान पर शि आदेश, तुदत् इ बन गया शि आदेश की शि सर्वनामस्थानम् से सर्वनाम स्थान संज्ञा होती है। अतः उसके परे रहते तुदत् झलन्त है अतः नपुंसकस्य झलचः से तुदत् के अन्तिम अच् से पर में नुम् आगम करने पर तथा अनुबन्ध लोप करने पर तुदन्ति यह रूप सिद्ध होता है।

पचत् शब्द -

पाकार्थक पच् धातु से लट्, लट् के स्थान पर शतृ प्रत्यय, शप् विकरण, प्रक्रिया कार्य, पच् अ अत् बन गया। यहां पच अंश यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम् से अङ्ग संज्ञक है। तब अतो गुणे से पच अत् में पर रूप एकादेश करने पर पचत् यह शब्द निष्पन्न होता है।

ध्यान दें:

पचत् शब्द से नपुंसकलिंग में सुप्रत्यय, अनुबन्ध लोप, ददत् शब्द के समान रूप बनेंगे।

पचत् औ इस स्थिति में नपुंसकाच्च इस सूत्र से औ प्रत्यय के स्थान पर शी आदेश, अनुबन्ध लोप, पचत् ई बन गया। इस स्थिति में अग्रिम सूत्र प्रवर्तित होता है।

18.12 शप्श्यनोर्नित्यम्। 7.1.81

सूत्रार्थ - शप् श्यन् के अकार से पर में जो शतृ प्रत्यय का अवयव अत् तदन्त को नित्य से नुम् आगम होता है। शी और नदीपर में रहते।

सूत्र व्याख्या - इस सूत्र से नुम् आगम होता है। अतः यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में दो पद है। शप्श्यनोः षष्ठी का द्विवचनान्त पद है। नित्यम् प्रथमा का एकवचन है। आच्छीनद्योर्नुम् इस सूत्र से आत् यह पंचम्यन्त पद, नुम् यह प्रथमान्त पद अनुवर्तित होता है। नाभ्यस्ताच्छतुः इस सूत्र से शतुः यह षष्ठ्यन्त पद अनुवर्तित होता है। अङ्गस्य यह षष्ठ्यन्त सूत्र अधिकृत है। शप्श्यनोः आत् शतुः नित्यं नुम् शीनद्योः यह अन्वय है। सूत्र का सरल अर्थ होता है- शप् और श्यन् का जो अकार उससे पर में शतृ प्रत्यय का अवयव तदन्त शब्द से शी और नदी परे रहते नित्य से नुम् आगम होता है।

भ्वादिगण तथा चुरादिगण में शप् विकरण, तथा दिवादि में श्यन् विकरण होता है। अतिः भ्वादि, चुरादि तथा दिवादि गणपठित धातुओं से विहित जो शतृ प्रत्यय तदन्त को प्रस्तुत सूत्र से नित्य से नुमागम होता है।

सूत्रार्थ समन्वय - पचत् ई इस स्थिति में अन्तादिवच्च इस परिभाषा के द्वारा पच अङ्गसंज्ञक है। उससे पर में त् शतृप्रत्यय का अवयव है। तदन्त शब्द है पचत् उससे पर में शी प्रत्यय है। अतः प्रस्तुत सूत्र से नित्य से नुम् आगम अनुबन्ध लोप, पच न् त् ई बन गया नकार को नश्चापदान्तस्य झलि से अनुस्वार तथा अनुस्वारस्य ययि परसवर्ण से परसवर्ण नकार करने पर पचन्ती यह रूप सिद्ध होता है।

पचत् जस् इस स्थिति में जश्शसोः शिः इस सूत्र से जस् के स्थान पर शि आदेश होता है। अतः पचत् इ यह स्थिति सम्पन्न हुई। शि आदेश की शि सर्वनामस्थानम् से सर्वनामस्थान संज्ञा होती है। पचत् शब्द झलन्त भी है। अतः नपुंसकस्य झलचः से नुम् आगम अनुबन्ध लोप, नकार को अनुस्वार परसवर्ण करने पर पचन्ति यह रूप सिद्ध होता है।

इसी प्रकार दीव्यत् शब्द को भी जानना चाहिए-

पाठगत प्रश्न-3

16. अभ्यस्त संज्ञा करने वाला सूत्र कौन-सा है?
17. वा नपुंसकस्य इस सूत्र का अर्थ लिखो?
18. आच्छीनद्योर्नुम् इस सूत्र का अर्थ लिखो?
19. शप्श्यनोर्नित्यम् इस सूत्र का अर्थ लिखो?
20. अभ्यस्त से पर में शतृ प्रत्यय, तदन्त नपुंसकलिंग को नुम् आगम किससे होता है?
21. तुदन्ती और तुदती ये दो रूप होने के क्या कारण है?

ध्यान दें:

22. पचन्ति में नुमागम किस सूत्र से होता है?

23. पचन्ती में नुमागम किस सूत्र से होता है?

24. उभे अभ्यस्तम् इस सूत्र का अर्थ लिखो?

25. तुदत् शब्द के प्रथमा एकवचन में कितने रूप होते हैं? कौन-कौन से?

पाठ सार

महत् शब्द उगित् है। अतः सर्वनामस्थान संज्ञक प्रत्यय परे रहते उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः इस सूत्र से नुम् आगम होता है, लेकिन उन प्रत्ययों के परे रहते उपधा को दीर्घ सान्त महतः संयोगस्य इस सूत्र से होता है। सम्बोधन के एकवचन में सुप्रत्यय की सम्बुद्धि संज्ञा होती है। अतः उपधादीर्घ करने वाला सूत्र वहां प्रवृत्त नहीं होता है। अन्यत्र भ्याम् आदि प्रत्ययों में झलां जशोऽन्ते से तकार को दकार होता है। सुप् प्रत्यय परे रहते दकार को खरि च इस सूत्र से चर्त्व तकार करने पर पुनः तकार ही होता है।

विद्वस् शब्द वसु प्रत्ययान्त है। इस कारण से वसुप्रत्ययान्त भसंज्ञक अङ्ग संज्ञक के स्थान पर सम्प्रसारण होता है। यह विशेष है।

भवत् शब्द दो प्रकार का है - पहला भा धातु से डवतु प्रत्यय करने से निष्पन्न होता है। दूसरा भूधातु से शतृप्रत्यय के योग से निष्पन्न हुआ है। पहले भवत् शब्द में अत्वसन्तस्य चाधातोः से उपधादीर्घ होता है। तथा दूसरे भवत् शब्द में दीर्घ नहीं होता है।

दूर अर्थ का बोध कराता है अदस् शब्द। उससे सुप्रत्यय परे रहते औकार रूप अन्तादेश तथा सुप्रत्यय का लोप ये दो कार्य अदस औ सुलोपश्च करता है। औ प्रत्यय में तो प्रक्रिया कार्य करने पर अदौ बनने पर अदसोऽसेर्दादु दो मः से औकार के स्थान पर ऊकार और दकार को मकार होता है। ये दो कार्य होता है। बहुवचन में जस् के स्थान पर शी आदेश, प्रक्रिया कार्य करने पर अदे बन गया। एकार के स्थान पर ईकार तथा दकार को मकार एत ईद्बहुवचने यह सूत्र। तृतीया के एकवचन में अदसोऽसेर्दादु दो मः इस सूत्र से विहित मुभाव पूर्वत्रासिद्धम् इस सूत्र के प्राबल्य से आङो नाऽस्त्रियाम् इस सूत्र की दृष्टि में असिद्ध है। परन्तु उसका निषेध न मु ने इस सूत्र से होता है।

उसके बाद में शतृप्रत्ययान्त तीन शब्दों का विचार किया गया। पहले अभ्यस्त संज्ञा के विषय में परिचय किया गया है। तत्पश्चात् पुल्लिंग में ददत् शब्द को प्राप्त नुमागम का नाभ्यस्ताच्छतुः से निषेध हुआ है। नपुंसकलिंग में जस् प्रत्यय के स्थान पर शि आदेश परे रहते नपुंसकस्य झलचः से प्राप्त नुमागम नाभ्यस्ताच्छतुः इस सूत्र से निषेध होता है। परन्तु वा नपुंसकस्य इस सूत्र से अभ्यस्त से पर में विद्यमान जो शतृप्रत्यय तदन्त नपुंसकलिंग को सर्वनामस्थान परे रहते विकल्प से नुमागम होता है। अतः जस् में ददन्ति ददति ये दो रूप बनते हैं।

शी और नदी पर रहते तो अवर्णान्त अंग से पर में जो शतृप्रत्यय उसका अवयव जो वर्ण तदन्त को आच्छीनद्योर्नुम् से विकल्प से नुमागम होता है। अतः औ के स्थान पर हुए शी आदेश परे रहते विकल्प से नुम् आगम करने पर तुदन्ती तुदती ये दो रूप सिद्ध होता है। परन्तु उस शी और नदी परे रहते शप् और श्यन् का जो अकार उससे पर में जो शतृ का अवयव तदन्त शब्द के स्थान पर शप्श्यनोर्नित्यम् इस सूत्र से नित्य से नुम् आगम होता है।

पाठ-18

हलन्त प्रकरण में महत् इत्यादि शब्दों के रूप

ध्यान दें:

योग्यतावृद्धि

पूर्वतन पाठों में चतु पँचन् अष्टन् ये संख्यावाचक शब्द विचार में लाये गये। इस अंश में षष् शब्द का विचार किया जाता है।

षो अन्तकर्मणि इस सूत्र से पृषोदरादीनि यथोपदिष्टम् इस सूत्र से षष् शब्द निष्पन्न होता है। षष् शब्द नित्य से बहुवचनान्त है। तीनों लिंगों में इसके समान रूप होते हैं।

षष् शब्द से जस् और शस् प्रत्ययों में अनुबन्ध लोप करने से षष् अस् बन गया ष्णान्ता षट् से षष् की षट् संज्ञा, तब षड्भ्यो लुक् से जस् और शस् का लुक् तत्पश्चात् झलां जशोऽन्ते से षकार को जश्त्व डकार करने पर वावसाने से विकल्प से चर्त्व करने पर षट् षड् ये दो रूप बनता है।

षष् शब्द से भिस् प्रत्यय तथा भ्यस् प्रत्यय परे रहते झलां जशोऽन्ते से षकार को जश्त्व डकार करने पर षड्भिः षड्भ्यः रूप बनते हैं।

षष् शब्द से षष्ठी के बहुवचन में आम् प्रत्यय षष् आम् बन गया षट्चतुर्भ्यश्च से आम् को नुट् आगम, अनुबन्ध लोप, षष् नाम् बन गया स्वादिष्वसर्वनामस्थाने से पद संज्ञा झलां जशोऽन्ते से षकार को जश्त्व डकार, प्रत्यये भाषायां नित्यम् इस वार्तिक से डकारव को णकार तथा ष्टुना ष्टुः से नकार को णकार करने पर षण्णाम् यह रूप सिद्ध होता है।

षष् शब्द से सप्तमी बहुवचन की विवक्षा में सुप् प्रत्यय, अनुबन्धलोप, षष् सु इस स्थिति में स्वादिष्वसर्वनामस्थाने से षष् की पदसंज्ञा, झलां जशोऽन्ते षकार को जश्त्व डकार षड् सु बन गया डः सि धुट् से सकार को विकल्प से धुट् आगम होता है। यह आगम टित् होने के कारण आद्यावयव होता है। अतः जिस पक्ष में धुट् आगम होता है उस पक्ष में धुट् आगम, अनुबन्ध लोप, षड् ध् सु बन गया खरि च से धकार को चर्त्व तकार, तथा डकार को चर्त्व टकार करने पर षट्त्सु यह रूप बन गया। धुट् आगम के अभाव पक्ष में षड् सु बन गया। खरि च से चर्त्व टकार करने पर षट्सु यह।रूप सिद्ध होता है।

छात्रों के उपकार के लिए इस पाठ में आलोचित शब्दों के रूप नीचे दिये गये हैं।

1. महत् शब्द के रूप (पुल्लिंग में)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	महान्	महान्तौ	महान्तः
द्वितीया	महान्तम्	महान्तौ	महतः
तृतीया	महता	महद्भ्याम्	महद्भिः
चतुर्थी	महते	महद्भ्याम्	महद्भ्यः
पंचमी	महतः	महद्भ्याम्	महद्भ्यः
षष्ठी	महतः	महतोः	महताम्
सप्तमी	महति	महतोः	महत्सु

ध्यान दें:

2. षष् शब्द के रूप -

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	-	-	षट्, षड्
द्वितीया	-	-	षट्, षड्
तृतीया	-	-	षड्भिः
चतुर्थी	-	-	षड्भ्यः
पंचमी	-	-	षड्भ्यः
षष्ठी	-	-	षण्णाम्
सप्तमी	-	-	षटत्सु, षट्सु

3. विद्वस् शब्द के रूप -

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः
द्वितीया	विद्वांसम्	विद्वांसौ	विदुषः
तृतीया	विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः
चतुर्थी	विदुषे	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
पंचमी	विदुषः	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
षष्ठी	विदुषः	विदुषोः	विदुषाम्
सप्तमी	विदुषि	विदुषोः	विद्वत्सु
सम्बोधन	विद्वन्	विद्वांसौ	विद्वांसौ

4. भवत् (डवतु प्रत्ययान्त) शब्द के रूप -

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भवान्	भवन्तौ	भवन्तः
द्वितीया	भवन्तम्	भवन्तौ	भवतः
तृतीया	भवता	भवद्भ्याम्	भवद्भिः
चतुर्थी	भवते	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
पंचमी	भवतः	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
षष्ठी	भवतः	भवतोः	भवताम्
सप्तमी	भवति	भवतोः	भवत्सु
सम्बोधन	भवन्	भवन्तौ	भवन्तः

ध्यान दें:

5. पुल्लिंग में अदस् शब्द के रूप -

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	असौ	अमू	अमी
द्वितीया	अमुम्	अमू	अमून्
तृतीया	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
चतुर्थी	अमुष्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
पंचमी	अमुष्मात्	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
षष्ठी	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
सप्तमी	अमुष्मिन्	अमुयोः	अमीषु

6. पुल्लिंग में ददत् शब्द के रूप -

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	ददत्, ददद्	ददतौ	ददतः
द्वितीया	ददतम्	ददतौ	ददतः
तृतीया	ददता	ददद्भ्याम्	ददद्भिः
चतुर्थी	ददते	ददद्भ्याम्	ददद्भ्यः
पंचमी	ददतः	ददद्भ्याम्	ददद्भ्यः
षष्ठी	ददतः	ददतोः	ददताम्
सप्तमी	ददति	ददतोः	ददत्सु

7. नपुंसकलिंग में ददत् शब्द के रूप -

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	ददत्, ददद्	ददती	ददन्ति, ददति
द्वितीया	ददत्, ददद्	ददती	ददन्ति, ददति

अन्य रूप पुल्लिंग के समान होता है।

पाठ-18

हलन्त प्रकरण में महत् इत्यादि शब्दों के रूप

ध्यान दें:

तुदत् शब्द के रूप-

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पचत्, पचद्	पचन्ती	पचन्ति
द्वितीया	,,	,,	,,
तृतीया	पचता	पचद्भ्याम	पचद्भि:
चतुर्थी	पचते	,,	पचद्भ्य:
पंचमी	पचत:	,,	,,
षष्ठी	,,	पचतो:	पचताम्
सप्तमी	पचति	,,	पचत्सु

सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति के समान रूप होते हैं।

8. पचत् शब्द के रूप -

1. सान्त महत: संयोगस्य इस सूत्र की व्याख्या करो?
2. अत्वसन्तस्य चाधातो: इस सूत्र की व्याख्या करो?
3. भवत् शब्द के विषय में टिप्पणी लिखो?
4. अदसोऽसेर्दादु दो म: इस सूत्र की उदाहरण पूर्वक व्याख्या करो?
5. अदस औ सुलोपश्च इस सूत्र की उदाहरण पूर्वक व्याख्या करो?
6. एत ईद् बहुहवचने इस सूत्र की व्याख्या लिखो?
7. न मु ने सूत्र की व्याख्या करो?
8. निम्नांकित रूप सिद्ध करो?

महान्, विदुष:, असौ, अमू अमी, अमुना

9. ददत् शब्द के नपुंसक में प्रथमा बहुवचन के रूप सिद्ध करो?
10. तुदत् शब्द के नपुंसकलिंग में प्रथमा द्विवचन के रूप सिद्ध करो?
11. शप्श्यनोर्नित्यम् की व्याख्या करो?
12. वा नपुंसकस्य सूत्र की व्याख्या करो?
13. आच्छीनद्योर्नुम् इस सूत्र की व्याख्या करो?

ध्यान दें:

पाठगत प्रश्नोत्तर

उत्तर-1

1. सकारान्त संयोग तथा महत् का जो नकार उसके उपधा को दीर्घ होता है। असम्बुद्धि सर्वनामस्थान परे रहते।
2. वस्वन्त भसंज्ञक को सम्प्रसारण होता है।
3. महत् शब्द के सम्बोधन एकवचन में उपधा दीर्घ नहीं होता है। क्योंकि सम्बोधन के एकवचन में सु की एकवचनं सम्बुद्धिः से सम्बुद्धि संज्ञा होने के कारण से सान्त महतः संयोगस्य इस सूत्र में असम्बुद्धौ सर्वनामस्थाने यह कथन होने के कारण से।
4. उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः इस सूत्र से।
5. विदुषः इसका उदाहरण है।
6. अत्वन्त की उपधा को तथा धातु भिन्न असन्त के उपधा को दीर्घ होता है सु परे रहते।
7. अत्वसन्तस्य चाधातोः इस सूत्र से।
8. मतुप् वतुप् डवतु इत्यादि प्रत्ययों का ग्रहण होता है।

उत्तर-2

9. अदस् को औकार अन्तादेश होता है। सुपर में रहते तथा सु का लोप भी होता है।
10. दो कार्य होते हैं। औकार अन्तादेश तथा सु का लोप।
11. त्यदादीनामः इस सूत्र का अपवाद है।
12. असान्त अदस् शब्द के दकार से पर में उकार और ऊकार होते हैं। तथा दकार को मकार होता है।
13. बहुवचन में अदस् के दकार से पर में इकार और ईकार होता है। तथा दकार को मकार होता है।
14. नाभाव कर्तव्य हो या करने पर मुभाव असिद्ध नहीं होता है।
15. एत ईद्बहुवचने यह सूत्र

उत्तर-3

16. उभे अभ्यस्तम्।
17. अभ्यस्त से पर में जो शतृ प्रत्यय का अवयव तदन्त जो नपुंसकलिंग उसको विकल्प से नुम् आगम होता है। सर्वनामस्थान परे रहते।
18. अवर्णान्त अङ्ग से पर मे जो शतृ का अवयव तदन्त शब्द को विकल्प से नुम् आगम होता है। शी और नदी परे रहते।
19. शप् और श्यन् से पर में जो शतृ प्रत्यय का अवयव तदन्त को नित्य से नुम् आगम होता है। शी और नदी परे रहते।
20. वा नपुंसकस्य इस सूत्र से।
21. आच्छीनद्योर्नुम्।

ध्यान दें:

22. नपुंसकस्य झलचः इस सूत्र से।

23. शष्यनोर्नित्यम् यह सूत्र।

24. षष्ठ अध्याय के द्वित्व प्रकरण में जो द्वित्व हुआ है। वे दोनों समुदित रूप से अभ्यस्त संज्ञक होते हैं।

25. दो रूप - तुदद्, तुदत्।